प्रवेश माला, खंड 1, अंक 5

शुक्रवार, 27 मार्च, 1998
6 चैत्र, 1920 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद

(हिन्दी संस्करण)

पहला सत्र

(बारहवीं लोक सभा)

(खंड 1 में अंक 1 से 8 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्यः पचास रुपये

सम्पादक मण्डल

श्री एस. गोपालन
महासचिव
लोक सभा

डा. अशोक कुमार पांडेय
अपर सचिव
लोक सभा सचिवालय

श्री एम.आर. कौसला
संयुक्त सचिव
लोक सभा सचिवालय

श्री सुरेन्द्र कौशिक
निदेशक
लोक सभा सचिवालय

श्री प्रकाश चन्द्र भट्ट
मुख्य सम्पादक
लोक सभा सचिवालय

श्री केवल कृष्ण
वरिष्ठ सम्पादक

श्री राम लाल गुलाटी
सम्पादक

श्री पीयूष चन्द्र दत्त
सहायक सम्पादक

श्री गोपाल सिंह चौहान
सहायक सम्पादक

(अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जायेगी। उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा।)

विषय सूची

द्वादश माला, खंड 1, पहला सत्र, 1998/1920 (शक)
अंक 5, शुक्रवार, 27 मार्च, 1998/चैत्र, 1920 (शक)

विषय	कॉलम
निधन सम्बन्धी उल्लेख	1-2
अध्यक्ष द्वारा घोषणा	2
सभा पटल पर रखे गए पत्र	2-4
आयकर (संशोधन) विधेयक- *पुरःस्थापित*	4
आयकर (संशोधन) दूसरा अध्यादेश, 1997 के बारे में एक व्याख्यात्मक विवरण- *सभा पटल पर रखा गया*	5
मंत्रि-परिषद में विश्वास का प्रस्ताव	5-92, 95-109, 110-168
श्री अटल बिहारी बाजपेयी	5-11
श्री शरद पवार	12-21
श्री सोमनाथ चटर्जी	21-35
श्री मुलायम सिंह यादव	37-47
श्री जार्ज फर्नान्डीज	47-64
कुमारी ममता बनर्जी	64-75
श्री राजेश पायलट	76-86
सरदार सुरजीत सिंह बरनाला	86-92
कुमारी मायावती	95-100
श्री वैको	102-109
श्री पी. चिदम्बरम	110-120
श्रीमती सुषमा स्वराज	120-130
श्री अजीत जोगी	130-138
श्री वी. सत्यमूर्ति	138-140
श्री सानसुमा खुगुरं वैसीमुथियारी	142-145
श्री रामदास आठवले	145-148
श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन	148-153
श्री किशन सिंह सांगवान	154-156
श्री मुख्तार नकवी	157-161
श्री रामानन्द सिंह	161-163
श्री अनंत गंगाराम गीते	163-167
नियम 377 के अधीन मामले	93-95
(एक) दार्जिलिंग जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में पेय जल की कमी को दूर करने के लिए पश्चिम बंगाल सरकार को विशेष अनुदान जारी किए जाने की आवश्यकता श्री आनन्द पाठक	93

विषय		कॉलम
(दो)	गेहूं का समर्थन मूल्य 600 रु. प्रति क्विंटल निर्धारित किए जाने की आवश्यकता प्रो. प्रेम सिंह चन्दूमाजरा	93-94
(तीन)	नरोरा बांध से वातागंज तक नहर के निर्माण के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के प्रस्ताव को स्वीकृत किए जाने की आवश्यकता श्री राजवीर सिंह	94
(चार)	किसानों के हितों की सुरक्षा के लिए एक व्यापक नीति तैयार किये जाने की आवश्यकता श्री एस. सुधाकर रेड्डी	94-95
राज्य सभा से संदेश		109-110

लोक सभा

शुक्रवार, 27 मार्च, 1998/6 चैत्र, 1920 (शक)

लोक सभा पूर्वाह्न 11.01 बजे समवेत हुई

[अध्यक्ष महोदय *पीठासीन* हुए]

[अनुवाद]

निधन सम्बन्धी उल्लेख

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, मुझे सभा को सर्वश्री एम. नागेश्वर राव और वी.के. रामास्वामी के दुःखद निधन की सूचना देनी है।

श्री एम. नागेश्वर राव पांचवीं से सातवीं लोक सभा तक लोक सभा के सदस्य रहे और मछलीपत्तनम और तेनाली संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों का क्रमशः 1971 से 1977 और 1977 से 1984 तक प्रतिनिधित्व किया।

इससे पहले 1946 से 1952 तक वे तत्कालीन मद्रास राज्य की विधान सभा के सदस्य रहे और 1954 से 1962 तक आंध्र प्रदेश विधान सभा को सदस्य रहे।

श्री नागेश्वर राव पेशे से एक किसान थे और स्वतंत्रता आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। 1930 में उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और महात्मा गांधी के नेतृत्व में नमक सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया।

एक योग्य सांसद होने के नाते उन्होंने सभा और उसकी समितियों की कार्यवाहियों में सक्रिय रूप से भाग लेकर उल्लेखनीय योगदान दिया। वर्ष 1974 से 1975 के दौरान वे प्राक्कलन समिति के सदस्य रहे।

श्री एम. नागेश्वर राव का निधन 88 वर्ष की आयु में 13 जनवरी, 1998 को आंध्र प्रदेश के गुंटूर में हुआ।

श्री वी.के. रामास्वामी तीसरी लोक सभा के सदस्य थे और 1962 से 1967 के दौरान उन्होंने तत्कालीन मद्रास राज्य के नमक्कल संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया।

एक सक्रिय सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ता होने के नाते श्री रामास्वामी ने दलितों के उद्धार के लिए कठिन परिश्रम किया और अपने चुनाव-क्षेत्र सम्बन्धी विभिन्न सामाजिक कार्यकलापों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वह कस्तूरबा गर्ल्स होस्टल, नमक्कल, तमिलनाडु के संस्थापक सदस्य रहे।

वे पेशे से एक किसान थे और भूमिहीन किसानों के लिए उन्होंने अत्यधिक कार्य किया।

श्री वी. के. रामास्वामी का निधन 73 की आयु में 25 जनवरी, 1998 को तमिलनाडु के नमक्कल में हुआ।

हम अपने इन मित्रो के निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हैं और मुझे विश्वास है कि यह सभा शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करने में मेरे साथ है।

अब सदस्यगण दिवंगत आत्माओं के सम्मान में थोड़ी देर के लिये मौन खड़े होंगे।

पूर्वाह्न 11.03 बजे

तत्पश्चात् सदस्यगण थोड़ी देर मौन खड़े रहे।

पूर्वाह्न 11.04 बजे

[अनुवाद]

अध्यक्ष द्वारा घोषणा

अध्यक्ष महोदय : मुझे एक घोषणा करनी है। सदस्यों को यह सूचित किया जाता है कि 27 और 28 मार्च, 1998 को होने वाले मंत्रि-परिषद में विश्वास प्रस्ताव पर चर्चा का प्रसारण दूरदर्शन-1 और दूरदर्शन-2 इन्टरनेशनल पर किया जाएगा। चूंकि अपराह्न 2 बजे से अपराह्न 2.20 बजे तक दूरदर्शन सामान्य समाचार कार्यक्रम का प्रसारण करेगा इसलिए उन दिनों भोजनावकाश का समय अपराह्न 1.30 बजे से अपराह्न 2.30 बजे तक होगा।

पूर्वाह्न 11.05 बजे

[अनुवाद]

सभा पटल पर रखे गये पत्र

आठवीं, नौवीं, दसवीं और ग्यारहवीं लोक सभा के विभिन्न सत्रों के दौरान मंत्रियों द्वारा दिये गये विभिन्न आश्वासनों पर सरकार द्वारा की गई कार्यवाही दर्शाने वाला विवरण

रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री और संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री राम नाईक) : महोदय, मैं आठवीं, नौवीं, दसवीं और ग्यारहवीं लोक सभा के विभिन्न सत्रों के दौरान मंत्रियों द्वारा दिये गये विभिन्न आश्वासनों, वचनों और परिवचनों पर सरकार द्वारा की गई कार्यवाही दर्शाने वाले निम्नलिखित विवरणों की एक-एक प्रति (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) सभा पटल पर रखता हूं :

आठवीं लोक सभा

(1) विवरण संख्या 42 ग्यारहवां सत्र, 1988

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* सं. एल. टी. 22/98]

(2) विवरण संख्या 40 तेरहवां सत्र 1989

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 23/98]

नौवीं लोक सभा

(3) विवरण संख्या 42 छठा सत्र, 1990

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 24/98]

(4) विवरण संख्या 30 छठा सत्र, 1990

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 25/98]

दसवीं लोक सभा

(5) विवरण संख्या 38 पहला सत्र, 1991

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 26/98]

(6) विवरण संख्या 32 दूसरा सत्र, 1991

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 27/98]

(7) विवरण संख्या 34 तीसरा सत्र, 1992

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 28/98]

(8) विवरण संख्या 32 चौथा सत्र, 1992

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 29/98]

(9) विवरण संख्या 27 पांचवां सत्र, 1992

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 30/98]

(10) विवरण संख्या 29 छठा सत्र, 1993

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 31/98]

(11) विवरण संख्या 25 सातवां सत्र, 1993

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 32/98]

(12) विवरण संख्या 24 आठवां सत्र, 1993

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 33/98]

(13) विवरण संख्या 22 नौवां सत्र, 1994

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 34/98]

(14) विवरण संख्या 17 ग्यारहवां सत्र, 1994

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 35/98]

(15) विवरण संख्या 15 बारहवां सत्र, 1994

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 36/98]

(16) विवरण संख्या 13 तेरहवां सत्र, 1995

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 37/98]

(17) विवरण संख्या 10 चौदहवां सत्र, 1995

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 38/98]

(18) विवरण संख्या 8 पन्द्रहवां सत्र, 1995

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 39/98]

(19) विवरण संख्या 7 सोलहवां सत्र, 1996

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 40/98]

ग्यारहवीं लोक सभा

(20) विवरण संख्या 5 (खंड एक और दो) दूसरा सत्र, 1996

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 41/98]

(21) विवरण संख्या 4 (खंड एक और दो) तीसरा सत्र, 1996

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 42/98]

(22) विवरण संख्या 3 (खंड एक, दो और तीन) चौथा सत्र, 1997

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 43/98]

(23) विवरण संख्या 1 (खंड एक और दो) पांचवां सत्र, 1997

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 44/98]

(24) विवरण संख्या 1 छठा सत्र, 1997

[ग्रंथालय में रखा गया। *देखिये* संख्या एल.टी. 45/98]

पूर्वाह्न 11.05½ बजे

[अनुवाद]

आयकर (संशोधन) विधेयक*

वित्त मंत्री (श्री यशवंत सिंहा) : मैं आय-कर अधिनियम, 1961 में आगे और संशोधन करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति का प्रस्ताव प्रस्तुत करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : प्रश्न यह है:

"कि आयकर अधिनियम 1961 में आगे और संशोधन करने वाले विधेयक को पुरःस्थापित करने की अनुमति प्रदान की जाए।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

श्री यशवंत सिन्हा : मैं विधेयक पुरःस्थापित** करता हूं।

---

*भारत के राजपत्र असाधारण, भाग दो, खण्ड 2, दिनांक 27.3.98 में प्रकाशित।

** राष्ट्रपति की सिफारिश से पुरःस्थापित।

पूर्वाह्न 11.06 बजे

[अनुवाद]

आयकर (संशोधन) दूसरा अध्यादेश के बारे में एक व्याख्यात्मक विवरण

वित्त मंत्री (श्री यशवंत सिन्हा): मैं आयकर (संशोधन) दूसरा अध्यादेश, 1997 द्वारा तुरन्त विधान बनाए जाने के कारणों को दर्शाने वाला एक व्याख्यात्मक विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) सभा पटल पर रखता हूं।

[ग्रंथालय में रखा गया। देखिये संख्या एल.टी. 46/98]

पूर्वाह्न 11.06½ बजे

मंत्रि-परिषद में विश्वास का प्रस्ताव

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि यह सभा मंत्रि-परिषद में अपना विश्वास व्यक्त करती है।"

अध्यक्ष महोदय, यह प्रस्ताव पेश करते हुए मेरे हृदय में मिली-जुली भावनाएं हैं। बरबस मेरा ध्यान 28 मई, 1996 की ओर जाता है। उस दिन, इसी सदन में, इसी स्थान से, मैंने उस समय की अपनी सरकार के लिए विश्वास मत की मांग की थी। तब से लेकर नदियों में बहुत सा पानी बह गया है। लोक तंत्र की सरिता अबाध गति से बहती रहे, यह आवश्यक है। लेकिन कभी-कभी ऐसा लगता है कि वह सरिता अविश्वास के भंवर में फंसकर अपना प्रवाह खो रही है। तब मैंने त्याग-पत्र दे दिया क्योंकि मैं अल्पमत में था और अम्पायर मुझे कहते कि आप मैदान से बाहर चले जाइए, उससे पहले ही मैंने मैदान छोड़ दिया । लेकिन उसके बाद जो घटनाचक्र चला, उस पर इस देश को गंभीरता से विचार करना होगा। 1989 से विश्वास मत के भंवर में पड़े हुए लोक तंत्र का चित्र हमें चिंता पैदा करता है।

21 दिसम्बर 1989 को फिर विश्वास मत हुआ था। सरकार केवल ग्यारह महीने चली। 7 नवम्बर 1990 को पुनः विश्वास मत हुआ। 1990 में नए प्रधान मंत्री ने विश्वास मत लिया किंतु पांच वर्ष सरकार चलने की बजाए पांच महीने सरकार चली। लोक सभा भंग हो गई। 1991 के चुनाव में किसी को बहुमत नहीं मिला। कांग्रेस की अल्पमत की सरकार बनी। प्रारम्भ में हमने उसे सहयोग दिया। बाद में वह अल्पमत में कैसे बदला, इस कहानी में मैं जाना नहीं चाहता। मामला अदालत में है। वह सरकार अस्थिरता के भंवर में तो नहीं थी, लेकिन इस सरकार की नाव को भ्रष्टाचार के मगरमच्छों ने क्षत-विक्षत कर दिया। इसीलिए कांग्रेस चुनाव में हारी। कांग्रेस की ऐसी पराजय पहले कभी नहीं हुई थी। 1977 में इमरजेंसी के अपराधों के कारण कांग्रेस को सत्ता से हाथ धोना पड़ा था, फिर भी कांग्रेस सबसे बड़े दल के रूप में उभरी थी। लेकिन उस समय सबसे बड़ा दल होने का स्थान कांग्रेस ने खो दिया। भारतीय जनता पार्टी बढ़ते हुए जन-विश्वास के आधार पर सबसे बड़े दल का दर्जा प्राप्त करने में सफल हुई। लेकिन चुनाव में कांग्रेस की पराजय के बाद फिर एक अस्थिरता का दौर चला। संख्या कम होने के कारण हमने अपने आप को अलग कर लिया। लेकिन 28 मई को इस सदन में भाषण करते हुए मैंने कहा था कि जनता का विश्वास प्राप्त करके हम पुनः आयेंगे और आज हम फिर यहां उपस्थित हैं।..... *(व्यवधान)* उस समय की परिस्थिति में और आज की परिस्थिति में जमीन आसमान का अन्तर है। इस बीच अस्पृश्यता की राजनीति विफल हो गई और अलग-अलग करने के प्रयासों पर पानी फिर गया। हम सबसे बड़े दल के रूप में उभरे हैं और अपने मित्र दलों के सहयोग से हम सबसे बड़े गठबंधन के रूप में उभरे हैं।..... *(व्यवधान)* बहुमत से थोड़ा कम हैं। हमने इस बात पर पर्दा नहीं डाला। हम राष्ट्रपति जी के पास दावा पेश करने के लिए नहीं गए। राष्ट्रपति महोदय ने हमें स्वयं विचार-विमर्श के लिए बुलाया और हमने उनसे कहा कि संख्या थोड़ी कम है। उन्होंने कहा - मैं और दलों से विचार-विमर्श करूंगा और उन्होंने विचार-विमर्श किया। हमारे साथ जो दल थे, जिन दलों के समर्थन का हम दावा कर रहे थे, उनके बारे में राष्ट्रपति महोदय ने दस्तावेज मांगे। अलग-अलग बातें की। तेलगू देशम के नेताओं से उनकी चर्चा हुई और वे इस परिणाम पर पहुंचे। कांग्रेस पार्टी ने सरकार बनाने का दावा नहीं किया। कांग्रेस की अध्यक्षा और कांग्रेस के संसदीय दल की नेत्री, श्रीमती सोनिया गांधी, भी राष्ट्रपति जी से मिलने गई थी और श्रीमती सोनिया गांधी ने उनसे कहा कि हम दावा नहीं कर रहे हैं। संयुक्त मोर्चा दावा करता, इसका तो सवाल ही नहीं था। चुनाव में सबसे ज्यादा चोट उन्हें ही लगी है।

कांग्रेस का भी एक सदस्य बढ़ा है। संयुक्त मोर्चा की संख्या तो आधी रह गयी है। उन्होंने भी कहा है कि हम सरकार बनाने में रुचि नहीं रखते। तब राष्ट्रपति महोदय ने मुझे सरकार बनाने के लिए कहा। एक समय-सीमा निर्धारित की और वह समय-सीमा 29 तारीख को समाप्त हो रही है। मैं विश्वास का मत प्राप्त करने के लिए आपके सामने खड़ा हूं।

मैं सदन के सामने इस बात को रखना चाहता हूं कि विश्वास मत प्राप्त करने का सिलसिला एक वर्ष के बाद दूसरे वर्ष, तीसरे वर्ष, ये कब तक चलेगा। विश्वास का मत मुझे प्राप्त करना है इसलिए मैं यह प्रश्न खड़ा कर रहा हूं ऐसी बात नहीं है। आज हर देशवासी के मन में, हर लोकतंत्र प्रेमी के मन में यह सवाल उठ रहा होगा और उठना भी चाहिए कि आखिर देश राजनीतिक अस्थिरता के भंवर में क्यों फंस गया है? जैसा मैंने कहा, यह सिलसिला बंद होना चाहिए। हम आशा करते थे कि चुनाव के बाद दो-टूक फैसला होगा। यह ठीक है कि आज यदि जनादेश किसी के पक्ष में है तो वह भारतीय जनता पार्टी और उसके मित्र दलों के पक्ष में है। कांग्रेस और संयुक्त मोर्चा के पक्ष में तो बिल्कुल नहीं है।.....*(व्यवधान)* हमारे विरोधी दल आपस में भी लड़कर

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

आए थे। इसलिए मैंने राष्ट्रपति महोदय से कहा था कि आप और दलों को बुलाकर पूछ लीजिए। जिम्मेदारी लेने से पहले हम चाहते हैं कि और दलों को आप मौका दें। कोई सरकार बनाने के लिए तैयार नहीं था। आज मैं फिर उस बात को दोहराता हूं। अगर हमारे विरुद्ध सब दल इकट्ठे होते हैं, और स्थिर सरकार देने में सफल होते हैं तो आगे आएं। इकट्ठे तो पिछली बार भी हो गये थे। कांग्रेस पार्टी बाहर से समर्थन दे रही थी। कुछ महीने समर्थन दिया और फिर समर्थन वापिस ले लिया और देवगौड़ा जी मुश्किल में फंस गये। ..... *(व्यवधान)* उनके उपर यह आरोप लगाया गया कि वह कांग्रेस पार्टी को तोड़ना चाहते थे। मैं नहीं जानता कि इसमें सच्चाई क्या है? फिर मेरे मित्र श्री इंद्र कुमार गुजराल प्रधान मंत्री बने और कांग्रेस पार्टी ने थोड़े महीने बाद फिर समर्थन वापिस ले लिया। अब कांग्रेस पर भरोसा कौन करेगा? लेकिन अब अगर नये विश्वास की सृष्टि हुई है और कुछ नयी शुरूआत की आकांक्षा है तो मैं कहूंगा कि देश को स्थिर सरकार की आवश्यकता है, ईमानदार सरकार की आवश्यकता है और इस आवश्यकता को, इस सरकार की आवश्यकता को हम पूरा करेंगे।.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय, राष्ट्रपति जी ने जब हमें बुलाया तो उनके सामने दो कसौटियां थीं।

उन्होंने दो बातों पर गम्भीरता से विचार किया - एक भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़े दल के रूप में उभरी थी और दूसरा भारतीय जनता पार्टी और मित्र दलों का गठबंधन सबसे शक्तिशाली गठबंधन था, लेकिन एक और विशेषता थी कि यह गठबंधन चुनाव के पूर्व हुआ था, चुनाव के बाद नहीं। हम इस गठबंधन को लेकर मतदाता के पास गए थे। चुनाव के पूर्व जो गठबंधन होते हैं, उनमें विचारों की समानता होती है। इसलिए राष्ट्रपति महोदय ने चुनाव के पूर्व गठबंधन के तथ्य को अधिमान दिया और हमें सरकार बनाने के लिए बुलाया। चुनाव में हम जनता के सामने दो प्रमुख लक्ष्य लेकर गए थे - एक देश को राजनैतिक स्थिरता देना और दूसरा देश को स्वच्छ शासन और प्रशासन देना। यह गठबंधन चुनाव के पूर्व था, इसलिए यह कहना गलत होगा कि यह गठबंधन केवल सत्ता के लिए था। लोकतंत्र में सत्ता में भागीदारी स्वाभाविक है, आवश्यक है, लेकिन चुनाव पूर्व गठबंधन में और चुनाव के बाद के गठबंधन में जो गुणात्मक परिवर्तन है, उसको समझा जाना चाहिए। राष्ट्रपति महोदय ने समझा और उन्होंने हमें सरकार बनाने के लिए बुलाया।

अध्यक्ष महोदय, जिस तरह के चुनाव परिणाम आए हैं, उनका मैं संक्षेप में उल्लेख करना चाहता हूं। तमिलनाडु में सुश्री जयललिता के नेतृत्व में ए.आई.ए.डी.एम.के. की वापसी ने चुनाव दृश्य के पर्यवेक्षकों को आश्चर्य में डाल दिया। कर्नाटक में श्री हेगड़े के नेतृत्व में लोक शक्ति के साथ हमारा गठबंधन परिणाम लाया है। उड़ीसा में अजेय बीजू बाबू के सुपुत्र श्री नवीन पटनायक ने बीजू जनता दल का उदय करके राजनीति की तस्वीर ही बदल दी। पश्चिम बंगाल में ममता जी के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस ने कांग्रेस तथा मार्क्सवादी दलों को मूल से हिला दिया।....*(व्यवधान)*

श्री सत्यपाल जैन (चंडीगढ़) : अध्यक्ष महोदय, आप माननीय सदस्यों से कहिए कि वे टोका-टाकी न करें, नहीं तो हम भी इनके लीडर्स को बोलने नहीं देंगे। इसके बाद शरद पवार जी ने बोलना है.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह अच्छा नहीं है।

....*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : गुजरात में सिद्धान्तहीन गठबंधन परास्त हुआ और जनता ने पुनः हमें अपना विश्वास दिया। कुछ प्रदेशों में हमें अपेक्षा के अनुसार सफलता नहीं मिली। हम असफलता के कारणों पर गहराई से विचार कर रहे हैं। कुछ दलों के साथ हमारा गठबंधन इस चुनाव को लेकर ही नहीं हुआ, इससे पहले भी हम उनके साथ मिल कर काम करते रहे हैं, सरकार चलाते रहे हैं, अकाली दल और भारतीय जनता पार्टी का गठबंधन केवल सत्ता के बंटवारे के लिए नहीं है, पंजाब में सैकड़ों साल से हिन्दू और सिखों के बीच में जो भाईचारा चला आ रहा है, उसे मजबूत करने के लिए है।

अब पंजाब में सरसों की पीली फसल के ऊपर रक्त के लाल धब्बे नहीं दिखाई देंगे। पंजाब की शामों में गिद्धा सुनाई देता है। अभी बैसाखी का त्यौहार आ रहा है। पूरा पंजाब मस्ती में झूमेगा। ...*(व्यवधान)* पंजाब में आतंकवाद को परास्त करने का कांग्रेस श्रेय लेती है, लेकिन जनता इस दावे को स्वीकार नहीं करती। अगर स्वीकार करती तो पंजाब में कांग्रेस की पराजय क्यों होती? हिमाचल प्रदेश में हिमाचल विकास कांग्रेस के साथ हम मिलकर काम कर रहे हैं।....*(व्यवधान)* हरियाणा में भारतीय जनता पार्टी और हरियाणा विकास पार्टी की मिली-जुली सरकार चल रही है। अब हरियाणा और पंजाब के बीच में पारस्परिक सहयोग की चर्चा होती है, विवाद के मसले नहीं उछाले जा रहे। जहां-जहां हमारी सरकारें हैं भारतीय जनता पार्टी की, वहां बारूद बंद कर दी गई है। लेकिन जनता की मांग पर उस पर पुनर्विचार किया जा रहा है, क्योंकि लोकतंत्रात्मक सरकार है। और प्रदेशों में भी यह बारूबंदी का प्रयोग कई रूपों में से निकला है। लोग एक प्रयोग करते हैं, फिर उससे सीखते हैं, फिर दूसरी नीति बनाते हैं। लेकिन जो कठिनाइयां उत्पन्न होती हैं उनका विचार करके सरकार अगर नीति में परिवर्तन करे तो फिर उसे उसके लिए श्रेय दिया जाना चाहिए। मुझे विश्वास है भजन लाल जी जरूर इसके लिए वाहवाही कर रहे होंगे।

अध्यक्ष महोदय, जैसा मैं स्पष्ट कर चुका हूं कि बहुमत प्राप्त करने में कमी रहने के कारण हमने सरकार बनाने का दावा नहीं किया था, लेकिन आज हम सदन में बहुमत में हैं और अपना बहुमत सिद्ध करेंगे। लेकिन मैं फिर इस बात को दोहराना चाहता हूं कि बहुमत और अल्पमत, ये लोकतंत्र के लिए आवश्यक हैं लेकिन क्या लोकतंत्रीय पद्धति बहुमत और अल्पमत के खेल में अटककर रह जाएगी? क्या अस्थिरता का कभी समाप्त न होने वाला दौर चलता रहेगा? पिछले 18 महीने की अनिश्चितता ने, अस्थिरता ने किस तरह से देश को कठिनाइयों में डाला है, विशेषकर आर्थिक मोर्चे पर, उसका उल्लेख मेरे सहयोगी वित्त मंत्री श्री यशवन्त सिन्हा

कर चुके हैं। उन्होंने स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है। स्थिति चिन्ताजनक है। 18 महीने की अनिश्चतता के कारण, अदूरदर्शी नीतियों के कारण अर्थव्यवस्था बुरी तरह से प्रभावित हुई है। खाद्यान्न का उत्पादन घटा है, निर्यात घटा है, सरकारी आमदनी घटी है, वित्तीय घाटा बढ़ा है। इसे रोकने के उपाय करने पड़ेंगे। उसके लिए केन्द्र में स्थिर, सक्षम और ईमानदार सरकार की जरूरत है। अगली शताब्दी की चुनौतियों का सबको सामना करना होगा।

यह अकेले एक दल का या अनेक दलों के गठबंधन का सवाल नहीं है। आप जब इधर थे तब आपकी कठिनाइयां हम देख रहे थे और जब-जब उन कठिनाइयों से निकलने के लिए हमारी सहायता की आवश्यकता हुई, हमने कभी इन्कार नहीं किया, हमने कभी अस्वीकार नहीं किया। आखिर दल देश के लिए है, राष्ट्र सर्वोपरि है, भारत संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, लेकिन राजनीतिक अस्थिरता न केवल हमारी अर्थव्यवस्था को आहत कर रही है बल्कि सबसे बड़े लोकतंत्र के नाते वह विश्व में हमारी छवि को भी धूमिल कर रही है।

राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण के माध्यम से मैंने अपनी सरकार की प्राथमिकताओं और उसकी नीतियों पर प्रकाश डाला है। राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण से अगर किसी का मतभेद है तो वह मतभेद कहां है और क्यों है, इस पर चर्चा करने के लिए तैयार हैं। हमारा कार्यक्रम राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का कार्यक्रम है। यह सर्वस्पर्शी कार्यक्रम है। यह देश के सभी भागों और समाज के सभी अंगों के उत्थान के लिए है। इसीलिए हमने इसे न्यूनतम कार्यक्रम नहीं कहा। हमने इसे राष्ट्रीय एजेंडा का नाम दिया है। हम चाहेंगे कि वह गम्भीर चर्चा का विषय बने। इस एजेंडे में हम जनआकांक्षाओं और सरकार की करनी के बीच जो फासला बढ़ा है, उसे कम करना चाहते हैं। भारत एक बहुबलीय लोकतंत्र है, हमें इस पर गर्व है और हम लोकतंत्र की इस विशेषता को वर्धमान करने के लिए कटिबद्ध हैं। स्वाधीनता के बाद ऐतिहासिक कारणों से केन्द्र में और राज्यों में भी एक दल का वर्चस्व रहा, जिसके कारण अनेक विकृतियां आईं। कुछ लाभ भी हुए थे। लेकिन स्थिति यहां तक बिगड़ गई कि मुख्य मंत्री केन्द्र से नामजद होने लगे। प्रदेशों की स्वायत्तता व्यवहार में घटने लगी। क्षेत्रीय अपेक्षा और आवश्यकताओं के प्रकटीकरण का उचित माध्यम नहीं मिला। आज यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि अलग-अलग क्षेत्रों में क्षेत्रीय दल सत्ता की बागडोर संभाल रहे हैं और राष्ट्र के विकास में अखिल भारतीय दृष्टिकोण विकसित करते हुए योगदान दे रहे हैं। ये सब हमारी बधाई के अधिकारी हैं, हमारे अभिनंदन के अधिकारी हैं।

शक्तिशाली केन्द्र और शक्तिशाली राज्य इनमें कोई अंतरविरोध नहीं है। हम चाहेंगे कि राज्यों को और अधिक स्वायत्तता मिले। हम चाहेंगे कि मुख्य मंत्री छोटी सी बात के लिए, थोड़ा सा अनुदान लेने के लिए, छोटी सी योजना पूरी कराने के लिए नई दिल्ली तक दौड़ लगाने का सिलसिला बंद कर दे। साधनों का बंटवारा इस तरह से होना चाहिए कि राज्य अपने पैरों पर खड़े हो सकें, विकास की जिम्मेदारियां निभा सकें। मित्रों इसके लिए राजनीति में जो नकारात्मकता आ गई है, जो एक छुआछूत की भावना आ गई है, उसे दूर करने की जरूरत है। पिछली बार केवल भारतीय जनता पार्टी को सत्ता से अलग रखने के लिए जो गठबंधन बना, वह गठबंधन टूट गया, बिखर गया।

अध्यक्ष महोदय, देश के सामने नए चुनाव की चुनौती आ गई। अब क्या फिर वही परिदृश्य दोहराया जाएगा ? पुराने राजनीतिक दल पहले जहां खड़े थे, भले ही वे वहां खड़े हों, लेकिन जनता आगे बढ़ गई और हमारे साथ काम करने वालों की संख्या भी निरंतर आगे बढ़ रही है। आज सारे देश का प्रतिनिधित्व इधर है। हम समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलना चाहते हैं। देश में अनेक विभिन्नताएं हैं। बहुबलीय होने के साथ-साथ यह देश बहुभाषी और बहुधर्मी भी है। इस देश में अलग-अलग जनजातियों का निवास है। वे संख्या में कम हैं, इसलिए अपने अस्तित्व के बारे में चिन्तित हैं।

कभी-कभी उत्तर पूर्व में बसे हुए लोग न केवल भौगोलिक दूरी अनुभव करते हैं, बल्कि भावनात्मक दृष्टि से भी अपने को उपेक्षित पाते हैं। इस स्थिति को बदलना पड़ेगा और हम बदलने के लिए कटिबद्ध हैं। लेकिन यह काम आम सहमति के आधार पर ज्यादा अच्छी तरह हो सकता है, केवल सरकार के भरोसे नहीं। विविधता हमारी संस्कृति की समृद्धि का परिचायक है, हमारी दुर्बलता की देन नहीं। सभी भाषाओं के साहित्य का अध्ययन कीजिए, तो उनमें कहीं न कहीं एक स्वर की झनक सुनाई देती है। एक झलक दिखाई देती है। अनेक कारणों से जो संख्या में कम हैं भाषा के कारण, धर्म के कारण आशंकाएं पैदा होती हैं। हम उन आशंकाओं से परिचित हैं और उन आशंकाओं के निराकरण के लिए पूरी कोशिश करेंगे।

अध्यक्ष महोदय, इस अवसर पर मैं अधिक विस्तार से नहीं बोलना चाहता। अनेक मसले हैं जिन पर चर्चा होगी। मुझे उत्तर में अपनी बात कहने का मौका मिलेगा। कुछ प्रश्नों पर इस देश में हमेशा आम सहमति रही है और व्यापक आम सहमति रही है। मैं खासतौर से विदेश नीति के क्षेत्र का उल्लेख करना चाहूंगा। जब जेनेवा में मानवाधिकारों के सम्मेलन में कश्मीर के सवाल को हमारे पड़ौसी देश ने उठाने का फैसला किया, तो उस समय के प्रधान मंत्री श्री नरसिंहराव की नजर मेरे ऊपर गई कि मैं वहां जाकर भारत का प्रतिनिधित्व करूं। इस पर हमारे पड़ौसी देश के लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ, वहां के नेताओं को बड़ा ताज्जुब हुआ। किसी नेता ने कहा भी कि भारत का लोकतंत्र बड़ा विचित्र लोकतंत्र है कि प्रतिपक्ष का नेता अपनी सरकार के पक्ष को रखने के लिए जेनेवा जाता है और एक हमारा प्रतिपक्ष का नेता है जो देश के अन्दर ही ऐसी कठिनाइयां पैदा करता है जिससे अन्तर्राष्ट्रीय बाधाएं उत्पन्न होती हैं।

लोगों ने कहा कि नरसिंह राव जी सरल आदमी नहीं हैं, बड़े चतुर आदमी हैं। यह मत समझिए कि वे केवल देश की एकता का प्रदर्शन करने के लिए आपको भेज रहे हैं बल्कि उनके मन में यह भी हो सकता है कि अगर जेनेवा में बात नहीं बनी और हमारे खिलाफ प्रस्ताव पास हो गया तो देश में हिंसा भड़काने के लिए

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

वाजपेयी जी को भी बलि का बकरा बनाया जा सकता है। मैंने इस पर विश्वास नहीं किया। हम एक दूसरे की सदाशयता पर भरोसा करते हैं।

मेरे मित्र श्री गुजराल यहां बैठे हैं। जब मैं थोड़ी देर के लिए विदेश मंत्री बना था तब वे मास्को में हमारे राजदूत थे- हमारे मापने मेरे नहीं, देश के राजदूत थे। उस समय से हम एक दूसरे को जानते हैं। 1977 में भी एमरजेंसी के बाद, देश में एक परिवर्तन आया था, आमूल परिवर्तन आया था। बड़े-बड़े स्तम्भ ढह गये थे। तम्बू उखड़ गये थे। बरसों से सत्तारूढ़ दल लोगों का विश्वास खो चुका था। उस समय भी विदेश नीति आम सहमति के आधार पर चली थी।

मुझसे एक विदेशी राजनीतिज्ञ ने पूछा था कि विदेश मंत्री महोदय, आप जहां बैठते हैं, वहां क्या परिवर्तन हुआ है, साउथ ब्लाक में क्या परिवर्तन होने वाला है? मैंने कहा कि मंत्री बदल गया है और कोई परिवर्तन होने वाला नहीं है। कांग्रेस के मित्र शायद भरोसा नहीं करेंगे। साउथ ब्लाक में नेहरू जी का एक चित्र लगा रहता था। मैं आते-जाते देखता था। नेहरू जी के साथ सदन में नोंक-झोंक भी हुआ करती थी। मैं नया था और पीछे बैठता था। कभी-कभी तो बोलने के लिए मुझे वाकआउट करना पड़ता था लेकिन धीरे-धीरे मैंने जगह बनाई। मैं आगे बढ़ा और जब मैं विदेश मंत्री बन गया, तो एक दिन मैंने देखा कि गलियारे में टंगा हुआ नेहरू जी का फोटो गायब है। मैंने कहा कि यह चित्र कहां गया? कोई उत्तर नहीं मिला। वह चित्र वहां फिर से लगा दिया गया। क्या इस भावना की कद्र है? क्या देश में यह भावना पनपे?

ऐसा नहीं है कि नेहरू जी से मेरे मतभेद नहीं थे। मतभेद चर्चा में गंभीर रूप से उभर कर सामने आते थे। मैंने एक बार पंडित जी से कह दिया कि आपका एक मिला-जुला व्यक्तित्व है और आप चर्चिल भी हैं, चेम्बरलिन भी हैं। वह नाराज नहीं हुए। शाम को किसी बैंक्वेट में मुलाकात हो गयी। उन्होंने कहा कि आज तो बड़ा जोरदार भाषण दिया और हंसते हुए चले गये। आजकल ऐसी आलोचना करना दुश्मनी को दावत देना है। लोग बोलना बंद कर देंगे। क्या एक राष्ट्र के नेता, हम आपस में मिलकर काम नहीं कर सकते? क्या एक राष्ट्र के नेता, हम सब आने वाले संकटों का सामना नहीं कर सकते?

एक शताब्दी खत्म हो रही है, दूसरी शताब्दी दरवाजे पर खड़ी है। अगर हमें छोड़कर आप कोई नया प्रयोग करना चाहते हैं तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी लेकिन हम जो प्रयोग कर रहे हैं, उस प्रयोग को आप सफल होने दें, यह मैं आपसे अनुरोध जरूर करना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय, इन शब्दों के साथ में अपना प्रस्तावित भाषण समाप्त करता हूं। चर्चा में जो मुद्दे उठाये जायेंगे, उनका मैं उत्तर के रूप में जवाब दूंगा।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ:

"कि यह सभा मंत्रिपरिषद में अपना विश्वास व्यक्त करती है"

[हिन्दी]

श्री शरद पवार (बारामती) : अध्यक्ष महोदय, सदन के सामने प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में जो प्रस्ताव लाया गया है, उस बारे में मैं सदन के सामने अपने विचार और भावना रखने के लिए खड़ा हुआ हूं। प्रधान मंत्री जी का वक्तव्य मैंने बड़ी शान्ति से सुना। मुझे एक बात माननी होगी कि भाषा की समृद्धि है। जहां तक मुद्दों की समृद्धि है, उस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता। सदन के सामने प्रधान मंत्री जी ने पहले कहा कि हमारे पास शुरू में बहुमत नहीं था, कुछ नम्बर कम थे। आज विश्वास दिलाया कि आज हम बहुमत में पहुंचे हैं कैसे पहुंचे, क्यों पहुंचे, इस पर मैं अभी बोलना नहीं चाहता हूं। मगर हमें यह देखना होगा कि देश की जनता ने इस समय जनादेश निश्चित रूप में क्या दिया। कितने प्रतिशत लोगों ने अटल जी को यह सरकार चलाने का अधिकार दिया। कई पोलीटिकल पार्टियों के गुटों को साथ लेकर उन्होंने चुनाव के पहले गठबंधन बनाया था, यह सब देशवासी जानते हैं। चुनाव के पहले गठबंधन और चुनाव के बाद के गठबंधन के बारे में उन्होंने अपनी भूमिका सदन के सामने रखी है। चुनाव के पहले जो गठबंधन होता है, उस मैं जरूर महत्व देता हूं लेकिन चुनाव के पहले गठबंधन में लोगों के सामने जाते समय एक निश्चित कार्यक्रम लेकर जाना होता है, तो इस गठबंधन को महत्व देने की आवश्यकता है। भारतीय जनता पार्टी ने अपना घोषणा पत्र तय किया। जार्ज फर्नान्डीज साहब ने अपना घोषणा पत्र अलग से तैयार किया और उनके अन्य साथियों ने अपना घोषणा पत्र अलग तैयार किया। सभी घोषणा पत्रों को देखने के बाद आप इस राय पर आ गए कि जिस तरह से देश को चलाना चाहते थे, उसमें आज सरकार में शामिल होने वाली पार्टियों में भी अलग-अलग राय थी, अलग-अलग मुद्दे थे, अलग-अलग विचार और कार्यक्रम थे।

कांग्रेस ने अपना कार्यक्रम लोगों के सामने रखा था। युनाइटेड फ्रंट ने अपना कार्यक्रम लोगों के सामने रखा था। हमने मिलकर चुनाव नहीं लड़ा। लेकिन जब हमने युनाइटेड फ्रंट में शामिल होने वाली सभी पार्टियों की नीतियां देखीं, जो मुद्दे उन्होंने देशवासियों के सामने रखे, वे देखे तो पता लगा कि कांग्रेस और युनाइटेड फ्रंट के घोषणा पत्र में कई ऐसे समान कार्यक्रम हैं जिनके बारे में हम सदन में एकता से, एक विचार से बैठ सकते हैं, बोल सकते हैं, साथ काम कर सकते हैं। इसलिए हमें यह देखना होगा कि इस देश की जनता ने हुकूमत में बैठे हुए लोगों के लिए किस तरह मत दिया और इस तरफ मेरे साथ बैठने वाले हमारे साथियों के लिए किस तरह दिया। भारतीय जनता पार्टी और उनके मित्र पक्ष के जो आंकड़े मेरे सामने आए, वे यह हैं कि उनको 37 प्रतिशत के आस-पास वोट पड़े और कांग्रेस और उनके साथी, युनाइटेड फ्रंट और उनके साथियों को मिलाकर 55 प्रतिशत से ज्यादा वोट

पड़े। इनमें से तेलगू देशम और नैशनल कॉन्फ्रैंस को जो वोट पड़े, वे आंकड़े दूर रखकर मैंने यह फिगर दी है। इसलिए मेरी और मेरे साथ बैठने वाले मेरे सभी साथियों की कुछ जिम्मेदारी है। वह जिम्मेदारी इस देश की जनता ने हमारे उपर रखी है। देश के बारे में उनके मन में एक मजबूत भारत बनाने के, एक सैकुलर भारत बनाने के कुछ सपने थे। इक्कीसवीं शताब्दी में पहुंचने वाले दुनिया का एक शक्तिशाली आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन करने वाला भारत बनाने का और यह काम हम यहां मजबूती से करेंगे। .....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया बीच में टोकाटाकी मत करें।

[हिन्दी]

श्री शरद पवार : 15 पार्टियों और चार निर्दलीयों की मदद से यह सरकार यहां बनी। इनको एक जगह लाने के लिए, मुझे लगता है कि 12 दिन से ज्यादा दिन लगे थे और यह सब करने के बाद ही समर्थन देने वाले कुछ लोगों ने, एक घटक अभी तक सरकार में शामिल नहीं हुआ। उसने बाहर से समर्थन देने का रास्ता पसन्द किया। मुझे गुजराल जी का जो प्रस्ताव बहुमत पुरःस्थापित करने का आया था, तब का आज के प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के भाषण की याद आती है। तब उन्होंने कहा था कि बाहर से समर्थन, इससे बड़ी परेशानी पैदा होती है, सरकार चलाना बड़ा मुश्किल होता है।.....*(व्यवधान)* कुछ दिनों के बाद संघर्ष की परिस्थिति भी पैदा होती है और जब तक ये हुकूमत में शामिल नहीं होंगे, तब तक यहां स्थिरता लाना या इस बारे में विश्वास देना, इसे स्वीकार करना बड़ा मुश्किल है।

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूरी ए.वी.एस.एम. (गढ़वाल) : तब 140 थे।

श्री शरद पवार : यही परिस्थिति आज हमें यहां दिखाई देती है। एक पार्टी ने बाहर से समर्थन दिया। इनमें एक अन्य घटक है, उन्होंने सरकार में शामिल होने से पहले दो दिन खुलेआम सरकार की वचनबद्धता और विश्वसनीयता के बारे में अपना अविश्वास जाहिर किया था। उन्होंने यह बात कही कि प्रादेशिक शक्ति मजबूत होनी चाहिए। एक हद तक मैं इससे सहमत हूं। राज्य मजबूत होने चाहिए मगर भारत सरकार दुबली रहकर यह देश चला नहीं सकती। हमें केन्द्र भी मजबूत चाहिए और हमें राज्य भी मजबूत चाहिए। जब केन्द्र में सरकार बनाने के लिए पार्टी की नीति के बारे में या पार्टी के बारे में किसी एक स्टेट की लीडरशिप की तरफ से अविश्वास की भावना प्रैस कांफ्रेंस के माध्यम से पूरे देशवासियों के सामने जब आती है, तब मेरे मन में एक आशंका पैदा होती है कि स्थिरता का किया हुआ वादा कहां तक और कब तक चलेगा ?

जसवन्त सिंह जी को चेन्नई जाना पड़ा। ये दो दिन तक राह देखते रहे कि चिट्ठी आ रही है, चिट्ठी आ रही है। दो दिन के बाद चिट्ठी आई। ये जाकर वापस आये। ..... *(व्यावधान)* इस सरकार को समर्थन देने वाले एक मान्यवर ऐसे हैं कि उनकी नीति सरकार के बारे में इश्यू बेस्ड शायद तय हो सकती है। इसलिए जो गठबंधन पूरे देशवासियों को स्थिरता के बारे में विश्वास दिलाना चाहता है, इस विश्वास पर आज भरोसा करने की परिस्थिति है, ऐसा मुझे नहीं लगता है। इस सरकार में सबसे बड़ी पार्टी भारतीय जनता पार्टी है। भारतीय जनता पार्टी ने अपना चुनाव घोषणा-पत्र देशवासियों के सामने रखा था। उनको जो समर्थन मिला, यह तो मानना होगा कि उनके चुनाव घोषणा-पत्र को यह समर्थन मिला है। लेकिन आज जो कार्यक्रम हमारे सामने आ रहा है, जो नेशनल एजेंडा बना, आदरणीय राष्ट्रपति जी का अभिभाषण हमने सुना, मुझे मालूम नहीं कि अपने चुनाव घोषणा-पत्र में जो वादे भारत की जनता से भारतीय जनता पार्टी की तरफ से किए गए थे, उनमें से कई मुद्दे ठंडे बस्ते में डाल दिए या कोई सीक्रेट एजेंडा उन्होंने अपने सामने रखा है। सरकार के साथ बैठने वाले बाकी अन्य उनके सहयोगी हैं, उन पार्टियों को भारतीय जनता पार्टी के चुनाव घोषणा-पत्र के बारे में क्या भूमिका रहेगी, यह जानने का हमारा अधिकार है ?

भारतीय जनता पार्टी ने अपने चुनाव घोषणा-पत्र में शुरू में लिखा - भय मुक्त-भ्रष्टाचार रहित शासन.....*(व्यवधान)* हुकूमत में आ गए इसलिए मैं भूख के बारे में कुछ बोलना नहीं चाहता। जहां तक भय की बात है इस देश में सबसे बड़ा राज्य उत्तर प्रदेश है। उत्तर प्रदेश की सरकार की जो आज की स्थिति है और उस सरकार में शामिल होने वाले लोगों के बारे में अखबारों में यह आता है कि किसी का क्रिमिनल रिकार्ड है, किसी के खिलाफ कई केस अदालतों में चल रहे हैं।

कुमारी मायावती (अकबरपुर) : उत्तर प्रदेश सरकार में 28 मंत्री ऐसे हैं जिनका क्रिमिनल रिकार्ड है।.....*(व्यवधान)*

श्री शरद पवार : मैं मायावती जी का आभारी हूं कि उन्होंने सदन के सामने लेटेस्ट इंफार्मेशन रखकर पूरे देशवासियों को जानकारी देने का काम किया है।

तीसरा मुद्दा था - भ्रष्टाचार मुक्त समाज। कौन सा भ्रष्टाचार मुक्त समाज ! हम लोगों ने देखा, पूरे देश में एक नेशनल क्राइसेज की परिस्थिति पैदा हुई। 13 दिन सदन का कारोबार ठप हुआ था। हर दिन अखबारों में सुखराम, सुखराम, एक ही बात आती थी। वही सुखराम आज उप मुख्यमंत्री बनाये गए हैं.....*(व्यवधान)* जिन सुखराम जी को कांग्रेस पार्टी ने अपने दल से बाहर निकाल दिया, वही सुखराम जी.....*(व्यवधान)*

श्री सत्य पाल जैन : बोफोर्स के बारे में भी बोलिए।

श्री शरद पवार : आपके हाथ में हुकूमत है, आप जो चाहे करें, बोलने की कोई जरूरत नहीं है, आप दिखाएं पार्लियामेंट को, क्योंकि आपके पास हुकूमत है।.....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : शरद पवार जी, एक मिनट।

माननीय सदस्यगण, कृपया स्थिति को समझें। दूरदर्शन यहां की कार्यवाही को देश-विदेश में प्रसारित कर रहा है। कृपया स्थिति को समझें। जब विपक्षी नेता बोल रहे हैं तो कृपया बीच में उन्हें न टोकें

.....(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री शरद पवार : जिस मुद्दे पर 13 दिन इस देश की लोक सभी बंद हुई थी, राज्य सभा बंद हुई थी, वही महानुभाव आज भारतीय जनता पार्टी के राज में मुख्य मंत्री के बाद नम्बर दो के मंत्री की हैसियत से बैठे हैं। जिनके लड़के के बारे में केस दायर किए थे, उनको आज भारतीय जनता पार्टी ने राज्य सभा में भेजने का प्रबंध किया है।

मध्याह्न 12.00 बजे

ये लोग ही भ्रष्टाचार रहित समाज की स्थापना की बात करते हैं। इस बारे में मुझे ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं है। मुझे याद है जब लोहिया जी ने.....*(व्यवधान)* मुझे याद है जब आडवाणी जी की यात्रा की शुरूआत हुई, तब उन्होंने कहा था कि हमारा श्री राम है और कांग्रेस का सुखराम है। वही कांग्रेस का सुखराम आज भारतीय जनता पार्टी का सुखराम बन गया.....*(व्यवधान)* मुझे कुछ ज्यादा कहने की जरूरत नहीं है। जो यहां राजनैतिक स्थिरता की बात कही गई, मैं मानता हूं कि भारत जैसे देश में आज स्थिरता की आवश्यकता है। वह स्थिरता कब पैदा हो सकती है, कब मिल सकती है? समाज में एकता हो तो स्थिरता पैदा हो सकती है। सभी वर्गों में विश्वास पैदा करने में हम कामयाब हों तो समाज में एकता पैदा हो सकती है। मंदिर मस्जिद जैसे मुद्दों से समाज में एकता कभी पैदा नहीं हो सकती।

आज जो कमियां हैं, वे कमियां हैं कि इस देश के मूलभूत सिद्धांतों को छोड़कर जब हम आगे जाने के लिए कदम उठाते हैं, उसकी हमें कीमत देनी पड़ती है।.....*(व्यवधान)* भारतीय जनता पार्टी और उनके घोषणा-पत्र पर भी हमें ध्यान देना पड़ेगा। जहां तक एकता की बात है, इसमें सैकुलरिज्म को हम नजरअन्दाज नहीं कर सकते। अटल जी ने यहां कहा कि इस देश के समाज में, सभी धर्मों को, सभी वर्गों को, हम सभी लोगों को एक रहना पड़ेगा और इसके लिए उनको समझाना पड़ेगा। मैं इनसे सहमत हूं। लेकिन जो घोषणा-पत्र इन्होंने दिया, उसमें क्या लिखा है: ''हमारी राष्ट्रवादी परिकल्पना भारत की केवल भौगोलिक या राजनैतिक पहचान से बंधी हुई नहीं है बल्कि यह हमारी चिरन्तक सांस्कृतिक विरासत की गरिमा है।'' यह सांस्कृतिक विरासत धर्म और भाषा सभी तत्वों का केन्द्रबिन्दु है। यह सभ्यता की पहचान है और भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को निर्धारित करती है जो हिन्दुत्व का मूल है। .....*(व्यवधान)* सांस्कृतिक राष्ट्रवाद जिसका मूल हिन्दुत्व है। .....*(व्यवधान)* हिन्दू राष्ट्रवाद की संकल्पना मानना चाहते हैं? ....*(व्यवधान)* यहां सदन में हमारे रेल मंत्री जी हैं, आदरणीय हमारे दोस्त नीतीश कुमार जी हैं। .....*(व्यवधान)* मुझे याद है, दिसम्बर 1990 में इसी सदन में, आज सरकार में बैठने वाले हमारे एक मित्र ने एक वक्तव्य दिया था। वह आज कैबिनेट मंत्री हैं। उनका जो वक्तव्य था, उसे यहां मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। भारतीय राष्ट्रवाद की जगह जो हिन्दू राष्ट्रवाद लाना चाहते हैं, उन्हें यह सोचना चाहिए कि तब देश को एक रखना कठिन हो जाएगा। यह हमारे साथी नीतीश कुमार जी ने इस सदन में कहा था।..... *(व्यवधान)* आज मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि यहां पर हिन्दू राष्ट्रवाद की जो संकल्पना उन्होंने सदन के सामने रखी, घोषणा-पत्र में रखी और लोगों के सामने रखकर, उनसे समर्थन लेकर जो भारतीय जनता पार्टी आई, इनकी विचारधारा से आप सहमत हैं या नहीं, इसका जवाब उनको देना पड़ेगा।

मंदिर के विषय को लेकर इस देश में संघर्ष हुए। मुझे बहुत खुशी है, प्रधान मंत्री जी ने बयान दिया कि अयोध्या मुद्दा पार्टी के लिए कोई महत्व नहीं रखता। बड़ी अच्छी बात है। उन्होंने कहा कि अयोध्या का मुद्दा भारतीय जनता पार्टी के लिए बहुत महत्व का नहीं है.....*(व्यवधान)* । मैं उनके चुनाव घोषणा पत्र के इस पैरा को यहां पढ़ना चाहता हूं। इसमें लिखा है - भारतीय जनता पार्टी को निश्चित विश्वास है कि हिन्दुत्व में राष्ट्र के नवोदय और सुदृढ़ करने तथा राष्ट्र निर्माण के कठिन कार्य को संपन्न करने की संभावनायें हैं; यह उच्च स्तर की राष्ट्र भक्ति पैदा कर सकता है और निश्चय ही सभी में चेतना पैदा करता है, जिससे देश में उच्च स्तर की निपुणता आ सकती है और बेहतर प्रदर्शन किया जा सकता है। ऐसे संगठनशील विचारों को ध्यान में रखकर भाजपा अयोध्या में श्री राम मंदिर निर्माण के रामजन्म भूमि आन्दोलन में शामिल हुई थी। इतिहास के इस सबसे बड़े जन आन्दोलन ने भारत की आत्मविस्मृत राजनीति को फिर से जागृत कर दिया और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की नींव को सुदृढ़ किया। इसमें दो बातें हैं। एक तो अटल जी ने कहा कि अयोध्या का मुद्दा हमारे सामने नहीं है, लेकिन चुनाव घोषणा पत्र में उन्होंने यह मुद्दा रखा है। दूसरी एक और सबसे बड़ी गम्भीर बात उन्होंने लिखी है - इतिहास के सबसे बड़े जन-आन्दोलन में भारत की राजनीति आत्म-विश्वास की है। इस देश में महात्मा गांधी के नेतृत्व में आजादी की जंग हुई। क्या यह इससे भी बड़ा जन-आन्दोलन है? क्या आप नया इतिहास लिखना चाहते हैं? आगे आने वाले लोगों के लिये स्वतंत्रता के आन्दोलन के महत्व को कम करने की कोशिश आप कर सकते हैं। आप इतिहास बदलना चाहते हैं। इससे यही बात साफ हो रही है। आपने भले ही अभिमत की बात कही है, मगर जो आपका छुपा हुआ एजेंडा है, सिक्रेट एजेंडा है, यह एजेंडा देशवासियों में एक तरह से भय की स्थिति पैदा करता है। आपकी पार्टी के अध्यक्ष और आज के गृह मंत्री का ब्यान मैं आपके सामने पढ़ना चाहता हूं। उन्होंने कहा है - अयोध्या में मंदिर बनने तक शान्त नहीं बैठेंगे। यह उनका 7 फरवरी, 1998 का बयान है, कोई बहुत पुराना नहीं है। इसमें आगे लिखा है - भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष, श्री लाल कृष्ण आडवाणी, ने आज यहां आकर कहा कि विभिन्न दलों

के गठबन्धन के बाद भी भारतीय जनता पार्टी ने अपने सिद्धान्तों से कोई समझौता नहीं किया। उन्होंने अयोध्या मुद्दे को भावनात्मक रूप देते हुए कहा कि अपने राजनीतिक जीवन में जो कुछ सीखा और मथा है, उसमें अयोध्या का राम मंदिर सबसे महत्पूर्ण मुद्दा है। राम जन्म भूमि के आन्दोलन से भारतीय जनता पार्टी को यह लोकप्रियता मिली और वह देश की सबसे बड़ी पार्टी बनी है। ऐसे में जो लोग भाजपा को राम मंदिर से पीछे हटने की बात कहते हैं, उसमें सच्चाई नहीं थी। आडवाणी जी ने कहा - भारतीय जनता पार्टी के चुनाव घोषणा-पत्र जारी होने से पहले, अन्य राजनीतिक दलों को यह आशा थी कि इस बार भारतीय जनता पार्टी राम मंदिर के मुद्दे को नहीं उठाएगी, परन्तु भाजपा ने अपने चुनाव घोषणा-पत्र में इसको प्राथमिकता देकर यह साबित कर दिया कि वह जनभावना का आदर करती है। यह इस देश के गृह मंत्री का चुनाव में दिया बयान है।

श्री मोहन सिंह (देवरिया) : अपने नेता के बारे में भी उनकी यही राय है।

श्री शरद पवार : उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री का 11 फरवरी का बयान है। उसमें मुख्य मंत्री ने कहा कि लोकतंत्र में श्री राम मंदिर जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर सब पार्टियों का दृष्टिकोण जानने का हक जनता का है। इससे जनता को फैसला लेने की सुविधा होगी।

भारतीय जनता पार्टी बता चुकी है कि वह अयोध्या में राम मंदिर बनाएगी। अब आपके दल भी स्पष्ट करें कि क्या वे वहां मस्जिद बनाना चाहते हैं? उन्होंने कहा है कि राम मंदिर मुद्दा अदालत में कभी हल नहीं हो सकता। इसमें हमें कुछ रास्ता निकालना होगा और हम रास्ता निकालेंगे। भारत सरकार की हुकूमत हमारे पास आने के बाद हम इसमें सफल होंगे.....*(व्यवधान)*

अब मैं अपने साथी जार्ज फर्नान्डीज साहब और बहन ममता जी से पूछना चाहता हूं कि जैसा अडवाणी जी ने कहा है, जो भारतीय जनता पार्टी ने अपने घोषणा-पत्र में दिया है तथा जो मुद्दा लेकर वे जनता के पास गये, कुछ हद तक उस मुद्दे पर उनको समर्थन भी मिला और जिसे पूरा करने की उनकी कोशिश रहेगी - उस पर आप लोगों की क्या नीति रहेगी? मैं प्रधान मंत्री अटल जी से पूछना चाहता हूं कि जब आप कहते हैं कि अयोध्या का मुद्दा आज की परिस्थिति में महत्व का मुद्दा नहीं है तो छः साल पहले इस देश में जो कुछ हुआ, वह क्यों हुआ? मैं मुम्बई शहर से आता हूं। वहां कितने बड़े पैमाने पर खून-खराबा हुआ, कितने लोगों की हत्याएं हुई और करोड़ों रुपये की सम्पत्ति कैसे जल गयी?.....*(व्यवधान)*

एक माननीय सदस्य : किसने किया?

श्री शरद पवार : किसने किया?.....*(व्यवधान)*

श्री अजीत जोगी (रायगढ़) : अगर ये लोग हमारे नेता को नहीं बोलने देंगे तो हम भी इनके नेता को नहीं बोलने देंगे। .....*(व्यवधान)*

श्री सत्य पाल जैन : अब क्यों चिल्लाते हो। पहले क्यों इन्ट्रप्ट कर रहे थे?

श्री शरद पवार : किसने किया? इसकी जांच करने के लिए मुम्बई के सिटिंग हाई-कोर्ट जज श्री कुलकर्णी की नियुक्ति हुई थी। इस कमीशन का काम जब शुरू था तब महाराष्ट्र की भाजपा-शिवसेना सरकार ने इस कमीशन को समाप्त करने का निर्णय लिया। मैं अटल जी को धन्यवाद देता हूं कि जब उनकी तेरह दिन की सरकार थी तब उन्होंने महाराष्ट्र सरकार को संदेशा भेजा कि इस कमीशन को रिवाईव करिये। वह कमीशन रिवाईव हुआ। इस कमीशन की अंतिम रिपोर्ट महाराष्ट्र सरकार के पास आई है। पिछले कई हफ्ते से वहां महाराष्ट्र की विधान सभा में और विधान परिषद में संघर्ष चला कि वह रिपोर्ट सदन में रखिये। वह रिपोर्ट आई नहीं है क्योंकि इस रिपोर्ट में वहां खून-खराबा किसने किया, लोगों की हत्याएं किसने की, वहां आग लगाने का काम किसने किया और कौनसी साम्प्रदायिक शक्ति इसके पीछे थीं - ये सब उसमें हैं।.....*(व्यवधान)* हाई कोर्ट के सिटिंग जज का यह निष्कर्ष है। अगर आज यह राम-मंदिर का मुद्दा महत्व का मुद्दा नहीं होता तो छः साल पहले देश में खून-खराबे की आवश्यकता क्या थी, मस्जिद तोड़ने की आवश्यकता क्या थी, समाज में दरार पैदा करने और समाज की एकता पर हमला करने की आवश्यकता क्यों थी? इसको जब तक आप नहीं बताएंगे तब तक आपके ऊपर हमारे जैसे किसी भी व्यक्ति को भरोसा नहीं होगा।.....*(व्यवधान)* यह मुद्दा खासतौर से हम आपके सामने रखना चाहते हैं।

श्री शकुनी चौधरी (खगड़िया) : मेरा पाइंट ऑफ आर्डर है।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना सहयोग दें।

[हिन्दी]

ऐसे नहीं।

..... *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपनी सीट पर बैठें। अपनी सीटों पर बैठिए।

[हिन्दी]

श्री शरद पवार : सैकुलरिज्म के इस देश में अनन्य असाधारण महत्व है। अगर उसकी संकल्पना किसी ने डाइल्यूट करने की कोशिश की तो यह समाज कभी एक नहीं रहेगा। जब तक समाज में एकता नहीं रहेगी, तब तक स्थिरता पैदा नहीं होगी इस बात को ध्यान में रखना होगा। मैं यह बात सदन के सामने कहना चाहता हूं। आपकी ये कमियां हैं। इन कमियों की तरफ आपका ध्यान पहुंच नहीं सकता। आपकी ये सबसे बड़ी कमियां हैं। आपको इनके बारे में सोचना होगा। आप जब तक अपनी नीति साफ नहीं करेंगे तब तक देश के सभी वर्गों का विश्वास हासिल करने में कामयाब नहीं होंगे।

[श्री शरद पवार]

इसमें एक बात और है। यहां स्वदेशी की बात कही गई। मेरे जैसा व्यक्ति जो देश की तरक्की के बारे में सोचता है, वह बहुत कुछ बातें सोचने को मजबूर हो जाता है। दुनिया किस तरफ जा रही है? पड़ोसी देशों में आर्थिक क्षेत्र में जो परिवर्तन हो रहे हैं, मैं हमेशा उसका बड़े नजदीक से अभ्यास करने की कोशिश करता हूं। कई बार लगता है कि भारत जैसे देश में सब कुछ है, यहां टैलेंट हैं, मेहनत करने वाले समाज का बहुत बड़ा वर्ग है, यहां पर खेती अच्छी है, यहां पानी की उपलब्धी है, यहां भूगर्भ में सम्पत्ति है, यहां साल में बहुत महीनों तक और बहुत दिनों तक उपलब्ध रहने वाला सूरज का प्रकाश है। अगर हम इनफ्रांस्ट्रक्चर फील्ड पर मिल कर और ज्यादा ध्यान देकर कदम उठाएंगे तो कुछ दिनों में प्रगतिशील राष्ट्रों के बराबर पहुंच जाएंगे। हम जब परिवर्तन और विकास की बात करते हैं, अगर उस समय हमारा दृष्टिकोण कुछ राज्यों तक या देश तक सीमित रहेगा तो यहां परिवर्तन लाने की मर्यादा आड़े आ सकती है। इसलिए हम वैश्वीकरण पूरी तरह से नजरअंदाज नहीं कर सकते।

स्वदेशी शब्द गांधी जी का था। महात्मा गांधी जी ने जब स्वदेशी के विचार पूरे देश के सामने रखे तो उनके मन में विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार की भावना थी। जो चीजें दुनिया के अन्य देशों में पैदा होती थीं, अगर उन्हें यहां बेचने की कोशिश होती थी तो वह उनका विरोध करते थे। उन्होंने इसके खिलाफ आन्दोलन भी किया था। मैं यह मानता हूं कि भारत का निर्माण भारत के लोग करें, लेकिन उसके साथ-साथ गांधी जी के स्वदेशी के बारे में जो विचार थे, उन्हें हम नजरअन्दाज़ नहीं कर सकते। कांग्रेस ने ही स्वदेशी शब्द को लेकर इस देश में स्वतंत्रता का ज्वर पैदा किया था। स्वदेशी एक ऐसा मंत्र था जिस में आदर, स्वाभिमान और आत्मविश्वास की भावना थीं। आज भारतीय जनता पार्टी और उनकी सरकार में शामिल होने वाले कई हमारे साथी जिस तरह से स्वदेशी की भावना देश के सामने रखते हैं, मुझे ऐसा लगता है कि वह इससे डर पैदा करने वाली मानसिकता का दर्शन पूरे देशवासियों को कराते हैं। कई ऐसे क्षेत्र हैं चाहे वे उसे बेसिक डेवलपमेंट कहें, इनफ्रास्ट्रक्चर कहें, उनके लिए बहुत बड़े पैमाने पर राशि रखने की जिम्मेदारी हम सब की है। जब देश के बाकी कामों के लिए हमारे पास राशि की कमी होती है तो ऐसे क्षेत्र में बाहर से लोग आएं और एक हद तक सहयोग दें तो हमें उनसे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। कहा गया कि यहां ईस्ट इंडिया कम्पनी आएगी। मुझे याद है जब यहां एनरॉन का प्रोजैक्ट क्लीयर हुआ था तो उसको लेकर भारतीय जनता पार्टी ने महाराष्ट्र में संघर्ष और आन्दोलन किया था। वे बार-बार कहते थे कि यहां ईस्ट इंडिया कम्पनी आएगी। जहां एनरॉन का प्रोजैक्ट लगना था, वहां बंदरगाह बनाने की बात थी। कहते थे कि वहां अमरीका का दसवां फ्लीट आएगा और हमारे देश पर आक्रमण हो जाएगा। बहुत सी बातें की थीं पर हमें खुशी है कि उन 13 दिनों में आपने वह प्रकल्प क्लियर किया था। उसका कुछ फायदा हो ही गया। मगर आज जो भय की मानसिकता हम देश के सामने रखना चाहते हैं, मुझे लगता है कि इससे देश का नुकसान होगा। इस देश की नयी पीढ़ी को, विद्वानों को हमारे शासन पर भरोसा हो, ऐसी तैयारी हमारी होनी चाहिए और मुझे विश्वास है कि इस देश की नयी पीढ़ी हो, विद्वान हों या मजदूर हों, ये सभी लोग इस देश को मजबूत करने में पीछे नहीं रहेंगे।

पिछले कुछ सालों से इस देश में जो कुछ इनवेस्टमेंट हुआ, इस देश में जी.डी.पी. का कुल दो प्रतिशत से ज्यादा बाहर का इनवेस्टमेंट नहीं हुआ, इसके द्वारा हमारे मन में जो भय पैदा करने का काम किया जाता है, उससे कुछ लाभ नहीं होगा। आज जब आर्थिक क्षेत्र में महाशक्ति पैदा करने की बात की जाती है, तो मेरे मन में इस बात की चिन्ता होती है कि स्वदेशी की गलत व्याख्या करके हम अपनी आर्थिक प्रगति को रोकने का काम करेंगे जिसकी कीमत आगे आने वाली पीढ़ियों को चुकानी पड़ेगी। यह भय मेरे मन में भारतीय जनता पार्टी और उनके साथियों की हुकूमत के बारे में है। आपने आर्थिक ऐजेण्डा बनाया। मैं बड़ा चिन्तित हूं कि हर दिन हमारे साथी जार्ज फर्नान्डीज एक आर्थिक ऐजेण्डा देते थे। यह सरकार भी अजीब थी। नेशनल ऐजेण्डा अलग आता था, जार्ज साहब का ऐजेण्डा अलग आता था और परराष्ट्र नीति के बारे में हेगड़े जी का ऐजेण्डा अलग आता था। अच्छा हुआ कि मिनिस्टर बनने के बाद वे अलग-अलग ऐजेण्डा बंद हो गए मगर उनके मन में जो विचार है, वे बंद नहीं होंगे और इसकी कीमत हमें आने वाले सालों में चुकानी पड़ेगी।

एक और शंका मेरे मन में इस सरकार के बारे में है। अटल जी ने जो कहा, मैं उनसे सहमत हूं, कि देश की राष्ट्रीय नीति पर कई सालों तक इस देश में विचार हुआ, चर्चा हुई और आम सहमति से एक राष्ट्रीय नीति बनी, जिसका समर्थन इस सदन में बैठने वाले सभी साथियों ने सालों-साल किया है। सरकार में बैठने वाले कुछ साथियों के बयान पढ़ने के बाद आज मेरे मन में चिन्ता पैदा होती है। देश के रक्षा मंत्री का बयान मैंने पढ़ा। अभी-अभी लोहिया जी के स्मृति दिन के बारे में और चीन के पास भारत की जो जमीन है, उस पर एक वक्तव्य मैंने पढ़ा। आपके नेशनल ऐजेण्डा में पड़ोसी देशों के साथ अच्छे रिश्ते रखने की बात कही गई है और जिस तरह स्टेटमेंट दिया गया है उसे आपको देखना होगा। मैं कहना चाहता हूं कि अटल जी को इस बारे में देश के सामने सफाई देनी चाहिए और बताना चाहिए कि स्थिति क्या है। मुझे याद है कि साल डेढ़ साल पहले चीन के राष्ट्र प्रमुख जब भारत में आए थे तो एक बड़ा डिमानस्ट्रेशन करने का काम इन्हीं रक्षा मंत्री जी के नेतृत्व में हुआ था। मुझे इस बारे में याद है, मैं इसे भूला नहीं हूं और इसका असर पड़ोसी देशों पर क्या होगा, इसे हम नजरंदाज नहीं कर सकते। इसकी कीमत हमें चुकानी पड़ेगी।

मैंने सिर्फ दो-चार मुद्दे यहां पर रखे हैं। मुझे दिखाई देता है कि इस सरकार की नीतियों में और समझ में बहुत अंतर है। इनमें बहुत कंट्राडिक्शन्स हैं और कंट्राडिक्शन्स से भरा हुआ कार्यक्रम लेकर, देश को आगे ले जाने का विचार देश के सामने इन्होंने रखा है, उसकी यात्रा ठीक होगी या नहीं, इस पर विश्वास करना मेरे जैसे व्यक्ति के लिए बड़ा मुश्किल है। इसलिए आज के प्रस्ताव का विरोध करना मेरा फर्ज बनता है।

मैं सदन का ज्यादा समय नहीं लेना चाहता हूं मगर एक बात साफ कहना चाहता हूं कि इस देश को आज स्थिरता की आवश्यकता

है। रूलिंग पार्टी के पास, प्रधान मंत्री के पास अगर आवश्यक बहुमत का नंबर हो तो सरकार चलाने का उनका अधिकार हम जरूर मानेंगे। लेकिन अगर पार्टियों को तोड़कर, जिसे लेकर कल सदन के कई घंटे बीत गए, इस रास्ते से जाकर अगर सदन में बहुमत बनाने की कोशिश कल होगी तो ऐसी परिस्थिति कल होगी कि ऐसी परिस्थिति बार-बार भी आ सकती है। मुझे विश्वास है कि ऐसी परिस्थिति पैदा न होने देने के लिए कदम सामने की तरफ से उठेगा और जो कंट्राडिक्शंस आप में हैं, इन कंट्राडिक्शंस को लेकर अगर आप चलेंगे तो मुझे मालूम नहीं कि आप कामयाब होंगे या नहीं। आपने राज्यों के दलों और उनके नेताओं के साथ कुछ अंडरस्टैंडिंग की होगी, लेकिन वह कहां तक रहेगी, कब तक चलेगी, इस पर विश्वास करना मुश्किल है। इसलिए यह स्थिरता कहां तक रहेगी इस पर देशवासियों को विश्वास नहीं है .....*(व्यवधान)* इसी के साथ मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : वह नहीं मान रहे हैं।

[हिन्दी]

श्री मोहन रावले (मुम्बई - दक्षिण) : मुम्बई शहर में जो दंगे हुए थे वे किसने कराये थे।

श्री दत्ता मेघे (वर्धा) : वह तुमने कराये थे।

श्री मोहन रावले : वह बिल्डर्स ने कराये थे।

श्री दत्ता मेघे : वह दंगे आपकी शिवसेना ने कराये थे।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अब श्री सोमनाथ चटर्जी जी बोलेंगे।

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : अध्यक्ष महोदय, मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं क्योंकि इसे मैं अपना राष्ट्रीय कर्तव्य समझता हूं। मैंने प्रधान मंत्री के भाषण को बहुत एकाग्रचित्त होकर सुना है तथा उन्हें कभी भी बीच में नहीं टोका। मैं उस नारे के बारे में सोच रहा था जिसका इस बार प्रयोग किया गया कि "अबकी बारी अटल बिहारी" लेकिन कैसा अटल बिहारी, कौन अटल बिहारी ? क्या यह वह अटल बिहारी है जो अपराध बोध से ग्रस्त है और जो स्वयं द्वारा निर्मित गठबंधन के बोझ को महसूस कर रहा है ? उनके भाषण में यह अपराध भावना बिल्कुल भी परिलक्षित नहीं होती है। उन्होंने आम सहमति की बात की है लेकिन उस आम सहमति का आशय स्वयं को उनकी तरह की राजनीति के समक्ष समर्पित करना है।

महोदय, मैं नहीं समझता कि भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में पहले कभी इतना ज्यादा अवसरवादी, इतना ज्यादा सत्तालोलुप और इतना अधिक निर्लज्ज तथा संदिग्ध राजनीतिक गठबंधन देखने को मिला हो जितना कि आज सहयोगी दलों के रूप में पाखण्ड करता हुआ देखने को मिल रहा है।

अध्यक्ष महोदय, इस देश की धर्मनिरपेक्षता, एकता और अखण्डता के प्रति हमारी वचनबद्धता केवल एक नारा है। हमारे संविधान में एक धर्म निरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणतंत्र का प्रावधान किया गया है। हमारे सर्वोच्च न्यायालय ने यह व्याख्या दी है कि धर्म निरपेक्षता हमारे संविधान की मूलभूत विशेषताओं में से एक है जिससे हम सभी बंधे हुए हैं। लेकिन हमारे समाज की इस बहु-धर्मी, बहु-जातीय और बहु-भाषीय विशेषता पर आज गंभीर हमला किया जा रहा है। हिन्दुत्व के संबंध में, जिसके बारे में श्री शरद पवार जी बोल चुके हैं, मैं भाजपा का चुनाव घोषणापत्र दोबारा नहीं पढ़ना चाहूंगा। यह राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के 'एक राष्ट्र एक लोग और एक संस्कृति' के नारे पर आधारित है और उन्हें ईसाई, मुसलमान और पारसी जैसे अल्पसंख्यक लोग तभी स्वीकार्य हैं जब वे भारतीय रीति-रिवाज अथवा हिन्दुत्व-जैसा वे इसे समझते हैं- का अनुसरण करें। हमने अन्य धर्मों, अन्य विचारों और अन्य दृष्टिकोणों के प्रति भाजपा तथा उसके समर्थकों की असहिष्णुता को देखा है। मुझे पता है कि जब मैं बाबरी मस्जिद विध्वंस की बात करता हूं तो उन्हें बुरा लगता है.....*(व्यवधान)* लेकिन यह असहिष्णुता नहीं तो और क्या है ? हमने चुनाव के कुछ ही दिन पूर्व दिल्ली में आधुनिक कला के एक संग्रहालय पर हमला किए जाने का समाचार पढ़ा। भारतीय जनता पार्टी के एक अग्रणी नेता द्वारा यह हमला किया गया क्योंकि उन्हें श्री एम.एफ. हुसैन द्वारा बनाई गई दो पेंटिंग पसंद नहीं थीं तथा इस देश के प्रख्यात कलाकार के साथ मारपीट की गई। यह दूसरों के प्रति इनकी सहिष्णुता की भावना है। इस देश के प्रख्यात साहित्यकार जो साहित्य अकादमी के सदस्य हैं ने भोपाल स्थित भारत भवन के भविष्य के बारे में टीका टिप्पणी की है। .....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री प्रकाश विश्वनाथ परांजपे (ठाणे) : इनकी ये बात सुन-सुन कर तो हम थक गए हैं। इन्हें सिर्फ यही बात कहनी है। .....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : महोदय, यह तो असहिष्णुता है। वे दूसरों की बात सुनने के लिए भी तैयार नहीं हैं और अब सर्वसम्मति की बात कर रहे हैं जो बहुत ही खोखली लगती है। यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाना चाहिए कि हम देश के लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता के प्रश्न पर कभी भी कोई समझौता नहीं करेंगे। हम इस देश की एकता तथा अखंण्डता को कभी नष्ट नहीं होने देंगे। इस देश का पहले ही एक बार विभाजन हो चुका है। .....*(व्यवधान)* आप भाषण पसंद नहीं करते हैं। हम यहां किस लिए आये हैं ? हाथापाई करने के लिए आये हैं ?

महोदय, हमारा देश अभी तक सुदृढ़ नहीं हुआ है। हमें ऐसी स्थिति नहीं पैदा करनी चाहिए जिससे हमारे देश की एकता तथा अखण्डता के लिए खतरा हो।

महोदय, हमें यह बात बारंबार बताई गई है, आज भी प्रधान मंत्री जी ने इसका उल्लेख किया है कि इस देश की जनता ने परिवर्तन

[श्री सोमनाथ चटर्जी]

हेतु मतदान किया है, एक योग्य प्रधान मंत्री के नेतृत्व में स्थिर सरकार हेतु मतदान किया है तथा चुनाव से पूर्व ही विभिन्न राजनीतिक दलों में गठबंधन हो गया था। हमें आंकड़ों की जानकारी है, हमने इसके बारे में सुना भी है तथा मुझे इस बात को दोहराने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन मैं समझता हूं कि चुनाव-पूर्व हुए गठबंधन के मिश्रण को तोड़ने का समय आ गया है।

महोदय, मैं माननीय राष्ट्रपति जी का पूर्ण आदर तथा सम्मान करता हूं लेकिन मुझे खेद है कि शायद उन्होंने भी इसे मान लिया कि चुनाव-पूर्व गठबंधन हुआ था। महोदय, उस समय 13 दिन की सरकार के बाद मैंने यह कहा था कि संविधान के विरुद्ध उठाए गए कदम की समाप्ति हुई है मैंने सदन में यह कहा था कि मैं श्री अटल बिहारी वाजपेयी को देश के भूतपूर्व प्रधान मंत्री के रूप में स्थायी तौर पर देखना चाहता हूं। लेकिन मैं गलत सिद्ध हुआ हूं, मैं गलत इसलिए हुआ हूं क्योंकि मैंने गलती से मान लिया कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी विवेकपूर्ण व्यक्ति हैं। मैंने मान लिया कि वे कतिपय बुनियादी मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध हैं तथा तरह की गंभीर भूल मेरे जैसे सीधे-सादे राजनैतिक कार्यकर्त्ता द्वारा की गई। मेरा विश्वास था भारतीय जनता पार्टी राजनीतिक नैतिकता में विश्वास करती है तथा हमें इसके बारे में उच्च स्वर से हमें बताया गया है, यह मेरी भूल थी।

महोदय, हमने भारतीय जनता पार्टी, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, उनके दल के मित्रों तथा शायद उनके वर्तमान राजनैतिक सहयोगियों की तरफ से भी देश को भ्रष्टाचार से होने वाले खतरों के संबंध में सुना है। श्री शरद पवार जी ने हमें ठीक ही स्मरण कराया है कि हम किस प्रकार इस सभा में श्री सुखराम के क्रियाकलापों के विरोध में एकत्रित हुए थे। हमें याद है कि किस प्रकार श्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा उनके मित्रों के द्वारा श्री लालू प्रसाद यादव की आलोचना की गई थी। मैंने भी इस सभा में उनके त्यागपत्र की मांग की थी। मैं इसे स्वीकार करता हूं।

महोदय, मुझे याद है कि तमिलनाडु की कुछ घटनाओं की इस सभा में किस प्रकार आलोचना की गयी थी। हमने श्री लालकृष्ण आडवाणी द्वारा जब वह संदेह के दायरे में थे इस सदन की सदस्यता से त्यागपत्र देने तथा चुनाव में भाग नहीं लेने के उनके निर्णय की प्रशंसा की थी। यह प्रसन्नता की बात है कि वे अब इससे उबर चुके हैं। उस समय हमने इसे भारतीय जनता पार्टी की नैतिकता समझा था। लेकिन श्री अटल बिहारी वाजपेयी एक मुखौटा मात्र हैं अतः भ्रष्टाचार से लड़ने की आपकी सभी प्रतिबद्धताएं भी खोखली हैं। इसीलिए आज हम संविधान को तोड़ने-मरोड़ने का एक और प्रयास देख रहे हैं। हमने पाया है कि उनकी सभी प्रतिबद्धताओं उनकी सभी तथाकथित नैतिक पक्ष की औपचारिकताओं का हर दृष्टि से उल्लंघन हुआ है, इसका एकमात्र उद्देश्य जैसा कि पहले श्री लालू जी ने कहा है, लेनदेन के आधार पर किसी तरह सत्ता की प्राप्ति है।

महोदय, गठबंधन का अर्थ एक साथ मिलकर काम करने से है। लेकिन किस उद्देश्य हेतु गठबंधन किया जाए। यदि आप इसके शाब्दिक अर्थ को ही समझें फिर भी कोई उद्देश्य तो होना ही चाहिए। आम आधार क्या था? यह ठीक ही कहा गया है। उद्देश्य क्या था? क्या आर्थिक नीति के संबंध में एकता थी अथवा क्या भारतीय जनता पार्टी और अन्य दलों में से किसी दल के उद्देश्यों में एकता थी। जैसाकि ठीक ही उल्लेख किया गया है कि अलग-अलग चुनाव घोषणा पत्र नहीं हो सकते थे। समता दल, ए.आई.ए.डी.एम.के. तथा तृणमूल कांग्रेस अपने अपने चुनाव घोषणा पत्र बना सकते थे। इनके अपने-अपने घोषणा पत्र थे। विभिन्न दलों की विदेश नीति क्या है? स्वदेशी के मामले में उनका क्या रवैया है। भूमि सुधार के मामले में उनका क्या रवैया है। हम इनके बारे में कुछ नहीं जानते हैं। उनके पास कोई आम नीति नहीं है, कोई आम उद्देश्य नहीं है। संबंधित दलों का उद्योग तथा बहुराष्ट्रीय निगमों के प्रति क्या रवैया है। कोई आम कार्यक्रम तथा चुनाव घोषणा पत्र नहीं था और किसी सिद्धांत और कार्य के प्रति कोई प्रतिबद्धता अथवा एकता नहीं थी। तब यह गठबंधन क्या था? आज मैं 1 सितम्बर, 1997 को इस सभा में स्वतंत्रता प्राप्ति के स्वर्ण जयंती वर्ष में आयोजित विशेष सत्र के अंत में सर्वसम्मति से पारित संकल्प को याद करता हूं। इस संकल्प को अध्यक्षपीठ, पूर्व माननीय अध्यक्ष श्री पी.ए. संगमा द्वारा लाया गया था। महोदय, मैं इसकी कुछ पंक्तियां उद्धृत कर रहा हूं :

"संविधान की प्रस्तावना को मार्गनिर्देशक मानकर राष्ट्र की स्थिति पर प्रतिविम्बित करते हुए....

.... कि अर्थपूर्ण चुनाव सुधार किए जाएं ताकि हमारी संसद और अन्य विधायी निकायों में संतुलन हो और ये लोकतंत्र का प्रभावी माध्यम हो सकें, और यह कि राजनैतिक जीवन और प्रक्रियाएं अपराधीकरण सहित अवांछनीय बाह्य कारकों के शासन पर प्रतिकूल प्रभाव से मुक्त रह सकें।

कि निरंतर और क्रियान्मुख प्रयास किए जायें ताकि सार्वजनिक जीवन में बेहतर पारदर्शिता, सत्यनिष्ठा और जवाबदेही सुनिश्चित की जा सके ताकि संसद और अन्य विधायी निकायों की स्वतंत्रता' प्रभुता और मर्यादा को सुनिश्चित किया जा सके और बढ़ाया जा सके, कि विशेषरूप से सभी राजनैतिक दलों द्वारा ऐसे सभी कदम उठाये जाएं जिससे कि हमारी राजनीति को अपराधीकरण और इसके प्रभाव से मुक्त रखने के हमारे उद्देश्यों की पूर्ति हो सके।"

इस सभा के एक महान नेता ने कहा था और मैं उद्धृत करता हूं :

"राजनीतिक अपराधीकरण का दानव हमारे लोकतंत्र के बुनियादी सिद्धांतों को नष्ट कर रहा है।"

मैं लोक सभा द्वारा जारी वाद-विवाद के सारांश से उद्धृत कर रहा हूं :

"चुनाव में भाग लेने वाले उम्मीदवारों में से अयोग्य उम्मीदवारों की पहचान करने तथा इसकी घोषणा करने के लिए हमें इस समस्या के प्रत्येक पहलू पर विचार करना होगा तथा कानून के अनुसार निर्णय करना होगा कि अपराधी कौन है। इसके पश्चात पूरी सभा को राजनैतिक अपराधीकरण एवं सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार के इन दो मुद्दों पर आम सहमति बनानी होगी। भ्रष्टाचार हमारे सार्वजनिक जीवन को छिन्न-भिन्न कर रहा है। पूरा देश इस समस्या से ऊब चुका है। लोगों को अपना कार्य कराने के लिए रिश्वत नहीं देनी चाहिए। अंततः यह हमारे नेताओं तथा प्रशासकों का कर्तव्य है कि इस प्रकार के प्रचलनों से सख्ती से निपटा जाए और इस समस्या पर काबू पाने के लिए कठोर कदम उठाएं जाने चाहिए।"

महोदय, ऐसा श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था। आज शायद कहे गए प्रत्येक शब्द का उल्लंघन हुआ है। मैं जानता हूं इसीलिए वह अपराध बोध से ग्रस्त हैं।

महोदय, भारतीय जनता पार्टी के चुनाव घोषणा पत्र में कहा गया है मैं इसका एक वाक्य पढ़ता हूं :

"भारतीय जनता पार्टी सार्वजनिक जीवन में भ्रुटिहीन उत्तरदायित्व और जांच के मामले में वे एक उदाहरण प्रस्तुत करेगी। यह भ्रष्टाचार संबंधी ऐसे मामलों को सुलझायेगी जिन पर दो बारह वर्षों में कोई कार्यवाही नहीं की गई है।"

वास्तव में, उन्होंने भ्रष्टाचार के नए मामलों अथवा उनके सहयोगी दलों से संबंधित मामलों का कोई उल्लेख नहीं किया है।

महोदय हमें यह जानने की कोशिश करनी चाहिए कि उनमें आम बात क्या है। इस संबंध में हमें उत्तर प्रदेश के सरकार के मामले का उल्लेख करना चाहिए क्योंकि यह दल तथाकथित सिद्धातों तथा नीतियों का दल है। मुझे पूरी जानकारी नहीं है। कई अन्य दलों से दल बदल करने वाले सदस्यों से मिलकर बनी इस सरकार की किसे जानकारी नहीं है? मुझे संसदीय सौध के मुख्य समिति कक्ष में लिए गए उस चित्र जिसे टेलीविजन तथा समाचार पत्रों में प्रकाशित किया गया था, की याद आती है जब बीच में बैठी हुई सुश्री मायावती जी के अगल-बगल श्री बाजपेयी और श्री लालकृष्ण आडवाणी बैठे हुए थे और उन्होंने छः-छः महीने के लिए मुख्य मंत्री बनने संबंधी उस महान गठबंधन की घोषणा की थी तब मैंने इसे संवैधानिक असंगति करार दिया था। यह पहली बार हुआ था कि मुख्य मंत्री जैसा शीर्षस्थ पद मामला *सौदे* अथवा छः छः महीने की भागीदारी का मामला बना। मुझे विश्वास है कि सुश्री मायावती जी जिनकी आलोचना हो रही है अब उपना बचाव स्वयं करेंगी क्योंकि वह उनका समर्थन नहीं कर रही हैं।

हम श्री सुखराम को नहीं भुला सकते जो इस सभा के एक बहुत महत्वपूर्ण सदस्य और मंत्री रह चुके हैं हमें यह भी याद है जब वे माननीय अध्यक्ष के प्रकोष्ठ में श्री आडवाणी, श्री जसवंत सिंह और अन्य व्यक्तियों को उपने निर्दोष होने के बारे में समझाने का प्रयास कर रहे थे। परन्तु यह सब किसी को भी स्वीकार्य नहीं था।

अब हम तमिलनाडु में ही देख लें कि वहां क्या हुआ? आम आधार क्या है? हम यह नहीं भुला सकते कि श्री बाजपेयी जी को केवल 240 सदस्यों की ही सूची भेजनी पड़ी। सहयोगी दलों के सदस्य अन्नाद्रमुक के 18 सदस्य, पी.एम.के. के चार सदस्य, एम.डी.के. के तीन सदस्य, और टी. आर. सी. के एक सदस्य-कहां थे? ये वे सहयोगी दल थे जिनके साथ कतिपय आधार पर चुनाव लड़ा गया और यह चुनाव पूर्व समझौता था।

प्रधान मंत्री जी ने हमे अब तक यह नहीं बताया कि सूची में उनके नाम क्यों शामिल नहीं किए गए थे। उन्होंने कहाः 'इसका निर्णय राष्ट्रपति जी पर निर्भर करता है। राष्ट्रपति जी ने मुझे बुलाया और मैंने इसका कभी दावा नहीं किया है।'

वे दावा नहीं कर सकते थे क्योंकि वे अन्य सौदों के लिए आपका साथ छोड़ गए थे। हम यह कैसे भूल सकते हैं जब तमिलनाडु में इस पार्टी के नेता के विरुद्ध मामले थे तो यहां क्या हुआ था?

बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री के प्रति उनका क्या रवैया है? मैं इसके विस्तार में नहीं जा रहा हूं। परन्तु तमिलनाडु में पार्टी के नेता के खिलाफ कितने मामले लंबित हैं? हम समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में मामलों की सूची देखते हैं। अब क्या रवैया अपनाएंगे यदि श्री लालू प्रसाद यादव का अपनी कुर्सी पर जमे रहना गलत था, यदि श्री सुखराम उस समय गलत थे और अब नहीं तो इस प्रकार का गठबंधन किस तरह से किया जा सकता है। आज मैं ऐसे मामलों का ढेर पाता हूं। मैं उन सभी मामलों को पढ़कर नहीं सुनाऊंगा और सभा का अधिक समय नहीं लेना चाहूंगा। आज एक अग्रणी दैनिक समाचार पत्र में ऐसा समाचार प्रकाशित हुआ है जिसमें एक न्यायालय ने एक मंत्री महोदय से 6 अप्रैल को न्यायालय में उपस्थित होने का निर्देश दिया है अन्यथा गैर-जमानती गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिए जाएंगें। मैं इस सदन में किसी का नाम नहीं लेना चाहता हूं। .... *(व्यवधान)*

श्री वी० सत्यमूर्ति (रामनाथपुरम) : मैं व्यवस्था के प्रश्न रख रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय : व्यवस्था के बारे में आपका प्रश्न क्या है?

श्री वी० सत्यमूर्ति : समाचार पत्रों में कुछ मामले प्रकाशित हुए हैं। मैं इससे इनकार नहीं कर रहा हूं। परन्तु सभी मामलों में हमारी पार्टी के नेता और अन्य लोगों के विरुद्ध आरोप लगाए गए हैं। हम समाचार पत्रों में प्रकाशित रिपोर्टों को प्रमाणिक नहीं मान सकते हैं। एक भी मामला न्यायालय में साबित नहीं हुआ है। सभी मामले फर्जी हैं।

अध्यक्ष महोदय : आपका व्यवस्था संबंधी प्रश्न क्या है? कृपया बैठ जाइए। कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए।

श्री वी० सत्यमूर्ति : किसी भी न्यायालय में एक भी मामला साबित नहीं हुआ है। सभी मामले जबरदस्ती बनाये गए हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैंने किसी का नाम नहीं लिया है। मैंने तो सिर्फ यही कहा है कि वह व्यक्ति अब माननीय प्रधानमंत्री के मंत्रिमंडल में उनके सहयोगी हैं। गठबंधन वाले इन दलों में देखिए कितना सही तालमेल और संबंध है। मैं यह नहीं जानता, हो सकता है कि वे भारतीय जनता पार्टी के नेता भी हों।

श्री वी. सत्यमूर्ति : वे नेताओं के राजनीतिक निर्णयों के उद्देश्यों पर प्रकाश डाल रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय : कृपया सहयोग कीजिए।

श्री सोमनाथ चटर्जी : गठबंधन वाले दलों के बीच सही तालमेल और अच्छे संबंधों को ही देख लीजिए .....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आपको इस तरह से नहीं बोलना चाहिए

.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री सोमनाथ चटर्जी कृपया अपनी बात जारी रखिए।

श्री सोमनाथ चटर्जी : जनता पार्टी के अध्यक्ष ने अपने बारे में इस प्रकार बताया है। मैं 23 मार्च को 'इंडिया टुडे' से उद्धृत कर रहा हूं।

श्री वी. सत्यमूर्ति : वे वरिष्ठ और अनुभवी सदस्य हैं साथ ही वे गलत रिपोर्ट प्रस्तुत कर रहे हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैं रिपोर्ट पढ़ रहा हूं:

'वे मानसिक रूप से अस्थिर हैं, राजीव गांधी की हत्या करने हेतु उन पर 'लिट्टे' से जा मिलने का आरोप लगाया गया और मई 1996 में सत्ता छिन जाने के बाद उनके खिलाफ भ्रष्टाचार के मामले चलाये गए जिनसे वे घिरी हुई हैं। उन्होंने अपनी ओर से उन्हें आदतन झूठा होने की बात बतायी।'

हमने तमिलनाडु में जो कुछ देखा वह नाटक बाजी के सिवाय और क्या हैं ? सभा में उनकी कमी महसूस करते हैं विशेषकर मुझे अपने अच्छे मित्र श्री जसवंत जी की कमी अखरती है। उन्हें यहां रहना चाहिए था। यदि उनके चुनाव में कोई अड़चन उत्पन्न हो गयी हो तो मुझे नहीं पता क्योंकि वे यह नहीं चाहते थे कि वे वित्त मंत्री बनें।

आपके पास उनका विकल्प है। मुझे मालूम है कि अटल जी को इस बात का खेद है। मुझे भी इसका बहुत दुख है। परन्तु वे बहुत ही सरल, बुद्धिमान और आकर्षित व्यक्ति है। इस वाकपटु सुंदर राजकुमार को वहां भेजा गया था। यद्यपि वे चित्तौड़गढ़ की जनता का दिल जीत नहीं सके तथापि उन्होंने उनके दिल को जीत लिया। .....*(व्यवधान)* यह वास्तव में राजमहलीय षड्यन्त्र था या 'गार्डन कू' 'पोयस गार्डन षडयन्त्र' था या कुछ और।

उन्होंने तीन अथवा चार दिनों तक यह बात कही .....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : वह अपना भाषण समाप्त नहीं कर रहे हैं। कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइए।

श्री सोमनाथ चटर्जी : महोदय श्री वाजपेयी और श्री आडवाणी पर नकारात्मक रवैया अपनाने का आरोप लगाया गया था। यहां तक कि श्री आडवाणी पर भी उनका मजाक उड़ाने, उन पर हंसने का आरोप लगा था। .....*(व्यवधान)* हालांकि वह श्री डेगडे के साथ बहस बाजी करना नहीं चाहती थीं अतएव उन्होंने इसका विरोध किया। उन्होंने यह भी बताया कि उन्होंने श्री डेगडे के व्यवहार की ओर श्री वाजपेयी और श्री लाल कृष्ण आडवाणी का ध्यान आकर्षित किया था। सही सौहार्द सही समझबूझ परस्पर एक दूसरे के लिए अत्यधिक सम्मान .....*(व्यवधान)*

उनकी यह शिकायत थी कि अन्नाद्रमुक और उसके सहयोगी दल निम्न स्तर के सहयोगी और दोयम दर्जे के नागरिक समझे जाते हैं। उन्होंने आगे कहा: 'यदि सरकार बनाने में पहले ही उनका ऐसा रवैया है तो सरकार बन जाने के बाद उनका कैसा व्यवहार होगा।'

इसके बाद उन्होंने तमिलनाडु से संबंधित कुछ अत्यधिक महत्पूर्ण मुद्दों का हवाला दिया। मैं इन मुद्दों के महत्व को कम नहीं आंक रहा हूं, कावेरी जैसे मुद्दे.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइए।

.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह कार्यवाही वृतांत में शामिल नहीं होगा। मैंने आपको बोलने की अनुमति नहीं दी है। कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइए। यह ठीक नहीं है। यह सब कार्यवाही वृतांत में शामिल नहीं होगा।

.....*(व्यवधान)**

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैं इस बात से सहमत हूं कि उनके द्वारा उठाए गए मुद्दे तमिलनाडु के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। .....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह ठीक नहीं। कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइए।

.....*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : उनके द्वारा कावेरी जल का प्रश्न, 69 प्रतिशत आरक्षण, पेरियार बांध के स्तर और उंचाई को बढ़ाना और तमिल को राजभाषा बनाने का प्रश्न जैसी शर्तें समर्थन के लिए रखी गई थीं .....*(व्यवधान)*

---

*कार्यवाही वृतांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

अध्यक्ष महोदय : कृपया इस बात को समझिए कि आपको इसका खण्डन करने का मौका मिलेगा।

.....*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैं यह कहूंगा कि ये महत्वपूर्ण मांगें हैं। मैं उन्हें यह बता रहा हूं। मैं यह नहीं जानता कि क्या करना चाहिए.....*(व्यवधान)* मैं उनका विरोध नहीं कर रहा हूं। मैं आपका समर्थन कर रहा हूं। आप कृपया उनसे इन मांगों को मनवा लीजिए .....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया यह समझने की कोशिश कीजिए कि आपको बोलने का मौका मिलेगा। आप उस समय यह सब कह सकते हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : जैसाकि मैंने कहा कि श्री जसवंत सिंह वहां गए और हमें सुखद समाधान के बारे में बताया गया .....*(व्यवधान)*

श्री कोनिजेटी रोसैया (नरसारावपेट) : महोदय, जब एक अत्यधिक वरिष्ठ सदस्य बोल रहा हो तो उन्हें थोड़ा शांत रहना चाहिए। सत्ता पक्ष के दल की ओर से इस तरह के व्यवधान उत्पन्न करना अच्छी बात नहीं है। .....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री जनार्दनन कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइए।

.....*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : अध्यक्ष महोदय, मैंने कभी भी यह नहीं कहा कि वे मांगें अनुचित हैं। कृपया मेरी बात सुनिये और इतना ज्यादा नाराज मत होइए। मैं जानता हूं कि आप नाराज क्यों हैं। मैं तो केवल यह कह रहा हूं कि तीन चार दिनों से भाजपा के इसके सबसे बड़े घटक ए.आई.डी.एम.के. तथा इसके 18 सदस्यों ने समर्थन देने संबंधी पत्र भेजने से इनकार कर दिया है। जब श्री शरद पवार ने यह कहा कि 'चिट्ठी आती, आती है' तो मैंने कह दिया कि श्री जसवन्त सिंह ने जुगत भिड़ा ली है। निश्चय ही ये सभी बातें बंद कमरे में हुई थीं और उसके बारे में हमें कोई जानकारी नहीं है क्योंकि हम तो साधारण इन्सान हैं इसलिए हम अन्दर की बात कैसे जान सकते हैं। लेकिन मुझे याद है कि टी. वी. पर हमें बताया गया है। ..... *(व्यवधान)*

श्री वैको (शिवकाशी) : इस टिप्पणी के लिए मुझे अनन्त खेद है .... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : इसे कार्यवाही वृतान्त में शामिल नहीं किया जाएगा।

.....*(व्यवधान)**

श्री के.पी. मुनूसामी (कृष्णा गिरि) : वह सभा को गुमराह कर रहे हैं। वह व्यर्थ की बात कर रहे हैं.....*(व्यवधान)*

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता दक्षिण) : किसी महिला के प्रति ऐसे शब्दों का प्रयोग करना उचित नहीं है .....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : किसी भी बात को कार्यवाही वृतान्त में शामिल नहीं किया जाएगा।

.....*(व्यवधान)**

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैंने जो कुछ भी कहा है उसे मैं वापिस लेता हूं.....*(व्यवधान)*

श्री पी. राजरतिनम (पेरम्बलूर) : हम उन्हें बोलने की अनुमति नहीं देते .....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण यदि कोई आपत्तिजनक बात कही गई है तो मैं कार्यवाही वृतान्त की जांच करूंगा।

.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए। यदि कोई आपत्तिजनक बात होगी तो मैं कार्यवाही वृतान्त की जांच करूंगा।

.....*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : ऐसा लगता है कि मेरी बात को सही ढंग से नहीं समझा गया है। मैं अपने शब्दों को वापस लेता हूं .....*(व्यवधान)*

श्री अजित कुमार पांजा (कलकत्ता उत्तर-पूर्व) : उन्हें अपने ये शब्द वापस लेने होंगे कि .....*(व्यवधान)*

मानव संसाधन विकास मंत्री (डा. मुरली मनोहर जोशी): उन्हें माफी मांगनी चाहिए .....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया सभा की कार्यवाही को चलाने में सहयोग करें।

.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यदि कोई आपत्तिजनक बात पाई गई तो मैं उसे कार्यवाही वृतान्त में से निकाल दूंगा।

.....*(व्यवधान)*

श्री अजित कुमार पांजा : क्या यह सही है.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : मैं सदस्यों से अनुरोध करता हूं कि यदि कोई भी बात आपत्तिजनक पाई गई तो मैं उसे कार्यवाही वृतान्त में से निकाल दूंगा।

.....*(व्यवधान)*

---

*कार्यवाही वृतांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

श्री सत्यपाल जैन : उन्हें ऐसे घटिया शब्दों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए था। उन्हें इसके लिए मांफी मांगनी चाहिए .....(व्यवधान)

अपराह्न 1.00 बजे

श्री सोमनाथ चटर्जी : महोदय, यह तो बहुत अन्याय है .....*(व्यवधान)*

श्री सत्यपाल जैन : महोदय, उन्हें अपने उन शब्दों को वापस लेना चाहिए.....*(व्यवधान)*

अपराह्न 1.02 बजे

इस समय श्री के.पी. मुनूसामी और कुछ अन्य माननीय सदस्य आये और सभा पटल के निकट कर्सी पर बैठ गए।

श्री एम. त्यागराजन (पोल्लाची) : वह गलत जानकारी दे रहे हैं। उन्हें माफी मांगनी ही पड़ेगी.....*(व्यवधान)*

श्री पी. राज रतिनम : अध्यक्ष महोदय, वह सभा को गुमराह कर रहे हैं। उन्हें माफी मांगनी पड़ेगी.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : सभा अपराह्न 2.30 बजे पुनः समवेत होने तक के लिए स्थगित की जाती है।

अपराह्न 1.03 बजे

तत्पश्चात् लोक सभा अपराह्न 2.30 बजे तक के लिए स्थगित हुई।

अपराह्न 2.30 बजे

लोक सभा अपराह्न 2.30 बजे पुनः समवेत हुई

[अध्यक्ष महोदय *पीठासीन हुए*]

श्री सोमनाथ चटर्जी: अध्यक्ष महोदय.....*(व्यवधान)*

श्री सुदीप बंद्योपाध्याय (कलकत्ता उत्तर-पश्चिम) : वह अपने शब्दों को वापस ले रहे हैं अथवा नहीं ?

अध्यक्ष महोदय : आप पहले अपनी सीट पर बैठिए।

श्री सोमनाथ चटर्जी : मुझे ऐसा लगता है कि उधर के मेरे माननीय मित्र मेरी उस बात से विक्षुब्ध हो गए हैं जो मैंने कही थी अथवा मेरे कहने का आशय था। मैं बिल्कुल साफ-साफ कह देना चाहता हूं कि मेरा आशय कभी किसी का अनादर करने का नहीं रहा और नहीं मैंने कोई ऐसी बात कही है। यहां तक कि किसी के प्रति इरादतन कुछ कहने की बात भी मेरे दिमाग में नहीं आई न तो सभा के भीतर ही और न ही सभा के बाहर।

मुझे इस बात का बहुत दुख है कि 20 वर्षों में पहली बार मुझ पर अनादर करने का आरोप लगाया जा रहा है। मैं बिना कुछ कहे स्वीकार करता हूं कि मैंने कोई अनुचित व्यवहार किया है क्योंकि मेरे मित्र काफी विक्षुब्ध हो गए हैं। यदि मेरी कही हुई बात से किसी को कोई गलतफहमी हो गई है तो मुझे खेद है।

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपनी बात जारी रखिए।

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैं कह रहा था कि कुछ दिन पहले ए.आई.डी.एम.के. ने शुरू में सरकार में शामिल न होने की बात की थी। उसके पश्चात् उन्होंने अपना इरादा बदल दिया लिया और सरकार में शामिल होने की इच्छा व्यक्त कर दीं। मेरे कहने का यह अर्थ था कि जिस आधार पर समझौता किया गया है अथवा इरादा बदल गया है उसकी कोई शर्तें तो अवश्य ही रही होंगी। यही मेरे कहने का तात्पर्य था। हम उस बात को तब तक नहीं समझ सकते जब तक कि हमारे सामने इसका खुलासा न हो जाए। हमें उन मागों की जानकारी है जो कि की गई थी।

यदि मैं गलती पर नहीं हूं तो मुझे याद है कि मैंने अपने मित्र, जो संयोग से यहां पर उपस्थित नहीं हैं, श्री जसवन्त सिंह को दूरदर्शन पर यह कहते हुए सुना था कि समझौते की शर्तों को राष्ट्रीय एजेन्डे में शामिल किया जाएगा।

मुझे विश्वास है कि मैं उनके कहे शब्दों को ही उद्धृत कर रहा हूं। उन्होंने भी स्पष्ट रूप से कहा "बीता कल पीछे रहा गया है और भविष्य हमें अपनी ओर बुला रहा है" अतः यदि माननीय प्रधान मंत्री महोदय ने यह बता दिया होता कि अन्ततः क्या निर्णय लिया गया और किस बात पर समझौता किया गया है तो हमें हार्दिक प्रसन्नता होती। मैं इसका यहां उल्लेख करके यह बताने की कोशिश कर रहा हूं कि यह एक कमजोर गठबन्धन है और यह तथाकथित चुनाव पूर्व गठबन्धन एक मिथ्या है। ऐसा मेरा विचार है। वे इस बात से सहमत नहीं होंगे। परन्तु मुझे अपनी बात कहने दीजिए।

इसी प्रकार से मेरे राज्य में भाजपा का पश्चिम बंगाल तृणमूल कांग्रेस के साथ सीटों का बंटवारा हुआ था। मैं उन्हें इतनी सीटों पर विजयी होने पर बधाई देता हूं। यही जनादेश है और हम इसको स्वीकार करते हैं।

मुझे खेद है कि श्री तपन सिकंदर विजयी हुए लेकिन मैं जनादेश का आदर करता हूं। मैंने उनको बधाई दी है। मैं यह समझता हूं कि उन्होंने दादा गिरि नहीं चलेगी जैसा कुछ टिप्पणियां की थीं और इसलिए वे सरकार से बाहर हैं। समाचार पत्रों में यह खबर छपी थी और किसी ने भी इसका खंडन नहीं किया। इसलिए यदि मैं नहीं हूं तो मैं यह कहना चाहूंगा कि बनने के बाद भी ये बातें दोहराई गई। वो यहां उपस्थित है और वो इस बारे में बताएंगी। उनके बीच केवल सीटों का बंटवारा हुआ था। उस समय मैं अपने निर्वाचन क्षेत्र में था और समाचार पत्रों में जो प्रकाशित हुआ उसके अलावा मैं और कुछ भी नहीं जानता।

मैंने समाचार पत्रों में पढ़ा कि अपनी जन सभाओं में भी तृणमूल कांग्रेस की नेता ने भाजपा के झण्डे तक नहीं फहराने दिये। वह भाजपा के किसी भी नेता के साथ मंच पर एक साथ नहीं आई। यह मैंने देखा है। यदि मेरी बात गलत है तो ठीक कर दीजिए। इसलिए यहां गठबन्धन की बात कहां से आती है? इसमें विचार बिन्दुओं अथवा दृष्टिकोण अथवा नीतियों व कार्यक्रमों में एकरूपता कहां पर है?

वास्तविकता यह है कि ये दोनों दल पश्चिम बंगाल में कम से कम एक निर्वाचन क्षेत्र में एक दूसरे के विरुद्ध चुनाव लड़े। मैं इनके इस दावे का आधार ढूंढने की कोशिश कर रहा था कि उनका तथाकथित 'चुनाव पूर्व' गठबन्धन रहा है तथा उनका गठबन्धन संयुक्त मोर्चा सरकार और कांग्रेस के बीच 1996 चुनाव के बाद हुए समझौते से भिन्न है। इस बारे में यह कहा जाता रहा कि हमारा चुनाव के बाद किया गया गठबन्धन या समझौता है। अब वे इस बात को कहने में गर्व महसूस करते हैं कि उनका गठबन्धन चुनाव पूर्व गठबन्धन है और इसलिए जनादेश उनके पक्ष में है।

जनता ने पश्चिम बंगाल, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, और उड़ीसा में किस चुनाव घोषणा पत्र के पक्ष में मतदान किया है? हम नहीं जानते कि बीजू जनता दल की यदि कोई आर्थिक नीति है तो क्या है शिक्षा नीति क्या है? बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और परमाणु विकल्प के संबंध में क्या नीति है। पर वे कहते हैं कि वे भाजपा के सहयोगी दल हैं। क्या चुनाव के दौरान किया गया सीटों का बंटवारा एक स्थाई गठबंधन का आधार बन सकता है? देश के सामने यह मुद्दा है।

निस्सन्देह, अब अखिल भारतीय अन्नाद्रमुक ने कहा है कि वह इस सरकार को बिना शर्त समर्थन देगी। हमने देखा कि किसी विशेष मंत्रालय की मांग किये जाने की बात का खण्डन किया गया। यदि ऐसा हुआ है तो मैं इस बात को मान लेता हूं। मैं इसको चुनौती नहीं दे रहा हूं। समाचार पत्र में बहुत सी बातें छप रही हैं पर इसके संबंध में कोई खण्डन नहीं किया जा रहा है।

समाचार पत्रों में क्या कहा गया था? मैं जिम्मेदार समाचार पत्रों का उल्लेख कर रहा हूं और उनमें जो छपा उसे उद्धृत करता हूं। "रिफ्यूजल बाई दी ए.आई.ए.डी.एम.के. लीडर टू फारवर्ड ए लेटर ऑफ सपोर्ट फॉर दी बी.जे.पी. हैस अपसेट दी पार्टीस प्लान टू फार्म ए गवर्नमेंट एट दी सेन्टर" अर्थात अखिल भारतीय अन्नाद्रमुक नेता द्वारा समर्थन पत्र देने से इनकार करने से केन्द्र में भाजपा की सरकार बनाने की योजना को धक्का लगा है। मुझे वे दो तीन दिन याद हैं जब दूरदर्शन पर श्री अटल बिहारी वाजपेयी और उनके साथियों को तमिलनाडु से पत्र की प्रतीक्षा में उदास और अप्रसन्न मुद्रा में दिखाया गया। इसलिए उनको विवश होकर माननीय राष्ट्रपति जी के पास 240 सदस्यों की सूची को लेकर जाना पड़ा।

तब हमें तमिलनाडु पैकेज के बारे में बताया गया। अब हमें पश्चिम बंगाल और उड़ीसा पैकेज के बारे में बताया गया। हमसे यह भी कहा गया है कि इन पैकेजों को राष्ट्रीय एजेन्डा में यथोचित स्थान दिया जाएगा पर अब वो पैकेज कहां हैं। हमने राष्ट्रीय एजेन्डा में उनके पैकेजों को नहीं देखा है। मैं यही तो कहना चाहता हूं।

उनके पास कोई गुप्त एजेन्डा होगा जिसके संबंध में वे देश की जनता को विश्वास में नहीं ले रहे हैं। उनको कुछ भी नहीं बता रहे हैं। इसलिए मैं समझता हूं कि ये राष्ट्रीय एजेन्डा और कुछ भी नहीं बल्कि एक 'राष्ट्रीय तमाशा' है। वे समझौते कहां हैं? माननीय प्रधान मंत्री जी, वे पैकेज कहां हैं जिनके आधार पर आपने समर्थन जुटाया है?

अपराह्न 2.39 बजे

[श्री पी.एम.सईद *पीठासीन हुए*]

इस राष्ट्रीय एजेन्डा में एक बात बहुत ही स्पष्ट है। जैसा कि हमने 1996 के राष्ट्रपति के अभिभाषण में देखा था, उन्होंने अयोध्या में राम मन्दिर का निर्माण अनुच्छेद 370 का निरसन, समान नागरिक संहिता लाने जैसे मुख्य विषयों, मांगों को छोड़ दिया है। श्री शरद पवार जी ने पढ़कर सुनाया है और मुझे इसे दोबारा पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। इन मुद्दों को भाजपा के चुनाव घोषणा पत्र में प्राथमिकता दी गई। परन्तु आज, राष्ट्रीय एजेन्डा में उनका उल्लेख नहीं है। भ्रष्टाचार के बारे में केवल सरकारी तौर पर उल्लेख किया गया है। उन्होंने केवल चुनाव प्रचार सुधार के मामले में ही भ्रष्टाचार का उल्लेख किया है। अब ये उनके लिए बहुत ही कठिन विषय हैं।

यद्यपि राम मन्दिर का निर्माण राष्ट्रीय एजेन्डा में शामिल नहीं है परन्तु हमारे कई माननीय सदस्यों ने इस बारे में क्या कहा था? श्री विनय कटियार यहां उपस्थित थे। उन्होंने बहुत ही स्पष्ट रूप से कह दिया था कि 'अटल जी मन्दिर निर्माण को संभव बनाएंगे'। यह उनका 21 मार्च का वक्तव्य है। उसके बाद 'हिन्दुत्व हॉक्स वान्ट राम रिवाईव्ड' शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित समाचार में आगे कहा गया कि भाजपा हाई कमान को कुछ संसद सदस्यों, मुख्यतः राजनीतिज्ञ बने संतों, जिनमें से कई लोग यहां उपस्थित हैं, अयोध्या के साधुओं, जो अयोध्या और समान नागरिक संहिता के संबंध में पार्टी द्वारा अपनाए गए नर्म रुख से नाराज हैं, के क्रोध का शिकार बनना पड़ा। मैं पूरी रिपोर्ट नहीं पढ़ रहा हूं। इसलिए, भाजपा में ही राष्ट्रीय एजेन्डा से राम मन्दिर मुद्दे को छोड़ने का विरोध पहले से ही हो रहा है। तब इसमें एकजुटता की क्या बात है? स्वयं भाजपा एकजुट नहीं है। तब सरकार एकजुट कैसे रह सकती है .....*(व्यवधान)* हम इस मुद्दे पर प्रधान मंत्री जी से जानना चाहते हैं। विश्वास मत के दौरान उन्हें हमें इसके बारे में बताना चाहिए और दल के लोगों को विश्वास में लेना चाहिए। आप तथाकथित विभिन्न सहयोगी दलों को अपनी प्रतिबद्धताएं बताए बगैर विश्वास मत की मांग नहीं कर सकते।

मैं यहां पर यह स्पष्ट कर देना चाहूंगा कि देश के किसी राज्य को कोई विशेष लाभ दिए जाने अथवा उनके लिए कोई विशेष व्यवस्था किए जाने के प्रति मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मुझे प्रसन्नता है कि प्रधानमंत्री जी ने यह कहा कि एक मजबूत भारत के लिए मजबूत राज्यों का होना जरूरी है और हमारी भी अभी तक यही

[श्री सोमनाथ चटर्जी]

मांग रही है। हमारा कांग्रेस के साथ झगड़ा था और अभी भी है क्योंकि कांग्रेस के लोग सोचते हैं कि केवल मजबूत केन्द्र होना ही पर्याप्त है लेकिन इससे राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता । देश के विभिन्न भागों में असमानताएं हैं।

तमिलनाडु में अखिल भारतीय अन्नाद्रमुक और उसके सहयोगी दल इस गठबंधन के मुख्य हिस्सेदार हैं और इसको देखते हुये मुझे टिप्पणी करनी पड़ रही है। मुझे डा. श्यामा मुखर्जी की बात याद आ रही हैं उन्होंने कहा था कि 'इन्डिया भारत है' जो कि आज के सन्दर्भ में तमिलनाडु हो गया है। इस सरकार का चलना ना चलना इसी पर निर्भर है। महोदय, कुछ चिन्ताजनक खबरें मिल रही हैं। माननीय विधि मंत्री ने पहले ही कह दिया है कि कतिपय मामले गलत ढंग से बनाए गए हैं। अपना कार्यभार ग्रहण करने के एक दो दिन के भीतर वे निर्णय देंगे जबकि मामले न्यायालय में लंबित हैं.....*(व्यवधान)*

विधि, न्याय और कम्पनी कार्य मंत्री (श्री एम.तम्बी दुराई): मैंने कभी कोई निर्णय नहीं दिया। मैंने केवल टिप्पणी की थी। जब मैं चेन्नई लौटा तो कुछ लोग मेरे पास आए और मेरे दल की नेता व कुछ कार्यकर्त्ताओं के खिलाफ बनाए गए गलत मामलों के बारे में पूछताछ करने लगे। तब मैंने उनसे कहा कि मैं उन मामलों को देखूंगा और तथ्यों का पता लगाऊंगा। इसमें क्या गलत था। मैंने क्या निर्णय दिया था मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : ठीक है। उन्होंने कोई निर्णय नहीं दिया बल्कि मात्र टिप्पणी की है.....*(व्यवधान)*

श्री एम. तम्बी दुराई : मैं कोई न्यायाधीश नहीं हूं मैंने केवल टिप्पणी की थी। जब आप टिप्पणी कर रहे हैं तो मैं भी टिप्पणी कर सकता हूं।.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : श्री थम्बी दुराई, कृपया बैठ जाइए।

.....*(व्यवधान)*

श्री एम. तम्बी दुराई : मैं अपने वक्तव्य पर और मैंने जो कुछ कहा है, उस पर अटल हूं। यह एक झूठा मामला है और मैं इसे न्यायालय में प्रमाणित करूंगा। मुझे इस मुद्दे पर कोई सन्देह नहीं है। .....*(व्यवधान)* मैं कोई न्यायाधीश नहीं हूं कि कोई निर्णय दूं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैं इस से सहमत हूं और मैं अपनी गलती मानता हूं। विधि मंत्री निर्णय नहीं दे सकते और उन्होंने केवल टिप्पणियां की हैं.....*(व्यवधान)*

श्री एम. तम्बी दुराई : मैंने न्यायपालिका में कोई हस्तक्षेप नहीं किया। हम किसी भी मामले में हमारे न्यायाधीशों पर कोई दबाव नहीं डाल सकते.....*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैंने न्यायपालिका पर आरोप नहीं किया है.....*(व्यवधान)* आपको मालूम नहीं है कि मेरे मन में क्या है। महोदय, मैंने केवल इतना कहा था कि उन्होंने कतिपय मामलों की सच्चाई के बारे में या अन्यथा कोई टिप्पणी की है।..... *(व्यवधान)* अतः मुझे हैरानी है कि जिस देश की सरकार के लोग इतने अधीर हैं उस देश का क्या होगा।

जैसा कि मैंने पहले कहा था कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी एक मुखौटा हैं। यह बात उनके एक नेता ने कही है।.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : कृपया इस पर साथ-साथ टिप्पणी मत कीजिए।

..... *(व्यवधान)*

सभापति महोदय : कृपया ऐसा मत कीजिए।

.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : मैं उन्हें अब अपनी बात समाप्त करने के लिए कह रहा हूं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : संघ परिवार ने श्री वाजपेयी के करिश्माई नेतृत्व और व्यक्तित्व का उपयोग किया है। मैं महसूस करता हूं कि यदि यह सरकार सत्तासीन रहती है तो आम आदमी और देश के अलावा इसका सबसे बड़ा शिकार श्री अटल बिहारी वाजपेयी होंगे। उन्हें मालूम नहीं है कि कब उनकी टांग खींच ली जाएगी।.....*(व्यवधान)* और कहा जाएगा:

[हिन्दी]

अब की बारी लाल बिहारी और प्रमोद बिहारी।

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भलपुर) : सभापति महोदय .....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : मुलायम सिंह जी एक मिनट रुकिये।

[अनुवाद]

संसदीय कार्य मंत्री और पर्यटन मंत्री (श्री मदन लाल खुराना): मुझे बताया गया था कि अब श्री जार्ज फर्नान्डीज को बोलने का अवसर दिया जाएगा।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : अच्छा होगा जॉर्ज साहब मेरे बाद बोलें।.....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

सभापति महोदय : अब मैं उन्हें बोलने के लिए कह चुका हूं।

श्री एम. तम्बी दुराई : यह ठीक रहेगा।

सभापति महोदय : मुझे खेद है। ऐसा लिखा हुआ है।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : आपने भी उन्हें धोखा दिया और उन्होंने भी आपको धोखा दिया, सबको धोखा दिया।

सभापति महोदय : इस तरह से इंटरप्शंस होंगी तो दो-तीन आदमी भी कवर नहीं हो सकेंगे।

.......*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : उसे समझने में दिक्कत हो जायेगी कि कैसे धोखा दिया था।

सभापति महोदय: मुलायम सिंह जी, आप इधर देखिये, उधर मत देखिये।

श्री मुलायम सिंह यादव : सभापति महोदय, कुछ ऐसी बातें हैं जिनको मैं दोहराना नहीं चाहता हूं, वे बातें माननीय नेता विरोधी दल और सोमनाथ चटर्जी साहब ने कह दी हैं। लेकिन मैं इतना जरूर कहना चाहता हूं कि भाजपा कितनी भी अफवाह फैलाये और चाहे जितना असत्य बोलें ....*(व्यवधान)* चाहे कितना भी असत्य कहिये, अफवाहों से चुनाव में तो जीता जा सकता है, लेकिन अफवाहों के माध्यम से सरकार नहीं चलाई जा सकती....... *(व्यवधान)* साथ में हमारा समय जोड़ते जाइये, मुझे कोई दिक्कत नहीं है।

सभापति महोदय : उनके कमेन्ट पर आप कोई प्रतिक्रिया मत दीजिए। मैं उनके भी कह रहा हूं।

श्री मुलायम सिंह यादव : मैं भी वही बोल रहा हूं। मैं तो अपनी बात कह रहा हूं। जैसा अभी कहा गया कि भारतीय जनता पार्टी को जनादेश मिला.......*(व्यवधान)* कितना जनादेश मिला यह ऑन रिकार्ड है। 1996 के चुनाव की तुलना में ज्यादा से ज्यादा कुल 15-16 सीटें भारतीय जनता पार्टी की बढ़ गई और कह रहे हैं जनादेश मिल गया है। जनादेश किस बात पर मिला वह आप सबने बता ही दिया है। यह कब बदलेंगे, क्या बोलेंगे इस पर कभी कोई भरोसा नहीं कर सकते और देश की जनता अब बिल्कुल समझ गई है। हम फिर दोहराना चाहते हैं कि धारा 370, राम मंदिर, आदर्श आचार संहिता, अपराधीकरण, स्वच्छ प्रशासन और योग्य प्रधान मंत्री, आदि-आदि नारों पर चुनाव जीता। आप योग्य हैं बाकी क्या सब नाकाबिल बैठे हैं।

सभापति महोदय, यदि इन मुद्दों पर वोट नहीं मांगा गया होता, तो आपकी पार्टी के 179 सांसदों की जगह मात्र 79 सांसद रह जाते। माननीय आडवाणी जी मेरी इस बात से सहमत होंगे, लेकिन आप सबसे मैं कहना चाहता हूं, विशेष रूप से जार्ज साहब से तो बाद में कहूंगा कि अभी तक जितने भी इंटरव्यू आए हैं, उन सब में भाजपा नेताओं ने यही कहा है कि अभी हमारा बहुमत नहीं है। जिस दिन हमारा बहुमत हो जाएगा, यानी जिस दिन अकेली भारतीय जनता पार्टी का बहुमत होगा, उस दिन मंदिर भी बनेगा, धारा 370 भी लागू होगी और समान आचार संहिता भी लागू हो जाएगी। जार्ज साहब मैं अब आपसे कहता हूं कि आप भी इस बात पर विचार करें। जिन जार्ज साहब को कभी हमने अपना नेता माना था, उन जार्ज साहब को अब हमें नेता मानने में कठिनाई हो रही है क्योंकि वे साम्प्रदायिकता का सहयोग कर रहे हैं।

महोदय, चुनाव से पहले भी हमने कई जगह कहा था कि भारतीय जनता पार्टी के दो चेहरे हैं, दो चुनाव घोषणा पत्र हैं, एक तो वह जो चुनाव से पहले जनता के बीच में प्रचारित किया जाता है और दूसरा वह जब सत्ता में आ जाते हैं, तब दूसरा कार्यक्रम बना लेते हैं। दो समस्याएं हैं जिनके पीछे हमें लड़ना भी पड़ा। दो नेता हैं और दोहरा चरित्र है। माननीय प्रधान मंत्री जी, आप इस पार्टी के मुखड़ा या मुखौटा हैं, ऐसा हम नहीं कह रहे हैं बल्कि आपकी पार्टी के महत्वपूर्ण पदों पर बैठे हुए पदाधिकारी कह रहे हैं और एक विदेशी दूतावास में कह रहे हैं कि अटल जी हमारी पार्टी के मुखौटा हैं, असली नेता हमारे माननीय आडवाणी जी हैं, जो प्रधान मंत्री बहुत जल्दी बनने वाले हैं। आप मेरी इस बात को ध्यान रखिए, यदि आज आपको यहां बहुमत मिल गया, तो वाजपेयी जी, आप प्रधानमंत्री नहीं रहेंगे। असली प्रधान मंत्री जो तो आपके पास बैठे हैं, आडवाणी जी बनेंगे।.......*(व्यवधान)*

महोदय, अभी हमारे मान्यवर कुछ साथियों ने पीछे से कहा कि धोखा दिया है। कैसे बदल गए, कौन मुख्य मंत्री कब आ जाता है, कैसे, कब, कौन प्रधान मंत्री आ जाता है, यह देखने की बात है। अटल जी से हमारे पहले बहुत गहरे रिश्ते थे, लेकिन अब वे हमसे नाराज हैं। हमारे नाम लेने में भी उनको परेशानी है। इसलिए हम आपको सावधान कर रहे हैं कि चुनाव तो ये आपके नाम पर जीत गए। हम जानते हैं कि किस तरह से आपके नाम पर वोट मिले हैं, और इससे हम कोई इंकार नहीं करते हैं। इस बात को हमने सब जगह स्वीकार किया है, न केवल टी.वी. पर बल्कि जहां भी हम गए हमने यह बात कही है कि आपको अटल जी के नाम पर वोट मिला है। यह दूसरी बात है कि अटल जी के नाम पर आपको ज्यादा वोट मिल गया और मेरे नाम पर कम वोट मिला। इसलिए हम अटल जी को सावधान करना चाहते हैं और आपसे कह रहे हैं कि आप भी सावधान रहिए। असली प्रधान मंत्री आपके बगल में बैठे हैं जिनका नाम बहुत जल्दी नागपुर से आ जाएगा।

महोदय, अभी क्या हुआ, इन्होंने मंत्रिमंडल बनाया। यह मंत्रिमंडल भी इन्होंने अपने मन से नहीं बनाया। गुजराल जी ने अपने मन से और हमारे मन से मंत्रिमंडल बनाया था। लेकिन प्रधान मंत्री जी ने यह मंत्रिमंडल अपने मने से नहीं बनाया। यह बात संघ के नेता ने स्वयं कही है कि हमारे संघ के ही सारे मिनिस्टर होने चाहिए। इस समय मेरे पास वह अखबार नहीं है, नहीं तो मैं आपको पढ़कर सुनाता। माननीय जसवंत सिंह जी हमारे मित्र हैं। हम भी उनकी बहुत इज्जत करते हैं। उनको सबसे पहले वित्त मंत्री बनाए जाने की बात की गई, लेकिन संघ के लोग नहीं चाहते, इसलिए दोपहर को प्रधान मंत्री जी कहते हैं कि वित्त मंत्रालय वे अपने पास रखेंगे, लेकिन रात में मंत्री बन गए यशवंत सिन्हा।

[श्री मुलायम सिंह यादव]

जिस सरकार का दिमाग ही स्थिर नहीं है, वह सरकार स्थिर कभी नहीं रह सकती। कैसा उनका दिमाग है। कितनी बार दिमाग बदला कि किसको वित्त मंत्रालय मिले, ए. आई. डी.एम.के. के साथियों को कैसे मनाया जाये ताकि आगे वे नाराज न हों। हमारे कामरेड सोमनाथ चटर्जी यहां बैठे हुए हैं। उनके कहने का सेंस दूसरा नहीं था लेकिन उन्होंने उसका दूसरा अर्थ लगा लिया। फिर भी उन्होंने अपनी बात को वापस ले लिया। ये हमारी सरकार को क्या कह रहे थे। जब हम सरकार में थे और ये इधर बैठे हुए थे, उन्होंने उस समय हमारी सरकार को खिचड़ी सरकार कहा था। अब यह सरकार क्या है- यह खिचड़ा है।.....*(व्यवधान)* वह बता देंगे। अगर हमारे दक्षिण के साथियों की समझ में न आ रहा हो तो उन्हें जरूर समझा दीजिए कि खिचड़ी तो पच जाती है लेकिन खिचड़ा नहीं पचता।.....*(व्यवधान)* वही तो मैं कह रहा हूं .....*(व्यवधान)*

श्री वीरेन्द्र सिंह (मिर्जापुर) : मुलायम सिंह जी, आप कहते हैं कि खिचड़ी पचती नहीं है। जो खिचड़ी पकती नहीं है, वह पचती नहीं है। आपकी खिचड़ी पकी नहीं थी इसलिए वह पची नहीं। .....*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : यही तो मैं कह रहा हूं कि खिचड़ी पच जाती है लेकिन खिचड़ा पचता नहीं है।

सभापति महोदय, नैतिकता का आधार होता है। नैतिकता की बड़ी चर्चा होती है। हमेशा 'नैतिकता' और 'जी' यह दो बातें हमारे भाजपा मित्र वर्ग बहुत करते हैं। कितनी नैतिकता आप में है? पूरे देश में आपने क्या वायदे किये और उन वायदों के विपरीत आपने नेशनल एजेंडा में क्या लिखा है। सोमनाथ चटर्जी ने ठीक ही कहा कि यह नेशनल एजेंडा नहीं बल्कि यह एक तमाशा है और हमारे कई साथियों की भावना है, जिसमें सच्चाई है कि यह नेशनल एजेन्डा देश विरोधी है, राष्ट्र विरोधी है। इसका उदाहरण में बताउंगा कि ऐसा क्यों है। आप अखंड भारत की बात करते हैं लेकिन आप देश को कहां ले जाना चाहते हैं? किस भावनाओं को भड़काना चाहते हैं। कितनी भावना को भड़कायेंगे। यह सबसे बड़ा अनैतिक काम है। किसी भी पार्टी का चुनाव घोषणा पत्र उसका सबसे पवित्र दस्तावेज होता है। आप जनता से जो वायदा करते आये, उसे बदलकर कहते कि यह अभी हमारे इस ऐजेंड में नहीं है।

सभापति महोदय, कार्यक्रम का सवाल नहीं है, सवाल मानसिकता का है। मानसिकता कहां है मानसिकता यही है कि मंदिर भी बनायेंगे, धारा 370 को भी खत्म करेंगे और आचार संहिता को भी लागू करेंगे। आचार संहिता पर हम ज्यादा नहीं बोलेंगे, नहीं तो परेशानी हो जायेगी। आचार संहिता की बात केवल मुसलमानों को बार-बार उकसाने के लिए होती है.....*(व्यवधान)* समान आचार संहिता बहुतों को पता चल जायेगी। केवल मुसलमानों के लिए ही एक शादी करने की आचार संहिता लागू करने की बात कहते हैं, क्या हिन्दुओं में एक से अधिक शादी लोग नहीं कर रहे हैं बल्कि वह कितनी-कितनी बार करते हैं.....*(व्यवधान)* मजबूरी में कहिए, हम तो पब्लिक में भी बोलेंगे.....*(व्यवधान)*

श्री अशोक प्रधान (खुर्जा) : 21 तारीख को यह खेल न हुआ होता तो आप भी यहां न आए होते.....*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : सभापति महोदय, आप हमारा समय देखते जाइए। उधर से जितना समय कटेगा उतना हम और ले लेंगे। आप हम पर यह मेहरबानी करें। दूसरी तरफ राष्ट्रीय एकता परिषद में हम भी थे। राष्ट्रीय एकता परिषद, जो देश का सर्वोच्च राजनैतिक मंच है, उसमें भी वायदा किया गया कि मस्जिद नहीं तोड़ी जायेगी। यही नहीं सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा भी दे दिया। हलफनामा देने के बाद भी मस्जिद गिराई गयी- क्या यही नैतिकता है? इनकी कथनी और करनी में भेद है और जब कथनी और करनी में भेद होता है जिसकी कथनी -करनी में भेद होता है वह देश की सच्ची सेवा नहीं कर सकता .....*(व्यवधान)*

अपराह्न 3.00 बजे

नैतिकता की बात नहीं सुनना चाहते। इनकी कथनी और करनी में भेद है। दो जीभ से बात करने वाले बड़े खतरनाक होते हैं। बुरा मत मानिए, दो जीभ से बात मत करिए, एक जबान से बोलिए। हमने एक जबान से बोला है, साम्प्रदायिकता के खिलाफ जो संकल्प लिया है उसके लिए लड़ेंगे और साम्प्रदायिकता को खत्म करेंगे। इतिहास इस बात का गवाह है कि कट्टरवादी ताकतों को हिन्दुस्तान ने कभी स्वीकार नहीं किया। लेकिन अफसोस है कि हमारे कुछ नेता, जो हमारी विचारधारा के थे, इनका सहारा लेकर उधर बैठे हैं। जार्ज साहब, मुलायम सिंह से चाहे जो कीमत ले लेते लेकिन साम्प्रदायिक शक्तियों को ताकत देने का काम आपको नहीं करना चाहिए। लालू प्रसाद के साथ आपका जो कुछ भी मतभेद था, हम तो आपके थे, हमारे साथ जुड़ जाते। जार्ज साहब, मैं सच्चाई कह रहा हूं कि आप देश में ऐतिहासिक व्यक्ति बन जाते। आप चाहे पार्लियामेंट में पहुंचते या नहीं, डिफैंस मिनिस्टर बनते या नहीं, चाहे सड़कों पर पजामा-कुर्ता पहनकर घूमते रहते लेकिन सड़कों पर हजारों-लाखों लोग आपका जिन्दाबाद बोलते.....*(व्यवधान)* डिफैंस मिनिस्ट्री को छोड़ दीजिए, डिफैंस मिनिस्ट्री तो छोटी चीज है। यदि मैं जिद कर जाता तो प्रधान मंत्री भी बन जाता। लेकिन फिरकापरस्ती के खिलाफ मैंने अपने संयुक्त मोर्चे को कमजोर नहीं किया। .....*(व्यवधान)* पहले चुनाव में दोस्त बेचारी लक्ष्मी पार्वती को बनाया और अब आम सहमति का विरोध करके तेलगु देशम से बातचीत कर रहे हैं यह धोखाधड़ी नहीं तो क्या है। .....*(व्यवधान)* इसी तरह से हरियाणा में चौधरी बंसी लाल से समझौता करके चुनाव लड़ा और अब दूसरी पार्टियों से समझौता कर रहे हैं कि हम बंसी लाल को हटा देंगे, चलो, मेरे साथ आ जाओ। यही है इनकी नैतिकता। इनकी नैतिकता यह है कि सत्ता में कैसे बने रहें। यह सत्ता को एजेंडा है, राष्ट्रीय एजेंडा नहीं है। इसलिए सोमनाथ चटर्जी ने ठीक कहा कि यह एक तमाशा है। इनमें कितनी नैतिकता है, हमारे पास उसके बहुत उदाहरण हैं।

आपने भ्रष्टाचार के नाम पर 13-13 दिन लोक सभा नहीं चलने दी और अब सब के सब एक जगह समा गए। इसमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए। ये तो समुद्र और गंगा दोनों हो गए। यह सच्चाई है, आप गंभीरता से विचार कीजिए। ये समुद्र भी बन गए, चाहे

जो आ जाए। कोई इनके यहां चला जाए तो वह पवित्र हो जायेगा, जब तक इधर रहे तब तक अपवित्र मुलायम सिंह अपवित्र, जार्ज साहब बड़े अपवित्र थे और कई बड़े-बड़े अपवित्र माने जाने वाले लोग इधर गंगा में चले गये तो पवित्र हो गए, चाहे कुछ भी करके आएं। .....*(व्यवधान)* कहां गया अपराधीकरण ? मध्य प्रदेश इस बात का गवाह है। वहां दो ऐसे उम्मीदवार भाजपा ने खड़े किए जिनके अपराधिक इतिहास के कारण उनके पर्चे खारिज हुए थे .....*(व्यवधान)* फिर वे डमी कैन्डीडेट में लड़े।

किस अपराधीकरण की बात करते हो, किस राजनैतिक अपराधीकरण को रोकने की बात करते हो.....*(व्यवधान)*

श्री कान्तिलाल भूरिया (झाबुआ) : धार और मुरैना में धारा 302 के दो अपराधी थे, उनके नोमिनेशन पेपर खारिज हो गये।

[अनुवाद]

सभापति महोदय : श्री प्रधान जी, यह ठीक नहीं है

.....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : अब सबसे बड़ा उदाहरण देता हूं। लेकिन एक ही उदाहरण दूंगा। उदाहरण तो सामने बहुत हैं। उत्तर प्रदेश में आज जो सरकार बनी है और जिस सरकार को बनाने का सबसे बड़ा योगदान माननीय प्रधानमंत्री जी का है, उसमें जो मंत्री बने हुए हैं, वे गम्भीर भ्रष्टाचार में लिप्त हैं और अपराधी भी हैं। ऐसे-ऐसे अपराधी हैं कि जिस दिन कैबिनेट के मंत्री की शपथ ले रहे थे, उस दिन उनके खिलाफ गैर-जमानती वारंट थे। उसके तीन या चार दिन बाद जब इलाहाबाद हाई कोई से स्टे लिया गया, तब उनकी गिरफ्तारी पर रोक लगी। इसलिए अपराधीकरण पर भाजपा की बात करना निरर्थक है।.....*(व्यवधान)*

श्री अशोक प्रधान : संयुक्त मोर्चा की सरकार बनी, उसमें कितने ऐसे मंत्री थी। .....*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : अभी इसी मंत्रिमंडल में, जिन पर भ्रष्टाचार के आरोप हैं, वे मंत्रिमंडल में मंत्री बना दिये। आप क्यों कहलवाना चाहते हैं, उनमें मेरे बहुत से दोस्त हैं, अब क्या कहूं ? .....*(व्यवधान)* कह तो रहे हैं, आप सुनिये। हम तो कहेंगे ही, सुनिये।.....*(व्यवधान)*

श्री अशोक प्रधान : आप अपनी स्टोरी भी खोलते जाइये।

श्री मुलायम सिंह यादव : माननीय प्रधान मंत्री जी जब भी उत्तर दें, उस समय यह जरूर बतायें कि आपके मंत्रिमंडल में सारे के सारे लोग ऐसे हैं, जिनपर कोई भ्रष्टाचार का आरोप नहीं है तो फिर छह दिन का विशेष अधिवेशन लोक सभा क्यों बुलाई ?

फिर स्वच्छ प्रशासन की बात है, ईमानदार प्रधान मंत्री, जिस प्रधान मंत्री के मंत्रिमंडल में भ्रष्टाचार के आरोपी मंत्री बने होंगे तो देश की जनता आप पर अंगुली उठाएगी। प्रधान मंत्री अगर ईमानदार होगा तो प्रधान मंत्री के मंत्रिमंडल में भी सारे लोग ईमानदार होने चाहिए। आडवाणी जी ने ठीक उदाहरण दिया था, जब उन पर भ्रष्टाचार का आरोप लगा तो उन्होंने इस्तीफा दे दिया और इस्तीफा देकर कहा कि मैं तब तक कोई सरकारी या लोक सभा में पद नहीं लूंगा, जब तक कि हमें न्यायालय दोषमुक्त नहीं कर देता।

श्री वीरेन्द्र सिंह : उन्होंने कहा था कि पार्लियामेंट के परिसर में कदम नहीं रखूंगा।

श्री मुलायम सिंह यादव : हां, कहा था। उसकी मैं तारीफ ही कर रहा हूं। हम यही तारीफ करेंगे। लेकिन अब प्रधान मंत्री की तारीफ हम कैसे कर दें ?

सभापति महोदय : मुलायम सिंह जी, आप उनसे बात मत कीजिए, इधर देखिये।

श्री मुलायम सिंह यादव : क्या इसी आधार पर चलाएंगे, होम मिनिस्ट्री, उनके ऊपर है। इनका पुलिन्दा बांध देंगे। वे कमजोर नहीं हैं, वे सब का पुलिन्दा बांधेंगे और सब की फाइल बन रही होगी। हम तो प्रधान मंत्री जी को सावधान कर रहे हैं, आपकी आलोचना नहीं कर रहे। आप बुरा मत मानिये, हम आपको आने वाले खतरों से सावधान कर रहे हैं। हमारे सामने जो खतरे हैं, उनसे लड़ने के लिए हम तैयार हो गये हैं। आपका कोई बड़ा बहुमत नहीं है। आप बार-बार कहते हैं कि आपकी सरकार किसने गिराई। हमारी सरकार कांग्रेस ने गिराई, जो बहुत बड़ा दल है और आपके यहां तो माननीय बूटा सिंह जी चाहें तो आज ही सरकार गिर जायेगी। फिर क्या होगा ?.....*(व्यवधान)* वह तो बड़ी पार्टी थी, लेकिन आज एक भी निर्वलीय अगर चाहे तो वह आपकी सरकार गिरा दे। इसलिए आप इन बातों में मत जाइये कि सरकार किसने गिराई। वह तो बड़ी पार्टी थी, उसने सरकार गिराई, लेकिन आपकी ताकत तो अभी ऐसी है कि आपकी सरकार गिराने के लिए स. बूटा सिंह ही काफी हैं।

कितने अफसोस की बात है, इनका संस्कृति भी एक नारा है। आज उत्तर प्रदेश के अन्दर भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने नकल विरोधी कानून बनाया है। हम नकल के पक्षधर नहीं हैं और आपको यह भी विश्वास होना चाहिए .....*(व्यवधान)*

श्री अशोक प्रधान : आपकी पार्टी के लोग धरने पर बैठे हैं, इससे ज्यादा और क्या होगा।

श्री मुलायम सिंह यादव : इसीलिए कह रहे हैं कि हम नकल के पक्षधर नहीं हैं, नकल के विरोधी हैं। जहां मैं टीचर रहा हूं, अभी तक होम एग्जामिनेशन में नकल नहीं हो रही है, हमारी ऐसी परम्पराएं डाली हुई हैं.....*(व्यवधान)*

लेकिन जिस तरह का काला कानून उत्तर प्रदेश के अंदर बना है उसका विरोध करेंगे।.....*(व्यवधान)* हल्ला भी बोलेंगे, अभी क्या हुआ है। विश्व के किसी भी सभ्य समाज और सभ्य देश में शिक्षण संस्थाओं में ऐसा काला कानून लागू नहीं है, हिन्दुस्तान

[श्री मुलायम सिंह यादव]

के भी अन्य किसी राज्य में नहीं हैं। 15-16 साल के छात्र-छात्राओं को जेल में भेज देंगे और वहीं उत्तर प्रदेश में अपराधी मंत्री बनेंगे।

एक माननीय सदस्य : *आप पर कितने मुकदमें दर्ज हैं?*

श्री मुलायम सिंह यादव : आपके गृह मंत्री सदन में बैठे हुए हैं, वे बता देंगे। फिर मैं आप लोगों के भी गिना दूंगा। मैंने कोई गलत बात नहीं कही है। सभापति, महोदय, इनका जवाब भी साथ-साथ देता जाऊंगा।

सभापति महोदय : यह सवाल-जवाब की बात नहीं है। आप उधर ध्यान मत दें।

श्री मुलायम सिंह यादव : मैं तो आपको ही देख रहा हूं। उधर देख लिया तो और गड़बड़ हो जाएगी। ये लोग नैतिकता की, संस्कृति की बात करते हैं। भ्रष्टाचार दूर करने की बात करते हैं। लेकिन इन्होंने लोक सभा में अपराधियों को टिकट दिया, विधान सभा में अपराधियों को टिकट दिया। यहां तक कि इस बात का प्रमाण है कि 1991 से लेकर अभी तक मेरे खिलाफ इन्होंने किसी भले आदमी को चुनाव नहीं लड़ाया।

श्री वीरेन्द्र सिंह : आपने मेरे खिलाफ किस भले आदमी को चुनाव लड़ाया था?.......*(व्यवधान)* आपने फूलन देवी को मेरे खिलाफ चुनाव लड़ाया।

[अनुवाद]

सभापति महोदय : कार्यवाही वृंताल में कुछ सम्मिलित नहीं किया जायेगा।

..... *(व्यवधान)**

सभापति महोदय : आप बैठते क्यों नहीं? उन्होंने अपनी बात समाप्त नहीं की है।

..... *(व्यवधान)*

सभापति महोदय : मैं बोल रहा हूं। आप बैठ जाइए। यह ठीक नहीं है।

.......*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

सभापति महोदय : आप एक वरिष्ठ सदस्य हैं, सदन की परम्पराओं को जानते हैं।

श्री वीरेन्द्र सिंह : मेरा भी यहां उतना अधिकार है जितना इनका है। मेरे से सम्बन्धित बात आई तो मैंने कह दिया।

सभापति महोदय : जब एक सदस्य सदन में भाषण कर रहे हैं, जब वे ईल्ड करें, तभी आप अपनी बात उठा सकते हैं।

.......*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : इस तरह से हाउस नहीं चल सकेगा, अब आप बैठ जाएं, बहुत हो गया।

श्री मुलायम सिंह यादव : मैंने इसीलिए कहा कि आप की समाजवादी पार्टी तो अपराधियों की पार्टी है ही, सब मैगजीनों में, दूरदर्शन में यह दिखाया जाता है कि ये मुलायम सिंह के अपराधी हैं, हम तो हैं ही अपराधी.......*(व्यवधान)* लेकिन आप जो स्वच्छ छवि वाले हैं आप अपने बारे में बताएं कि आप क्या हैं। हमारे बारे में तो बहुत कुछ आपके द्वारा कहा जाता है कि हम तो हिंदुओं के दुश्मन हैं, मुसलमानों के मित्र हैं, हम यह फख्र के साथ कहते हैं.......*(व्यवधान)*

स्क्वाड्रन् लीडर कमल चौधरी (होशियारपुर) : इन्होंने कहा कि हम अपराधी हैं, मैंने कहा कि मायावती जी से पूछो क्या है, जहां उनको मारने की कोशिश की गई।

सभापति महोदय : कमल जी आप बैठ जाएं।

श्री मुलायम सिंह यादव : ....*(व्यवधान)* इसीलिए मैंने कहा कि हम अपराधी नहीं हैं। आप लोग हमें अपराधी कहते रहे ....*(व्यवधान)*

श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी (दरभंगा) : जान से मारने की योजना बनाई थी, मायावती बोल चुकी हैं।.......*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : मैं कह रहा था कि सबने हमारे दलों पर भ्रष्टाचारी, अपराधी होने के आरोप लगाए। हम पर तो आरोप लगते ही रहे और आप स्वच्छ छवि वाले हो गए। हमने कहा कि हम अपराधी को टिकट नहीं देंगे और हमने किसी अपराधी को टिकट नहीं दिया। आपने ऑब्जेक्शन किया था। हम वीरेन्द्र सिंह जी से ज्यादा नहीं कहना चाहते।.......*(व्यवधान)* आपने एतराज किया था। लेकिन इलेक्शन कमीशन ने आपके एतराज के बावजूद फूलन देवी ने पर्चा सही पाया, अदालत ने सही पाया। ....*(व्यवधान)* फूलन देवी के बारे में हम इससे ज्यादा भी नहीं कहना चाहते।

श्री वीरेन्द्र सिंह : इलेक्शन कमीशन के बारे में चर्चा मत करिए.......*(व्यवधान)*

इलेक्शन कमीशन की यहां चर्चा मत करिए.......*(व्यवधान)*

श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी : वह मजबूर औरत है। फूलन देवी के उपर बड़ा जुल्म हुआ।.......*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

सभापति महोदय : श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी जी आप खड़े क्यों हो रहे हैं? श्री मुलायम सिंह यादव स्वयं अपना बचाव कर सकते हैं।

* कार्यवाही वृतांत में सम्मिलत नहीं किया।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव : आम सहमति देख लीजिए .....(व्यवधान) ये आम सहमति की बात कर रहे हैं। जिन्होंने हमेशा टकराव की राजनीति की है, वह कैसे आम सहमति पर आ जाएंगे। कहां से आम सहमति लाओगे ? 1977 में एमरजेंसी के दौरान जेल में रहकर, इतनी तकलीफें सहने के बाद, हम लोगों ने सरकार बनाई। इस चौधरी सवस्यता के नाम पर ऐसा टकराव किया जिसकी वजह से 1977 की बहुमत की सरकार भी हम लोग नहीं चला पाए। हमेशा टकराव किया। 1990 में जब हम मुख्य मंत्री बने तो लाखों लोगों को अयोध्या में ले जाने की क्या जरूरत थी ? यह टकराव किसने पैदा किया ? मस्जिद गिराकर देश के अंदर टकराव किसने पैदा किया ? मुम्बई, सूरत, भोपाल, कानपुर, बनारस, जहां दंगा, हत्याएं, लूटपाट और इतने घृणित काम हुए कि मुम्बई में आज बहुत से परिवार अपने बच्चों को गोदी में लेकर, बेबस इधर-उधर घूम रहे हैं। यह टकराव किसने पैदा किया ? समाज के अंदर, देश के अंदर, हर स्तर पर टकराव पैदा किया गया। अभी परसों ही आपने टकराव पैदा कर दिया था। अध्यक्ष जी चुने गए, बधाई है, लेकिन अगर देश को मजबूत करना था तो संगमा साहब, जो उत्तर पूर्वी इलाके के हैं, अगर वह अध्यक्ष रहते तो सीमाओं से लगे हुए लोगों को यह फक्र होता कि हमारे क्षेत्र का एक व्यक्ति हिन्दुस्तान के सर्वोच्च पद पर है .....(व्यवधान) आप कहां आम सहमति की बात करते हैं.....(व्यवधान) संगमा साहब चुने गए थे, उस समय हमने आम सहमति दिखा दी थी और उन्हें आम सहमति से अध्यक्ष बनाया था।.....(व्यवधान) हम आपकी नीयत के बारे में कह रहे हैं। आप आम सहमति की बात करते हैं लेकिन हमेशा टकराव करते हैं। यहां दो जुबान से मत बोलिए, एक जुबान से बोलिए।

सभापति महोदय : आपका समय समाप्त हो गया।

श्री मुलायम सिंह यादव : आपने मुझे इतना समय दिया है .....(व्यवधान) थोड़े समय में मैं अपनी बात पूरी कर दूंगा।

सभापति महोदय : आपका समय पन्द्रह मिनट था। सोलह मिनट आपने ले लिए हैं।

.....(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : पारदर्शिता की बात बहुत अच्छी लगती है। अगर पारदर्शिता है तो हमें माननीय प्रधान मंत्री जी अपने उत्तर में बताएं कि संघ परिवार के आप सदस्य हैं या नहीं ? आप यह बताएं कि क्या संघ परिवार से आपका रिश्ता है, क्या आप संघ परिवार के मेम्बर हैं ? आप यह बताएं कि क्या संघ परिवार से आपका रिश्ता है, क्या आप संघ परिवार के मेम्बर हैं ? हम पारदर्शिता के बारे में और संघ परिवार के बारे में विस्तार से किसी मौके पर सदन में अपनी बात कहेंगे और आपसे भी सुनना चाहेंगे। मैं ज्यादा नहीं कहूंगा। मंत्रिमंडल बनाते समय सहयोगी दलों के सहयोग की बात कही गई। आप यह बताएं, क्या कहीं पर भी यह कहा गया है कि गठबंधन की सरकार है ? कहा जा रहा है कि यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार है। जब हमारी सरकार थी, तब हमने कहा था कि यह संयुक्त मोर्चे की सरकार है। जॉर्ज साहब यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, अभी तक भी यह आपके दल की सरकार नहीं है। इस प्रकार की बात अखबारों में भी कही गयी है.....(व्यवधान)

मैं भारतीय भाषाओं की तरक्की का पक्षधर हूं। देश में हर भाषा की तरक्की हो, तमिल भाषा की तरक्की हो, गुरमुखी की तरक्की हो, मलयालम भाषा की तरक्की हो, कन्नड़ भाषा की तरक्की हो और चाहे बंगला हो, पंजाबी हो, असमिया हो, उर्दू हो सारी भाषाओं की तरक्की का मैं पक्षधर हूं। आप यह बतायें कि आपका हिन्दी प्रेम कहां चला गया। हिन्दी से प्रेम है, तो अंग्रेजी को हटाओ। अंग्रेजी को हटाने के बारे में एक शब्द भी कहा ? आजादी के समय हम लोग जेलों में गए हैं, पिटे हैं। सारी क्षेत्रीय भाषाओं की तरक्की होनी चाहिए। मैंने मुख्यमंत्री होकर आठ भाषाओं को पढ़ाने का काम किया, लेकिन अंग्रेजी का मोह बना हुआ है और आडवाणी जी आप भारतीयता की बात कहते हैं। आपका राष्ट्रीय कार्यक्रम, राष्ट्रीय ऐजेंडा विदेशी भावना और विदेशी मानसिकता से भरा हुआ है।

एक माननीय सदस्य : सोमनाथ जी का क्या होगा ?

श्री मुलायम सिंह यादव : हम तैयार कर लेंगे।

मैं किसानों की बात करता हूं। पूरे उत्तर प्रदेश का ही नहीं, बल्कि पूरे हिन्दुस्तान का किसान बरबाद है। कहीं पर तूफान है और कहीं पर समुद्री तूफान है, ओले हैं आपने कहा था कि पहले ही दिन आप कोई ऐसा काम करेंगे कि वह चमत्कारी काम होगा। छः महीने के अन्दर ऐसा काम करेंगे, जिससे देश की जनता महसूस करेगी कि सरकार काम कर रही है। मैं पूछता हूं, कौन सा ऐसा काम हुआ है ? इतने घन्टे हो गए हैं, लेकिन अभी तक कोई चमत्कारी काम नहीं हुआ है, कब करेंगे ? अभी तक किसानों को पर्याप्त मदद भी नहीं मिली .....(व्यवधान)

श्री मधुकर सरपोतदार (मुम्बई उत्तर-पश्चिम) : छः महीने की बात है.....(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : छः महीने की तो अलग बात है।

महोदय, हम जानना चाहते हैं.....(व्यवधान)

श्री मदन लाल खुराना : प्रधान मंत्री जी का भाषण 11.40 बजे खत्म हुआ। 11.40 बजे से लेकर अब 15.25 बज रहे हैं। माननीय सदस्य यहीं से ही बोल रहे हैं। ढाई घंटे का समय उन्हीं को मिल रहा है.....(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : जहां तक रक्षा का सवाल है, प्रधान मंत्री जी आपने बयान दिए हैं कि हम एटम बम बनायेंगे। मुझे जॉर्ज साहब से कुछ नहीं कहना है, लेकिन आप पहले तेरह दिन प्रधान मंत्री रह चुके थे। आपको इस बारे में पता नहीं था, लेकिन इसके बावजूद भी देश में अनावश्यक चर्चा कर रहे हैं तथा जनता

[श्री मुलायम सिंह यादव]

को प्रमित कर रहे हैं कि परमाणु शक्ति बनायेंगे, ऐसी बात कहना। आश्चर्य कि आपको तेरह दिन पता नहीं लगा। यह एक संवेदनशील मामला है। इसके बावजूद कहना कि परमाणु शक्ति बनायेंगे, कहां तक उचित है? हमारी सरकार लोगों ने कहा था कि हमारे परमाणु शक्ति के बारे में हमारे विकल्प खुले हुए हैं। इसलिए जो आपने कहा, उसमें कौन सी नई बात है? इस देश की रक्षा को मजबूत करने के लिए आधुनिक हथियारों का हम लोगों ने जो कार्यक्रम चलाया, अगर उसी को आपने लागू कर दिया तो उससे ही देश की सैन्य शक्ति बहुत मजबूत हो जायेगी। फिर ज्यादा बोलने की आवश्यकता नहीं रहेगी .....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय, विश्वासमत के पक्ष में जो मतदान करेगा वह हमारे हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई के महा सेनानियों के विरोध में वोट होगा, गरीबों के खिलाफ वोट होगा, भ्रष्टाचार के समर्थन में वोट होगा और यह वोट अल्पसंख्यकों के विरोध में होगा। छात्रों के विरोध में होगा तथा अनैतिकता और भ्रष्टाचार के पक्ष में वोट होगा। आज जिस शानदार हिन्दुस्तान के अंदर हम सभी को जोड़ना चाहते हैं, जोड़ने के बाद इस देश को मजबूत करना चाहते हैं और हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सब को एक रखना चाहते हैं। आप जो मुसलमानों के बारे में शक करते हैं, मुसलमान कौम इस देश की शानदार कौम है। जब भी देश के समक्ष आजादी की लड़ाई से लेकर आज तक खतरा उठाने का अवसर आया है तो उन्होंने मुकाबला किया है। मुझे मुसलमान कौम पर आज फक्र है.....*(व्यवधान)* आप इन पर शक मत करो। अगर इन पर शक करोगे तो खतरा हो जाएगा और अगर प्यार, मोहब्बत से देखोगे तो देश मजबूत होगा तथा देश के लिए कुर्बानी करने हेतु मुसलमान सदैव तैयार रहेगा।

सभापति महोदय, इसी के साथ-साथ हम यह कहना चाहते हैं और आपको याद दिलाना चाहते हैं कि आप 1930 और 1931 का इतिहास पढ़ें.....*(व्यवधान)* राष्ट्रभक्ति की भावना पैदा करके हिटलर आया था। यही समाजवाद का नारा देकर आया था.... ...*(व्यवधान)* आज हम जार्ज साहब और बरनाला साहब से साफ कहना चाहते हैं कि आपको आगे आने वाली पीढ़ी माफ नहीं करेगी। हिटलर ने जिस तरीके से सत्ता अपनाई थी। इसी तरह संसार का सहारा लेकर .....*(व्यवधान)* आज ये फिरकापरस्ती ताकतें हिन्दुस्तान की सत्ता पर काबिज होना चाहती हैं लेकिन इन नाजीवादी मंसूबों को कामयाब नहीं होने दिया जाएगा। इसलिए हम आपको इससे सावधान करना चाहते हैं। इसी के साथ मैं इस प्रस्तुत प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

[हिन्दी]

रक्षा मंत्री (श्री जार्ज फर्नांडीज) : सभापति महोदय, इसी सदन में 1996 में आए विश्वास प्रस्ताव के पक्ष में बोलने के लिए मैं खड़ा हुआ था और आज यहां फिर एक बार इस सदन में आए विश्वास प्रस्ताव के पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। आज यह मौका नहीं आता अगर कांग्रेस पार्टी संयुक्त मोर्चे की सरकार को हटा कर देश को चुनाव के मैदान में न धकेलती।

अभी हमने नेता विरोधी दल का भाषण सुना। उन्होंने इस नयी सरकार को किस परिस्थिति में लाने में मदद की, इस पर कुछ नहीं कहा। लेकिन सोमनाथ बाबू ने अपनी बातें यहां पर रखीं और उन्होंने इस सरकार पर अपने गुस्से को काफी दिखाया। मेरे हाथ में यहां पर मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी का 22 फरवरी का, उनका जो अपना साप्ताहिक "पीपल्स डेमोक्रेसी" निकलता है, उसका अंक है। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के महामंत्री श्री हरकिशन सिंह सुरजीत का, उनकी अपनी पार्टी की ओर से और संयुक्त मोर्चे की ओर से टेलीविजन पर दिया हुआ भाषण है। चुनाव के पहले हर दल को टेलीविजन पर बोलने का मौका मिला था, उसी अवसर पर दिया हुआ यह भाषण है। उसका दूसरा वाक्य है-

[अनुवाद]

"देश की जनता पर यह अनावश्यक चुनाव कांग्रेस ने थोपा है जिसने किसी वैध कारण के बगैर संयुक्त मोर्चे की सरकार गिरा दी। कांग्रेस ने जैन आयोग की रिपोर्ट का हवाला दिया और यह डी.एम.के. तथा तमिलनाडु की जनता पर एकदम निराधार आरोप है।"

[हिन्दी]

सोमनाथ बाबू और शरद पवार जी दोनों गौर से सुनें:

[अनुवाद]

"कांग्रेस का वास्तविक खेल, जिसके नेता सत्ता के बगैर नहीं रह सकते हैं, संयुक्त मोर्चे को ब्लैकमेल करना और सरकार में शामिल होना था। लेकिन संयुक्त मोर्चे के सभी घटक दृढ़ रहे।"

[हिन्दी]

लगता है कि अब आपकी फर्मनेस खत्म हो गयी और फिर आप हिलाई में आ गये हैं। बगल में बैठकर वही बातें आप भी कहने लगे जो बातें उन्होंने यहां पर कहीं। मैं मानता हूं कि संयुक्त मोर्चे के जो भी लोग इस सदन में मौजूद हैं वे उनकी बातों को नहीं मानेंगे। लेकिन सबसे बढ़कर कांग्रेस पार्टी की उनकी इस टिप्पणी पर क्या राय है, उसे हम चाहते हैं कि देश सुने। यह राय उनके अपने घोषणा-पत्र में लिखी है। भारतीय जनता पार्टी का घोषणा-पत्र आपने अपने हाथों में लिया था अब अपना घोषणा पत्र भी अपने हाथों में लीजिए - यह मेरी आपसे प्रार्थना है। उसके चार नम्बर के पन्ने से शुरू कीजिए, आप भारतीय जनता पार्टी का नहीं कांग्रेस का घोषणा-पत्र लीजिए। संयुक्त मोर्चे की सरकार को गिराने के कांग्रेस पार्टी ने सात कारण दिए हैं। पहला कारण है-

[अनुवाद]

'संयुक्त मोर्चा अपने साझा न्यूनतम कार्यक्रम को पूरा करने में विफल रहा है'

[हिन्दी]

यानि आप वचन भंग के दोषी हैं, आपने वचन भंग किया है। आगे कहा है-

[अनुवाद]

'सबसे बुरी बात तो यह थी कि संयुक्त मोर्चे ने कांग्रेस का समर्थन लेने के बावजूद कांग्रेस को नुकसान पहुंचाने का प्रयास किया और इस संबंध में उसके सामने आए मौका का लाभ उठाया'।

[हिन्दी]

यानि उनका इस्तेमाल आप लोगों ने किया। नम्बर तीन पर है-

[अनुवाद]

'उत्तर प्रदेश में संयुक्त मोर्चे की धर्मनिर्पेक्षता के प्रति प्रतिबद्धता दांव पर लगी थी लेकिन संयुक्त मोर्चा अपने धर्मनिर्पेक्षता के स्वरूप को बनाए नहीं रख सका।'

[हिन्दी]

कैसे ? कांग्रेस ने यहां मांग की कि बी.एस.पी., कांग्रेस और संयुक्त मोर्चा एक होकर उन ताकतों से लड़े जो कम्यूनल ताकतें हैं लेकिन आप लोगों ने नहीं माना जिससे उत्तर प्रदेश में और पूरे देश में आपने कम्यूनल ताकतों को बढ़ा दिया है। यह संयुक्त मोर्चा पर कांग्रेस का अपने घोषणा पत्र में आरोप है। आगे जाकर वे बताते हैं कि-

[अनुवाद]

'विगत समय में संयुक्त मोर्चे के घटकों और बी.जे.पी. का लक्ष्य एक ही था और वह लक्ष्य था गैर कांग्रेसवाद।'

[हिन्दी]

यानी सीधे आपके ऊपर आरोप है कि आप में और इसमें कोई फर्क नहीं है। इसलिए बहुत परेशान होकर आप लोगों को बोलने की जरूरत नहीं है। वे आगे कहते हैं कि-

[अनुवाद]

'संयुक्त मोर्चा चाहता था कि कांग्रेस अकेले ही साम्प्रदायिक ताकतों से लड़े जबकि संयुक्त मोर्चा उसके समर्थन से सत्ता में था।'

[हिन्दी]

यह आप लोगों की नीयत के ऊपर हमला है-सोमनाथ बाबू आपके ऊपर भी क्योंकि आप लोग उस सरकार को चला रहे थे और आप सभी लोग जो यहां पर बैठे हैं यह आप सब लोगों की नीयत पर प्रश्न चिन्ह है। फिर वे कहते हैं कि आप लोगों ने कांग्रेस तोड़ने की कोशिश की-

[अनुवाद]

'अप्रैल 1996 में कांग्रेस ने अपना नेता बदलने के लिए कहा क्योंकि उसके पास इस बात के पक्के प्रमाण थे कि सरकारी एजेंसियों का कांग्रेस का विध्वंस करने के लिए उपयोग किया जा रहा है।'

[हिन्दी]

यह सारा उनके कहने के अनुसार सच है।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : यह उनका विचार है।

[हिन्दी]

श्री जार्ज फर्नान्डीज : एक ही हो सकता है - या तो यह सच है या यह गलत है। यह म्यू नहीं है, यह सीधे आपके ऊपर आरोप है। .....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री अजीत जोगी (रायगढ़) : क्या यह आज के विश्वास प्रस्ताव के संदर्भ में है ?.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : श्री जार्ज फर्नान्डीज. क्या आप उनकी बात से सहमत हैं ?

श्री एस. जयपाल रेड्डी (महबूब नगर): सभापति महोदय, हमारे लिए कांग्रेस पार्टी के साथ सहमत होना आवश्यक नहीं है। श्री जार्ज को अपने बारे में कुछ बोलने दीजिए .....*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : यह उनका चुनाव घोषणा पत्र है न कि मेरा.....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री जार्ज फर्नान्डीज : यह उनकी राय है.....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

सभापति महोदय : कृपया अपना स्थान ग्रहण करें।

[हिन्दी]

एक माननीय सदस्य : आप सोशलिस्ट हैं या नहीं हमें इस सवाल का जवाब चाहिए.....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

सभापति महोदय : कार्यवाही वृतान्त में कुछ भी शामिल नहीं किया जा रहा है।

.....*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री जार्ज फर्नान्डीज : सभापति महोदय सच बहुत बुरा लगता है और हमेशा तीखा लगता है। सच को स्वीकार करने में बहुत परेशानी होती है। इसलिए मैं अपने लायक दोस्त जय पाल रेड्डी की परेशानी को समझ सकता हूं। बात यहां खत्म नहीं होती। इससे बढ़कर डी.एम.के. के उपर आरोप है जिनका बचाव करने के लिए मैं खड़ा हूं वे कहते हैं कि आपने जैन कमीशन की रिपोर्ट को यहां पेश करने से रोका। वे आगे जाकर कहते हैं-

[अनुवाद]

"इस रिपोर्ट में विस्तार से डी.एम.के. पार्टी के एक वर्ग और एल टी टी ई संगठन की सहायता करने और उकसाने वाले श्री करुणानिधि की अध्यक्षता में तत्कालीन तमिलनाडु सरकार की भूमिका पर विचार किया गया है। एलटीटीई, डी.एम.के. के नेतृत्व वाली सरकार और डीएमके के कुछ एक नेताओं के समर्थन और सहायता के बिना राजीव गांधी की हत्या नहीं कर सकता था।"

इस रिपोर्ट में आगे यह भी बताया गया है:

"कांग्रेस संयुक्त मोर्चा की सरकार को अपना समर्थन देना कैसे जारी रख सकती है जबकि मोर्चे के एक घटक को जांच आयोग ने उस एजेन्सी का उत्प्रेरक बताया है जिसने कांग्रेस अध्यक्ष, कांग्रेस के भूतपूर्व प्रधानमंत्री और भावी प्रधानमंत्री को मरवाया था।" डी.एम.के. के मित्र यहां बैठे हैं।

[हिन्दी]

आप लोगों की उनके बारे में यह राय है। आप उनका समर्थन लेकर चाहते हैं किसी भी रूप में हम सरकार में पहुंच जाएं। .....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री टी. आर. बालू (मद्रास दक्षिण) : क्या आप इस वक्तव्य से सहमत हैं?

श्री जार्ज फर्नान्डीज : नहीं, मैं इससे सहमत नहीं हूं। यही बात मैं कह रहा था।

श्री टी. आर. बालू : धन्यवाद।

---

* कार्यवाही वृतांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

श्री जार्ज फर्नान्डीज : आप बहुत ही बुरी और खतरनाक संगत में फंस गए हैं। मैं यही बात कह रहा हूं.....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

मैं इस बात को मानता हूं कि जयपाल रेड्डी जी ने जो बात कही, उसका यूनाइटेड फ्रन्ट की पार्टियां नहीं मानेगी क्योंकि वह उनकी अपनी राय है। उस राय पर जाने से पहले मैं शरद पवार जी की उस बात पर जाऊंगा कि वह जितने दलों को साथ लेकर चलने की बात मानते हैं, उनके बीच में क्या वैचारिक एकमत है? .....*(व्यवधान)* बहुत है.....*(व्यवधान)* इसलिए इन दोनों के बीच में कितना सामंजस्य है, कितना नजदीकीपन है, मैं उसको भी बताउंगा। सोमनाथ बाबू, आपके दल के बारे में उनकी राय है .....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

"जहां तक वामपंथी दलों का संबंध है सात दशकों के बाद भी सी.पी.आई. और सी.पी.एम. अपने आपको देश की मुख्य धारा के साथ नहीं जोड़ पाए हैं। वे अभी भी इससे बाहर हैं। उनका राष्ट्रीय महत्व घट रहा है।"

श्री सोमनाथ चटर्जी : वे उन सब बातों से सहमत हो रहे हैं जिन पर मैं सहमत नहीं हूं। अतः इन बातों को मुझ पर लागू करने का क्या लाभ है।

श्री जार्ज फर्नान्डीज : नहीं, मैं यह नहीं कह रहा हूं। मैं आपको बचाने की कोशिश कर रहा हूं। मैं आपको उनसे बचाने की कोशिश कर रहा हूं.....*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : उन्हें विश्वास प्रस्ताव पर बोलना चाहिए.....*(व्यवधान)*

श्री जार्ज फर्नान्डीज : श्री सोमनाथ चटर्जी, यह महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि वे आपके मत को अपना मत बता रहे हैं उनके 55 प्रतिशत मतों में आप लोगों के मत भी शामिल हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : हम यह नहीं कह रहे हैं .....*(व्यवधान)*

श्री जार्ज फर्नान्डीज : वे इसका दावा करते हैं .....*(व्यवधान)*

श्री तारिक अनवर (कटिहार) : श्री शरद पवार भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ धर्मनिर्पेक्ष मतों की बात कर रहे थे। .....*(व्यवधान)*

श्री जार्ज फर्नान्डीज : इसमें यह भी कहा गया है:

"उनका राष्ट्रीय महत्व घट रहा है और आज वे केवल तीन राज्यों अर्थात पश्चिम बंगाल, केरल और त्रिपुरा तक ही सीमित

रह गए हैं। पिछले 20 वर्षों से वामपंथी दल पश्चिम बंगाल में निरन्तर सत्ता में हैं, फिर भी कांग्रेस को वहां 40 प्रतिशत मत मिलते रहे हैं।"

[हिन्दी]

कहां हैं ममता जी ?

[अनुवाद]

त्रिणमूल कांग्रेस ने उनके मतों को घटाकर 16 प्रतिशत कर दिया है ..... *(व्यवधान)*

महोदय, मैं पुनः उद्धृत करता हूं और इसके अनुसारः

"वामपंथी दलों ने पश्चिम बंगाल को बर्बाद कर दिया है। 1977 से पहले यह देश का एक प्रमुख औद्योगिक राज्यों में से एक था। इस राज्य के अधिकांश उद्योग रुग्ण और पुराने हो गए हैं। यहां पर नए उद्योगों में बहुत कम धनराशि निवेश हो रही है।"

[हिन्दी]

हमारे दोस्त मुलायम सिंह जी ने तो यहां पर दो जबान की बात कही।

[अनुवाद]

इस दस्तावेज में आगे यह भी कहा गया हैः

"सी.पी.आई. और मार्क्सवादियों द्वारा दोहरी बात करना विशेषता रही है। ये दल संसद में सभी उचित आर्थिक नीतियों का विरोध करते हैं लेकिन इन दलों की राज्य सरकारें विदेशों से और भारत के दूसरे भागों से नए व्यवसाय अपने यहां लाने का प्रयोग करती हैं।

इन तीनों राज्यों में सड़क यातायात के अभाव, प्रशासन का प्रतिकूल रवैया और दलगत हितों का अत्यधिक प्रभाव होने की वजह से लोग यहां पर पूंजी निवेश करने से कतराते हैं।"
.....(व्यवधान)

[हिन्दी]

यह बहुत जरूरी है चूंकि आप लोगों को मालूम होना चाहिए कि कौन जमात के साथ आप वोट लेकर आते हो, एक दूसरे का सहारा ले रहे हो, एक दूसरे को सहारा दे रहे हो। *.....(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री आर.एल. जालप्पा (चिकबल्लपुर) : सभापति महोदय, उन्हें विश्वास प्रस्ताव पर बोलने दीजिए।

[हिन्दी]

श्री जार्ज फर्नान्डीज : सभापति जी, जहां इनकी राय उनके बारे में गंदी है, वहां जरा उनकी राय भी सुनें।

श्री वसुदेव आचार्य (बांकुरा) : अपनी राय बताइए *.....(व्यवधान)*

श्री जार्ज फर्नान्डीज : यह मेनिफस्टो है आपका और आप अपने मेनिफेस्टो में कह रहे हैं सेक्यूलरिज्म के बारे में क्या रही है वह बताइए।

[अनुवाद]

सभापति महोदय: वह आपका समर्थन नहीं कर रहे हैं। श्री तारिक अनवर कृपया अपने स्थान पर बैठ जाएं।

[हिन्दी]

श्री सत्यपाल जैन (चंडीगढ़) : वह भी बताएंगे, आप बैठिये। *.....(व्यवधान)*

श्री जार्ज फर्नान्डीज : बहुत तकलीफ होती है।

अध्यक्ष जी, अब मार्क्सवादी क्या बोलते हैं ? ये बोलते हैं कांग्रेस के बारे में इतने ही तीखेपन से और इनका सेक्यूलरिज्म भी देख लीजिए कांग्रेस के बारे में।

[अनुवाद]

उनके दस्तावेज में कहा गया हैः

"कांग्रेस पार्टी राजनीतिक और संगठनात्मक दृष्टि से खोखली हो गई है। इस पार्टी के पतन की ओर जाने का कारण यह है कि जब यह सत्ता में थी तब इसने उन आर्थिक नीतियों का समर्थन किया जो जन-विरोधी थीं। इसने साम्प्रदायिक दलों के साथ समझौता करके धर्मनिरपेक्ष परम्परा को आघात पहुंचाया और यह पार्टी एक भ्रष्टाचारग्रस्त पार्टी है। कांग्रेस के इस उपेक्षित आचरण की वजह से इसे 1996 के चुनावों में भारी हार का सामना करना पड़ा।

इस पार्टी के व्यवहार में तब से कोई बदलाव नहीं आया है। कांग्रेस अब कोई ऐसी पार्टी नहीं रही है जो केन्द्र में सरकार गठित कर सके अथवा देश को एक राष्ट्रीय कार्यसूची प्रदान कर सके" *.....(व्यवधान)*

[हिन्दी]

मैं जानता हूं आपने राय बदली है। अब आप उनकी सरकार में जाने के लिए तैयार हैं।

हम जानते हैं आपके नेताओं ने यह बात कही है। अब इन दोनों के बीच में बात हो गई। अब जो हमारे जनता दल के दोस्त हैं, संयुक्त मोर्चा के दोस्त हैं, इनके बारे में इनकी क्या राय है।

[श्री जार्ज फर्नान्डीज]

वर्ष 1989 के कांग्रेसवाद विरोधी उथल-पुथल के दौरान जनता दल अस्तित्व में आ गया। यह एक हताश और अहम से ग्रस्त नाराज व्यक्तियों का समूह है। इसे महत्वपूर्ण राजनीतिक समूह नहीं कहा जा सकता। यह एक अमीबा की तरह बार-बार छोटे-छोटे दलों में विभाजित होता रहता है। इसका सामाजिक न्याय का नारा खोखला है।

[हिन्दी]

राम विलास जी यह कहा गया है-

[अनुवाद]

यह मात्र विभेदक जातीय राजनीति के व्यवहार वाली भ्रमक शक्ति है। संयुक्त मोर्चा में दो प्रधानमंत्रियों के अधीन जनता दल नेतृत्व के लिए दुर्भाग्यपूर्ण रहा है।

[हिन्दी]

दोनों इस समय दिखाई नहीं दे रहे हैं।

[अनुवाद]

आगे कहा गया है:

"अर्थव्यवस्था चौपट हो गई है।"

[हिन्दी]

वे कह रहे हैं हम नहीं कह रहे हैं।

[अनुवाद]

यह हमें मिला है और आदरणीय वित्त मंत्री को इसमें सुधार करना है। आगे कहा गया है:

" जरा भी नियंत्रण नहीं था। सभी मामलों को ऐसे ही चलने दिया गया है।"

[हिन्दी]

यह आपके बारे में उनकी राय है। मगर इनकी क्या राय है .....*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : आप रहने और बोलिये, यह तो अटल जी के लिए छोड़िए। आपका भाषण दूसरा होना चाहिए।

सभापति महोदय : यह क्या हो रहा है। आप दोनों आपस में बात कर रहे हैं।

[अनुवाद]

श्री जार्ज फर्नान्डीज : आप के बारे में उनकी क्या राय है मैं उद्धृत करता हूं:

"कांग्रेस पार्टी अपने पतन और विश्वास की वर्तमान स्थिति में स्थाई सरकार प्रदान करने का दावा करने की स्थिति में भी नहीं है। इसकी जन विरोधी नीतियां इसका साम्प्रदायिक ताकतों के साथ समझौतावादी दृष्टिकोण और इसके कई नेताओं का भ्रष्टाचार के घोटालों में लिप्त होना"....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

आप इतना बोल रहे हैं, यह आपकी पार्टी और आपका मोर्चा इनके बारे में कह रहा है।

[अनुवाद]

श्री सी.के. जाफर शरीफ (बंगलौर -उत्तर) : श्री फर्नान्डीज जी जब आप विश्वास मत पर बोल रहे हैं तो आपका प्रयास यह होना चाहिए कि आप सकारात्मक बोलिए और दूसरों की बुराई मत कीजिए .....*(व्यवधान)*

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता दक्षिण) : उन्होंने हमें इस प्रश्न का जवाब देने को कहा था।

श्री जार्ज फर्नान्डीज : महोदय हम बहुत ही सकारात्मक हैं। हमारा कार्यक्रम इस समय मेरे पास है। राष्ट्रीय एजेंडा बहुत ही सकारात्मक है। राष्ट्रपति के अभिभाषण में इसका जिक्र किया गया था। इस मुद्दे पर हम अभी आएंगे। वास्तव में आप सब को इस पर हर्ष होना चाहिए।

[हिन्दी]

यह संयुक्त मोर्चा के बारे में हो गया, जनता दल ने अपने घोषणा पत्र में कुछ अच्छी बातें लिखी हैं, वे भी सदन के रिकार्ड पर आना जरूरी है।

[अनुवाद]

उनका कहना है:

"भारत में भ्रष्टाचार की स्थिति काफी चिंताजनक है, जिन लोगों पर भ्रष्टाचार का आरोप है, उनमें कुछ ऐसे लोग भी हैं जो देश के शीर्ष पदों पर रह चुके हैं।"

[हिन्दी]

नाम नहीं लिया है, अच्छा किया है।

[अनुवाद]

"कुछ लोग भारतीय भारकोश बनने के प्रयास में" ..*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

भारकोस कौन है, भारकोस वह है जिसने फिलीपीन्स का खजाना लूटा था।

[अनुवाद]

आगे कहा गया है:

"भारतीय भारकोस बनने के प्रयास में घोटाला करने के लिए उच्च पदों पर रहते हुए विदेशी दलालों की भी मदद ली।

हालांकि कुछ नेताओं ने भ्रष्टाचार को अन्तर्राष्ट्रीय समस्या और व्यक्तिगत मामला बताने का निष्फल प्रयास किया, लेकिन जब तक भ्रष्टाचार रूपी कैन्सर सामाजिक राजनीति में है, प्रशासन के हर स्तर पर भ्रष्टाचार व्याप्त है, विदेशों में गुप्त बैंक खाते, और उच्चतम पद से सरकारी खजाने से धोखाधड़ी की नई प्रवृत्ति मौजूद है, तब तक कोई भी सभ्य समाज बच नहीं सकता।"

[हिन्दी]

अब आपके सामने साफ है।

[अनुवाद]

सभापति महोदय : कृपया बैठ जाइए।

[हिन्दी]

श्री जार्ज फर्नान्डीज : सही बात कही है। मैंने इन दो तीन दस्तावेजों को इसलिए पढ़ा क्योंकि यह जरूरी था। एक तो जब यह बहस चलती रहेगी .....*(व्यवधान)*

श्री तारिक अनवर (कटिहार) : जरा बी.जे.पी. का भी घोषणापत्र पढ़िए.....*(व्यवधान)*

श्री जार्ज फर्नान्डीज : वह न केवल हम पढ़ चुके हैं बल्कि उसी के आधार पर हमने यह प्रोग्राम भी बनाया है .....*(व्यवधान)*

श्री कांति लाल भूरिया : आप भारतीय जनता पार्टी का भी घोषणापत्र पढ़कर सुनाएं .... *(व्यवधान)*

श्री जार्ज फर्नान्डीज : अगर किसी ने यह बात नहीं सुनी हो, तो अब सुन लें क्योंकि यह बहुत जरूरी होता है कि कुछ बातें सब लोग सुनें। मैं आपको बताना चाहता हूं कि कांग्रेस ने तेलुगू देशम के बारे में क्या कहा, तेलुगू देशम को लेकर आपको बहुत गुस्सा है, उसके ऊपर आप बहुत नाराज हैं।

[अनुवाद]

आंध्र प्रदेश में तेलुगू देशम पार्टी, असम में असम गण परिषद और पंजाब में शिरोमणि अकाली दल राष्ट्रीय राजनीति में कोई सार्थक भूमिका अदा नहीं कर सकते।

[हिन्दी]

दूसरा वाक्य, और यह बहुत खतरनाक वाक्य है।

[अनुवाद]

हम जानते हैं और इस बात को संजोये रखे हुए हैं कि राष्ट्रीय और क्षेत्रीय या स्थानीय हितों में टकराव की दशा में क्षेत्रीय दलों द्वारा देश के हित के विपरीत क्षेत्रीय हितों का समर्थन किया जाएगा।

[हिन्दी]

बहुत खतरनाक बातें हैं। इसलिए आप कह रहे हैं और अकाली दल, तेलुगू देशम, असम गण परिषद की राष्ट्रभक्ति पर प्रश्नचिन्ह लगा रहे हैं। यही अर्थ है इसका, इसके अलावा इसका और कोई अर्थ नहीं है। हम तो राष्ट्रीय पार्टी है, रीजनल पार्टी नहीं है। इसलिए हमने यह सोचा कि आज इन बातों को आप सुन लें, समझ लें और जब भी निर्णय करने का वक्त आए, तब हम सब मिलकर निर्णय लें।

अध्यक्ष जी, इस बहस के दरम्यान कई बातें छिड़ गई हैं विशेषकर नेता विरोधी दल ने अपनी स्वदेशी सोच के बारे बातें कही हैं। जब स्वदेशी की बात आती है, तो दुनियाभर के लोग घबड़ा जाते हैं और यहां बैठे लोग भी समझते हैं कि देश के विकास में रुकावट आ जाएगी। अभी नेता विरोधी दल ने गांधी जी का नाम लिया और गांधी जी के स्वदेशी अपनाओं का अर्थ उन्होंने यह बताया कि गांधी जी ने यह नहीं कहा कि विदेशी चीजों को रोकना चाहिए। मेरे विचार में शरद जी, आपको गांधी जी को फिर से पढ़ना चाहिए क्योंकि गांधी जी ने कहा था कि जब आप कोई काम करना चाहते हैं, तो आपको उस गरीब का चेहरा ध्यान में लाना चाहिए जिसको आपने देखा हो और यह सोचना चाहिए कि हमारे इस काम से उस गरीब को फायदा होगा या नुकसान। यदि आपके कार्य या निर्णय से उस गरीब व्यक्ति को नुकसान पहुंचता है, तो वह नीति देश के हित में नहीं होगी। आपको अपनी नीति या निर्णय उस गरीब से गरीब व्यक्ति के चेहरे को सामने रखकर बनानी होगी। हमारा वही प्रयास है। हमारा स्वदेशी का मतलब राष्ट्र भक्ति है, और कुछ नहीं। जिस व्यक्ति में राष्ट्र भक्ति नहीं है, समझो वह व्यक्ति इस देश में कुछ नहीं कर पाएगा।

शरद पवार जी 50 साल हो गए हमारे देश की आजादी को और इस वर्ष तो हम अपनी आजादी की स्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं। अगर गैर-कांग्रेसी सरकारें उन्हें कहें, तो दो ही रहीं और मिलाकर सिर्फ तीन साल रहीं। वे सरकारें मोरारजी देसाई और विश्वनाथ प्रताप सिंह की थी और तीन सरकारें ऐसी रहीं जिनको गैर-कांग्रेसी कहें, लेकिन वे आपके समर्थन से रहीं और यह कहकर रहीं कि वे आपकी नीतियों पर अमल करेंगी और आपने उनसे यह संकल्प करवा लिया था।

45 साल आप ही का राज रहा। एक नहीं, दो नहीं, तीसरी पीढ़ी पर आप लोग जा रहे हो आप लोगों ने इस देश को 45 साल तक चलाया है। अगर आज देश यहां पर है, तो उसकी जिम्मेदारी किसकी है, यह आपको नहीं मालूम। आप जाकर देखिये, झुग्गी में चलिये .....*(व्यवधान)*

श्री तारिक अनवर : आज देश आगे बढ़ा है..... *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

सभापति महोदय : *श्री तारिक अनवर कृपया बैठ जाइए।*

[हिन्दी]

श्री तारिक अनवर : आप आंकड़े देखिये.....*(व्यवधान)* जार्ज साहब आप तो आंकड़ों की बात करते हैं।..... *(व्यवधान)* आप आंकड़े बताइये.....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री जार्ज फर्नान्डीज: मैंने अपनी बात समाप्त नहीं की है .....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

सभापति महोदय : इस तरह से नहीं हो सकता।

...*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : आप बैठिये।

.....*(व्यवधान)*

श्री जार्ज फर्नान्डीज : सभापति जी, उन्हें मैं बताऊंगा कि देश कहां है.....*(व्यवधान)* आजादी के 50 साल ....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

डा. महन्त चरण दास (जांजगीर) : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है।

सभापति महोदय : आपका व्यवस्था का प्रश्न किस नियम के तहत है? कौन सा नियम है? कोई जवाब नहीं है।

[हिन्दी]

श्री जार्ज फर्नान्डीज : सभापति महोदय जी, मैं बताने जा रहा था लेकिन जब चिल्लाकर पूछा गया कि कहां है, तो मुझे कहना पड़ा। जिनको मालूम नहीं है कि देश की आर्थिक स्थिति क्या है, उनके लिए मैं अलग से अध्ययन चलाने के लिए तैयार हूं। मैं उनकी पढ़ाई के लिए अपना समय देने के लिए तैयार हूं। यह मेरे पास है।

[अनुवाद]

नेशनल कांउसिल फार एप्लाइड इकोनोमिक्स रिसर्च रिपोर्ट है।

[हिन्दी]

जिससे बढ़कर हिन्दुस्तान में और कोई खोज संस्था नहीं है। यह वर्ष 1994 के अंत की रिपोर्ट है जिसे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को जानने के लिए इसे बनाया गया था कि हिन्दुस्तान की क्या आर्थिक स्थिति है? वह रिपोर्ट कहती है कि हिन्दुस्तान में 58 प्रतिशत हिन्दुस्तानी यानी 52 करोड़ लोग 10 रुपया या उससे कम पर अपना दिन गुजारा करते हैं। इसका आगे अर्थ यह है कि 26 करोड़ लोग इस देश में, आज के दिन, 5 रुपये या उससे कम प्रतिदिन आमदनी पर जी रहे हैं, 13 करोड़ लोग 2 रुपए 50 पैसे या उससे कम प्रतिदिन आमदनी पर जी रहे हैं, तथा साढ़े 6 करोड़ लोग 1 रुपए 25 पैसे या उससे कम प्रतिदिन आमदनी पर जी रहे हैं। अगर ऐसा हिन्दुस्तान आपको बनाना है तो फिर यह अनिवार्य हो जाता है कि इस देश के लोग इन समस्याओं का निदान करने वाली आर्थिक नीतियों को बनायें और हम वही काम करना चाहते हैं।

हम विदेशी पूंजी हिन्दुस्तान में आने के विरोधी नहीं हैं। मैं वर्ष 1977 में देश का उद्योग मंत्री था। विदेशी पूंजी हिन्दुस्तान में उस समय भी आई थी और मैंने हस्ताक्षर करके उन्हें आने की इजाजत दी थी। यहां प्रश्न पूंजी का नहीं है, प्रश्न इस देश की जरूरतों की पूर्ति का है और जब अपनी नीति स्वदेशी कहकर गर्व करते हैं तो उसके साथ यह बात भी जुड़ी हुई है कि हिन्दुस्तान के लोगों की बुनियादी सेवाओं का हल करने के लिए कोई नीति हो। हम चाहेंगे कि हमारे मित्र, विपक्ष के नेता इस बात का हमेशा ख्याल रखें।

अपराह्न 4.00 बजे

इन्होंने देश की सुरक्षा से जुड़ी हुई दूसरी बात छेड़ी। हमने 23 मार्च को डा० लोहिया के जन्म दिवस पर कांस्टीट्यूशन क्लब में जो भाषण दिया था, उसका उल्लेख इन्होंने किया। हमने क्या कहा? हमने उस नीति में कहा कि हिन्दुस्तान में पहली बार गैर-कांग्रेसी सरकार बनी है। इसके पहले जिसे हम गैर-कांग्रेसी सरकार बोलते थे, वह कहीं न कहीं कांग्रेस थीं। हिन्दुस्तान में श्री अटल बिहारी बाजपेयी के नेतृत्व वाली यह पहली गैर-कांग्रेसी सरकार है.....*(व्यवधान)* वैसे हिन्दुस्तान में जिनकी उम्र 50 साल से अधिक है, उनमें से अनेक लोग ऐसे हैं जो कांग्रेस से आए हैं और आते रहेंगे.....*(व्यवधान)* किसी दिन आप भी आ सकते हैं.....*(व्यवधान)* इतने विश्वास से मत बोलिए, आ सकते हैं।

श्री तारिक अनवर : मैं ऐसी बेवकूफी नहीं करता..... ...*(व्यवधान)*

श्री जार्ज फर्नान्डीज : सभापति महोदय, मैं इस सदन में कभी किसी को नहीं टोकता। लेकिन मेरा दुर्भाग्य है कि मुझे लोग टोकते रहते हैं।

मैंने उस समय यह कहा कि देश में जिस गैर-कांग्रेसवाद की चर्चा होती रही, वह गैर-कांग्रेसवाद कैसे आया। डा. लोहिया ने

1962 के सितम्बर-अक्टूबर के महीने में चीनी आक्रमण के बाद एक बात कही थी कि राष्ट्रीयकरण की सरकार है, इसका सामना करने के लिए सब एक हो जाएं। हमने उसका उल्लेख किया और उस संदर्भ में मैंने अपने देश की जमीन की चर्चा की। मैंने कहा कि 15 अगस्त, 1947 को हिन्दुस्तान की जो सीमा थी, वह आज नहीं है। आज हमारी जमीन औरों के हाथों में है। मैंने यह कहा, हमारी सरकार की यह कोशिश होगी कि बातचीत करके इन समस्याओं को हल करें। लेकिन मैं नहीं जानता था कि यदि मैं अपने देश की जमीन के बारे में बोलूंगा तो शरद पवार जी को परेशानी होगी। मेरे लिए सरकार में रहने का महत्व नहीं है।... ...*(व्यवधान)* इस देश की धरती का ज्यादा महत्व है, इस देश को बनाए रखने का ज्यादा महत्व है। इसलिए हमने जो बातें कहीं, उन बातों से कम से कम शरद पवार जी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। आप भी देश के रक्षा मंत्री रहे हैं। यदि मैं यह बात कहूं कि आपको इस देश की सीमाओं की कोई फिक्र ही नहीं थी तो आप क्या सोचेंगे, आपके मन में क्या भाव आएगा। यदि मैं इस देश की सीमाओं के बारे में सोचता हूं तो आपको आपत्ति हो जाती है। हम समझ नहीं सकते कि हम यह बहस कहां ले जा रहे हैं। इसलिए जहां तक हमारी सीमाओं का सवाल है, हम इस देश की सुरक्षा के संदर्भ में उन सीमाओं की समस्या का निदान चाहते हैं। हम अपनी सीमाओं के ऊपर विशेष निगरानी रखना चाहते हैं और इसमें किसी को परेशान होने की, विशेषकर कांग्रेस को परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है।

इसी के साथ राष्ट्रभक्ति का सवाल भी आता है। मैं इसलिए भी चाहता हूं कि इस देश की आजादी के बाद का इतिहास हम बोलते रहे, कहते रहे ताकि नई पीढ़ी उसे समझ ले, जान ले कि देश कहां है, देश की समस्याएं क्या हैं, सुरक्षा के मामले क्या हैं। हम यह भी चाहते हैं कि वे हमारे पुरखों द्वारा की गई लड़ाई को पहचान लें। इसलिए इन मुद्दों पर हम बोलकर रहेंगे और हम चाहेंगे कि आप परेशान न हों।

भ्रष्टाचार का सवाल उठा। भ्रष्टाचार पर आप दोनों के बीच की जो राय है, आप सबकी आपस में जो राय है, वह हमने रखी और सरकार के बारे में इतना ही कहूं कि राष्ट्रपति जी ने परसों जो भाषण दिया, उसका यही एक वाक्य आपको सब कुछ बताता है:

[अनुवाद]

> "सरकार का विचार है कि जो लोग सार्वजनिक पदों पर आसीन हैं, लोक पाल विधेयक के द्वारा उनको जवाबदेह बनाया जाए, शासकीय गुप्त बात अधिनियम की समीक्षा की जाएगी जिससे कि जानकारी के अधिकार हेतु कानून बनाया जा सके जो राष्ट्रीय सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेने की प्रक्रिया में पारदर्शिता और ईमानदारी लाई जा सके।"

तो इसलिए आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए। यह सरकार भ्रष्टाचार पर कहीं भी किसी से भी किसी भी प्रकार का सौदा नहीं करेगी। जहां तक कानून के अमल का सवाल है, वहां सौदा नहीं करेगी।

अब मैं आखिरी मुद्दे पर आता हूं। मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा और वह मुद्दा सैकुलरिज्म का है। इस प्रश्न पर मैं पिछले एक अर्से से लोगों को कह रहा हूं कि बहस चलाओ, लेकिन कोई बहस चलाने के लिए तैयार नहीं है। आप कह रहे हैं कि ये नॉन सैकुलर हैं, ये कह रहे हैं कि आप नॉन सैकुलर हैं, आप दोनों मिलकर कह रहे हैं हम नहीं हैं। मुझे समझ में नहीं आता कि क्या सैकुलर है और क्या नॉन सैकुलर है। सोमनाथ बाबू से मैं पूछना चाहता हूं, अगर आपकी पार्टी की यह राय है कि कांग्रेस पार्टी नॉन सैकुलर है, जो आप बार-बार अपने दस्तावेजों में कहते हैं, फिर उन लोगों के साथ कैसे सरकार बनाते हो?

श्री सोमनाथ चटर्जी : कहां बनाई?

श्री जार्ज फर्नान्डीज : कहां नहीं, आपके बगैर वह सरकार कैसे बनती है, वे कैसे प्रधान मंत्री हो जाते। आपके बगैर कैसे प्रधान मंत्री बने रहते? न देवेगौड़ा साहब बने रहते, न गुजराल साहब बने रहते।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : आपको ध्यान है कि भारतीय जनता पार्टी और हमने वी.पी. सिंह सरकार का बाहर से समर्थन किया था, क्यों? यह इसलिए कि हम चाहते थे कि श्री वी.पी. सिंह सरकार बनायें। भारतीय जनता पार्टी ने भी समर्थन दिया था लेकिन उन्होंने सरकार को बुरी तरह से गिरा दिया था।

[हिन्दी]

श्री जार्ज फर्नान्डीज : सोमनाथ बाबू आपके बगैर न संयुक्त मोर्चा की देवेगौड़ा साहब की सरकार बनती, न गुजराल साहब की सरकार बनती और कांग्रेस के समर्थन से वह सरकार बनी और आपका बार-बार कहना है कि यह नॉन सेकुलर है तो इसलिए मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या डिबेट है?

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी: क्या इससे आप धर्मनिरपेक्ष हो जाते हैं? क्या वो धर्मनिरपेक्ष हो जाते हैं?

[हिन्दी]

श्री जार्ज फर्नान्डीज : हम सैकुलर करके सब लोग कह रहे हैं, लेकिन हम अपनी पार्टी के बारे में, हम अपने कार्यक्रम के बारे में आपको बताना चाहते हैं कि हमारा सैकुलरिज्म कहां है और हम इस मुद्दे पर कहां हैं। हम चाहेंगे कि आप जरा हमारे कार्यक्रम को पढ़कर.....*(व्यवधान)* इसको समझ लीजिए। इसको पढ़ना जरूरी है।

[अनुवाद]

> "हम एक सभ्य, मानवीय एवं न्यायोचित नागरिक व्यवस्था स्थापित करने हेतु प्रतिबद्ध हैं जिसमें जाति, धर्म, वर्ग, नस्ल, रंग या लिंग के आधार पर कोई भेद भाव नहीं होगा। हम

[श्री जार्ज फर्नान्डीज]

सच्चाई और ईमानदारी से 'सर्व पंथ समादर' निरपेक्षता की भारतीय परंपरा की धर्म पर कायम रहेंगे। हम अल्पसंख्यक के आर्थिक और शैक्षिक विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं और इस संबंध में हम प्रभावकारी कदम उठाएंगे।''

[हिन्दी]

जी हां, यह हम लोगों का, बी.जे.पी. का.....(व्यवधान) जरा सुनिये तो। यह बी.जे.पी. का, समता पार्टी का, ए.आई.ए. डी.एम.के. का, हम सब का कार्यक्रम है और यह कार्यक्रम..... .....*(व्यवधान)* इस साल का जो हम लोगों का कार्यक्रम है, राष्ट्रपति के अभिभाषण में जो निकला है, वह भी सुनियेः

[अनुवाद]

''धर्म निरपेक्षता भारतीय परंपरा का अभिन्न अंग है। हमारे धर्मनिर्पेक्ष मूल्यों को सुस्पष्ट रूप से बनाए रखने के लिए हमारी सरकार प्रतिबद्ध है।''

[हिन्दी]

मैं नहीं समझ पा रहा हूं, इसलिए यह बात नहीं समझता हूं कि जिस दिन यह कार्यक्रम प्रकाशित हुआ।

[अनुवाद]

श्री प्रकाश यशवंत अम्बेडकर (अकोला) : श्री जार्ज फर्नान्डीज क्या आप एक मिनट के लिए मुझे बोलने देंगे।

श्री जार्ज फर्नान्डीज : जी नहीं।

[हिन्दी]

जिस दिन यह कार्यक्रम प्रकाशित हुआ, उस दिन कांग्रेस के प्रवक्ता ने एक बात कही और आज मुझे आश्चर्य हुआ कि वही बातें विपक्ष के दोनों महान नेताओं ने यहां दोहराईं कि बी.जे.पी. ने गद्दारी की, इन्होंने यह शब्द इस्तेमाल नहीं किया, लेकिन इनके प्रवक्ता ने किया। जब यह कहा जाता है कि हमारा न्यूनतम कार्यक्रम है, जिसमें विवादास्पद मुद्दे नहीं हैं, तो उसका स्वागत करना चाहिए। अगर दिल साफ है तो धर्मनिरपेक्षता के बारे में आप स्वागत करते, जबकि यह कहा गया कि तुमने गद्दारी की। आज यहां भी मजाक हो गया। कोई भली चीज देश में हो जाती है आपकी सोच के अनुसार तो ठीक है, लेकिन हमारे द्वारा अगर कोई चीज देश के लिए ठीक हो जाती है तो उसका स्वागत करने के बजाए आप उसे टोकने लगते हैं, उसका मजाक उड़ाने लगते हैं और ताना मारा जाता है। यह भी कहा जाता है कि यह सेक्युलरिज्म है। यह शब्दों की लड़ाई नहीं है, इनकी तो सत्ता की लड़ाई है। इनका धर्मनिरपेक्षता से कोई लेना-देना नहीं है ये सब जुड़ जाते हैं एक ही बात पर, और वह है सत्ता। मेरा कोई विरोध नहीं है, जुड़ जाएं।

सभापति महोदय : अब आप समाप्त कीजिए।

श्री जार्ज फर्नान्डीज : मैं समाप्त कर रहा हूं। लेकिन इस बहस को खत्म करें कि जहां पर शब्द को लेकर आप लड़ते हो, वह ठीक नहीं है। अब हिन्दुत्व शब्द आया, तो आपको तत्काल गुस्सा आ जाता है। मुझे डर लगता है कि किसी दिन आप यह भी कहेंगे कि हिन्दुस्तान शब्द भी खत्म होना चाहिए। इस देश का नाम हिन्दुस्तान है, भारतवर्ष भी है। गांधी जी ने जीवन भर हिन्दुस्तान कहा। आपको इससे शर्म आती है तो मैं इस पर क्या कहूं। सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तॉं हमारा। अगर हिन्दुस्तान के वासी हिन्दुस्तान की बात करें, हमारी सभ्यता की बात करें तो आपको क्या परेशानी हो जाती है, हम समझ नहीं पाते हैं।

श्री आर.एस. गवई (अमरावती) : संविधान में क्या लिखा है?

सभापति महोदय : मि. गवई आप बैठ जाएं।

श्री जार्ज फर्नान्डीज : इसलिए शब्दों की लड़ाई मत लड़ें, मुद्दों की लड़ाई लड़ें। लोगों ने आपको वहां बैठने के लिए कहा है, मेरी प्रार्थना है कि आप वहां पर बैठे रहिए, विरोध करिए, राजनीतिक विरोध करिए। लेकिन जो प्रस्ताव अटल जी की ओर से इस सदन में आया है उसे पारित करके इस देश में एक मजबूत सरकार को अगले पांच साल तक चलाने के लिए या कार्यक्रम के आधार पर आप सब अपना सहयोग दीजिए।

इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

[हिन्दी]

कुमारी ममता बनर्जी : सभापति जी, मैं आपकी आभारी हूं कि आपने मुझे विश्वास मत के प्रस्ताव पर बोलने का मौका दिया। हम लोग तृण मूल कांग्रेस से आम जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहां पर विपक्ष की ओर से दो नेताओं ने और सी.पी.आई. (एम) के लीडर की ओर से चर्चा की गई। उनके द्वारा मेरे ऊपर और जार्ज जी के ऊपर अंगुली उठाई गई। मैं उस पर दो-चार बातें कहना चाहूंगी। लेकिन उनको कहने से पहले मैं अपना भाषण एक शेर से शुरू करना चाहती हूं।

मुझे लाख बुरा चाहे तो क्या होता है,
वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है।

आज हम लोगों की आइडेंटिटी के बारे में प्रश्न किया गया। अगर किसी को हमारे बारे में जानकारी चाहिए तो हम लोग जानकारी देने के लिए तैयार हैं। हाल ही में हम लोगों ने चुनाव में भाग लिया। हम लोग बी.जे.पी. के साथ एलाइंस नहीं थे लेकिन हमारे साथ उनका सीटों का बंटवारा हुआ था। हम लोगों को कांग्रेस से निकाल दिया गया था, तो हम लोगों ने एक नया छोटा सा दल बनाया था।

एक महीने के अंदर हम लोग जब चुनाव में गए तो हमें कहा गया कि यह लोक सभा का चुनाव हो रहा है, जांत-पांत का चुनाव हो रहा है-- दुख की बात है। जब बंगाल में गए तो वह स्टेट जहां कभी जांत-पांत नहीं होता था, दुख की बात है, शर्म की बात है। वहां जाकर कहा कि तुम लोग कम्युनल हो, तुम लोग बी.जे. पी. का एलाइज हो गए हो, जो हम लोग नहीं थे।..... हमारे बारे में क्या-क्या कहा गया था?.....*(व्यवधान)* उसका रिप्लाई भी देंगे। थोड़ा इन्तजार करिए.....*(व्यवधान)*

पेपर में लिखा था कि सी.पी. एम. पार्टी को बी.जे.पी. से नौ करोड़ रुपया मिला था। अगर एक पैसा भी हम लोगों ने लिया हो तो बी.जे.पी. को बोलना चाहिए। एक पैसा भी हम लोगों ने नहीं लिया.....*(व्यवधान)* अगर लिया हो तो बी.जे.पी. को बोलना चाहिए.....*(व्यवधान)* थोड़े दिन के बाद हम लोगों के खिलाफ एकता की थी.....*(व्यवधान)* मैंने किसी की स्पीच में इंटरफियर नहीं किया था, कोई कमेंट नहीं किया है, मेरा बोलने का अधिकार है।.....*(व्यवधान)* हम लोगों ने देश में क्या देखा?.....*(व्यवधान)* मैंने बहुत ध्यान से सुना है, किसने क्या-क्या कहा है, मैंने लिखा है। हम लोगों पर उंगली उठाई गई है, इसलिए जवाब देना मेरा कर्तव्य है।

दुख की बात है कि लोक सभा के चुनाव में कोई रोजी-रोटी, स्टेबल गवर्नमेंट और इकॉनोमिक स्टेबिलिटी जैसा कोई इश्यू नहीं रहा। केवल एक ही इश्यू रहा कि हिन्दू और मुसलमानों को विभाजित कर दो। हिन्दू और मुसलमान के टुकड़े कर दो। हम लोग टुकड़े करना नहीं चाहते थे, हम लोग जोड़ना चाहते हैं, इसीलिए हम लोग इधर आए हैं। अगर मैंने एक भी कोई गलत इल्जाम लगाया है और वह साबित हो जाए तो मैं मेम्बरशिप छोड़ दूंगी। मैं जो कुछ कह रही हूं, कांफीडेंस से कह रही हूं क्योंकि हमारे पास सबूत हैं। मैं पर्सनल अटैक नहीं कर रही हूं। जब "टाडा" के लिए लड़ाई हुई थी, अपोजीशन के लीडर नहीं हैं, मैं महाराष्ट्र सरकार की बड़ी आभारी हूं, जब सुनील दत्त जी मुझे मिले तो उन्होंने बताया कि मेरे लड़के का केस आर्म्स एक्ट में होना चाहिए, लेकिन विंडिक्टिव होकर इन लोगों ने मेरे लड़के को 'टाडा' में फंसा दिया। मैंने कहा कि आप रिपोर्ट दिखाइए। मैंने रिपोर्ट देखी। महाराष्ट्र सरकार ने रिपोर्ट भेजी है। संजय दत्त का केस आर्म्स एक्ट का केस होना चाहिए लेकिन इन लोगों ने कंसीडर नहीं किया।

[अनुवाद]

सुनील दत्त इस देश के धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति हैं। यह बड़े शर्म की बात है कि उनके पुत्र को अनावश्यक रूप से परेशान किया जा रहा है। ऐसा आखिर क्यों? क्या मैं यह प्रश्न उन सभी नेताओं से पूछ सकती हूं जो राज्य सरकार में थे? मैंने यह मामला कई बार उठाया है।

[हिन्दी]

अगर हम लोगों को कम्युनल कहते हैं.....*(व्यवधान)* चुनाव क्षेत्र में जाकर कहा गया कि हम लोग कुरान जला देंगे। मैं कुरान पढ़ती हूं। जैसे कुरान पढ़ते हैं, वैसे हम लोग दुआ भी करते हैं। यह हमारा धर्म है। हमारा धर्म कम्युनलिज्म नहीं है। .....*(व्यवधान)* आप लोगों को यह जानकारी होनी चाहिए .....*(व्यवधान)* इलेक्शन में क्या नहीं कहा गया। हम सबको हॉर्स-ट्रेडिंग करने वाला कहा गया है। चुनाव मीटिंग में कहा गया कि हम लोग 420 हैं। क्या मैं 420 हूं? मैंने आम जनता को बोला था कि ठीक है, अगर मैं 420 हूं, मैं तो मंत्री पद तक छोड़कर चली गई थी, लेकिन जो बीस वर्ष से चीफ मिनिस्टर हैं, उनका कितना नम्बर बनता है?

आप बैलेट में दे दीजिए, हमें नहीं चाहिए। दुख की बात है कि हम लोगों को काउन्टिंग बूथ में भी नहीं जाने दिया गया। कहा गया कि वह रजिस्टर्ड पार्टी है। घुसने नहीं देंगे। यह सही बात है कि हम लोगों की रीजनल पार्टी हैं। यह बात भी सच है कि कांग्रेस और सीपीएम ने मिल कर चुनवव लड़ा। मैं तारिक जी आपको नहीं बोल रही हूं, आपके स्टेट यूनिट को बोल रही हूं। आपको पता है कि सीताराम जी के साथ आप अकेले रह गये हैं। मैं इसीलिए बोल रही हूं कि कांग्रेस और सीपीएम ने एक साथ इलैक्शन लड़ा है। ट्रायेंगुलर फाइट करके और भीख मांग कर हम लोगों ने जीतने की कोशिश की है। वहां पर बहुत गुंडागर्दी चली है। बंगाल में गुंडागर्दी चलती है.....*(व्यवधान)*

एक माननीय सदस्य : बंगाल के इलैक्शन पर डिबेट हो रही है? .....*(व्यवधान)*

कुमारी ममता बनर्जी : आप यूपी के बारे में बात कह सकते हैं, बिहार के बारे में बात कह सकते हैं, तमिलनाडु के बारे में बात कह सकते हैं, तो मैं क्या बंगाल के बारे में बात नहीं कह सकती हूं।.....*(व्यवधान)*

महोदय, परसों ही प्रधान मंत्री महोदय ने नेचुरल कैलेमिटीज को देखने के लिए एक टीम भेजी। यह हमारी ड्यूटी नहीं है। स्टेट गवर्नमेंट की ड्यूटी है।

[अनुवाद]

यह राज्य सरकार का दायित्व बनता है कि राज्य में क्या हुआ है इसकी सूचना वे माननीय प्रधान मंत्री को दें। हम विभीषिका से अत्यंत दुखी हैं। माननीय प्रधान मंत्री का यह बड़प्पन है। मैंने विभीषिका की सूचना मिलने पर माननीय प्रधान मंत्री को फोन किया तथा उनसे कहा कि वे घटनास्थल के लिए एक दल भेजें। वे घटनास्थल पर एक दल भेजने के लिए तैयार हो गए। हम कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री सोमपाल के साथ घटनास्थल पर गए। वे अभी सभा में उपस्थित नहीं हैं।

[हिन्दी]

वहां हम लोगों ने देखा कि पीने का पानी नहीं है। इन लोगों ने झगड़ा किया कि वहां मुझे क्यों भेजा गया है। मैंने वाक-आउट भी किया, लेकिन ये लोग तो नेचुरल कैलेमिटीज पर भी पोलिटिक्स

[कुमारी ममता बनर्जी]

करते हैं। प्राइम मिनिस्टर ने इन्द्रजीत गुप्त जी को भी कहा था, लेकिन उनकी प्रायर एपाइंटमेंट थी, वे नहीं जा सके और उसमें उड़ीसा के एमपी भी गए। मैंने कहा कि मैं जरूर जाऊंगी। हम लोग बंगाल में गए और उड़ीसा में गए, लेकिन वहां पर पीने का पानी तक भी नहीं था।

[अनुवाद]

राम कृष्ण मिशन के लोग वहां पर सहायता हेतु गए। परन्तु उन्होंने अब जाकर उन्हें गरीब व्यक्तियों और अन्य सामाजिक संगठन को सहायता प्रदान करने की अनुमति दी। यह पश्चिम बंगाल के बारे में है। लेकिन उड़ीसा के संबंध में क्या हुआ ? उड़ीसा सरकार विद्यमान थी। उड़ीसा के मुख्यमंत्री घटनास्थल पर गए। उन्होंने प्रत्येक चीज की व्यवस्था की। अब, पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ने क्या किया ? उन्होंने कुछ भी नहीं किया। एक गिलास पानी के लिए उन्होंने मंत्री का अपमान किया तथा मैं माननीय प्रधानमंत्री से उड़ीसा के जिलाधीश के खिलाफ कार्रवाई करने का आग्रह करती हूं। जब श्री सोमपाल ने मिदनापुर जिले के जिलाधीश से मृतकों की संख्या, अस्पताल में दाखिल किए गए लोगों की संख्या, तथा गायब हुए व्यक्तियों की संख्या के संबंध में जानना चाहा तो उन्होंने कहा कि उनके पास कोई सूचना नहीं है। इस तरह पश्चिम बंगाल सरकार चल रही थी। .....(व्यवधान)

क्या घटनास्थल का दौरा करना मुख्यमंत्री का कर्तव्य नहीं है। घटनास्थल का दौरा करना मुख्यमंत्री का कर्तव्य है। लेकिन यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि उड़ीसा के मुख्यमंत्री वहां गए लेकिन पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री वहां नहीं गए। भा.ज.पा. ने हमसे समर्थन नहीं मांगा है लेकिन हम लोग खुद समर्थन दे रहे हैं।

[हिन्दी]

हम लोगों ने जनता की परेशानी को देखा है। यहां एक साल छः महीने में तीन सरकारें बनी हैं।

जब देवेगौड़ा की सरकार आई तो उसको गिरा दिया। मैंने अपोज किया था कि यह ठीक नहीं है, एक इनडिविजुअल इश्यु पर सरकार गिराना ठीक नहीं है।

[अनुवाद]

मैंने यह मामला उस समय भी उठाया था। आपको यह अभी भी याद होगा।

[हिन्दी]

जब गुजराल जी की सरकार थी तो उस समय भी किसी बात को लेकर यह हुआ कि जब तक डीएमके वाले रहेंगे तब तक सरकार नहीं चलेगी। तब ढाई दिन तक हाउस नहीं चला तो मैं नो-कांफिडेंस मोशन ले आई थीं। मैं यह जानना चाहती थी कि राजीव गांधी जी का खूनी कौन है। लेकिन इन लोगों ने इस्तीफा देकर, हाउस को साइनाडाइ करके सब एडजस्ट कर लिया। हम इसको जानना चाहते हैं, इसको जानने का मेरा अधिकार है। इंदिरा गांधी जी का मर्डर करने वाला कौन है ? ठक्कर कमीशन रिपोर्ट सबमिट कीजिए, हम लोग जानना चाहते हैं। हम लोग जैन कमीशन के बारे में जानना चाहते हैं।

[अनुवाद]

इसके लिए कौन जिम्मेवार है ?

[हिन्दी]

हम लोग बोहरा कमीशन के बारे में जानना चाहते हैं।

[अनुवाद]

बोहरा समिति की विस्तृत रिपोर्ट अब तक जमा नहीं की है। हम जानते हैं कि इसके बारे में समाचार-पत्रों में छपा था। कई राजनीतिज्ञ हैं जिनका संबंध अपराधी और भूमिगत तत्वों से बना हुआ है। कुछ राजनीतिज्ञों का असामाजिक तत्वों के साथ गठजोड़ बना है। अतएव, लोगों को यह जानने का अधिकार है कि वे कौन-कौन से लोग हैं जिनका ऐसा संबंध है। कृपया बोहरा समिति की पूरी रिपोर्ट दें।

श्री राजेश पायलट (दौसा) : मडोदय, मैं कुमारी ममता बनर्जी की जानकारी के लिए यह तथ्य बताना चाहता हूं कि बोहरा समिति की विस्तृत रिपोर्ट सदन के पटल पर रखी जा चुकी है। अब आप सरकार में हैं। आप इसका अध्ययन कर सकते हैं। सभी कुछ सभा के पटल पर रखा जा चुका है और इसका रिकार्ड है। देश से कुछ भी छिपा नहीं है।

कुमारी ममता बनर्जी : मैं रिकार्ड के लिए पूछ रही हूं... .....(व्यवधान) श्री राजेश पायलट, मैं गलत हो सकती हूं। लेकिन यह मेरी जानकारी के लिए है। हमने जो देखा है वह एक छोटी सी रिपोर्ट है। हमने पूरी रिपोर्ट नहीं देखी है। उनके नाम इस रिपोर्ट में उद्धृत नहीं किये गये हैं। मैं उनके नाम जानना चाहती हूं। मैं अपराधियों के नाम जानना चाहती हूं। मैं यह जानना चाहती हूं कि वे कौन-कौन से राजनीतिज्ञ हैं जिनका भूमिगत के साथ इस देश में संबंध है जो इस देश में गड़बड़ी फैला रहे हैं। हम वह जानना चाहते हैं।

[हिन्दी]

आम जनता ने डेढ़ वर्ष तक देख लिया। प्याज का भाव 25 रुपए हो गया, आलू का भाव सात रुपए हो गया। ऐसी सरकार चल रही थी जिस सरकार को पता ही नहीं था। यह तो सरकार को पता होना चाहिए था, जो आम जनता के हित में काम करे। एक साल में दो बार डीजल का प्राइस बढ़ा, लेकिन कोई आवाज सुनने के लिए नहीं था, कोई भी इसको देखने के लिए नहीं था। इसलिए आज हमारे देश की आम जनता क्या चाहती है, वह एक स्टेबल गवर्नमेंट चाहती है। अगर आप लोग इसको तमाशा कहते

हैं तो हम आपको शान से कहते हैं कि यह तमाशा नहीं है, यह जनता का भरोसा है। इसलिए हम लोगों ने आम जनता से पूछा कि हमको क्या करना चाहिए। यह आम जनता की राय है कि आप अटल बिहारी वाजपेयी जी को सपोर्ट दीजिए। यही स्टेबल गवर्नमेंट बना सकते हैं, और कोई नहीं बना सकता है। ये लोग बनाने के मूड में नहीं हैं। इसीलिए मैं कहना चाहती हूं-

"रोशनी चांद से होती है, सितारों से नहीं।
मोहब्बत काम से होती है बातों-बातों से नहीं।"

सभापति महोदय, हम लोगों के खिलाफ में बहुत सारी बातें कही गईं कि हम लोग क्यों सपोर्ट करते हैं। हम लोग सपोर्ट करते हैं।

[अनुवाद]

यह हमारे घोषणा-पत्र में था। हमने यह उल्लेख किया था कि उनके हितों का ध्यान रखेंगे जो हमारा ध्यान रखेगा। हम अपनी घोषणा का पालन कर रहे हैं । यदि इसमें कोई गलती हो तो उन्हें सूचित करें उन्होंने विशेषरूप से सीपीआई (एम) पार्टी ने श्री ज्योति बसु को प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में परिलक्षित किया है। महोदय आप जानकर खुश होंगे कि इस निर्वाचन क्षेत्र में भी हमने बढ़त ली और हमने 36 मंत्रियों के निर्वाचन क्षेत्र में भी बढ़त ली।

एक माह के भीतर कलकत्ता निगम तथा हावड़ा निगम के दो मेयर हटा दिए गये थे। इसमें हमारा कोई दोष नहीं है। यह लोगों का आशीर्वाद है।

[हिन्दी]

हमने जनता से पूछा कि ज्योतिबसु प्रधान मंत्री बनें या अटल बिहारी वाजपेयी प्रधान मंत्री बने.....*(व्यवधान)* जब आप लोगों ने पूछा है तो मैं प्रश्न का जवाब नहीं दूंगी..... *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

उन्होंने मुझसे प्रश्न का उत्तर देने को कहा और इसलिए मैं उत्तर दे रही हूं.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : श्री हरिन पाठक, मैं आप की बात भी सुनूंगा।

..... *(व्यवधान)*

[हिन्दी]

कुमारी ममता बनर्जी : उनका धर्म निरपेक्षता के बारे में कोई कमिटमेंट नहीं है कोई प्रिंसिपल नहीं है।

[अनुवाद]

महोदय, यह कहना उचित नहीं है। यह हमारा राष्ट्रीय एजेंडा है। यह साम्प्रदायिक चाल चलने के लिए तथा कथित धर्मनिरपेक्षता के स्थान पर वास्तविक धर्मनिरपेक्षता हो हमने क्या देखा है, महोदय ?

[हिन्दी]

जब चुनाव होता है तब बताते हैं कि कौन हिंदू है, कौन मुस्लिम है, लेकिन उनकी रोजगारी के लिए, पीने के पानी के लिए, उनकी नौकरी के लिए कभी आपने नहीं सोचा। कभी आपने नहीं देखा है कि उनका दिल कैसे धड़कता है ? लीडर बनने के बाद आप मुस्लिम कम्युनिटी को भूल जाते हैं। लेकिन हम लोग कहते हैं कि "जब तक सूरज-चांद रहेगा, तब तक माइनोरिटीज की इज्जत बनी रहेगी।" यही हमारी कामयाबी होगी।

[अनुवाद]

यह हमारा मूलभूत अधिकार है तथा इसलिए केवल धर्मनिरपेक्षता के स्थान पर हमने वास्तविक धर्मनिरपेक्षता कहा है। आप कृपया राष्ट्रपति के अभिभाषण के पृष्ठ 2 पर पैराग्राफ 7 को देखिए। इसमें उल्लेख है "धर्मनिरपेक्षता भारतीय परंपराओं में संनिहित है। मेरी सरकार धर्मनिरपेक्ष मूल्यों को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है।" हमारे लिए आज गतिशील धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है कि हम केवल वोटों की राजनीति हेतु मुस्लिमों का शोषण नहीं करें बल्कि उनकी सहायता करें ताकि वे विभीषिका से बाहर निकलें। हम उस समुदाय को समृद्ध बनाकर उन्हें एकीकृत करना चाहते हैं। हम उन्हें परेशान नहीं करना चाहते हैं।

[हिन्दी]

इन लोगों ने हमारे खिलाफ जब इतना कहा, तब हम लोगों ने सोच लिया है कि गठबंधन में रहेंगे। आप लोगों को गठबंधन में भरोसा नहीं है लेकिन हम लोगों को भरोसा है। आप तो मिलीजुली बात करते हैं। यह ठीक है कि हम लोग छोटी पार्टी से हैं, लेकिन रीजन-रीजन करके ही तो सेंटर बनता है। स्टेट-स्टेट मिलाकर ही तो सेंटर बनता है। सरकारिया कमीशन ने भी कहा है कि-

[अनुवाद]

> यदि राज्य मजबूत होगा तभी केन्द्र भी मजबूत होगा। आइए, हम छोटी पार्टियों को भी मजबूत बनाएं। राष्ट्रीय पार्टियों या राज्य स्तरीय पार्टियों के बीच गठबंधन है। इसमें क्या हानि है ? आप इतने ईर्ष्यालु क्यों हैं ? ईर्ष्यालु नहीं बनें।

[हिन्दी]

आपको ईर्ष्यालु नहीं होना चाहिए। सोमनाथ जी, आपने एक बात कही है कि बी.जे.पी. के किसी मेम्बर ने कहा है कि दीदीगिरी नहीं चलेगी। हमको मालूम है कि दादागिरी चलती है, दीदीगिरी

[कुमारी ममता बनर्जी]

नहीं चलती हैं हां, अगर आप लोग महिलाओं की इज्जत नहीं रख सकते हैं। तो दीदीगिरी चलेगी। .....*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : तपन सिंकदर को मंत्री नहीं बनाया।

[अनुवाद]

कुमारी ममता बनर्जी : तब आप श्री तपन सिकंदर की वकालत कर रहे हैं। आप वकालत कर रहे हैं। आपने पहल की है।

[हिंदी]

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : तपन सिकंदर तो मंत्री नहीं बना।

[अनुवाद]

कुमारी ममता बनर्जी : क्या आप उनकी वकालत कर रहे हैं?

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैंने यह कहा है मैं दुखी हूं कि वे जीत गए हैं लेकिन मैं लोगों के निर्णय का आदर करता हूं।

[हिंदी]

कुमारी ममता बनर्जी : जब हम लोगों का दिल दुखाया .....*(व्यवधान)* मैं क्यों बी.जे.पी. में हुई?

[अनुवाद]

हमारा घोषणा पत्र अलग है लेकिन लोगों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता है तथा हम इस सरकार को अपना समर्थन देना जारी रखेंगे। हम यह नहीं देख सकते हैं कि यह सरकार गिरा दी जाये। हम यह चाहते हैं कि यह सरकार पूरे पांच वर्ष तक चले तथा यह सरकार आर्थिक, अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय तथा अन्य सभी प्रकार से स्थिर हो। इसीलिए हम इसे समर्थन दे रहे हैं।

[हिंदी]

ज्योतिबसु के प्रधान मंत्री न बनने का इन्हें दुख हुआ। पहले सरकार का रिमोट कंट्रोल हरकिशन सिंह सुरजीत था। इसके बाद आप लोगों ने सोचा कि ज्योतिबसु आयेगा, लेकिन वह नहीं हुआ। हम लोगों ने भी दिखा दिया कि आप लोग जो हिंदू-मुस्लिम को दो भागों में बांटना चाहते थे, वह नहीं हुआ। मैंने पहले भी चुनाव लड़ा है और यह मेरी फोर्थ-टर्म है।

[अनुवाद]

मैं यहां से चौथी बार चुन कर आयी हूं। मैं ऐसा इसलिए कह रही हूं क्योंकि आप वरिष्ठ सदस्य हैं।

आप लक्षद्वीप के काफी वरिष्ठ सदस्य हैं। पहली बार, मैं 20,000 वोट के अन्तर से जीती। फिर मैं 95,000 वोट के अन्तर से जीती उसके बाद यह 1,030000 वोट तक चला गया अब यह आँकड़े लगभग 2,25000 हैं।

[हिंदी]

हमें 35 परसैंट वोट मिले हैं। वे सीट एडजस्टमेंट के कारण नहीं मिले हैं। कम्युनिस्ट पार्टी आफ इंडिया जो कि एक नेशनल पार्टी है, उसके वोटों का परसैंटेज कम हो गया है। हमारी रजिस्टर्ड पार्टी है लेकिन इसका अभी रिकॉग्नीशन नहीं हुआ है। हम अपनी पार्टी का सिम्बल आपको दे सकते हैं, पूरे हिन्दुस्तान में दे सकते हैं .....*(व्यवधान)* मैं दो-चार विनती करना चाहती हूं।

[अनुवाद]

देश के हित में तथाकथित धर्मनिरपेक्षता अथवा साम्प्रदायिकता को रोकना होगा। कृपया हम अपने आप को मानव या इस राष्ट्र के परिवार के रूप में देखें।

यह सच है कि भाजपा एक मात्र पूर्ण बहुमत वाली सबसे बड़ी पार्टी नहीं है।

[हिंदी]

क्या यह बात सच नहीं है कि लोगों के वोट रिफ्लैक्टिड होते हैं? जब रीगिंग होती है तो क्या लोगों की ओपीनियन ठीक ढंग से रिफ्लेक्ट होती है? अगर हमारे यहां रीगिंग नहीं होती तो हम 22 सीटें जीत कर यहां पहुंच जाते।

[अनुवाद]

मेरा आपसे यह आग्रह है कि आप निर्वाचन आयोग को मजबूत बनायें जब भी चुनाव हो वह राज्य सरकार द्वारा शक्ति के दुरुपयोग के बिना होना चाहिए। निर्वाचन आयोग को चुनाव प्रक्रिया को संभालना चाहिए। कृपया जल्द से जल्द चुनाव सुधार विधेयक लायें।

न्यायिक सुधार के क्षेत्र में हमारा देश पिछड़ रहा है। न्यायालय में हजारों मामले लंबित हैं। लोग स्थिति से परेशान हैं।

भ्रष्टाचार के मामले में लोकपाल ठीक है। लेकिन भ्रष्टाचार की क्या स्थिति है? आपने कहा कि आप भ्रष्टाचार के खिलाफ सभी कदम उठायेंगे।

[हिंदी]

जो चीफ मिनिस्टर और पॉलिटिकल लीडर्स बाहर जाते हैं, उनके बारे में गवर्नमेंट के पास कोई जानकारी नहीं है। यह एन. आर.आई. इनवैस्टमैंट के नाम पर धोखा देकर करोड़ों रुपए बनाते हैं और फॉरेन एक्सचेंज का बॉपलेशन करते हैं। हमारे यहां के चीफ मिनिस्टर पिछले 20 सालों में 30 बार फॉरेन टूर पर गए।

जब मिदनापुर में नेचुरल कैलेमिटीज आती है तो उन्हें वहां जाने का समय नहीं मिलता। अगर हम लोग वहां जाते हैं तो ये कहते हैं कि बी.जे.पी. के साथ प्रेम करना बहुत अच्छा लगता है। क्या वे उस समय अनटचेबल नहीं होते? जब लैफ्ट फ्रंट के मेरे दोस्त फ्लाइट में मेरे और बी.जे.पी. के साथ जा रहे थे तो मैंने उनसे पूछा कि आप उनके साथ कैसे जा रहे हैं? इस पर कहने लगे कि यह डिफैंसिव है। जब हमने बी.जे.पी. की सरकार को सपोर्ट किया तो वह ऑफैंसिव हो गया। यह डबल स्टैंडर्ड नहीं चलेगा। महिलाओं के लिए 33 परसैंट रिजर्वेशन का बिल यहां पास होना चाहिए। इसके अलावा सी आर.पी.सी. अमैंडमैंट बिल, लोकपाल बिल पास होना चाहिए। वोहरा कमीशन की रिपोर्ट पर कार्यवाही होनी चाहिए, इलैक्ट्रोल रिफार्म्स और जुडिशियल रिफार्म्स होने चाहिए। अनएम्पलायमैंट को दूर करने के लिए प्लान्स बनने चाहिए।

[अनुवाद]

अल्पसंख्यकों के लिए व्यापक कार्ययोजना होनी चाहिए। मैं अल्पसंख्यकों के लिए तथा बेरोजगार युवकों के लिए विशेष रूप से बंगाल पैकेज में कुछ करने के लिए आप से आग्रह करती हूं।

पश्चिम बंगाल से 42 सांसद आते हैं। हमने उस सरकार का समर्थन किया। उन्होंने यह घोषणा नहीं की कि कलकत्ता ए-1 नगर की श्रेणी में आता है.....*(व्यवधान)* हम इसके लिए भीख नहीं मांग रहे हैं। राज्य सरकार की तरफ से एक त्रुटि रह जाने के कारण हम यह घोषणा करने में सक्षम नहीं हैं कि कलकत्ता 'ए-1' नगर है। मेरे पास उच्च न्यायालय का आदेश है। हम उच्च न्यायालय गए। न्यायालय ने यह आदेश दिया कि छः सप्ताहों के भीतर यह घोषणा की जानी है कि कलकत्ता ए-1 नगर की श्रेणी में आता है।

मैं प्रधान मंत्री का ध्यान आकृष्ट करना चाहती हूं कि बंगाल पैकेज में जो कुछ भी दिया गया है उसमें धन या उसी तरह की किसी सहायता की कोई बात नहीं है। बंगाल पैकेज विशेष रूप से पश्चिम बंगाल के विकास के लिए है। यह विकासोन्मुखी परियोजना है।

चारों ओर अफवाह है कि यह सरकार इस देश में विदेशी निवेश को आमंत्रित करने की इच्छुक नहीं है। श्री जार्ज फर्नान्डीज ने इस संबंध में वस्तुस्थिति को पहले ही स्पष्ट कर दिया है। मैं सरकार से यह भी अनुरोध करना चाहती हूं कि हमें इस देश में पूर्वी क्षेत्र और विशेषकर उत्तर पूर्वी क्षेत्र तथा इस देश के सभी क्षेत्रों के विकास के लिए आमतौर पर अनिवासी भारतीयों के निवेश की आवश्यकता है।

महोदय, मैं बेरोजगार युवकों के बारे में भी एक बात कहना चाहती हूं। मैं सरकार से पोस्टल ऑर्डर शुल्कों के बारे में कुछ करने का अनुरोध करना चाहती हूं। मैं जानती हूं कि यह विश्वासमत का प्रस्ताव है तथा मुझे इन सभी बातों को नहीं उठाना चाहिए किंतु पोस्टल ऑर्डर बेरोजगार युवकों के लिए बहुत बड़ा सिरदर्द है। यदि सरकार इस संबंध में कुछ कर सकी तो इससे युवकों को काफी राहत मिलेगी।

[हिंदी]

मैं कहना चाहती हूं कि जो हम लोगों के खिलाफ कहते हैं कि क्यों बी.जे.पी. आ गई, तो हम लोग कहते हैं कि आप लोग जब तक अपने को सुधार नहीं लेंगे तब तक यह सरकार चलेगी। इस सरकार के जाने की बात ही नहीं है। आप लोग कंस्ट्रक्टिव अपोजीशन का रोल प्ले करिये। हम लोग भी करेंगे, लेकिन साथ-साथ कहेंगे कि अगर आप लोगों को गलत इल्जाम हम पर लगाना है तो हम लोग भी कहने के लिए तैयार हैं कि-

"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है।"

आप बी.जे.पी. के साथ हमारे जाने पर इतना विरोध करते हैं तो मैं आपको कहना चाहती हूं कि आने वाले पंचायत इलैक्शन में हम सो काल्ड कम्यूनलिज्म और सो काल्ड सैक्यूलरिज्म का रिप्लाई देने के लिए तैयार हैं। बी.जे.पी. के साथ सीट ऐडजस्टमैंट करके हम चुनाव लड़ेंगे और हम लोग दिखायेंगे कि हम पर ऐसे आरोप लगाने से कुछ नहीं होता है। आप जरा सोचिए कि आप क्या कर रहे हैं। सी.पी.एम. और कांग्रेस एक ही दिन में एक हो गए। मुलायम जी आ गए, पर ज्योति बाबू ने एक भी सीट आपको अपने स्टेट में नहीं दी। आपने एक ही सीट तो मांगी थी, वह भी नहीं मिली। लालू प्रसाद कहते हैं कि उनका विरोध है लेकिन माफ कीजिए, अभी वे कुर्सी चाहते हैं।

अपनी बात समाप्त करने से पहले मैं कहना चाहूंगी कि आप देश की तरफ देखिये कि लोग क्या चाहते हैं।

[अनुवाद]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी एक समझदार व्यक्ति हैं। वह बहुत ही समझदार व्यक्ति हैं, वह प्रतिबद्ध पुरुष हैं अतः मैं इस सभा के सदस्यों से उन्हें समर्थन देने का अनुरोध करना चाहती हूं। अपनी बात समाप्त करने से पूर्व मैं इस सभा के सभी वरिष्ठ नेताओं के प्रति आभार प्रकट करती हूं। मैं इस सभा के प्रत्येक सदस्य से अपील करना चाहती हूं कि व्यक्तिगत स्वार्थों के चलते इस सरकार को नहीं गिराया जाना चाहिए। इस सरकार को पांच वर्ष के पूरे कार्यकाल तक चलने देना चाहिए।

श्री पी. उपेन्द्र (विजयवाड़ा) : हम इस सरकार का समर्थन क्यों करें?

कुमारी ममता बनर्जी : यह मेरी आपसे अपील है। आप नहीं चाहते तो ऐसा न करें। अपील तो एक अपील होती है। अपने सहयोगियों से हमारी अपील और अनुरोध है कि वे इस सरकार का समर्थन करें ताकि यह सरकार इस देश के लिए और अधिक विकास का मार्ग प्रशस्त कर सके। मेरा सरकार से अनुरोध है कि इसे दृढ़ और प्रभावी होना चाहिए तथा देश के हित को ध्यान में रखते हुए इसे निभाना चाहिए। यह सरकार जनसमर्थक होनी चाहिये और अपनी जिम्मेदारी सच्चे तौर पर यह जनता की, जनता के द्वारा और जनता के लिए अच्छी सरकार होनी चाहिए।

[कुमारी ममता बनर्जी]

[हिन्दी]

मैं सिर्फ एक ही बात कहना चाहती हूं कि आज सरकार एक अच्छे गठबंधन को लेकर बनी है। अपनी सरकार बनाने के लिए देश को जाति-पांति में मत बांटिए। आम जनता को एक रहने दीजिए, शांति से रहने दीजिए।

बाबरी मस्जिद के बारे में सिर्फ एक बात मुझे कहनी है। सुप्रीम कोर्ट में जो केसा रेफर हुआ है-

[अनुवाद]

उच्चतम न्यायालय के फैसले के अनुसार इसको हल करना चाहिए। मैं अनुरोध करना चाहती हूं कि उच्चतम न्यायालय के निर्णय को स्वीकार किया जाए। हम इस देश को विभाजित करना नहीं चाहते हैं।

हम अपने देश की एकता चाहते हैं। इसीलिए, सरकार से मेरा सुझाव है-

[हिंदी]

कि वाजपेयी जी, आप ऐसी सरकार चलाइए। आपकी सरकार को कौनफिडेन्स वोट तो मिलेगा ही, कोई कुछ नहीं कर सकता है। हम लोग इस विश्वास के हैं कि --" जो हमसे टकराएगा, वह चूर-चूर हो जाएगा।"

आप हम लोगों को कम्युनल बोलते हैं। इस पर मैं कहती हूं कि मैं उर्दू लैंग्वेज को बहुत पसंद करती हूं। जब एक भाषा की बात आयी थी तो मैंने मराठी, पंजाबी, कन्नड, तेलगू आदि ऑफिशियल भाषाओं को पूरा सम्मान दिया है।

[अनुवाद]

बंगाली एक बहुत अच्छी भाषा है। ठीक इसी प्रकार उर्दू, मराठी और पंजाबी भी अच्छी भाषाएं हैं।

[हिंदी]

आप श्री वाजपेयी जी और आडवाणी जी से पूछ सकते हैं। इसलिए कि इस देश के टुकड़े नहीं होने चाहिए, देश मजबूत होना चाहिए। यह आने वाले दिनों में साबित हो जायेगा।

"खुद ही को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले
खुदा बंदे से पूछे कि बता तेरी रजा क्या है।"

इन्हीं शब्दों के साथ मैं सरकार को सपोर्ट करती हूं।

[अनुवाद]

श्री रूपचंद पाल (हुगली) : महोदय, अत्यधिक वरिष्ठ नेता और पश्चिम बंगाल के मुख्य मंत्री और कुछ अन्य नेताओं के बारे में कतिपय अशोभनीय टिप्पणी की गई है। आपको इसकी जांच करनी चाहिए और उन टिप्पणियों को कार्यवाही से निकाल देना चाहिए।

सभापति महोदय : यदि कुछ भी आपत्तिजनक हुआ तो मैं इसकी जांच करूंगा।

श्री वसुदेव आचार्य : आप कार्यवाही वृतांत की जांच करें। यदि माननीय सदस्य ने कोई भी अशोभनीय टिप्पणी की है तो आप उन टिप्पणियों को कार्यवाही वृतान्त से निकाल दें।

सभापति महोदय : हां, उन्हें कार्यवाही वृतांत से निकाल दिया जायेगा।

श्रीमती गीता मुखर्जी (पंसकुरा) : महोदय, पश्चिम बंगाल सरकार के चार मंत्री खबर मिलते ही घटना स्थल पर गए थे। एक नहीं, बल्कि चार-चार वहां गये थे।

श्री सुदीप बंद्योपाध्याय : पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री वहां कभी नहीं गए थे।

[हिंदी]

श्री तरित बरण तोपदार (बैरकपुर) : सभापति महोदय, किस पार्टी के लिए कितना टाइम अलाट किया गया है। तृणमूल के लिए कितना टाइम अलाट किया गया है और वह कितने समय बोली हैं।

सभापति महोदय : अभी तो चलने दो, छः बजे टाइम बतायेंगे। समय का बंटवारा यहां की स्ट्रैंथ के हिसाब से होता है।

[अनुवाद]

आपकी पार्टी को 26 मिनट दिये गए थे जो पहले ही समाप्त हो चुके हैं।

[हिंदी]

श्री राजेश पायलट : सभापति जी, जब प्रधानमंत्री जी ने शुरूआत की तो मुझे उम्मीद थी कि प्रधान मंत्री जब विश्वास प्राप्त करने की बात करेंगे तो कुछ मुद्दों पर प्रकाश डालेंगे और माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी से बहुत ज्यादा उम्मीद थी। जब से सरकार बनी है, अखबारों में और सब जगह चर्चाएं चल रही हैं कि इस देश की दिशा क्या होगी। लेकिन जब प्रधान मंत्री जी ने बात कही तो अपने अंदाज में सब बात कहने की कोशिश की लेकिन असली बात पर उन्होंने नजर नहीं डाली। प्रधान मंत्री जी इस बात को मानेंगे कि आज भी देश में असमंजस है। मैं भी आज पांचवीं या छठी बार यहां पार्लियामेंट में चुनकर पहुंचा हूं। मुझे भी असलियत पता नहीं कि सरकार का रुख क्या है तो आज आदमी का अंदाजा लगाया जा सकता है कि आम आदमी को यह सरकार क्या दिशा दे रही है। हमेशा विरोध का एक पक्ष रहा है और उनका

एक कहना रहा है कि कांग्रेस के पचास साल के राज में कुछ नहीं हुआ। पचास साल कांग्रेस का राज रहा। चाहे देश के दूसरे इंस्टीट्यूशंस हों या अन्य क्षेत्र हों, सारे क्लेम कांग्रेस पर आते रहे। लेकिन आज यह बात खासकर प्रधान मंत्री जी को साफ करनी चाहिए। स्वतंत्रता का पचासवां साल हम मना रहे हैं, आजादी के पचास साल पूरे हुए हैं इन वर्षों में देश आगे बढ़ा है या नहीं बढ़ा है प्रधान मंत्री जी को यह देश को बताना चाहिए। कल हमारे वित्त मंत्री जी भाषण दे रहे थे और उससे पहले प्रधान मंत्री जी ने राष्ट्र के नाम संदेश दिया था तो इन्होंने कुछ बातें कही थीं और बहुत अच्छी बातें कहीं थी।

अध्यक्ष महोदय मैंने खुद इनका संदेश सुना और इन्होंने जो दो-तीन बातें कही थीं उनके बारे में ये यहां कुछ अवश्य कहेंगे, यह मैं सोच रहा था, लेकिन उन पर आज के भाषण में माननीय प्रधान मंत्री जी ने कोई प्रकाश नहीं डाला। मैं यह नहीं कहता कि कांग्रेस ने गलतियां नहीं कीं। कांग्रेस ने गलतियां की हैं, लेकिन कांग्रेस की एक देन है और वह यह है कि कांग्रेस के कारण ही देश में आज प्रजातंत्र कायम है। यह कांग्रेस की प्रजातंत्र की नीतियों और देश की जनता के कारण ही संभव हुआ है। जिसके कारण आप आज यहां बैठे हुए हैं।

अध्यक्ष महोदय, जब देश आजाद हुआ था तब देश की कुल आबादी 36 करोड़ थी और देश का खाद्यान्न का उत्पादन पांच हजार करोड़ टन था। आज साढ़े 18 हजार करोड़ टन अनाज पर हम पहुंचे हैं। यह कांग्रेस की नीतियों और किसान तथा मजदूरों की मेहनत के कारण संभव हुआ है। एक ब्रिटिश एग्रीकल्चरिस्ट विलियम पैडिक थे जिन्होंने भारत के बारे में एक भविष्यवाणी की थी कि 1975 तक देश की आबादी इतनी बढ़ेगी और अनाज इतना कम पैदा होगा कि देश की दो-तिहाई आबादी भूखी मरने लगेगी, लेकिन कांग्रेस की नीतियों और इस देश के किसान और मजदूरों की मेहनत के कारण यह भविष्यवाणी सत्य साबित नहीं हुई। एक दूसरे लेसर ब्राउन जो वर्ल्ड वाच इंस्टीट्यूट के प्रेसीडेंट हैं जिन्होंने दो किताबें लिखी हैं एक "फुल हाउस" और दूसरी हूं विल फीड चायना-2030", उन्होंने इनमें लिखा है कि सन 2030 में चायना में अनाज की इतनी कमी पड़ेगी कि उसे अपनी आवश्यकता को पूरी करने के लिए अपने उत्पादन से 21 हजार टन अनाज ज्यादा खरीदना पड़ेगा। इसी प्रकार से भारत के बारे में उन्होंने लिखा है कि भारत की आबादी 2030 तक इतनी हो जाएगी कि उसे अपनी आवश्यकता पूरी करने के लिए अपने उत्पादन के अतिरिक्त साढ़े चार हजार टन अन्न बाहर से खरीदना पड़ेगा। इसलिए मेरा कहना है कि हमें देश के किसान और मजदूर की चिन्ता करनी चाहिए।

अध्यक्ष महोदय मुझे बहुत दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि अभी हमारी बहिन ममता जी बोल रही थीं, लेकिन उन्होंने पिछले 10 दिनों से इस सरकार में क्या चल रहा है, इस बारे में एक भी शब्द नहीं कहा। पिछले 10 दिनों से बराबर आप लोगों में यह बहस चल रही है कि वाणिज्य मंत्रालय किसे दिया जाए और विधि मंत्री कौन बनेगा। कृषि मंत्रालय और ग्रामीण विकास मंत्रालय को कोई लेने के लिए तैयार नहीं है। मुझे यह भी दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि कृषि एवं ग्रामीण विकास के कैबिनेट स्तर तक के मंत्री भी अभी तक आपकी सरकार में नहीं हैं। इससे आपका ग्रामीण विकास एवं कृषि के प्रति कितना मोह है, यह सिद्ध हो जाता है। मैं बताना चाहता हूं कि कांग्रेस के समय में ऐसा कभी नहीं हुआ। कांग्रेस के समय में कृषि और ग्रामीण विकास का हमेशा कैबीनेट स्तर का मंत्री रहा या प्रधान मंत्री ने स्वयं इन मंत्रालयों को अपने पास रखा। आप कम से कम सोम पाल जी को ही कैबीनेट स्तर का मंत्री बना देते ....*(व्यवधान)*

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री सोमपाल) : पहली बार प्रधान मंत्री ने कृषि मंत्रालय को अपने पास रखा है। आप किसकी बात कह रहे हैं?...........*(व्यवधान)*

श्री राजेश पायलट : मजबूरी में रखा है। सोमपाल जी, मांगा तो आपने भी था, लेकिन मिला नहीं...........*(व्यवधान)*

श्री सोमपाल : यह तो किसानों के प्रति प्रधान मंत्री जी की रुचि की बात है कि उन्होंने यह विभाग अपने पास रखा है और किसानों को भरोसा दिलाने के लिए उन्होंने ऐसा किया है.......
....*(व्यवधान)*

श्री कांति लाल भूरिया : अगर प्रधान मंत्री को किसानों के ऊपर इतना भरोसा है, तो सोम पाल जी को कैबीनेट मिनिस्टर बना देते।...........*(व्यवधान)*

श्री राजेश पायलट : सोमपाल जी, यह बात इस सदन के माध्यम से टेलीविजन के द्वारा सीधे देश के लोगों के सामने जा रही है।...........*(व्यवधान)*

श्री सोमपाल : मैंने भी किसानों को सुनाने के उद्देश्य से ही यह कहा है...........*(व्यवधान)*

श्री राजेश पायलट : आप जो कहते हैं, वह कर के दिखाएं, तभी 2030 तक पहुंचते-पहुंचते आप वैसी स्थिति से बच सकते हैं, लेकिन वास्तिवकत स्थिति देखिए आज कितने किसान गेहूं बो रहे हैं और कितने किसान गन्ना बो रहे हैं? अगर वे गेहूं और गन्ना नहीं बोएंगे, तो देश के सामने खाद्यान्न का संकट खड़ा हो जाएगा...........*(व्यवधान)*

स्वयामून जीवर कमल चौधरी : पिछले 50 सालों में यह 100 करोड़ की आबादी भी तो कांग्रेस की देन है...........*(व्यवधान)*

श्री तारिक अनवर : आप भी तो कांग्रेस की देन हैं......
.....*(व्यवधान)*

श्री राजेश पायलट : कमल जी, जहां तक जनसंख्या की बात है यह देश उससे चिन्तित है, लेकिन आप यदि गणना करके देखेंगे, तो कांग्रेस से भा.ज.पा. के परिवार ज्यादा पाएंगे...........
(व्यवधान)

श्री कमल चौधरी : मेरे पिताजी चार बार कांग्रेस के प्रत्याशी को हराकर विधायक बने और एक बार कांग्रेस के प्रत्याशी को हराकर एम.पी. बने। कुल पांच बार उन्होंने कांग्रेस को हराया। .....*(व्यवधान)*

श्री राजेश पायलट : अब आप कहीं अटल जी की बात मत कीजिएगा.....*(व्यवधान)* मैं औरों का भी उदाहरण दे दूंगा ..... *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

सभापति महोदय : कमल चौधरी, कृपया बैठ जाइए।

.....*(व्यवधान)*

एक सीमा होती है।

.....*(व्यवधान)*

[हिंदी]

श्री राजेश पायलट : मुझे दो-तीन बातें कहनी हैं। प्रधान मंत्री जी ने जब पहले दिन देश के नाम संदेश दिया तो उसमें तीन-चार बातों पर जोर दिया और सही बातों पर जोर दिया कि देश में सहमति से सरकार चलनी चाहिए। नीतियों पर सहमति होनी चाहिए। हम सब उसके हकदार रहे हैं, उसके पक्षधर हैं। पारदर्शिता होनी चाहिए, जवाबदेही आनी चाहिए और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ना चाहिए। उन्होंने चारों चीजें कहीं। इन चारों चीजों को हम सब दिल से मानते हैं। मैं श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी से, जो कि बुजुर्ग हैं, बड़े हैं, ईमानदारी से पूछता हूं कि 19 तारीख से अब तक वह कितनी बातों पर जम पाए हैं। आज सवाल प्रधान मंत्री का नहीं है। आज सवाल पार्टी का नहीं है। आज सवाल देश के सिस्टम की क्रेडेबिलिटी का है। आज सवाल देश की राजनीति की क्रेडेबिलिटी का है। क्या पारदर्शिता हम इन तीन-चार दिनों में दिखा पाये हैं? क्या करप्शन के खिलाफ आवाज उठाई है? क्या हम सचमुच लड़ पाये हैं? आज सवाल एक व्यक्ति का नहीं है, जिनका नाम श्री शरद पवार जी ने लेकर कहा। आज देश में एक मैसेज जा रहा है। हम नेता लोग जो कहते हैं। .....*(व्यवधान)*

श्री राजवीर सिंह (आंवला) : मैं राजेश पायलट जी से पूछना चाहता हूं कि वह बार-बार यह कह रहे हैं कि प्रधान मंत्री ने क्या किया। वह उनसे 8 दिन की जवाबतलपी कर रहे हैं। आपने 45 साल तक देश का जो कबाड़ा किया है, उसके बारे में भी बताइये। .....*(व्यवधान)*

श्री राजेश पायलट : करप्शन की बात हुई। अभी कुछ बिगड़ा नहीं है। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि आप चार दिन में बहुत लम्बे काम कर सकते थे। मैं तो एक प्रार्थना कर रहा हूं कि जो भी हम कहें, उसका देश में एक संदेश जाना चाहिए। जिन सरकारों की क्रेडेबिलिटी है। मैं इसमें अपने आपको भी शामिल कर रहा हूं। आज क्रेडेबिलिटी गिर रही है। आज गांवों में जाओ तो लोग हमसे सवाल पूछते हैं। कल परसों हिमाचल की सरकार बनी थी। कल मैं अपने क्षेत्र में दौरा करने गया था तो बड़ा आम आदमी भी सवाल पूछ रहा था। मैंने कहीं एक भाषण में कह दिया था कि हम वायदा करते हैं कि हम सरकार की अच्छी नीतियों का समर्थन करेंगे। हम सरकार की नीति और अगर उनकी नीयत साफ होगी तो जिस मुद्दे पर देश का भला होगा, उस पर हम सहायता देंगे। कल ही मुझे दो फैक्स इनकी नीयत और नीति के बारे में आ गये। वह मैं आपके बीच में रखना चाहता हूं।

सभापति महोदय, मैं जो रिकार्ड रख रहा हूं, वह मुझे आये हैं। मैं उन्हें हाउस की टेबल पर रखने को तैयार हूं। उनके सोर्स भी बताने को तैयार हूं कि वह मुझे कहां से मिले हैं। जब मैंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है और अगर वह देश के भले में काम करेगी तो हम लोग हमेशा सहायता देंगे क्योंकि देश पार्टियों से ऊपर है। इस बात के उत्तर में एक शरीफ आदमी ने मुझे चिट्ठी भेजी कि इनकी नीयत ठीक नहीं है। राजेश पायलट जी, तुमने तो कह दिया लेकिन क्या यह देश को एक रख पायेंगे और क्या देश को जोड़कर रख पायेंगे? उन्होंने एक उदाहरण दिया है। 4 फरवरी, 1991 को आपका जयपुर में कैम्प लगा था। उस समय श्री मुरली मनोहर जोशी जी अध्यक्ष चुने गये थे। आडवाणी जी को याद होगा कि जयपुर में एक कैम्प हुआ था और उसमें सवाल उठाये गये। उन दिनों शायद आडवाणी जी की यात्रा खत्म हुई थी और मुलायम सिंह जी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे। श्री लालू प्रसाद यादव ने आपकी यात्रा रोकी थी। वह यात्रा रोककर पहुंचे। कैम्प में जो प्रश्नावली डेलीगेट्स की दी गयी, वह उसे दिन आब्जर्वर बिजनेस इन पालिटिकल में 4 फरवरी, 1991 को आई। श्री सुभांशु मिश्रा उसके एडीटर हैं जिन्होंने लिखा है। प्रश्नावली में क्या पूछते हैं। आखिर चिन्ता की बात है और मैं बड़े दुख के साथ कहता हूं।

श्री हरिन पाठक (अहमदाबाद) : यह किस ईश्वर की बात है।

श्री राजेश पायलट : 4 फरवरी 1991 की बात है।

श्री हरिन पाठक : 6 साल के बाद कल यह लैटर आया है। .....*(व्यवधान)*

श्री राजेश पायलट : नीयत बदला नहीं करती। 4 फरवरी 1991 को जयपुर में कैम्प था। प्रश्नावली के प्रश्न नं 1 में उन्होंने अपना नाम लिखा है आचार्य जगदीश मुनि। यह बी.जे.पी. के हैं और हरिद्वार के प्रेजीडेंट हैं। मैं सब सवाल पर नहीं जाऊंगा। मैं केवल संबंधित सवालों का ही जिक्र करूंगा। सवाल नं. 13 .....*(व्यवधान)* मैं वर्ष 1991 की बात कर रहा हूं। जो पढ़ा है, उसको दे रहा हूं। प्रश्न नं. 13 में यह है कि क्या आपके क्षेत्र की जनता यह समझती है कि देश में पिछले दिनों हुए साम्प्रदायिक दंगे आडवाणी जी की यात्रा के कारण हुए? हां या न या पता नहीं आदि इन तीनों में जवाब दीजिए। चलो कोई बात नहीं वह पता करना चाहते होंगे कि पार्टी का इससे कोई लिंक तो नहीं है।

अपराह्न 5.00 बजे

प्रश्न नम्बर 14-देश में चुनाव होने की स्थिति में साम्प्रदायिक दंगों का भारतीय जनता पार्टी पर क्या प्रभाव पड़ेगा। पूछते क्या हैं। बुरा असर पड़ेगा, कोई असर नहीं पड़ेगा, तीसरा ब्लैंक कर दिया है। उसमें एक व्यक्ति लिखता है कि अच्छा असर पड़ेगा।

यह प्रश्नावली 1991 में जयपुर में डैलीगेट्स को पूछी जा रही थी।

प्रश्न नम्बर 15-अपने देश के चुनाव पर किन दो मुद्दों पर मतदाता का असर पड़ेगा? किन्हीं दो पर निशान लगाइए। राजनीतिक संगठन का, धार्मिक आधार का, प्रत्याशी के व्यक्तित्व का और जातीय आधार का। चलो यह भी मान लेते हैं।

सवाल नम्बर 16-इससे दिल टूटता है। अटल जी, इससे दिल पर चोट लगती है, इससे शक होता है कि नीयत साफ नहीं है। पहला सवाल देश की एकता और अखंडता होता तो मैं भी खुश होता और आज आपके भाषण पर यकीन करता कि आपका मन बिल्कुल साफ है और आप देश की एकता, अखंडता के लिए खड़े हो जाएंगे। पहला सवाल राम जन्म भूमि का है। अगले लोक सभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के तीन मुख्य चुनावी मुद्दे कौन से होने चाहिए, उन पर निशान लगाइए। सबसे पहले राम जन्म भूमि, दूसरा बेरोजगारी, तीसरा मंहगाई, चौथा एकता और अखंडता। आपके लिए देश की एकता, अखंडता की यह प्रॉपरिटी है।

यह प्रश्नावली बी.जे.पी. के उसमें बांटी गई है। किसी भाई ने मुझे फैक्ट्स एंड फिगर्स दिए हैं। इसे मैं टेबल पर रख लेता हूं, आप पता करवा लें कि इसमें कहां तक सच्चाई है और किसने बांटी है। 4 फरवरी, 1991 के बिजनस स्टैंडर्ड में यह आया है। .....*(व्यवधान)*

अपराह्न 5.02 बजे

[श्री के. प्रधानी *पीठासीन हुए*]

आज देश की मजबूती का सवाल है। आज देश जिन चुनौतियों से गुजर रहा है, उसके बारे में मुझे दो बातें कहनी हैं।..... .*(व्यवधान)* एक तरफ हमारे साथियों ने मैनीफैस्टो में हिन्दुत्व पर जोर दिया है और बी.जे.पी. ने अपने मैनीफैस्टो में हिन्दुत्व का मतलब सबके लिए न्याय दिया है।

[अनुवाद]

हिन्दुत्व का अभिप्राय सबके लिए न्याय है। चुनाव घोषणा पत्र में यही परिभाषा दी गई है।

[हिन्दी]

जार्ज साहब, आपने भी आज बातें कहीं। मैं आपकी बहुत कद्र करता हूं, आप बुजुर्ग हैं, बहुत दिनों से पोलीटिक्स में हैं। एक तरफ तो हिन्दुत्व का मतलब जस्टिस फॉर ऑल और दूसरी तरफ आपके नैशनल एजेंडा में जैनविन सिटीजन की भाषा को आप पढ़ लीजिए कि क्या लिखा है।

[अनुवाद]

"हम सभ्य, मानवोचित और न्यायपूर्ण व्यवस्था स्थापित करने के प्रति प्रतिबद्ध हैं। हम सभी पंथों के समान आदर की भारतीय परम्परा के सुसंगत धर्मनिरपेक्षतर अवधारणा को सच्चे तौर पर और निष्ठा से लागू करेंगे तथा उस पर आचरण करेंगे।"

[हिंदी]

हिन्दुत्व और इक्विल फेस बराबर नहीं चल सकते। इस देश में जमायते इस्लामी के इंस्टीट्यूशन में जो शिक्षा दी जा रही है, शिशु मंदिर और विद्या मंदिर में जो शिक्षा दी जा रही है, वे देश के सिटीजन को एक नहीं रख सकती है, यह बात आपको माननी पड़ेगी। कश्मीर में जो जमायते इस्लामी की भाषाएं चलती रहीं, आज देश को उससे तकलीफ हुई है। मुझे बी.जे.पी. के भाइयों से दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि आप भी उसी लाइन पर जगह-जगह जो शिशु मंदिर, विद्या मंदिर और भाषा बोल रहे हैं, वह भी देश के लिए ठीक नहीं है। मैं देश को यह बताना अपना फर्ज समझता हूं। मुझे पता है कि आपको यह बात पसंद नहीं आयेगी। लेकिन आम आदमी की यह भाषा है कि ये दोनों चीजें देश को एक नहीं रख सकतीं। इसके लिए आपको कुछ करना पड़ेगा। .....*(व्यवधान)*

जार्ज साहब, आप 7 नवम्बर, 1990 को इसी सदन में बोल रहे थे। मैं बड़ी मुश्किल से पार्लियामेंट से इसे ढूंढकर लाया हूं। यदि आपको याद हो, आप 7 नवम्बर, 1990 को कह रहे थे-

[अनुवाद]

"श्री मुलायम सिंह यादव और श्री लालू प्रसाद यादव ने अत्यधिक साहस और सहिष्णुता के साथ स्थिति को नियंत्रित करने का यत्न किया जो अन्यथा विस्फोटक रूप धारण कर लेती।"

आपने उसका उल्लेख किया है। आपने आगे इसके कारणों का उल्लेख किया था मैं उद्धृत करता हूं:

"भारत के लोग धर्मनिरपेक्षता के लिए हैं। इस देश में आज लोगों को उनके धर्म से जानने का प्रयास हो रहा है।"

आप जानते हैं कि आप अपने भाषण में किस ओर इशारा कर रहे हैं।

[हिंदी]

आज आपने बहुत बढ़िया तरीके से वकालत की है। मुझे 19 जुलाई, 1979 की याद आ रही है, जब आप बोल रहे थे। मैं तो एयर फोर्स में था, हम सब बड़े गौर से सुन रहे थे कि जार्ज साहब

[श्री राजेश पायलट]

ने आज मोरारजी भाई को बचा लिया। अगले दिन क्या हुआ, मुझे पता नहीं। कल क्या होगा, अब यह अटल बिहारी वाजपेयी जी की किस्मत पर है कि 19 जुलाई, 1979 रिपीट होगी या नहीं होगी। यह रात-रात को भगवान के ऊपर है कि कितने दिन घटाता है, कितने दिन आगे बढ़ाता है।

मैं ये बातें कहने के लिए खड़ा हुआ हूं। मेरे कुछ पेपेर्स लाइब्रेरी में रह गये हैं। मैं उनको ढूंढने में रह गया और एकदम आपने मेरा नाम ले दिया तो गलती से पेपर रह गये। मैं आखिर में दो बातें कहने उठा हूं, शरद जी ने बहुत विस्तार से बातें कह दी हैं यह बात सही है कि देश में जनता से न आपको सरकार बनाने का आदेश मिला और न हमको मिला और हमने शुरूआत में कह दिया था कि जिसका बहुमत होगा, वह सरकार बनाये। प्रजातंत्र में यह जरूरी है, लेकिन आज अटल जी, आपने कहा कि हम तो बैठे थे, हम सरकार बनाने के लिए राष्ट्रपति जी के पास नहीं गये, हमें बुलवाया। आपके हर लीडर ने तीन दिन तक प्रैस और मीडिया में यह कहा कि हमारा हक है, हमको बुलाना चाहिए, हमारा सरकार बनाने का हक है। सुषमा स्वराज जी बैठी हुई थीं, डिबेट में मैं भी था, मैंने कहा कि हक तो देखो किसी का नहीं है, जिसकी मेजोरिटी होगी, राष्ट्रपति जी अपने आप बुला लेंगे तो वे मुझसे टेलीविजन पर लड़ पड़ीं कि हमारा सरकार बनाने का हक है, आप लोग कैसे रोक सकते हैं, हम सरकार बनाकर रहेंगे। हो सकता है कि आपके मन में नहीं हो, लेकिन बी.जे.पी. ने तो मन बना लिया था कि हमें सरकार बनानी है, आपकी चाहे जो मर्जी हो, आपने सरकार बनाई, लेकिन एक बात मैं आपसे कहना चाहूंगा कि बहुत कण्ट्राडिक्शन हैं।

मैं कहना नहीं चाहता हूं, 1993 में मैं होम मिनिस्ट्री में मंत्री था और मनमोहन सिंह जी फाइनेंस मिनिस्टर थे। हमारे रिवेन्यू सैक्रेटरी ने ए.आई.ए.डी.एम.के. के खिलाफ कार्रवाई की और यहां पर जो भाषा ए.आई.ए.डी.एम.के. के बारे में बोल गई थीं, जब करप्शन की बात चली थी कि एक हजार साड़ियां, दो हजार चप्पल, पता नहीं क्या/क्या अखबार में छप गया था। हम डिफेंड कर रहे थे, हम यह कह रहे थे कि कोई बात नहीं होगी, हम देखेंगे, हम देखेंगे, उस वक्त तो यह बात हम पर लगाई जा रही थी और हमने वहां पर जाते ही इन्क्वायरी की बात की। मनमोहन सिंह जी और हम दोनों बैठे थे। हमने नरसिंहराव जी से कहा था कि चीफ मिनिस्टर के बारे में ऐसी बातें हमको कही गई, हमको देश को जवाब देना है, हमें कुछ कार्रवाई करनी पड़ेगी। हमारी लायंस वाली बात चली। जब हमने अखबार की बात कही, तब यह बात लगी है। मुलायम सिंह जी ने यह बात ठीक कही कि जब तक यहां बैठे तो सब कसूरवार और जब वहां चले गये तो गंगाजल छिड़क दिया, वे ईमानदार हो गये। यह बर्ताव बदलना पड़ेगा। जो बेईमान है, वह सबके लिए बेईमान है। इस देश में छांट करनी पड़ेगी और यह छांट तब होगी, जब आप भी साफ मन से बात करना शुरू करेंगे। अभी साफ मन की बात नहीं चली है।

मैं कहना चाहता, मैं भी कम्युनिकेशन मिनिस्टर रहा हूं, जो हालात देश के हुए थे, मैं राज्य सभा में खड़ा-खड़ा जवाब दे रहा था, प्रमोद महाजन जी ने दो घंटे तक बोलने नहीं दिया था, सारे टेंडरों के कागज पकड़ा दिये थे और हालत यह हो गई थी कि जब चार करोड़ रुपये घर में मिले तो हमें यहां से निकलने वाले बी.जे.पी. के भाई टोका करते थे कि तुम्हारे कितने हैं, जरा थोड़े से दे जाओ। आज वही भाई गले मिल रहे हैं अब उसको ओथ दिला दी और उसको विभाग भी पी.डब्लू.डी. का दे दिया कि तू और जरा आराम कर, पी.डब्लू.डी. ले ऐसे देते हैं।

अटल जी, मुझे आपसे उम्मीद नहीं थी और कोई इस बात को कर देता तो कोई बात नहीं थी। आपकी तरफ से एक रेजिस्टेंस तो आ जाता, लेकिन एक रेजिस्टेंट नहीं आया।

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज): मेरा पाइंट ऑफ आर्डर है। सभापति जी, मेरा व्यवस्था प्रश्न है।

[अनुवाद]

सभापति महोदय : वह आपकी बात नहीं मान रहे हैं। कृपया बैठ जाइये।

.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : कृपया बैठ जाइये यह आपकी बात नहीं मान रहे हैं।

.....*(व्यवधान)*

[हिंदी]

सभापति महोदय : आप जरा बैठ जाइये।

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज) : आप एक मिनट सुन तो लीजिए.....*(व्यवधान)*

श्री राजेश पायलट : सभापति जी, जहां तक विचारधाराओं की बात है, विचारधाराओं की लड़ाई हो, हमें भी खुशी होगी। हमारी विचारधाराओं में कमी है तो हम सुधारेंगे। अगर आपकी विचारधाराओं में कमी है तो आप सुधारें। इससे देश में अच्छा संकेत जाएगा। अगर देश में विचारधारा की राजनीति भविष्य में होती है तो देश मजबूत होगा।.....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

सभापति महोदय : कृपया कमेंट्री मत कीजिए।

[हिन्दी]

श्री राजेश पायलट : आज एक बात सच्ची है, कोई संसद की बात नहीं है, कोई टकराव की बात नहीं है, घोषणा पत्र में घोषणा करो। लेकिन उसको भूलकर राष्ट्रीय एजेंडा में नाम ले लो, यह ठीक नहीं है। आज मुझे उम्मीद थी कि प्रधान मंत्री जी खड़े

होकर कहेंगे कि हमने घोषणा पत्र के आधार पर चुनाव जीता, लेकिन जो हमारी बातें घोषणा पत्र में थीं या तो वे आज से खत्म हैं या हम इसको उठाएंगे और राष्ट्रीय एजेंडा में जोड़ेंगे। इससे कुछ तो देश में मैसेज जाएगा। कश्मीर में गड़बड़ी क्यों हुई। 1992-93 के हमारे बी.जे.पी. भाइयों के भाषणों को हमने देखा है। मुरली मनोहर जोशी जी श्रीनगर झंडा फहराने गए थे तो वहां धारा 370 का मामला खड़ा कर दिया गया था। हर कश्मीरी भाई के दिमाग में एक बात आई थी, इस देश में आटोनोमी की बात छोड़िए, हमारी जो मंजूर बातें हैं वो भी नहीं होंगी। इससे कश्मीर में नई आफत खड़ी हो गई थी। बड़ी मुश्किल से कश्मीर को सम्भाला। आज उसके बारे में कोई बात तक नहीं है। वह भी गुम है। गांव में एक कहावत है कि जो बक्कड़ होता है वह दिल की बात कह देता है लेकिन गुमसुम आदमी का पता नहीं क्या कहेगा और क्या करेगा। आज बी.जे.पी. बोल नहीं रही है, जो बोलती थी वह भी बंद हो गई है। पहले कुछ कह दिया करते थे, आज वह भी चुप हैं। मेरे पास पूरी डिटेल नहीं हैं मैं दो उदाहरण देना चाहता हूं। मेरे पेपर्स कहीं रह गए हैं। अटल जी ने लखनऊ में जब सरकार बन रही थी तो किसी ने उनसे केबिनेट एक्सपेंशन के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि बी.जे.पी. आर्ट आफ गवर्नेंस सीख रही है यह मैंने कहीं नेशनल हैराल्ड या पायनीर में पढ़ा था। आज मैं कटिंग लेकर आया था लेकिन शायद वह लाइब्रेरी में रह गई है। अगर आर्ट आफ गवर्नेंस यह होगा तो देश की सरकार कैसे चलेगी। मेरी आपसे प्रार्थना है कि खुली चोट पर पट्टी हो जाती है, लेकिन अटल जी, गुम चोट पर नहीं होती, बड़ी देर लगती है। इस पर गुम चोट मत कर देना, हम उभर नहीं पाएंगे।

मेरी आपसे प्रार्थना है कि संवेदनशील मुद्दों पर हमें खुलकर बात करनी चाहिए। हमें अपनी पालिसी खुलकर देश के सामने रखनी चाहिए। आज देश में अंधेरा है इसलिए कि खुलकर पालिसी नहीं दी जा रही है। आज तक भारतीय जनता पार्टी की तरफ से कश्मीर के बारे में कोई शब्द तक नहीं बोला गया है कि क्या रुख होगा। ऐसे जलते मुद्दों पर चाहे नार्थ-ईस्ट की बात हो या कश्मीर की बात हो, अगर हमारे देश की सरकार का विजन साफ नहीं होगा तो वहां भी तकलीफ उठ सकती है। ये सेंसेटिव इलाके हैं।

आज आपने एक कल्चर की बात कही। वन नेशन वन कल्चर, दूर से सुनने में बड़ा अच्छा लगता है। माननीय प्रधान मंत्री जी यह देश रीति-रिवाजों का है। आप गृहस्थी में नहीं रहे, मैं रहा हूं। मैं बता सकता हूं कि हमारे यहां जब शादी होती है और फेरे होते हैं तो लड़की-लड़के के साथ चली जाती है। आपके यहां भी ऐसा ही होता होगा। यहां हमारे किंडिया साहब जो मेघालय से आते हैं, वे बैठे हैं, उनके यहां शादी के बाद लड़का लड़की के घर चला जाता है। इनके रीति-रिवाज उल्टे हैं। इनको मत छेड़ो, ये चीजें उभरने दो। यह देश ऐसे ही एक रहेगा तो प्यार वैसा ही बना रहेगा। हमारे देश में अनेक परम्पराएं रही हैं। तरह-तरह के धर्म, तरह-तरह के रीति-रिवाज हैं। अगर ये रहेंगे तो हमारा देश मजबूत रहेगा। इन नारों से कहीं नुकसान हो जाएगा। इन नारों से मिसअंडरस्टैंडिंग हो जाएगी, फिर आप रोक नहीं पाओगे।

आखिर में मैं एक सलाह बड़े भाई अटल बिहारी जी को देना चाहता हूं, एक भाई के नाते दे रहा हूं, संसद के नाते नहीं। यहां जब-जब दो-दो बैठे हैं, चाहे 1957 में बैठे हों, चाहे, 1977 में बैठे हों, चाहे 1991 या 1996 में बैठे हों, गड़बड़ हुई है, स्टेबिलिटी वहीं से खराब होती है। आप देख लें, मैं अपनी बात भी बता रहा हूं। 1957 में नेहरू जी और सरदार पटेल बैठते थे, इतिहास बताता है। 1991 में हमारे जमाने में भी यही हुआ और 1977 में भी यही हुआ। उस समय तो तीन-तीन लोगों मोरारजी देसाई, चौधरी चरण सिंह और जगजीवन राम ने बैठने की कोशिश की। तब भी गड़बड़ हुई। 1996 में भी यही हुआ। सी.पी.आई. (एम) के भाई यहां बैठे हैं, राम विलास जी नहीं हैं, वे तो बैठे रहे, लेकिन उधर के बदलते रहे। इसलिए दो वाली स्थिरता रहेगी, इसमें शक है। मैं मुलायम सिंह जी की तरफ से भी कहना चाहता हूं, बाकी आपके ऊपर है। मैं बैठे-बैठे पढ़ रहा था, किसी ने लिखकर भेजा है।

आज के जो संदेश होंगे, वे सारे देश में जायेंगे और सरकार जो भी कदम उठाएगी, वह देश की नीति और भविष्य के लिए होगा। एक शायर ने कहा है-

"वह दौर भी देखा है अखबारों के पन्नों ने,
लम्हों ने खता की थी भावियों ने सजा पाई।"

इस देश के साथ ऐसा न हो जाए, हम यही भरोसा आप पर रखते हैं और मुझे पूर्ण उम्मीद है कि कल हम अपनी भाषा और भावना बटन दबाकर दिखाएंगे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको धन्यवाद करता हूं।

रसायन और उर्वरक मंत्री तथा खाद्य मंत्री (सरदार सुरजीत सिंह बरनाला) : सभापति जी, मैं इस प्रस्ताव के हक में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। इस बार जनादेश बहुत साफ नहीं हुआ। किसी को भी पूरी मैजोरिटी नहीं मिली। यह सरकार बनी है लेकिन काफी तादाद से नहीं बनी, इसलिए सदन में बहुमत साबित करने के लिए यह मौका दिया गया है। इसके लिए आज यह बहस चल रही है। ये हालात क्यों पैदा हुए, यह आप सभी जानते हैं।

1996 के इलेक्शन के बाद बी.जे.पी. को सरकार बनाने का मौका दिया गया लेकिन वह सरकार थोड़े दिनों के बाद, तेरह दिनों के बाद ही तोड़ दी गई। फिर कोशिश हुई कि और कोई सरकार बनाई जाए। बहुत सी पार्टीज इकट्ठी हुई। यूनाईटेड फ्रंट का नाम दिया गया और उसको बाहर से एलर्ट करने के लिए कुछ कांग्रेस ने, कुछ लेफ्ट ने वादा किया कि हम सपोर्ट करेंगे। देवगौड़ा जी के नेतृत्व में एक मिली-जुली सरकार खड़ी हो गई, सरकार चली, लेकिन मुश्किल में पड़ी रही। आहिस्ता-आहिस्ता यह मुश्किल इतनी हो गई कि उस सरकार को चलना ही मुश्किल हो गया। थोड़े समय के बाद कहा गया कि नहीं, यह हमें पसन्द नहीं है और उस सरकार को खत्म कर दिया गया। उस वक्त बोलते हुए भी बहुत से लोगों ने कहा था, मैंने भी कहा था कि कांग्रेस अकसर ऐसा किया करती है। सपोर्ट करने का वादा करती है लेकिन मन में कुछ और होता है। एक दफा नहीं, कई दफा इतिहास में यह बात आ चुकी है।

[सरदार सुरजीत सिंह बरनाला]

चौधरी चरण सिंह जी का मैंने जिक्र किया था, चन्द्रशेखर जी का भी मैंने जिक्र किया था पहले लोगों को यह तर्जुबा हो चुका है, अब भी ये लोग साथ नहीं निभाएंगे। ऐसा ही हुआ। देवेगौड़ा जी की सरकार गई, गुजराल जी की सरकार बनी। थोड़े दिनों के बाद उसमें भी उन्हें नुक्स दिखाई देने लग गए। आहिस्ता-आहिस्ता मन बन गया कि इनकी सरकार को भी तोड़ा जाए। दरअसल मन में यह था कि कोई मौका मिले तो अपनी सरकार बनाई जाए। कांग्रेस की ऐसी कोशिश दिखाई दे रही थी। बाहर से हम लोग देखा करते थे कि इनकी कोशिश यह है कि किसी न किसी तरह अपनी सरकार बनाई जाए।

उस वक्त कांग्रेस के एक लीडर थे जो आज नहीं हैं। शायद कांग्रेस से बाहर हो गए हैं। उनकी कोशिश थी कि कुछ ऐसे हालात कर दिए जाएं और शायद उनको कुछ मौका मिल जाए। लेकिन अफसोस लोक सभा भंग हो गई। फिर से देश के सामने इलेक्शन आ गए। इस चुनाव में भी जनादेश साफ नहीं आया। लोगों ने किसी भी दल को बहुमत नहीं दिया। कुछ दल तो बिलकुल ही रह गए। यूनाईटेड फ्रन्ट के कई कम्पोनेंट थे, जो बिलकुल ही रह गए। उनकी तादाद उंगलियों पर गिनने वाली रह गई है। देखा गया कि एन्टी स्टैब्लिशमेंट वोट हुआ है। जहां-जहां पर भी जिस दल की सरकारें थीं, उसके खिलाफ वोट दिया गया। लेकिन पंजाब ही एक ऐसा राज्य है, जहां पर प्रो-इस्टेब्लिशमेंट वोट हुआ। पिछली दफा कांग्रेस दो सीट्स जीत कर आई थी और उससे पहले तो तेरह की तेरह सीट कांग्रेस के पास थी, क्योंकि अकाली दल ने चुनाव का बायकाट किया था, लेकिन इस दफा तो पूर्ण सफाया हो गया। इसके पीछे भी कुछ ऐतिहासिक तथ्य थे कि क्यों कांग्रेस पंजाब में साफ हो गई और इस दफा एक भी सीट नहीं आ सकी। कारण यह कि पंजाब के लोगों ने समझ लिया कि पिछले समय में पंजाब को जिस आतंकवाद को सामना करना पड़ा, वह आतंकवाद कांग्रेस का ही पैदा किया हुआ था। इस बात को पंजाब के लोगों ने समझ लिया। काफी लम्बा इतिहास हो जाता है, 12-13 साल पंजाब ने काफी कष्ट उठाया है और बहुत नुकसान उठाया है। लोग समझ गए कि ये हालात कांग्रेस के ही पैदा किए हुए हैं। इस आतंकवादी प्रक्रिया में तकरीबन 1 लाख लोग पंजाब के मारे गए। बहुत से तो बेकसूर लोग, इनोसेंट लोग मारे गए। जिनका इससे कोई ताल्लुक नहीं था, ऐसे लोग मारे जाते रहे। बहुत से पुलिस के कर्मचारी भी मारे गए और साथ ही बहुत से आतंकवादी भी मारे गए। जैसा मैंने बताया कि एक लाख के करीब लोग मारे गए और पंजाब में जो नुकसान हुआ, उसमें बड़े-बड़े लोग हरचरण सिंह लोगोंवाल जैसे लोग शहीद कर दिए गए। यह ऐसा घिनौना इतिहास था और पंजाब उस बोझ को उठाता रहा। यह सारा कुछ पंजाब को बरदाश्त करना पड़ता था। नतीजा यह हुआ कि 8000 करोड़ रुपए का कर्ज पंजाब के ऊपर हो गया। बहुत कोशिश की गई कि इस कर्ज को माफ कर दिया जाए। कई सरकारें आई और कहा गया कि यह बोझा पंजाब के ऊपर नहीं होना चाहिए। क्योंकि पंजाब तो देश की लड़ाई कर रहा था, आतंकवाद का मुकाबला कर रहा था, लेकिन किसी ने भी इसको नहीं देखा। मुझे इस बात को कहने में खुशी है कि जब इन्द्रकुमार गुजराल साहब प्रधान मंत्री बनें, वे पंजाब के हालात को जानते थे, उन्होंने फैसला लिया कि पंजाब का यह कर्जा माफ होना चाहिए। उन्होंने यह काम किया *और हम उनके आभारी हैं।* इसीलिए फिर शिरोमणि अकाली दल *ने फैसला लिया क आप पंजाब से इलैक्शन लड़िए पर गुजराल* साहब ने पंजाब से इलैक्शन लड़ा और चुनाव जीता। भले ही उनकी पार्टी ग्रासरूट पर नहीं थी, चूंकि पंजाब के लोग समझते थे कि गुजराल साहब ने मदद की है, इसलिए वे यहां से जीत कर आए। मुझे इस बात की खुशी है कि हम अपने कर्तव्य को निभा सके।

मैं अर्ज कर रहा था, पंजाब में कांग्रेस ने घिनौना काम किया, इसलिए पंजाब में कांग्रेस का यह हाल हुआ।.

ब्लू-स्टार आपरेशन को पंजाब के लोग भुला नहीं सकेंगे। 6 जून, 1984 को दरबार साहब में हिन्दुस्तान की फौज को भेजा गया, टैंक और तोप लेकर हमला करवाया गया और सैकड़ों लोग शहीद हो गए। देश की फौज देश के लोगों के खिलाफ काम नहीं करती है, देश के धर्म-स्थलों पर नहीं जाया करती है, लेकिन ऐसा हुआ। जिससे सिख समुदाय बहुत दुखी हो उठा। आज तक इस घिनौने काम की किसी ने माफी नहीं मांगी, किसी सरकार ने माफी नहीं मांगी। पार्टी के तौर पर भी माफी नहीं मांगी गई, मुझे इस बात का बहुत अफसोस है। इसलिए पंजाब के लोग कांग्रेस के खिलाफ हो गए। इतना ही नहीं, इसके बाद जो कुछ हुआ वह इससे भी भयानक था। देश में एक लहर सिख समुदाय को बदनाम करने की चला दी थी, पूरा मीडिया इस्तेमाल किया जा रहा था। सरकार पूरा मीडिया इस्तेमाल कर रही थी कि इनको बदनाम कर दिया जाए। सिखों को आतंकवादी का नाम देकर सारे देश में ही नहीं बल्कि सारे संसार में बदनाम कर दिया जाए। नतीजा आपके सामने आया, नवम्बर 1984 में जो कुछ देश में हुआ वह भी इतिहास का एक हिस्सा बन गया। कत्लेआम हुआ। देश की राजधानी दिल्ली में कत्लेआम हुआ। ऐसा कत्लेआम हुआ, जो नादिर शाह के समय में दिल्ली में कभी देखा नहीं था। सिख समुदाय के लोगों को ढूंढ़ ढूंढ़ कर मारा गया और बहुत बुरी तरह से मारा गया। उनके घर जला दिए गए, सम्पति लूटी गई, जला दी गई और यह तीन दिन तक होता रहा।

महोदय, देश में सरकार थी। होम मिनिस्टर यहां पर थे, जोकि कोई आर्डर कर सकते थे। प्राइम मिनिस्टर नये बने थे, उन्होंने काम शुरू कर दिया था। लेकिन तीन दिनों तक ये तमाशा देखते रहे। सिखों की हत्या हो रही थी। मोहल्ले-मोहल्ले में, जगह-जगह पर घर जलाये जा रहे थे, बस्तियां जलाई जा रही थीं और तमासाई बन कर कुछ लोग देख रहे थे तथा कुछ लोग लोगों को उकसा रहे थे। पुलिस नहीं बुलाई गई, शूट और साइट का आर्डर नहीं दिया गया। फौज यहां मौजूद थी लेकिन फौज को कोई आदेश नहीं दिया गया कि कोई फ्लेग मार्ग करके कम से कम लोगों के दल में कोई दहशत तो डाली जाए कि यह काम ठीक नहीं हो रहा है। तीन दिन आंख बंद करके उसको इजाजत दी गई कि चलता है तो चलता रहने दिया जाए। इस तरह तीन हजार आदमी दिल्ली में मार दिए गए। ऐसा देश के कई हिस्सों में हुआ। उनमें कुछ लोग अच्छे भी थे, जिन्होंने सिखों को पनाह भी दी। यहां भी बहुत से सांसद बैठे हैं, अगर मैं नाम लूंगा तो कोई रह जाएगा। लेकिन

कुछ लोग ऐसे थे जिन्होंने हमदर्दी की वजह से अपने घरों में छिपा कर रखा। वह एक ऐसा इतिहास बन गया जो भूलने में नहीं आता।

महोदय, इतने केस हो गए लेकिन उसके बाद भी कोई केस अदालत में नहीं भेजा गया। सालों साल गुजर गए..... *(व्यवधान)* यह सदा चलता रहेगा, जब तक आप इसकी माफी नहीं मांगेगें। मैं अर्ज कर रहा हूं कि केस नहीं चलाए गए। इसको 10-12 साल हो गए। जब केस नहीं चला तो हमने कुछ कोशिश की। मुझे 1993 की बात याद है जब राजेश पायलट जी होम मिनिस्ट्री में थे तो मैं उनको प्राइम मिनिस्टर के पास अपने साथ लेकर गया कि केस नहीं चल रहे हैं आप मेरे साथ चलिए तब वह हमदर्दी करके मेरे साथ गए उन्होंने भी कहा और मैंने भी कहा कि ये केस चलने चाहिए। भले ही इसमें कुछ कांग्रेस के बड़े लोग आते हैं, लीडर का नाम भी आता है, लेकिन यह अच्छा रहेगा। अगर इन पर केस चला दिए जाएं तो अच्छा होगा इससे शायद पार्टी को भी फायदा होगा, लेकिन ऐसा नहीं किया, कई कोशिशों के बावजूद भी ऐसा नहीं किया गया। क्या हुआ, नतीजा यह हुआ कि महसूस होने लगा कि वाकई ये लोग जिम्मेदार थे। मुझे इस बात की खुशी है कि इस दफा ऐसे लोगों को टिकट नहीं दिए गए। इससे पहले तो टिकट भी दिए जाते थे और न ही सिर्फ टिकट दिए जाते थे बल्कि कायदाब होकर मिनिस्ट्री में भी आते थे। उनको मौका दिया जाता था कि सरकार में भी आइए, ये लोग थे। लेकिन इस बार उनको बाहर निकाला गया। इससे यह जाहिर हुआ कि यह बात जतायी गई कि है कि हां हमारी पार्टी के लोग थे।

जिन्होंने इस काम में बहुत बुरी तरह से हिस्सा लिया था। मैं आपसे अर्ज कर रहा था कि बाबरी मस्जिद के लिए तो इलैक्शन में मांफी मांगी गयी थी क्योंकि वह समुदाय इतनी बड़ी तादाद में है कि इसका ख्याल था कि माफी मांगने के कारण वोट मिल जाएंगे। सिख समुदाय छोटा है, इसलिए अकाल तख्त गिराए जाने की, ऑपरेशन ब्लयू-स्टार की माफी नहीं मांगी थी। यह सारा वोट का तमाशा है। हमें इस बात का अफसोस है कि यह सब वोट के लिए किया जा रहा है।

श्री भजन लाल (करनाल) : बरनाला साहब एक मिनट की माफी चाहूंगा। सोनिया गांधी जी जब चंडीगढ़ गयी थीं तो एक लाख लोगों की मीटिंग में उन्होंने यह कहा था कि जो हरमंदिर साहब में हुआ, उसका मुझे खेद है।

प्रो. प्रेम सिंह चन्दूमाजरा (पटियाला) : यही तो बात है कि वोट बटोरने के लिए ऐसा करते हैं। उस समय वे न तो प्रधान मंत्री थीं और न पार्टी की मेम्बर ही थीं। अब इन्होंने उनको अध्यक्ष बनाया है।

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला : अध्यक्ष जी, जैसा भजनलाल जी ने फरमाया है। जब चंडीगढ़ में इलेक्शन कम्पेन के लिए सोनिया जी गयी तो उन्होंने कुछ शब्द कहे थे। उन शब्दों को कहने का कानून क्या था। सोनिया जी तो बहुत समय से दिल्ली में मौजूद थीं। वह पहले भी कह सकती थीं, लेकिन उन्होंने पहले नहीं कहा। मैं पूछना चाहता हूं क्यों नहीं कहा ? महज एक इलैक्शन मीटिंग में जाने के लिए उन्होंने कुछ शब्द बोले। वोट बटोरने के लिए ऐसी बातें कही गयीं। लेकिन उन शब्दों का फायदा नहीं हुआ। लोग समझ गये कि जो कुछ कहा गया है महज वोट बटोरने के लिए कहा गया है। यह वोट की राजनीति है और इसके अलावा कुछ नहीं है।.....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

सभापति महोदय : मंत्री महोदय, एक घोषणा की गई है कृपया एक मिनट के लिए बैठ जाइए।

नियम 377 के अन्तर्गत पार्टियों और ग्रुपों के नेताओं के साथ 18 नवम्बर 1997 को हुई बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसरण में प्रतिदिन 24 सदस्यों को मामला उठाने की अनुमति प्रदान की जा रही है। उस निर्णय के मुताबिक सदस्यों को सचिव के द्वारा दिए गए उनकी सूचना के विषय को संक्षेप में पढ़ना मात्र है और विषय के मूल पाठ को सभा पटल पर रखा गया मान लिया जाएगा।

श्री एस. जयपाल रेड्डी : महोदय, श्री सुरजीत सिंह बरनाला को पहले अपना भाषण समाप्त करने दीजिए। उनके भाषण के समाप्त होने के बाद हम इस पर चर्चा कर सकते हैं।

सभापति महोदय : ठीक है श्री सुरजीत सिंह बरनाला के भाषण समाप्त कर लेने के बाद हम यह विषय लेंगे।

[हिंदी]

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला: मैं अर्ज कर रहा था कि पंजाब के हालात ऐसे बने और बी.जे.पी. और शिरामणि अकाली दल न केवल पार्लियामेंटरी इलेक्शन में एक हुए बरन इससे पहले असेम्बली के इलेक्शन में भी उन्होंने इकट्ठे होकर चुनाव लड़ा। कॉमन मिनिमम प्रोग्राम एसेम्बली से पहले इश्यू किया गया और उस बेसिज पर हम इलेक्शन लड़े और बी.जे.पी. और शिरोमणि अकाली दल की साझा सरकार बनी। इस वक्त भी ऐसा ही हुआ कि पंजाब में शिरोमणि अकाली दल एक साथ पार्लियामेंटरी इलेक्शन लड़े और एक क्लीन स्वीप पंजाब में हुई। मैं यह कहना चाहूंगा कि पंजाब में हमारे इकट्ठा होने की वजह से ऐसा माहौल बना है। ममता जी कह रही थीं कि यहां कोशिश यह होती रहती है कि लोगों को एक दूसरे से दूर करो। वह हिंदू और मुस्लिम की बात कह रही थीं, लेकिन पंजाब में कोशिश हो रही थी कि हिंदुओं और सिखों को दूर कर दिया जाए, जो सदियों से इकट्ठे रहते चले आ रहे हैं, उनको अलग करने का प्रयत्न किया जा रहा था लेकिन उनको कामयाबी नहीं मिली। बी.जे.पी. और शिरोमणि अकाली दल के इकट्ठा होने से पंजाब में हिंदू और सिख इकट्ठा हुए हैं। वहां पर ऐसा माहौल और भाईचारा बना है जैसा संत हरचंद सिंह लोंगोवाल कल्पना किया करते थे.....*(व्यवधान)*

श्री बलराम जाखड़ (बीकानेर) : हिन्दू और सिख दोनों भाई हैं। एक बाप के दो बेटे हैं, उनको अलग करने की न कभी कोशिश हो सकती है, न की गई, इसको ध्यान में रखकर हम पर मेहरबानी करें।

सरदार सुरजीत सिंह बरनाला : हो तो नहीं सकती लेकिन मैं कह रहा था कि कोशिश की गई। लेकिन उसमें कामयाबी नहीं मिली। अगर मैं यह कहूं कि पंजाब देश की सबसे पीसफुल स्टेट है तो यह कहना गलत नहीं होगा। वहां अभी लोक सभा का इलैक्शन खत्म हुआ। पंजाब सूबे में एक भी खून-खराबे का केस नहीं हुआ जबकि हिन्दुस्तान में 65 लोग इस दौरान मारे गए। आप देखते रहे हैं कि बहुत से सूबों में क्या-क्या होता रहा? लेकिन पंजाब में मोस्ट पीसफुल इलैक्शन हुए। इसके लिए हम इलैक्शन कमीशन को, पंजाब सरकार और पंजाब के लोगों को धन्यवाद देना चाहते हैं। वहां माहौल ऐसा बन गया कि पीसफुल इलैक्शन हुए, कहीं रीगिंग नहीं हुई, कहीं कोई मार-पीट नहीं हुई, किसी किस्म की धक्का-मुक्की नहीं हुई। वहां बहुत आराम से इलैक्शन हुए। इसका नतीजा आप देख रहे हैं कि दूसरी जगहों से भाग-भाग कर लोग वहां आ गए हैं।.....*(व्यवधान)* इलेक्शन के रिजल्ट आने के बाद कोशिश हुई कि किसी ढंग से बी.जे.पी. और उसके सहयोगी दलों को बाहर रखा जाए। श्री जार्ज फर्नान्डीज इनके मैनिफैस्टो पढ़-पढ़ कर बता रहे थे कि सभी पार्टियों का कैसा मैनिफस्टो था, ये कैसे-कैसे एक दूसरे के खिलाफ लड़ कर आए थे और खास करके सभी कांग्रेस के खिलाफ लड़ कर आए थे लेकिन यत्न यह हो रहा था कि किसी तरह से बी.जे.पी. को बाहर रखा जाए, भले ही कांग्रेस की सरकार बन जाए। सोमनाथ बाबू चले गए हैं। उनकी और उनकी पार्टी की बड़ी कोशिश रही, उनके लीडर मेरे हमनाथ हैं, उन्होंने बहुत कोशिश की कि कांग्रेस की सरकार बन जाए तो अच्छा है, हम फिर सपोर्ट कर देंगे। वह उनके खिलाफ बहुत जबर्दस्त लड़ाई लड़ कर आए थे। पता नहीं इनका सेकुलरिज्म कैसा है? मैं अभी इस सैकुलरिज्म की कहानी सुना कर हटा हूं। वह सैकुलरिज्म 1984 में हिन्दुस्तान के लोगों ने देखा, जब गलियों और बाजारों में सिखों को मारा गया, यह इनका सैकुलरिज्म है, जब देश के बहुत पवित्र स्थान को इस्तेमाल करने के लिए फौज भेज दी गई, यह इनका सैकुलरिज्म है। उस सैकुलरिज्म के नाम पर यह इकट्ठे होना चाहते थे और कहते थे कि कांग्रेस की सरकार बन जाए। यूनाइटिड फ्रंट का सरकार बनाने का हाल नहीं था, वे टूट चुके थे। टी.डी.पी. ने कह दिया कि हम कांग्रेस के साथ नहीं जा सकेंगे। ए.जी.पी. ने कह दिया जबकि उनके सदस्य यहां तो नहीं आए लेकिन बतौर पार्टी उन्होंने कह दिया हम इनके साथ नहीं जाएंगे। उन्होंने इनका व्यवहार देख लिया। उन्होंने इनकी सीधे कारगुजारी देख ली है। ऐसा ही जम्मू-कश्मीर की नेशनल कान्फ्रेंस पार्टी ने कहा कि हम इनके साथ कोई ताल्लुक नहीं रखेंगे। ऐसे हालात में लोग चाहते हैं कि यह सरकार चलनी चाहिए और बार-बार इलैक्शन नहीं होने चाहिए। मेरे ख्याल में कोई भी दुबारा से इलैक्शन नहीं चाहेगा। मेरे ख्याल में 300 के करीब नए मेम्बर यहां आए हैं। पिछली दफा भी जो नए मैम्बर चुन कर आए थे, वे राष्ट्रपति जी के पास इकट्ठे होकर गए थे। उन्होंने उनसे कहा कि कोई रास्ता निकालिए जिससे यह लोक सभा भंग न हो सके लेकिन कोई ढंग नहीं निकला और लोक सभा भंग हो गई। हिन्दुस्तान के लोग बार-बार 6 महीने के बाद, साल-डेढ़ साल के बाद इलैक्शन नहीं चाहते हैं। यहां जो सदस्य बैठे हैं, कोई ऐसा नहीं होगा जो यह कहेगा कि इलैक्शन दोबारा होने चाहिए। सभी लोग यहां बैठे हैं। यहां बहुत लायक लोग चुनकर आए हैं। हमें कोई ढंग निकालना चाहिए।

जैसे राज्य सभा की मियाद छः साल के लिए होती है, उसी तरह लोक सभा में भी पांच साल की मियाद होनी चाहिए, भले ही कोई सरकार बने या न बने। इसके लिए कांस्टीट्यूशन अमेंडनमेंट हमको करना चाहिए और ऐसी सलाह सारे लोग बनाइए। कोई न कोई बात ऐसी जरूर करनी चाहिए जिसका फायदा सदस्यों को हो और जिसको देश के लोग चाहते हैं।

मैं कुछ बातें रीजनल पार्टीज के बारे में कहना चाहूंगा क्योंकि मैं एक रीजनल पार्टी से आता हूं। रीजनल पार्टीज क्या चाहती थी? वे चाहती थीं कि स्टेट्स को ज्यादा अधिकार दिये जाएं। उनको आटौनौमी होनी चाहिए कि वे अपना थोड़ा बहुत काम कर सकें। हम पहले यही कहते थे कि देश के संविधान का ऐसा ढांचा हो, फैडरल स्ट्रक्चर हो, तो इसी बात पर हमको कहा जाता था कि ये अलगाववाद की बात कर रहे हैं, सेपेरेशन की बात कर रहे हैं, देश से अलग होना चाहते हैं। ऐसा इल्जाम बड़ी पार्टियां हम पर लगाती रहीं। रीजनल पार्टीज के कनक्लेव होते रहे। उनमें सभी पार्टियों की यही धारणा थी कि स्टेट्स के अधिकारों कुछ न कुछ और बढ़ने चाहिए। आज वह धारणा सभी की बन गयी है। रीजनल पार्टीज को कुछ इंपोर्टेन्स मिली है जिनको दूर रखा जा रहा था कि इनका कोई काम नहीं है। मेरे से पहले यहां पर पढ़कर सुनाया गया कि रीजनल पार्टीज देश को नुकसान पहुंचाएंगी। ये कहते हैं कि स्टेट्स स्ट्रौंग होने चाहिए। आप सभी ने कहा कि जब स्टेट्स स्ट्रौंग होंगी तभी सेन्टर स्ट्रौंग होगा। यही बात कहते हुए हमको 27 साल हो गए। वही बात आहिस्ता-आहिस्ता सारे देश ने स्वीकार की है। अभी वाजपेयी जी बोल रहे थे कि हम स्टेट्स को ज्यादा अधिकार देंगे। उस तरफ बात चली है। अधिकारों की बात चली है, आटौनौमी की बात चली है और अब फैडरल स्ट्रक्चर की सोच होगी। यह कहा गया है कि सरकारिया कमीशन रिपोर्ट को लागू किया जाएगा और बहुत साल हो गए। बहुत मुश्किल से सरकारिया कमीशन बैठाया था। हम लोगों ने मांग की थी और कमीशन बैठाया गया । कमीशन ने मेहनत करके रिपोर्ट तैयार की। वो बड़े-बड़े वौल्यूम बन गए लेकिन उनको पता नहीं कहां छिपा दिया, कितना गर्दा उस पर चढ़ गया। दस साल किसी ने उसको नहीं देखा। अब आहिस्ता-आहिस्ता जो पिछली सरकार बनी थी, उसने कहना शुरू किया था कि सरकारिया कमीशन पर अमल किया जाएगा, फैडरल स्ट्रक्चर की तरफ हम कुछ काम करेंगे, स्टेट्स को ज्यादा पावर देंगे। यूनाइटेड फ्रंट की सरकार ने यह कहना शुरू किया था और मुझे उम्मीद है कि वह जारी रहेगा।

मैं अर्ज करना चाहता हूं कि बार-बार सरकारें तोड़ने का तजुर्बा बहुत हो गया, बहुत देख लिया। लोगों ने उसको पसन्द नहीं किया। कल इस बहस के बाद वोट होने वाला है। आप फैसला करिये कि ऐसा काम नहीं करेंगे जिससे लोगों को लगे कि ये अब भी सरकार तोड़ना चाहते थे। मैं आप सभी से विनती करूंगी कि कल पौजिटिव वोट होना चाहिए, सरकार को कायम रखने का वोट होना चाहिए। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अपराह्न 5.44 बजे

[अनुवाद]

नियम 377 के अधीन मामले*

सभापति महोदय : अब हम नियम 377 के अधीन मामलों पर चर्चा करेंगे।

(एक) दार्जिलिंग जिले के पर्वतीय क्षेत्रों में पेय जल की कमी को दूर करने के लिए पश्चिम बंगाल सरकार को विशेष अनुदान जारी किये जाने की आवश्यकता

श्री आनन्द पाठक (दार्जिलिंग) : दार्जिलिंग जिले के दार्जिलिंग सदर और दो अन्य सब डिवीजनों के पर्वतीय क्षेत्रों में जल की अत्यधिक कमी के कारण एक गंभीर स्थित उत्पन्न हो गई है। यह कमी गर्मियों में सदर सब डिवीजन में अधिक गंभीरता के साथ महसूस होती है। पानी की कमी के कारण स्थानीय जनसंख्या और आने वाले पर्यटकों को गर्मी के दौरान अत्यधिक कष्ट उठाना पड़ता है। उन्हें 10 से 15 रुपये तक एक बाल्टी पानी खरीदने के लिए मजबूर होना पड़ता है और वह भी पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलता। पानी की कमी के कारण पन-बिजली परियोजना, सिंचाई तथा अन्य आवश्यक सेवाएं भी गंभीर रूप से प्रभावित होती हैं। इस स्थिति से उबरने और पानी की कमी को दूर करने के लिए बड़ी मात्रा में धनराशि की आवश्यकता है जो राज्य सरकार के सीमित संसाधनों से परे है।

केन्द्र सरकार से मेरा अनुरोध है कि इस समस्या पर गंभीरता से विचार करे और राज्य सरकार व दार्जिलिंग मोरखा हिल काउन्सिल को स्वीकृत सामान्य धनराशि के अलावा एक विशेष अनुदान स्वीकृत करे।

[हिन्दी]

(दो) गेहूं का समर्थन मूल्य 600 रु. प्रति क्विंटल निर्धारित किए जाने की आवश्यकता

[हिन्दी]

प्रो. प्रेम सिंह चन्दूमाजरा (पटियाला) : सभापति महोदय, सरकार द्वारा आगामी गेहूं की फसल पर गेहूं की सरकारी खरीद का मूल्य 455 रु0 प्रति क्विंटल तय किया गया है, कहने को यह मूल्य गत वर्ष के मूल्य के 40 रु. प्रति क्विंटल अधिक है, पर वास्तव में यह पिछले साल के मूल्य से 20 रु. प्रति क्विंटल कम ही है। गत वर्ष गेहूं की कीमत 415 रु. प्रति क्वि. तय की गई थी और 60 रु. प्रति क्वि. बोनस दिया गया था। गत वर्ष की तुलना में खेती की उत्पादन लागत और भी बढ़ी है किंतु सरकार ने वास्तव में गेहूं के दाम पिछले वर्ष की तुलना में कम कर दिये। आज की हालत में यदि गेहूं के मूल्यों में बढ़ोत्तरी नहीं की गई तो अकेले पंजाब के किसान को 200 करोड़ रु. की हानि होने का अनुमान लगाया गया है। हरियाणा, उत्तर प्रदेश के किसान को होने वाले नुकसान की मात्रा अलग है। किसान को लाभकारी मूल्य न मिलने के कारण वह गेहूं की खेती कम करता चला आ रहा है। फलतः सरकार को देश की जरूरत पूरी करने के लिए विदेशों से गेहूं मंगाना पड़ रहा है। आज गेहूं का आयात 750 रु. प्रति क्विं. तक पड़ता है। कितने आश्चर्य की बात है कि सरकार विदेशी किसान को 750 रु. प्रति क्विं. देने को तैयार है किंतु देश के किसान को 455 रु. प्रति. क्वि. दे रही है।

अतः मेरा केन्द्र सरकार से आग्रह है कि गेहूं की सरकारी खरीद की दर 600 रु. प्रति क्विंटल तय की जाए जिससे किसान को गेहूं की बिक्री पर लाभ मिले, वह अधिकाधिक गेहूं पैदा करे और देश को खाद्य के मामले में आत्मनिर्भर बनाये।

(तीन) नरोरा बाँध से दातागंज तक नहर के निर्माण के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के प्रस्ताव को स्वीकृत किये जाने की आवश्यकता

श्री राजवीर सिंह (आंवला) : सभापति महोदय, आंवला लोक सभा क्षेत्र में दो विधान सभाएं बदायूं जिले की आती हैं और बदायूं जिले में सिंचाई के साधनों का नितांत अभाव है, इसके कारण वहां दिन-प्रतिदिन जलस्तर गिरता जा रहा है। इसका कारण वहां एक भी नहर नहीं है।

इसलिए मैं भारत सरकार से मांग करता हूं कि नरोरा बांध से एक नहर निकाली जाए जो दातागंज तक जाये। इस संबंध में एक प्रस्ताव उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ से केन्द्र सरकार के पास आ चुका है। इस नहर के निर्माण से बदायूं जिले के किसानों को कृषि उत्पादन में लाभ मिलेगा और इसी के साथ जो जलस्तर नीचे जा रहा है वह भी रुक जायेगा।

इसलिए मैं केन्द्र सरकार से मांग करता हूं कि यथाशीघ्र सर्वेक्षण करवाया जाए और 9वीं पंचवर्षीय योजना में इसका निर्माण किया जाए।

[अनुवाद]

(चार) किसानो के हितों की सुरक्षा के लिए एक व्यापक नीति तैयार किए जाने की आवश्यकता

श्री एस. सुधाकर रेड्डी (नालगोंडा) : महोदय, कर्जवारी के कारण विभिन्न राज्यों में किसानों द्वारा आत्महत्या का मामला महत्वपूर्ण है। प्रति वर्ष सैकड़ों किसान आत्महत्या कर रहे हैं और इस वर्ष यह संख्या गम्भीर रूप से बढ़ गई है। सरकार को किसानों की रक्षा के लिए कुछ करना चाहिए। सरकार को किसानों के द्वारा निजी ऋण-दाताओं, सहकारी समितियों, बैंक तथा अन्य सार्वजनिक संस्थाओं से लिए गए ऋणों के लिए कानूनी मोहलत देने की घोषणा करनी चाहिए। केन्द्र सरकार को सार्वजनिक वित्तीय संस्थाओं को प्रतिपूर्ति करनी चाहिए। यह सुविधा विशेषकर उन किसानों को दी जानी चाहिए जिनके पास पांच एकड़ से कम भूमि है। जिन किसानों की फसल नष्ट हो गई है उन्हें अब बिना ब्याज के ऋण

* पाठ सभा पटल पर रखे माने गये।

उपलब्ध कराए जाने चाहिए। नकली कीटनाशकों और मिलावटी बीजों के कारण काली सूची में डाली गई सभी कम्पनियों पर प्रतिबंध लगा दिया जाना चाहिए और उनकी परिसम्पत्तियों को जब्त कर लेना चाहिए व उस राशि तथा सरकारी धनराशि में से मुआवजा दिया जाना चाहिए।

केन्द्र सरकार से मेरा अनुरोध है कि वह इस मामले में गंभीरता से विचार करें।

अपराह्न 5.51 बजे

मंत्रि-परिषद में विश्वास का प्रस्ताव--*जारी*

[हिन्दी]

कुमारी मायावती (अकबरपुर) : माननीय अध्यक्ष जी, भा.ज.पा. सरकार द्वारा साम, दाम, दंड और भेद का रास्ता अपनाकर विश्वास मत हासिल करने की कोशिश की गई है और ऐसी सरकार द्वारा यहां रखे गए विश्वास मत प्रस्ताव के खिलाफ बोलने के लिए मैं खड़ी हुई हूं। माननीय राष्ट्रपति जी ने जब प्रधान मंत्री जी को मिलने के लिए बुलाया और यह कहा कि आपके समर्थन में जिन पार्टियों की चिट्ठियां आपको प्राप्त हुई हैं, उनको आप हमें दे दें ताकि हम आपको सरकार बनाने के लिए दावत दे सकें। जिस दिन माननीय राष्ट्रपति जी ने प्रधान मंत्री जी के सामने यह प्रस्ताव रखा, उसी के अगले दिन भारतीय जनता पार्टी के एक वरिष्ठ नेता ने जो माननीय प्रधान मंत्री जी के बहुत नजदीक हैं, मुझे प्रातः लगभग आठ बजे टेलीफोन कर के यह बात की कि आप यदि हमारी सरकार में शामिल हो जाएं, तो हम आपको गृह मंत्री बना सकते हैं और आपकी पार्टी के जो चार और सदस्य हैं उनमें से भी हम किसी को मिनिस्टर बना सकते हैं। मैंने माननीय प्रधान मंत्री जी के करीबी माने जाने वाले जो भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता हैं, उनसे यह कहा कि हमने भारतीय जनता पार्टी को दो बार आजमाया है।

हमने भारतीय जनता पार्टी को दो बार आजमाया है। अब हम तीसरी बार नहीं आजमायेंगे। भारतीय जनता पार्टी मायावती को गृह मंत्री तो क्या प्रधान मंत्री का भी ऑफर देगी तो भी हम भारतीय जनता पार्टी के साथ हाथ मिलाने वाले नहीं हैं। जब मैंने यह बात भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता को टेलीफोन में कहा तो वे बड़े दुखी हुए। दूसरे दिन मुझे फिर टेलीफोन आया। तीसरे दिन भारतीय जनता पार्टी के दूसरे वरिष्ठ नेता ने मुझे फिर टेलीफोन करके फिर ऑफर दिया और इतना ही नहीं बल्कि हमारी पार्टी के जो दूसरे सांसद हैं, उनको भी मंत्री पद का लालच दिया। उनको रिश्वत देने की भी कोशिश की। लेकिन बहुजन समाज पार्टी के सांसद भारतीय जनता पार्टी के लालच में नहीं आये, उनके बहकावे में नहीं आये।

मैं माननीय सदन को यह बताना चाहती हूं कि जिस दिन भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी और माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने प्रधान मंत्री के पद की शपथ ली, उसी दिन मैंने दिल्ली दूरदर्शन पर यह खबर सुनी कि मायावती के खिलाफ प्लोट पम्पों के घोटाले को लेकर सी.बी.आई. ने मामला दर्ज किया है। मैं यह बताना चाहती हूं कि भारतीय जनता पार्टी द्वारा साम, दाम, दंड, भेद आदि इस्तेमाल करने के बाद भी जब मैं उनके चक्कर में नहीं आई तो मेरे ऊपर भ्रष्टाचार का फर्जी मामला सी.बी.आई. द्वारा दर्ज कराकर, पूरे देश में मेरी इमेज को बिगाड़ने की कोशिश की गई। मेरे ऊपर पोलिटिकल प्रैशर डालने की कोशिश की गई जिससे मायावती डर जाये, घबरा जाये और दबाव में आकर जब विश्वास मत का मौका आये तब उस मौके पर हमारे समर्थन में वोट दे दें।

सभापति जी, मैं आपको बताना चाहती हूं कि मायावती घबराने वाली नहीं है, किसी लालच में आने वाली नही है। बहुजन समाज पार्टी ने यह फैसला लिया है। भारतीय जनता पार्टी ने पोलिटिकल प्रैशर में सी.बी.आई. को मेरे खिलाफ इस्तेमाल किया है। यह गलत कार्य उनको बहुत मंहगा पड़ेगा। यह बात मैं उनको बताना चाहती हूं। मैं उनको यह बताना चाहती हूं कि जिस मामले को लेकर, पोलिटिकल प्रैशर बनाकर मेरे खिलाफ मामला दर्ज कराया गया, वह मामला मेरे शासन काल का नहीं है। यह मामला प्रेजीडेंट रूल का है। वर्ष 1995 का है। इसमें मायावती किधर से आ गयी। इससे साफ जाहिर होता है कि पोलिटिकल प्रैशर बनाकर विश्वास मत के मौके पर आपने हमारा वोट लेने की कोशिश की । हमें डराने, धमकाने की कोशिश की। इस कारण हम भारतीय जनता पार्टी सरकार द्वारा रखे गये विश्वास मत का विरोध करते हैं।

दूसरा, हम इस प्रस्ताव का विरोध क्यों करते हैं ? बहुजन पार्टी क्यों करती है क्योंकि भारतीय जनता पार्टी विश्वासलायक पार्टी नहीं है। भारतीय जनता पार्टी भरोसे लायक पार्टी नहीं है। इसके बारे में मैं बताना चाहूंगी कि वर्ष 1996 में जब उत्तर प्रदेश में विधान सभा के लिए इलेक्शन हुए और रिजल्ट निकला तो किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। जिसके कारण किसी भी पार्टी की सरकार नहीं बन सकी और उत्तर प्रदेश में फिर से प्रेजीडेंट्स रूल लगा। जब उत्तर प्रदेश में प्रेसीडेंट्स रूल लगा तो भारतीय जनता पार्टी के लीडर माननीय कांशी राम जी से मिले और कहा कि बेहतर होगा कि हम मिलजुलकर सरकार बनाये। बहुजन समाज पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं ने यह फैसला लिया.....*(व्यवधान)*

अपराह्न 6.00 बजे

संसदीय कार्य मंत्री तथा पर्यटन मंत्री (श्री मदन लाल खुराना): सभापति महोदय, छः बज गए हैं। सभी लीडर्स की मीटिंग में यह तय हुआ था कि यह डिबेट रात तक चलेगी। दोनों पक्षों से काफी लोगों ने बोलने के लिए नाम दिए हैं। इसलिए मेरा निवेदन है कि सदन की कार्यवाही तीन घंटे आगे बढ़ा दी जाए।

हमने यहां रात्रि डिनर का इंतजाम किया है। इसलिए सभी मैम्बर्स, मीडिया पर्सन्स और सैक्रेटेरिएट के स्टाफ के लिए 7.30 बजे से खाने का प्रबन्ध है।

[अनुवाद]

सभापति महोदय : क्या सभा चर्चा का समय बढ़ाना चाहती है ?

.....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : मेरा प्वाइंट ऑफ आर्डर है। हमारे खुराना जी भोजन के लिए आमंत्रित कर रहे हैं। लेकिन भोजन में नमक भी मिला हुआ होगा। इसलिए हम उसे नहीं खायेंगे क्योंकि यदि नमक खा लेंगे तो गड़बड़ हो जाएगी।

श्री मदन लाल खुराना : यह नमक हमारा नहीं है, यह पार्लियामैंट्री अफेयर्स मिनिस्ट्री का नमक है और हम सब उसके परिवार के सदस्य हैं। इसलिए उसमें कोई ऐतराज नहीं होना चाहिए।.....*(व्यवधान)*

श्री शरद पवार : सभापति महोदय, हाउस को एक्सटैंड करने में हमें कोई एतराज नहीं है लेकिन मेरा यह सुझाव है कि लालू जी के लिए बिना नमक का खाना रखा जाए.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : ठीक है। सभा का समय रात 8.00 बजे तक और दो घण्टे के लिए बढ़ाया जाता है। अभी आठ बजे तक बढ़ाया है, उसके बाद फिर देख लेंगे।

.....*(व्यवधान)*

कुमारी मायावती : मैं बता रही थीं कि जब उत्तर प्रदेश में किसी भी पार्टी को एब्सोलयूट मेजोरिटी नहीं मिली तो फिर से प्रैसीडैंट रूल लगा। लेकिन उसके बाद भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता अपने कुछ साथियों के माध्यम से बहुजन समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मान्यवर काशी राम जी से मिले और यह कहा कि प्रैसीडैंट रूल से बेहतर होगा कि हम मिल-जुलकर सरकार बनाएं। उसमें यह तय हुआ था कि पहले छः महीने बहुजन समाज पार्टी के नेतृत्व में सरकार चलेगी और अगले छः महीने भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में मिली-जुली सरकार चलेगी। जब पहले छः महीने बहुजन समाज पार्टी के नेतृत्व में सरकार चली तो हमने छः महीने के शासनकाल में उत्तर प्रदेश में समाज के हर वर्ग की .....*(व्यवधान)*

श्री प्रकाश विश्वनाथ परांजपे (ठाणे) : विषय क्या है और बात क्या हो रही है.....*(व्यवधान)* ये सदन का समय बर्बाद कर रहे हैं।.....*(व्यवधान)*

श्री अशोक प्रधान (खुर्जा) : हम इनको उत्तर प्रदेश में भुगत चुके हैं

[अनुवाद]

सभापति महोदय : कृपया बैठ जाइए।

.....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अकबर अहमद (आजमगढ़) : मैं यह बात बी.जे.पी. के लोगों से पूछना चाहता हूं.....*(व्यवधान)* यह बहुत बड़ा अहम मसला है.....*(व्यवधान)* यह बहुत बड़ी साजिश थी..... *(व्यवधान)*

श्री रामदास आठवले (मुम्बई उत्तर मध्य) : अभी बंगाल की बात हुई, अभी जार्ज साहब ने मेनीफैस्टोज की बात की, अभी उधर से तमिलनाडु की बात हुई.....*(व्यवधान)*

अपराह्न 6.00 बजे

[अध्यक्ष महोदय *पीठासीन हुए*]

श्री मित्रसेन यादव (फैजाबाद) : माननीय अध्यक्ष जी, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है, जरा सुन लें। अभी महामहिम राष्ट्रपति ने जो अपना अभिभाषण दिया है, उसकी पत्रिका को पेश करते हुए माननीय प्रधान मंत्री और उनके पक्ष के लोगों ने चरित्र के बारे में प्रस्तुत किया है। अब इनके चरित्र के बारे में मायावती जी कोट कर रही हैं तो उनको आपत्ति नहीं होनी चाहिए। वे भी तो उसी पाइंट पर हिट कर रही हैं, जिसके बारे में आप रोज कहते हैं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए। यह ठीक नहीं है। अध्यक्ष ने आपको अनुमति नहीं दी है।

[हिन्दी]

कुमारी मायावती : माननीय अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से सत्ता पक्ष के लोगों को यह बताना चाहती हूं कि सच्चाई कड़वी लगती है, लेकिन आज मैं सच्चाई बताकर रहूंगी, चाहे आप कितना भी हल्ला-गुल्ला करने की कोशिश करें।

माननीय अध्यक्ष जी मैं भारतीय जनता पार्टी के करैक्टर के बारे में बता रही थी कि भारतीय जनता पार्टी विश्वास करने लायक पार्टी नहीं है। इसी संदर्भ में मैं एग्जाम्पल दे रही थी कि जब .....*(व्यवधान)* यह तय हुआ कि पहले छह महीने बहुजन समाज पार्टी के नेतृत्व में सरकार चलेगी और अगले छह महीने भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में चलेगी। लेकिन जब पहले छह महीने बहुजन समाज पार्टी के नेतृत्व में सरकार बनाने की बात आई तो उसमें यह भी तय हुआ था कि जब बहुजन समाज पार्टी के नेतृत्व में सरकार बनेगी तो मुख्य मंत्री बहुजन समाज पार्टी के कोटे से बनेगा। लेकिन विधान सभा का स्पीकर भारतीय जनता पार्टी के कोटे से बनेगा। हमने भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं की बात मानकर छह महीने के शासन काल में भारतीय जनता पार्टी के स्पीकर को कबूल किया। उनके साथ मिल जुलकर सरकार बनाई, लेकिन जब छह महीने पूरे होने जा रहे थे तो हमने भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं को यह कहा था कि आज छह महीने पूरे होने जा रहे हैं, हम अपने वायदे के मुताबिक आपको

[कुमारी मायावती]

सत्ता सौंपेंगे, लेकिन हमारी भी एक शर्त है। जब अगले छह महीने आपके नेतृत्व में सरकार चलेगी तो मुख्यमंत्री आपका होगा, लेकिन अगले छह महीने के लिए विधान सभा का स्पीकर बहुजन समाज पार्टी के कोटे से बनना चाहिए। जब यह बात हमने भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं के सामने रखी, तब भारतीय जनता पार्टी के .....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया विश्वास प्रस्ताव के बारे में में बोलिए न कि उत्तर प्रदेश के बारे में

.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया पहले अपना स्थान ग्रहण कीजिए।

.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह ठीक नहीं है। कृपया पहले अपना स्थान ग्रहण कीजिए

.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री आरिफ मोहम्मद खां जी, कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए। माननीय महिला सदस्या अपना भाषण जारी रख सकती हैं।

[हिन्दी]

कुमारी मायावती : माननीय अध्यक्ष जी, जब मैं भारतीय जनता पार्टी के करेक्टर के बारे में बता रही हूं तो सत्ता पक्ष के लोगों को बड़ी तकलीफ हो रही है। लेकिन मैं अपनी बात रखकर ही रहूंगी, चाहे ये कितना भी हल्ला-गुल्ला करें। मैं बता रही थी कि जब हमने भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं को यह कहा कि हम अपने वादे के मुताबिक छः महीने पूरा होने पर आपको सत्ता सौंप देंगे। लेकिन हमारी भी एक शर्त है कि अगले छः महीने के लिए तो उत्तर प्रदेश का मुख्य मंत्री आपके कोटे से बनेगा, लेकिन विधान सभा का स्पीकर बहुजन समाज पार्टी के कोटे से बनना चाहिए। जब यह बात हमने रखी तो भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने हमारी इस शर्त को मानने के बजाए दिल्ली में पार्लियामेंट एनेक्सी में प्रेस कांफ्रेंस बुलाई। जिसमें श्री एल.के. आडवाणी और श्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा इनके दूसरे साथी भी मौजूद थे। उसमें हमारी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हमारे मान्यवर कांशी राम जी और मैं भी मौजूद थी। उस प्रेस कांफ्रेंस में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री एल.के. आडवाणी जी ने प्रेस मीडिया के माध्यम से पूरे देशवासियों को यह आश्वासन दिलाया था कि भारतीय जनता पार्टी किसी भी पार्टी के विधायक को नहीं तोड़ेगी। भारतीय जनता पार्टी स्पीकर की पावर का दुरुपयोग नहीं करेगी। भारतीय जनता पार्टी के कोटे से यदि स्पीकर एज इट डज रहता है तो हम विश्वास दिलाते हैं प्रेस मीडिया के माध्यम से पूरे देशवासियों को कि वे अपनी पावर का दुरुपयोग नहीं करेंगे और किसी भी पार्टी के विधायकों को नहीं तोड़ेंगे। हमने भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं की इन बातों पर भरोसा करके छः महीने पूरे होने पर अपने वादे के मुताबिक इनको सत्ता सौंप दी। लेकिन दुख के साथ कहना पड़ता है कि सत्ता सौंपने के बाद भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने हमने जो छः महीने के शासनकाल में दलितों, पिछड़ों और अक्लियतों के हित में काम किए थे, यही नहीं उत्तर प्रदेश में सर्वसमाज के हित को ध्यान में रखते हुए जो भी हमने काम किए थे और महत्वपूर्ण फैसले लिए थे, उनको एक-एक करके बदलना शुरू कर दिया। इसके बाद हमने इनसे समर्थन वापस ले लिया और उसके बाद भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने* उन्होंने बहुजन समाज पार्टी ही नहीं, कांग्रेस पार्टी और अन्य दलों के विधायकों को भी तोड़ा और अपनी पावर का दुरुपयोग किया। इतना ही नहीं, भारतीय जनता पार्टी कहती है कि हम भ्रष्टाचार के खिलाफ हैं। हमारे विधायकों को तोड़ा गया और खरीदा गया, तो वह पैसा कहां से आया।

[अनुवाद]

श्री सत्य पाल जैन : मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है। उत्तर प्रदेश विधान सभा अध्यक्ष के आचरण पर इस सभा में चर्चा नहीं की जा सकती।.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना भाषण समाप्त कीजिए।

श्री सत्यपाल जैन : महोदय, मेरा एक व्यवस्था का प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय : आपका व्यवस्था का प्रश्न क्या है?

.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

श्री सत्यपाल जैन आपका व्यवस्था का प्रश्न क्या है?

श्री सत्य पाल जैन : मेरा नियम 352 के अन्तर्गत व्यवस्था का एक प्रश्न है। हम उत्तर प्रदेश विधान सभा अध्यक्ष के आचरण पर इस सभा में चर्चा नहीं कर सकते। इन्होंने कुछ अपमानजनक बातें कही हैं जिन्हें कार्यवाही वृतान्त से निकाल दिया जाना चाहिए।
.....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

कुमारी मायावती : .....*

[अनुवाद]

गृह मंत्री (श्री लाल कृष्ण आडवाणी) : अध्यक्ष महोदय, इस सभा में किसी भी विधान सभा अध्यक्ष के आचरण के बारे में बात नहीं की जा सकती। इसे कार्यवाही-वृतान्त से निकाल दिया जाना चाहिए।

---

* अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार कार्यवाही वृतांत से निकाल दिया गया।

[हिन्दी]

कुमारी मायावती : ये कहते हैं कि राजभवन को राजनीति से दूर रखेंगे। मैं पूछना चाहती हूं कि आप राजभवन को राजनीति से दूर रखने की बात करते हैं, लेकिन उत्तर प्रदेश के स्पीकर महोदय ने स्पीकर के पद को राजनीति के लिए इस्तेमाल किया ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : महोदय, आपका विनिर्णय क्या है ?

अध्यक्ष महोदय : मैं रिकार्ड देखूंगा और यदि कोई आपत्तिजनक बात होगी तो उसे कार्यवाही-वृतान्त से निकाल दिया जाएगा।

.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कुमारी मायावती जी, आपकी पार्टी को केवल चार मिनट दिये गए हैं। कृपया अपना भाषण समाप्त कीजिए।

.....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

कुमारी मायावती : यह दलित विरोधी पार्टी है और इतना ही नहीं, परम पूज्य बाबा साहब डा. अम्बेडकर, जिन्होंने देश का संविधान बनाया.....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

.....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

कुमारी मायावती : उनकी याद में हमारी सरकार ने उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में बाबा साहब के नाम पर एक बहुत बड़ा पार्क बनवाया था। लेकिन यहां .....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : इसे कार्यवाही-वृतान्त में सम्मिलित नहीं किया जाए।

.....*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

कुमारी मायावती : भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने निर्माण कार्य बंद कर दिया और बिजली कटवा दी।..... *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : इसे कार्यवाही -वृतान्त में शामिल नहीं किया जाएगा।

.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : अब मैं श्री वाइको जी को बोलने के लिए आमंत्रित करता हूं

.....*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : केवल श्री वाइको जी का भाषण कार्यवाही-वृतान्त में शामिल किया जाएगा। कुमारी मायावती जी का भाषण कार्यवाही वृतान्त में शामिल नहीं किया जाएगा।

.....*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : इसे कार्यवाही -वृतान्त में शामिल नहीं किया जाएगा।

.....*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : कुमारी मायावती जी, कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए।

श्री वैको (शिवकाशी) : अध्यक्ष महोदय मैं आपका धन्यवाद करता हूं कि आपने मुझे इस सम्मानीय सभा में चर्चा में भाग लेने का अवसर प्रदान किया। आज मैं जिस चर्चा में भाग ले रहा हूं वह भारत के राजनीतिक इतिहास में अति महत्वपूर्ण चर्चा साबित होगी क्योंकि इससे भावी मार्ग प्रशस्त होंगे। आज देश इतिहास के दोराहे पर खड़ा है। इस महान देश की राजनीति नियति इस देश की 370 मिलियन जनता पुरुष और महिला वृद्ध, युवा, धनी और निर्धन लोग निश्चित करते हैं। उन्होंने 16, 22 और 28 फरवरी, को अपने मताधिकार का उपयोग किया। टेलीविजन पर चुनाव परिणाम 2 मार्च की शाम से ही आने शुरू हो गये थे। जम्मू-कश्मीर में 7 मार्च को भी चुनाव हुआ था। लोगों ने भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगी दलों को सरकार बनाने का जनादेश दिया।

मैंने बड़ी तल्लीनता से श्री शरद पवार, श्री सोमनाथ चटर्जी और श्री राजेश पायलट के भाषण सुने हैं वे सभी, इस जनादेश पर प्रश्नचिन्ह लगा रहे थे जैसे भारतीय जनता पार्टी को बहुमत मिला ही नहीं है। कभी-कभी अपने भाषणों में उन्होंने कटु शब्दों का उपयोग किया और तीव्र भर्त्सना की जबकि वे जानते हैं वे इस विश्वास प्रस्ताव को कभी गिरा नहीं सकते हैं जिस पर कल मतदान होगा। इस विश्वास प्रस्ताव ने भारत के लोगों और समस्त विश्व के राजनैतिक विचारकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है। एक बात निश्चित है कि हमारे विपक्ष के मित्रों को न तो हमारे प्रति कोई संदेह हुआ और न ही हमारे दल का रवैया संतोषजनक प्रतीत हुआ। वे हमारे अडिग उद्देश्य और अंतिम परिणाम के प्रति हमारे पूर्ण विश्वास के प्रमाण को देख और समझ सकते हैं।

* कार्यवाही वृतांत में सम्मिलित नही किया गया।

* कार्यवाही वृतांत में सम्मिलित नही किया गया।

[श्री वैको]

महोदय, भारतीय जनता पार्टी और इसके सहयोगी दलों के नेशनल एजेंडे की ओर हमारे माननीय मित्रों ने तीव्र भर्त्सना की थी इस देश की सम्पूर्ण विश्व में सम्मान और प्रतिष्ठा है क्योंकि यह लोकतंत्र के प्रति वचनबद्ध है। हमारा देश बहुत सी कठिनाइयों व समस्याओं से गुजर रहा है फिर भी यह गैटिस्बर्ग के इस सिद्धांत का पालन करता है कि लोगों की लोगों द्वारा लोगों के लिए बनाई गई सरकार। नेशनल एजेंडा के सम्बन्ध में कुछ लोगों का कहना है कि एक एजेंडा ऐसा भी है जिसके बारे में बताया नहीं गया है। लेकिन हमने यह एजेंडा गहन और पूर्ण विचार विमर्श कर सोच समझ कर देश के समक्ष रखा है। हमने बातचीत में भाग लिया है और हमने अपने विचार रखे हैं तत्पश्चात यह खदेड़ा तैयार किया है। उनका कहना है कि भारतीय जनता पार्टी और इसके सहयोगी दलों को बहुमत प्राप्त नहीं हुआ है। महामहिम राष्ट्रपति जो लोकतंत्र के रक्षक हैं ने श्री अटल बिहारी वाजपेयी को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित ठीक ही किया है।

महोदय, हम एक प्रणाली का पालन करते हैं। हमने ब्रिटिश संसदीय प्रणाली को अपनाया है। ब्रिटेन की संसदीय प्रणाली के मूल सिद्धान्त को हमारे पूर्वजों द्वारा अपनाया गया था और जब उन्होंने अपनी बुद्धिमता से जब यह संविधान बनाया तो उन्होंने इस सिद्धान्त का पालन किया कि सबसे अधिक स्थान मिलने वालों को ही सरकार बनाने का अवसर मिलेगा चाहे वह स्त्री हो या पुरुष। यही एक सिद्धान्त है। मैं यह नहीं कहता कि केवल यह पूर्णतया सही प्रणाली है। परन्तु हमने इसी प्रणाली को अपनाया है। अन्य प्रणालियां भी हैं। फ्रांस में जब तक 50 प्रतिशत से अधिक मत प्राप्त नहीं होते तब तक उस पर दुबारा विचार किया जाता है। संयुक्त राज्य अमरीका में चाहे वह कोई भी राजनैतिक दल जो, रिपब्लिकन अथवा डेमोक्रेट आदि वे राज्यों में अधिक वोट प्राप्त कर लेते तब भी उन्हें राष्ट्रपति का पद प्राप्त नहीं होता है क्योंकि वहां निर्वाचन मण्डल प्रणाली है। भारत में जिसे संसद में सबसे अधिक स्थान प्राप्त होते हैं वही सत्तासीन होता है। हमें इस बात की ओर भी ध्यान देना चाहिए कि अनेक निर्वाचन क्षेत्रों में 630 मिलियन मतदाताओं में से केवल 62 प्रतिशत ने ही अपने मताधिकार का प्रयोग किया। कुछ निर्वाचन क्षेत्रों में विजय उम्मदवारों को चाहे वे किसी भी राजनैतिक दल के हों इस 62 प्रतिशत में से केवल 30 प्रतिशत अथवा 35 प्रतिशत, 40 प्रतिशत यहां तक कि 28 प्रतिशत मत ही प्राप्त हुए हैं। यदि आप किसी निर्वाचन क्षेत्र के सभी मतदाताओं की गणना करें तो उन्हें केवल 20 प्रतिशत अथवा 25 प्रतिशत ही मत प्राप्त हुए हैं। कुछ निर्वाचन क्षेत्रों में विजयी उम्मीदवार को अन्य सभी उम्मीदवारों को मिले मतों से कम मत प्राप्त हुए हैं प्रणाली तो ऐसी ही है । अनेक प्रतिनिधियों को अपने निर्वाचन क्षेत्र में 50 प्रतिशत मत भी नहीं मिले हैं। यह प्रणाली ऐसी ही है कि जिसे सबसे अधिक स्थान प्राप्त होते हैं उसे ही विजयी घोषित किया जाता है। यदि पूरे भारत को निर्वाचन क्षेत्र माना जाए तो उसमें श्री अटल बिहारी वाजपेयी विजयी हुए हैं क्योंकि उन्होंने सबसे पहले सरकार बनाने का अपना दावा पेश किया और सरकार बनाई है।

यहां तक कि वर्ष 1952 के पहले आम चुनावों में भी जिस समय स्वर्गीय पण्डित जवाहर लाल नेहरू अपनी प्रतिष्ठा और गरिमा के शिखर पर थे उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोन में भी बढ़चढ़कर भाग लिया था, उस समय भी कांग्रेस को कुल मतों का 50 प्रतिशत भी प्राप्त नहीं हो सका था। वर्ष 1971 में स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गांधी, बंगला देश युद्ध समाप्ति के पश्चात जब वह अपने राजनीतिक जीवन के सर्वोत्तम चरण पर थीं, वह भी कुल मतों का 50 प्रतिशत प्राप्त नहीं कर सकी थी। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि 1969 में उनकी सरकार भी अल्पमत की सरकार थी। जब श्री नरसिंह राव को सरकार बनाने का निमंत्रण दिया गया तो पहली बार उन्हें भी अपने सहयोगी दलों को मिलाकर कुल 239 स्थान ही प्राप्त हुए थे।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी को सरकार बनाने के लिए निमंत्रित किया गया। सभा में कल इस बात का फैसला हो जायेगा। मेरी यह इच्छा है कि सदन मे भी लोगों द्वारा दिए गए फैसले को स्वीकार किया जाए। सदन को उन लोगों की भावनाओं का आदर करना चाहिए जिन्होंने चुनावों में अपने मताधिकार का प्रयोग किया है। इसलिए सदन को भी जनता के फैसले को स्वीकार करना चाहिए।

उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के मोर्चा बनाने की आलोचना की है। उनमें से अधिकांश चुनाव से पहले के सहभागी थे उन्होंने अपने तरीके से अपनी सीमाओं का उल्लंघन किया क्योंकि वे लोग हार गये। सरकार नहीं बना सके और जनता के दिलो दिमाग में अपनी इच्छानुसार विचारों को उद्वेलित नहीं कर सके परन्तु उन्हें एक बात नहीं भूलनी चाहिए। यह केवल बहु-दलीय प्रणाली नहीं है । हमने अपने मोर्चे में बहुक्षेत्रीय प्रणाली अपनाई है जो संघीय प्रणाली की आधारभूत विशेषताओं में से एक है। यह सब भारतीय जनता पार्टी के मोर्चे में शामिल अन्य सहभागियों के विचारों और उनके दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।

मुझे गर्व है कि मैं मरूमालारची द्रविड़ मुनेत्र कषगम दल का सदस्य हूं। हम स्वर्गीय श्री अन्ना के आदर्शों को मानते हैं। हम मूल आदर्शों से समझौता नहीं करते हैं। मैं उस पक्ष के अपने माननीय मित्र का ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूं जब हमने सोच विचार और चर्चा के बाद इस मोर्चे में शामिल होने का निश्चय किया तो हमने यह दृढ़ निश्चय किया कि "देश की भलाई के लिए इस मोर्चे में शामिल हों क्योंकि हमने कांग्रेस के पांच दशकों के कार्यों को देखा है।

मुझे आल-इंडिया अन्ना डी.एम.के. के ऐतिहासिक रजत जयंती सम्मेलन की याद है जो कि ताम्रपारनी नदी के किनारे हुआ था। मुझे इस वर्ष 3 जनवरी को लोगों को सम्बोधित करने का सुअवसर मिला था। उस समय आदरणीय श्री लाल कृष्ण आडवाणी भी मंच पर उपस्थित थे। सम्मेलन की अध्यक्षता उस समय तमिलनाडु की मुख्यमंत्री और डी.एम.के. की अध्यक्षा माननीय डा. जयललिता ने की थी। मैंने एक बात पर जोर देकर कहा था कि हम धर्मनिरपेक्षता के लिए वचनबद्ध हैं और धर्मनिरपेक्षता में हमारा अटूट विश्वास है।

मैंने अपने भाषण में कहा था कि हम हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक प्रत्येक मस्जिद में नमाज अदा की जाए। देश में हर चर्चा में प्रार्थना की जाए। हर मन्दिर में गुरुद्वारे में बौद्ध विहारों में, जैन मन्दिरों में पूजा प्रार्थना की जाए। मानने वाले लोगों द्वारा बिना किसी रुकावट और किसी को ठेस पहुंचाए बिना तर्कसंगतता का संदेश फैलाया जाए। यही धर्मनिरपेक्षता का सार है।

महोदय, मैंने इस बात का उल्लेख किया है कि हमारा राष्ट्र बहुधार्मिक बहु-भाषी और बहु-जातीय है। हमारे देश में विभिन्न धर्मों, भाषाओं, जातियों, परम्पराओं, रिवाजों का पालन किया जाता है .....

एक माननीय सदस्य : विभिन्न राष्ट्रीयताओं वाला भी ..*(व्यवधान)*

श्री वैको : मैं आपसे सहमत हूं। मुझे इस पर आपत्ति नहीं है। लेकिन आपके मित्र इस बात को नहीं मान रहे हैं। आप इसके बारे में पहले अपने मित्रों से पूछ लें। मैं आपसे सहमत हूं।

श्री ए.सी.जोस (मुकुन्दपुरम) : लेकिन आप अपने सहयोगियों से पूछे बगैर ही मुझसे सहमत हो रहे हैं.....*(व्यवधान)*

श्री वैको : यदि हर कोई अन्य दल विचारधारा को स्वीकार करता है तो किसी को भी किसी अन्य दल में होने की कोई आवश्यकता नहीं है। फिर अलग-अलग दलों की कोई आवश्यकता नहीं है।

श्री एम. सेल्वाराजु (नागापट्टीनम) : अन्ना ने मनु से कभी भी समझौता नहीं किया.....*(व्यवधान)*

श्री वैको : नहीं, मैं नहीं मानता हूं .....*(व्यवधान)* मैं किसी दूसरे मौके पर यह बताऊंगा कि आपने क्या किया है और किस प्रकार की अवसरवादी राजनीति आपने की है अभी इसके बारे में बोलेन का समय नहीं है तथा समय सीमा के कारण मैं अपने को अपने वक्तव्य तक ही सीमित रखूंगा।

महोदय, भिन्न-भिन्न धर्म, भाषाओं, मानव जातीय समूह परम्पराओं और प्रथाओं वाले देश में अनेकता में एकता की अवधारणा को स्वीकार करना ही होगा। अनेकता से सौंदर्य प्राप्त होता है। भिन्न-भिन्न रंग क्षितिज पर इंद्रधनुष के सौंदर्य को बढ़ाते हैं। भीनी-भीनी सुगंध वाले भिन्न-भिन्न प्रकार के फूल बगीचे का सौंदर्य बढ़ाते हैं तथा इसी तरह से अनेकता इस देश की एकता और अखण्डता को शक्ति प्रदान करती है। मानव जातीय समूहों तथा भाषाई समूहों की विशिष्टता तथा मौलिकता को सुरक्षित तथा संरक्षित किया जाना चाहिए।

महोदय, यह कहते हुए मुझे गर्व होता है कि उसी मंच से भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष; माननीय श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी ने अपने वक्तव्य में बड़े प्रभावशाली ढंग से कहा था कि भारतीय जनता पार्टी भारत के संविधान में उल्लिखित धर्म निरपेक्षता के प्रति वचनबद्ध है।.....*(व्यवधान)* कृपया मेरी बात सुनें। जब आपको बोलने का मौका मिले तब आप अपनी बात कहना।

अध्यक्ष महोदय : कृपया उनके भाषण में व्यवधान पैदा न करें।

श्री वैको : महोदय, लोग हमारे कार्यक्रम से असंतुष्ट हो गये और यही कारण है कि सोमनाथ से सेल्वारासु तक लोग संवेदनशील हैं। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वे कार्यक्रम (एजेंडे) से बुरी तरह हताश हो गये हैं। उस कार्यक्रम की प्रशंसा तथा तारीफ करने की बजाय वे यह शिकायत कर रहे हैं कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने धारा 370 के विषय में कुछ क्यों नहीं कहा है तथा समान सिविल संहिता आदि के विषय में कोई उल्लेख क्यों नहीं किया है। इसी बात को लेकर उनकी निराशा है।

महोदय, माननीय श्री बरनाला जी पंजाब राज्य में व्याप्त रहे कुछ वर्ष पूर्वक राजनीतिक माहौल के सम्बन्ध में बोले। क्या आप पंजाब राज्य के 15 वर्ष पूर्व के उन भयानक दिनों को भुला सकते हैं। हमें वास्तविकता को स्वीकार करना होगा। हिन्दू और सिख एक दूसरे से लड़ रहे थे। वहां अति दुःखद घटनाएं हुई। उन दिनों की रिपोर्टों को यादकर हम कांप सकते हैं। उस समय भय और आशंका से हिन्दुओं को शरणार्थियों की तरह राज्य से भागना पड़ा और कहीं अन्यत्र रहना पड़ा। हम बहुत ज्यादा चिन्तत थे। देश भर के लोग पंजाब के लोगों की नियति को लेकर बड़े क्षुब्ध और चिंतित थे। पंजाब की नदियों में रक्त बह रहा था। प्रतिदिन अधिसंख्य लोग मर रहे थे। कंधे से कंधा मिलाकर रह रहे हिन्दू और सिख अलग-अलग दिशाओं में जा रहे थे पूर्व सरकार ने उनको और दूर कर दिया। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान जो हिन्दू और सिख कंधे से कंधा मिलाकर विदेशी दुश्मनों तथा आक्रमणकारियों से लड़ रहे थे वे उसी धरती पर एक दूसरे से अलग हो गये। बहुत सी दुखःद घटनाएं घटीं। सर्वाधिक थी श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या तथा दिल्ली की गलियों में मासूम सिखों की नृशंस हत्या। उस समय एक वक्तव्य दिया गया था कि जब कोई बड़ा वृक्ष गिरता है तो जमीन हिल उठती है ऐसा बिना सोचे समझे वक्तव्य भी दिया गया था।

अब कड़वाहट, रक्तपात और नरसंहार के दिन बीत चुके हैं आज अकाली दल और भारतीय जनता पार्टी का पंजाब में गठबंधन हो गया है। जब वे एक हो गये हैं और राज्य में सरकार बना ली तो यह सोचा गया कि क्यों न केन्द्र में सरकार बनाने का प्रयास किया जाए, तो अब लोग पूछते हैं 1992 में क्या हुआ था भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा का क्या हुआ। वे ही व्यक्ति इस वास्तविकता को भूल गये हैं कि 1977 में कल तक जो पार्टी जनसंघ के नाम से जानी जाती थी वह लोकनायक जय प्रकाश नारायण के सक्षम नेतृत्व में अन्य दलों के साथ एक हो गयी और एक ही पार्टी की छत्रछाया के नीचे आ गई आज जो भाजपा की आलोचना कर रहे हैं उन्होंने 1977 में उसी जनसंघ के साथ सरकार बनाई। मंत्री बनने के लिए हमारे मार्क्सवादी मित्र भी 1977 में तत्कालीन सरकार को समर्थन दे रहे थे। 1989 में उसी भारतीय जनता पार्टी से समर्थन लेकर बनी राष्ट्रीय मोर्चा सरकार में हमसे कुछेक मित्र भी मंत्रिमंडल स्तर के मंत्री अथवा राज्य मंत्री बने थे। जब ऐसा करना उनके लिए उपयोगी है तो उन्हें पार्टी की भर्त्सना नहीं करनी चाहिए। तब उन्हें यह पार्टी केसरिया रंग की अथवा धर्मनिरपेक्षता

[श्री वैको]

विरोधापार्टी जैसी नहीं लगती। बदलते समय के साथ जब भिन्न-भिन्न पार्टियों परस्पर सामजस्य करती हैं तो फिर रवैया बदलने में क्या हर्ज है.....*(व्यवधान)*

श्री पी.सी. चाक्को : और विचारधारा बदलने में भी।

श्री वैको : हां, गलत क्या हो इसमें कोई गलत बात नहीं है। समझौता और दृष्टिकोण परिवर्तन में अन्तर होता है। ये दो अलग बाते हैं.....*(व्यवधान)* आप कृपया मेरी बात सुनिये, मैं आपकी बात पर आ रहा हूं।

श्री पी.सी. चाक्को : अपना समय बर्बाद मत करिए।

श्री वैको : दुर्भाग्य से आप अध्यक्ष नहीं हैं आपने अध्यक्ष बनने का प्रयास किया था लेकिन उसमें सफल नहीं हो सके।

समय बदल गया है प्रागैतिहासिक काल में लोग कन्दराओं में रहा करते थे। इस आधुनिक कम्प्यूटर युग में वे विज्ञान और प्रौद्योगिकी की देन के कारण अंतरिक्ष में घूम सकते हैं। समय बदल रहा है।

इग्लैंड में क्या हुआ। लेबर पार्टी जो दशकों तक सत्ता से दूर रही जो सत्ता प्राप्त नहीं कर सकती, ने 1996 में 400 से अधिक सीटें जीती और मिस्टर टोनी ब्लेयर इंगलैंड के प्रधान मंत्री बने। इसका क्या राज है। इसका मूल कारण क्या है? इसके पीछे मूल कारण बताना मेरे लिए प्रसांगिक होगा। लेबर पार्टी की मूल अवधारणा अर्थात समाजवाद लेबर पार्टी के संविधान से निकाल दिया गया था। मिस्टर ब्लेयर लेबर पार्टी से समाजवाद की मूल अवधारणा के निकाल देने पर ही अपने सहयोगियों के साथ सरकार चला पाये थे।

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपनी बात समाप्त करें।

श्री वैको : महोदय, कृपया मुझे कुछ समय और दिया जाये।

अध्यक्ष महोदय : बोलने वाले बहुत से सदस्य हैं। अब आप अपनी बात समाप्त करें।

श्री वैको : श्री सीता राम केसरी की भूमिका के बारे में कहा है जिस तरीके से उन्होंने सरकारें गिराई उसके बारे में मैंने कुछ नहीं कहा है। जिस तरह से देवगौड़ा और गुजराल की सरकारें गिराई गई वह इस विश्वास मत के संदर्भ में एक अति महत्वपूर्ण बात है।

अध्यक्ष महोदय : आज दस सदस्यों को और बोलना है

श्री वैको : हमें बदलते हुए समय के अनुसार बदलना है। इसमें क्या बुराई है। हम देश के कल्याण और बेहतरी के लिए एक हुए हैं।

सरकार के स्थायित्व के मुद्दे पर मैं विपक्ष में बैठे अपने मित्रों का ध्यान 1997 की कुछ घटनाओं की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं। 31 मार्च, 1997 को भारत के तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष श्री सीताराम केसरी भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री देवगौड़ा से मिलने के बजाय सीधे राष्ट्रपति भवन गये और सरकार से अपनी पार्टी का समर्थन वापस लेने सम्बन्धी एक पत्र प्रस्तुत किया। उस पत्र में श्री सीताराम केसरी ने समर्थन वापस लेने के कारण स्पष्ट रूप से बताया। पत्र के मूलपाठ में कहा गया है:

> "उत्तर प्रदेश राज्य में कानून और व्यवस्था की स्थिति पूरी तरह से लड़खड़ा गई है जहां कि प्रशासन के लिए केन्द्र सरकार सीधे जिम्मेवार है। केन्द्रीय गृह मंत्री यह कहने के लिए बाध्य हो गये कि वहां की स्थिति अराजकता, अव्यवस्था तथा विनाश की ओर जा रही है। संवेदनशील रक्षा मामले और देश की सुरक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं पर समुचित ध्यान नहीं दिया गया है। सिविल सेवाओं तथा सरकार के विभिन्न अंगों में इसका पर्णतः हतोत्साही प्रभाव है। समन्वय निर्देश देने और इच्छा शक्ति की कमी निष्क्रियता की स्थिति पैदा हो रही है।"

तथापि संयुक्त मोर्चा सरकार पर नौ आरोप लगाने तथा समर्थन वापिस लेने के कुछेक दिनों बाद उसी सरकार को उन्हीं मंत्रियों के साथ कांग्रेस ने पुनः समर्थन दिया। केवल देवगौड़ा जी को कीमत चुकानी पड़ी अन्य मंत्री जिसके विरुद्ध आरोप थे वे उन्हीं मंत्रालयों के मंत्री बने रहे।

श्री एस. सी. जोस : महोदय, वह क्या कहना चाहते हैं?

श्री वैको : मैं यह स्पष्ट कर रहा हूं कि किस प्रकार कांग्रेस पार्टी ने सरकारें गिरा दी थीं।

श्री सोमनाथ चटर्जी तो ऐसे बोल रहे थे मानों यहां कोई तमाशा हो रहा हो। युक्त मोर्चे की सरकार के बारे में कहे गये शब्द मुझे ज्यों के त्यों याद हैं। संयुक्त मोर्चे के घटक दल के नेता ने सरकार के कार्य को महज तमाशा बताया है। उन्होंने यह भी कहा कि सर्कस की भांति संयुक्त मोर्चे की सरकार में भी मसखरी की जा रही है और संयुक्त मोर्चे के कुछ घटक दल अपनी आत्मघाती अभिलाषा पूरी कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वे वहां हरकिरी करने अथवा सती होने के लिए नहीं थे। यह वक्तव्य और कोई नहीं, बल्कि तमिलनाडु के वर्तमान मुख्यमंत्री और डी.एम.के. अध्यक्ष डा. करुणानिधि ने दिया था।

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री वैको : गत वर्ष 14 जुलाई को उन्होंने कहा था कि वे समर्थन वापस ले रहे हैं और संयुक्त मोर्चे से निकल रहे हैं। उन्होंने संयुक्त मोर्चे की सरकार के कार्य को सर्कस में की जाने वाली मसखरी बताया। तो यह रहा सरकार का काम।

महोदय, आज हम लोग देश की अनेक बुराइयों और समस्याओं को सुलझाने के लिए कृतसंकल्प हैं। लोकतंत्र की शक्ति उन लोगों में निहित होती है जो किसी सरकार को बदल सकते हैं। लोकतंत्र की शक्ति इस अवधारणा में है कि आप निर्भय होकर सरकार की आलोचना कर सकते हैं।

अतः कोई भी आलोचना करने के लिए आपका स्वागत है।

अध्यक्ष महोदय : कृपया समाप्त कीजिए यहां अनेक माननीय सदस्य बोलने वाले हैं।

श्री वैको : महोदय, मैं दो मिनट में ही अपनी बात समाप्त करूंगा।

मैं सभा के माननीय सदस्यों से विश्वास मत प्रस्ताव का समर्थन करने की अपील करता हूं। वे इसका समर्थन इसलिए नहीं करें कि अन्यथा हम विश्वास मत हार जाएंगे बल्कि इसलिए कि देश जनता की इच्छा और इसके निर्णय पर नजर रखे हुए हैं और इसका सम्मान किया जाना चाहिए। अतः मैं मरूमालार्ची द्रविड़ मुनेत्र कजगम और अपनी तरफ से दिल से मेरी यह कामना है कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी अपने पांच वर्ष का शासनकाल पूरा करें और मैं यह भी कामना करता हूं कि वे इस देश को तीसरे सहस्राब्दी की ओर ले जाएं, अनेक राष्ट्रों के बीच इसे शक्तिशाली राष्ट्र बनायें तथा देश के लोकतांत्रिक कार्यों के लिए इसका और मान बढ़ायें।

इन्हीं शब्दों के साथ, मैं समाप्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : एक छोटी सी घोषणा है। महासचिव राज्य सभा से प्राप्त संदेश की सूचना देंगे।

अपराह्न 6.46 बजे

[अनुवाद]

राज्य सभा से संदेश

महासचिव : महोदय, मुझे राज्य सभा के महासचिव से प्राप्त निम्न संदेशों की सूचना सभा को देनी है:

(एक) राज्य सभा के प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियमों के नियम 186 के उप-नियम (6) के उपबन्धों के अनुसरण में, मुझे विनियोग (रेल) लेखानुदान विधेयक, 1998 को, जिसे लोक सभा द्वारा अपनी 26 मार्च, 1998 की बैठक में पारित किया गया था और राज्य सभा को उसकी सिफारिशों के लिए भेजा गया था, वापस लौटाने और यह बताने का निदेश हुआ कि इस सभा को इस विधेयक के संबंध में कोई सिफारिशें नहीं करनी हैं।

(दो) राज्य सभा के प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियमों के नियम 186 के उपनियम (6) के उपबन्धों के अनुसरण में, मुझे विनियोग (रेल) विधेयक, 1998 को, जिसे लोक सभा द्वारा अपनी 26 मार्च, 1998 की बैठक में पारित किया गया और राज्य सभा को उसकी सिफारिशों के लिए भेजा गया था, वापस लौटाने और यह बताने का निवेश हुआ है कि इस सभा को इस विधेयक के संबंध में कोई सिफारिशें नहीं करनी हैं।

(तीन) राज्य सभा के प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियमों के नियम 186 के उपनियम (6) के उपबन्धों के अनुसरण में, मुझे विनियोग लेखानुदान विधेयक, 1998 को, जिसे लोक सभा द्वारा अपनी 26 मार्च, 1998 की बैठक में पारित किया गया था और राज्य को सभा को उसकी सिफारिशों के लिए भेजा गया था, वापस लौटाने और यह बताने का निदेश हुआ कि इस सभा को इस विधेयक के संबंध में कोई सिफारिशें नहीं करनी हैं।

(चार) राज्य सभा के प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियमों के नियम 186 के उपनियम (6) के उपबन्धों के अनुसरण में, मुझे विनियोग विधेयक, 1998 को, जिसे लोक सभा द्वारा अपनी 26 मार्च, 1998 की बैठक में पारित किया गया था और राज्य सभा को उसकी सिफारिशों के लिए भेजा गया था, वापस लौटाने और यह बताने का निदेश हुआ है कि इस सभा को इस विधेयक के संबंध में कोई सिफारिशें नहीं करनी हैं।

(पांच) राज्य सभा के प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियमों के नियम 186 के उपनियम (6) के उपबन्धों के अनुसरण में, मुझे वित्त विधेयक, 1998 को, जिसे लोक सभा द्वारा अपनी 26 मार्च, 1998 की बैठक में पारित किया गया था और राज्य सभा को उसकी सिफारिशों के लिए भेजा गया था, वापस लौटाने और यह बताने का निदेश हुआ है कि इस सभा को इस विधेयक के संबंध में कोई सिफारिशें नहीं करनी हैं।

(छः) राज्य सभा के प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियमों के नियम 186 के उप-नियम (6) के उपबन्धों के अनुसरण में, मुझे भारत की आकस्मिकता निधि (संशोधन) विधेयक, 1998 को, जिसे लोक सभा द्वारा अपनी 26 मार्च, 1998 की बैठक में पारित किया गया था और राज्य सभा को उसकी सिफारिशों के लिए भेजा गया था, वापस लौटाने और यह बताने का निदेश हुआ है कि इस सभा को इस विधेयक के संबंध में कोई सिफारिशें नहीं करनी हैं।

अपराह्न 6.47 बजे

[अनुवाद]

मंत्रि-परिषद में विश्वास का प्रस्ताव – *जारी*

श्री पी. चिदम्बरम (शिवगंगा) : अध्यक्ष महोदय, अपने दल की तरफ से मैं माननीय प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा लाये गये प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

महोदय, हमारे यहां संसदीय लोकतंत्र है। विपक्ष का कर्तव्य विरोध करना तथा आवश्यक हो तो सरकार को गिराना होता है। इसका यह मतलब नहीं है कि जब तक सरकार रहेगी, विपक्ष

[श्री पी. चिदम्बरम]

तर्कसंगत अथवा रचनात्मक अथवा सहयोगात्मक तरीके से कार्य नहीं करेगा। परन्तु, संसदीय लोकतंत्र की यह प्रणाली तभी कार्य कर सकेगी, जब विपक्ष हो-और जो सरकार के कार्य पर नजर रखे, वह आवश्यकता पड़ने पर वैकल्पिक सरकार बनाने का दायित्व निभाने के लिए तैयार और इच्छुक हो और जो वर्तमान सरकार को अपदस्थ करने में नहीं हिचकिचाएं। जब श्री वाजपेयी विपक्ष के नेता थे तो उन्होंने यही भूमिका निभायी और मैं चाहता हूं कि जब तक श्री शरद पवार विपक्ष के नेता हैं, वे यह भूमिका निभाते रहें।

आज हम नई लोक सभा का कार्य शुरू कर रहे हैं। कल हम लोग मतदान करेंगे। श्री वाजपेयी विश्वास मत प्राप्त कर सकते हैं, हालांकि वे 1996 में विश्वास मत में हार गये थे। पर मैं सरकार से यह कहना चाहता हूं कि यह एकमात्र परीक्षा नहीं है। यह अंतिम परीक्षा भी नहीं है। हर रोज सदन में इस सरकार की परीक्षा ली जायेगी। अतः हम सब के लिए बेहतर यह है कि हम इस जनादेश के स्वरूप, इस सभा के स्वरूप को पहचानें।

महोदय, इस सभा में अनेक ऐसे माननीय सदस्य हैं जिन्होंने मुझसे अधिक समय तक यहां सेवा प्रदान की है। मैं यहां लगभग 13 वर्षों से हूं। गत तेरह वर्षों में कभी भी सदन बिल्कुल बराबर बराबर भाग में नहीं बंटा था।

वर्ष 1984 में सरकार को भारी बहुमत हासिल था। वर्ष 1989 की तरह भारी बहुमत से सरकार हमेशा बनती रही है। ऐसी भी सरकार रही जिसे कम अन्तर से बहुमत प्राप्त था परन्तु अन्य अनेक दलों से इसे बहुमत प्राप्त था। पिछले तेरह वर्षों में ऐसी कोई भी लोक सभा नहीं बनीं जिसमें सत्ता पक्ष और विपक्ष का स्पष्ट विभाजन हुआ हो। इसीलिए मेरा इस सभा के सभी प्रतिष्ठित सदस्यों से बहुत ही विनम्रतापूर्वक निवेदन है कि हम इस जनादेश के स्वरूप को समझें।

महोदय, शासन संचालन के राष्ट्रीय एजेन्डे की शुरूआत इस प्रकार होती है। इसमें कहा गया है कि "मतदाताओं ने अपना फैसला दिया है कि भाजपा और उसके सहयोगी दलों ने एकजुट होकर चुनाव जीता है अतः शासन करने का जनादेश हमें मिला है।" महोदय, मैं इस पर प्रश्नचिन्ह लगाता हूं। इस देश में लोगों ने किसी भी पार्टी को जनादेश नहीं दिया है। सबसे बड़ी पार्टी भाजपा को इस सभा की संख्या के एक तिहाई से भी कम सीटें मिली हैं। लोग किसी भी पार्टी को जनादेश देना नहीं चाहते हैं। सबसे बड़ी पार्टी को भी उन्होंने एक तिहाई से कम सीटें ही दी हैं जबकि यह पार्टी स्थिर सरकार और कुशल नेतृत्व के नारे को लेकर लोगों के बीच गई थी।

मैंने भाजपा के घोषणापत्र को पढ़ा है। इसमें किसी क्षेत्रीय दलों के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा गया है। असल में यदि मेरा यह कहना कि क्षेत्रीय दलों के बारे में घोषणा पत्र में कोई उल्लेख नहीं है, कुछ गलत है तो उसे आप सही करें। किसी गठबंधन के बारे में कोई उल्लेखनीय नहीं है। किसी गठजोड़ का कोई उल्लेख नहीं है। भाजपा इस आशा के साथ लोगों के बीच गई थी कि उसे बहुमत मिल जायेगा। परन्तु इस सभा में वह एक तिहाई से भी कम सीटों के साथ वापस आई। यहां तक कि "नेशनल एजेन्डा फॉर गवर्नेन्स" में भी क्षेत्रीय दलों का कोई जिक्र नहीं किया गया है। इसमें राष्ट्रीय दलों और क्षेत्रीय दलों के बीच कोई गठबन्धन करने से संबंधित कोई उल्लेख नहीं है। इसमें "सहकारी संघवाद" शब्दों का कोई उल्लेख नहीं किया गया है जिन्हें हमने अपने शासन के दौरान बनाया था। इसलिए मैं समझता हूं कि हम एक बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं। हम इस जनादेश को पहचान नहीं रहे हैं। यह जनादेश भी 1996 के जनादेश की तरह अस्पष्ट जनादेश है।

महोदय, इस देश में ऐसे लोग हैं जो हड्डियों के टूट जाने पर उन्हें देशी तरीके से बिठाते हैं। आप आंध्र प्रदेश राज्य के हैं। तिरूपति के निकट चुत्तूर देशी ढंग से हड्डियां बिठाने वालों के लिए प्रसिद्ध है। वे हड्डियां कैसे बिठाते हैं? यदि आपकी कोई हड्डी टूट जाती है तो हड्डियां बिठाने वाले ये देशी लोग, हमेशा नहीं लेकिन कभीकभार एकाध हड्डियां और तोड़ देते हैं और उसके बाद उन्हें ठीक से बिठाने का प्रयास करते हैं।

श्री हरिन पाठक : आपने यह काम 1991 में किया था।

श्री पी. चिदम्बरम : मेरी चिन्ता यह है कि क्या माननीय श्री वाजपेयी हड्डी बिठाने वाले देसी लोगों की भूमिका अदा करने का प्रयास कर रहे हैं। मैं इस प्रश्न पर ज्यादा नहीं बोलना चाहता।

रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री राम नाईक) : यह प्लास्टिक सर्जरी है।

श्री पी. चिदम्बरम : दूरदर्शन और अन्य अनेक चैनलों का शुक्रिया जिनके कारण पिछले बीस दिनों में हमें प्रत्येक दल की अन्दरूनी बातों का पता चला है।

महोदय, परसों एक मर्यादित समाचार पत्र 'द हिन्दू' ने अपने प्रथम पृष्ठ के समाचार में भाजपा द्वारा की जा रही 'डील' (सौदेबाजी) का उल्लेख किया था। मैं स्वयं उस शब्द का प्रयोग नहीं कर रहा हूं। मेरा विश्वास है कि श्री वाजपेयी किसी तरह की सौदेबाजी (डील) नहीं करेंगे। लेकिन फिर "द हिन्दू" जैसा अखबार भाजपा की गत बीस दिनों की गतिविधियों का वर्णन सौदेबाजी (डील) के रूप में क्यों करता है? क्या गत बीस दिनों में इस देश के अनेक राज्यों में कोई सौदेबाजी (डील) हुई ही नहीं? क्या अभी हाल में हिमाचल प्रदेश में सौदेबाजी (डील) नहीं हुई है? स्थिर सरकार और सक्षम नेतृत्व का वायदा करने वाले श्री वाजपेयी से मैं कहता हूं कि वह अपने अन्तर्मन को टटोलें और हमें बताएं कि क्या सौदेबाजी (डील) हुई थी अथवा नहीं?

'डील' शब्द स्वयं में ही निंदात्मक नहीं है। 'डील' एक पारदर्शी व्यवस्था भी हो सकती है और एक साझा कार्यक्रम भी। 'डील' को एक शानदार गठजोड़ का रूप भी दिया जा सकता है जैसे कि जर्मनी में क्रिस्चियन डेमोक्रेट्स और सोसल डेमोक्रेट्स ने एक दूसरे के साथ मिलकर गठबंधन किया था। क्या पिछले बीस दिनों में इस देश

में बहुमत प्राप्त करने के लिए सौदेबाजी (डील) नहीं की गई? क्या भाजपा ने सबको यह संदेश नहीं भेजा कि जब तक उसे सत्ता में बने रहने का आश्वासन मिला रहेगा तब तक वह किसी को भी कीमत देने को तैयार हैं, वह किसी भी दुश्मन अथवा शत्रु से हाथ मिलाने को तैयार हैं वह कोई भी समझौता करने को तैयार हैं; वह विगत के सभी अध्यायों को भूलने के लिए तैयार है? इसीलिए मैं इस विश्वास प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

महोदय, 1995-96 में इसी सभा में दूर संचार मंत्रालय में हुए घोटाले को लेकर संसदीय कार्यवाही 13 दिनों तक ठप्प रही थी। महोदय, "तेरह" की संख्या जादुई संख्या बन गई है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी पिछली बार 13 दिनों के लिए प्रधान मंत्री थे। हमने शुरू में 13 पार्टियों को लेकर गठबंधन बनाया था। मुझे देखने को मिल रहा है कि राष्ट्रीय एजेन्डा में भी 13 पार्टियां सूचीबद्ध हैं .....*(व्यवधान)*

इस सदन में 13 दिनों तक बिल्कुल कामकाज नहीं हो पाया था। यह भी दोषदर्शिता की हद है कि जो व्यक्ति घोटाले में आरोपी था उसे, जब वह चुनाव लड़ा तो चुनाव चिन्ह टेलीफोन आवंटित किया गया। मैंने यही समझा कि वह दोषदर्शिता की हद है। लेकिन हमने तो बड़ी-बड़ी चढ़ाइयां चढ़ी हैं। उन्हें मंत्रालय में शामिल किया है, उनके लड़के को राज्य सभा की सीट देने का वायदा किया है, उनकी पार्टी के सभी सदस्यों को सरकार में शामिल कर मंत्रालय दिया है।

मैं जानता हूं कि हम राज्य सरकारों के बारे में बात नहीं कर सकते हैं। हम लोग भारत की संसद में बैठते हैं। यदि हम राज्यों के शासन के बारे में बात नहीं कर सकते हैं तो हम किसके बारे में बातें करें। भारत क्या है? भारत राज्यों से मिलकर बना है। संघ सरकार के पास कोई अलग भूक्षेत्र शासन करने के लिए नहीं है। हमें राज्यों के शासन के बारे में बात करनी होगी। उ.प्र. में शासन के बारे में हम क्या कहें चाहिए जिसके बारे में श्री मुलायम सिंह यादव पाणित्यपूर्ण ढंग से बोले हैं?

क्या प्रधानमंत्री को इस बात की खुशी है कि उनकी सरकार में 95 मंत्री हैं? जब कई वर्ष पूर्व बेचारे श्री अन्जैया ने आंध्र प्रदेश में 60 या 65 लोगों को मंत्रालय में शामिल किया था तो उसे 'एयरबस मंत्रिमंडल' कहा गया था। हम इनके मंत्रिमंडल को क्या कहें?.....*(व्यवधान)* प्रधान मंत्री महोदय, मैं जो बात कह रहा हूं वह यही है। क्या भाजपा वाकई अच्छे शासन के प्रति चिन्तित है? या फिर हमारा यह निष्कर्ष सही है? आपने 1996 में जो किया उसके लिए मैं आपका अभिवादन करता हूं लेकिन 1998 में अपनी पार्टी के कुछ अन्य लोगों द्वारा संभवतः आपके नाम पर जो कुछ किया जा रहा है उससे मुझे निराशा होती है। 1996 और 1998 के बीच अन्तर इतना स्पष्ट हो गया है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। क्या आज भाजपा एक ऐसी पार्टी हो गई है जो सत्ता में रहने के लिए कोई भी कीमत चुकाने को तैयार है? क्या आपने इस जनादेश को इसी रूप में समझा है? वर्ष 1998 के लोगों के जनादेश को इस प्रकार नहीं समझा जा सकता । लोगों ने यह जनादेश राष्ट्रीय दलों और क्षेत्रीय दलों को एक साथ मिलकर काम करने के लिए दिया है। यह जनादेश घोषणापत्रों और आलोचनाओं से ऊपर उठने तथा पृथक राजनीतिक धाराओं की सीमा से आगे जाने और यह कहने के लिए दिया गया है कि "इस देश के निर्माण के लिए आओ मिलकर काम करें।"

मैं श्री जार्ज फर्नान्डीज के भाषण से बहुत निराश हुआ हूं। क्या उन्होंने आज अपने भाषण से किसी एक भी मित्र का दिल जीता है? जिस लय में उन्होंने भाषण दिया है क्या उससे वे एक भी मित्र बना पाये हैं? इसके विपरीत श्री बरनाला का भाषण भिन्न था।

मैं समझता हूं कि इस जनादेश का गलत अर्थ लगाया जा रहा है। और यदि आप इस जनादेश का अर्थ केन्द्रीकरणवादी प्रणाली लगाते हैं तो मेरे ख्याल से भारतीय जनता पार्टी वह पार्टी है जिसके नेता जनादेश का यही अर्थ लगाते हुए राजनैतिक दलों का प्रयोग करें और जब जैसे चाहेंगे उन्हें तिरस्कृत कर देंगे, जैसा कि आपने आंध्र प्रदेश में श्रीमती लक्ष्मी पार्वती के साथ किया और जैसा कि आप शायद हरियाणा में श्री चौटाला अथवा बंसी लाल के साथ करेंगे। यदि क्षेत्रीय दलों का प्रयोग और तिरस्कार सत्ता में बने रहने भर के लिए किया जा रहा है तो मैं आपके द्वारा निकाले गए इस जनादेश के निष्कर्ष पर प्रश्नचिन्ह लगाता हूं और इसीलिए जब तक आप इस जनादेश का अर्थ इस रूप में लगाते हैं तब तक मुझे आपका विरोध करना पड़ेगा और मैं आपका विरोध करता हूं।

अपराह्न 7.00 बजे

महोदय, मैं अगला प्रश्न यह उठाना चाहता हूं कि हम उनका आकलन किस तरह से करें? हमसे वे किस चीज पर मतदान करने के लिए कहते हैं? स्पष्ट है कि वे हमसे अपने घोषणापत्र की शक्ति के आधार पर मतदान के लिए नहीं कह रहे हैं क्योंकि उन्होंने अपने घोषणापत्र से बहुत सी चीजें, कम से कम अस्थाई तौर पर ही निकाल दी है। मुझे नहीं पता कि उन्हें ये लोग दोबारा कब उछालेंगे। मुझे नहीं पता कि उन्हें इन मुद्दों को पुनरुज्जीवित करने का कब निर्देश दिया जाएगा।

मैं जानता हूं कि केवल कुछेक दिन पहले अभी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने बंगलौर में एक गुप्त बैठक की थी और ये वे बातें हैं जिन्हें अनेक समाचार पत्रों ने छापी थीं। मैं इन खबरों के डाइजेस्ट से कुछ पढ़ रहा हूं जिन्हें आपकी सरकार के सत्तारूढ़ होने के बाद प्रेस इन्फार्मेशन ब्यूरो ने छापा था :

> "राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने जोर देकर कहा है कि वह भाजपा के नेतृत्व में बनी गठबंधन सरकार के कार्यकलाप में एक प्रभावी भूमिका निभाएगा जबकि काशी, मथुरा और अयोध्या के मुद्दों पर उसके हाथ बंध गए हैं।"

महोदय, मैं उद्धृत करता हूं: "राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के महासचिव श्री एच.वी. शेषाद्री ने कहा है कि उचित समय पर तीनों मुद्दों को संसद के अधिनियम द्वारा हल कर लिया जाएगा।"

[श्री पी. चिदम्बरम]

यह किसका एजेन्डा है? क्या यह निहित एजेन्डा है?

सरसंघ चालक राजेन्द्र सिंह ने कल कहा कि मैं समझता हूं कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की इच्छा यह थी कि भाजपा अपने दम पर सरकार बनाती। ऐसी सरकार अपने अनेक मुद्दों को ठंडे बस्ते में नहीं डालती जैसा कि इसने अब किया है। हम समाचार पत्रों के शुक्रगुजार हैं।

क्या इस एजेन्डा में इन सभी बातों को प्रकट नहीं किया गया है? इसी सम्मेलन में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने कहा था और मैं उद्धृत करता हूं कि "भारत में प्रत्यक्ष पूंजी निवेश की अनुमति नहीं दी जाएगी तथा विदेशी संस्थागत पूंजी निवेशकों को यहां से वापिस भेज दिया जाएगा।" क्या यह छिपा हुआ एजेन्डा है? यह एजेन्डा क्या है? कार्यक्रम क्या है? वह कौन सी बात है जिसके आधार पर उन्होंने हमसे समर्थन मांगा है? यह बात उनके घोषणा पत्र में नहीं है। लेकिन मुझे संदेह है कि कोई ऐसा एजेन्डा भी है जिसके बारे में बताया नहीं गया है। आपका राष्ट्रीय एजेन्डा है। राष्ट्रपति का अभिभाषण हुआ है। राष्ट्रीय एजेंडा प्रस्तुत करने के बाद राष्ट्रपति का अभिभाषण तैयार करने के लिए पर्याप्त समय था। दुर्भाग्यवश अनेक समाचार पत्रों में लिखा है कि राष्ट्रपति का यह अभिभाषण राष्ट्रीय एजेन्डे का पुनः प्रकाशन मात्र है। यह राष्ट्रीय एजेन्डे की हुबहू नकल है। वे हमें क्या बताना चाहते हैं। उनके राष्ट्रीय एजेन्डे में कहा गया है कि बड़े उद्योगों में प्रत्यक्ष विदेशी पूंजी निवेश का स्वागत किया जाएगा और गैर प्राथमिकता क्षेत्र के उद्यमों में इसकी अनुमति नहीं दी जाएगी। राष्ट्रपति के अभिभाषण में से उस वाक्य के अंतिम भाग को छोड़ दिया गया और वित्त मंत्री ने भी अंतरिम बजट पेश करते समय दिए गए अपने भाषण में उस भाग को शामिल नहीं किया। क्या यह लोप महत्वपूर्ण है अथवा अनजाने में हो गया है? यह मुझे पता नहीं है।

हमसे समर्थन मांगते समय उन्हें अपने कार्यक्रम को स्पष्ट करना चाहिए। इसमें अन्तर है। मैं यहां पर कोई बहस करने का मुद्दा नहीं उठा रहा हूं। राष्ट्रीय एजेन्डे और सामान्य न्यूनतम कार्यक्रम के बीच अन्तर है जैसा कि प्रत्येक समाचार पत्र ने टिप्पणी की है। मैं बहुत ज्यादा न करहते हुए "इंडिया टुडे" का उदाहरण देना चाहूंगा जिसने चुनाव अभियान के दौरान इनका बढ़चढ़ कर समर्थन दिया था और उसे समर्थन का पूर्ण अधिकार भी है। वे उनका समर्थन कर सकते हैं वे अपने सम्पादकीय के माध्यम से उनका समर्थन कर सकते हैं और उन्हें यह कहने का भी अधिकार है कि केवल उनका दल ही संभवतः देश को स्थायी सरकार दे सकता है। अब इस पत्रिका के सम्पादकीय में यह लिखा गया है कि इस राष्ट्रीय एजेन्डे में कुछ नहीं है यह शब्दों का पुलिन्दा मात्र है जिसमें कार्यक्रम नाम की कोई चीज नहीं है।

इसकी तुलना सामान्य न्यूनतम कार्यक्रम से करें। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि सामान्य न्यूनतम कार्यक्रम की सभी बातें सही हैं। मैं यह भी नहीं कह रहा हूं कि मात्र वही सब कुछ है और क्या कार्यक्रम होना चाहिए। लेकिन जो एजेन्डा इन्होंने पेश किया है और जो कार्यक्रम हमने रखा था उनके बीच गुणात्मक रूप से बहुत अन्तर है।

यहां तक कि माननीय प्रधान मंत्री जी आप आज भी इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में अनिच्छुक नजर आ रहे हैं। राष्ट्रपति का अभिभाषण एक अवसर था। विधेयक प्रस्तुत करते समय वित्त मंत्री का भाषण एक अवसर था लेकिन प्रधान मंत्री ने ये दोनों ही अवसर गंवा दिए। मुझे सन्देह है कि वे किसी स्पष्ट कार्यक्रम को लाने में या तो असमर्थ हैं अथवा लाने के अनिच्छुक हैं।

मैं एक दो बातों का उल्लेख करना चाहता हूं। आलोचना नहीं कर रहा हूं। मैं तो केवल उन्हीं मुद्दों को उठाने की कोशिश कर रहा हूं जिन्हें उठाए जाने की जरूरत है।

इस देश में नदियों से संबंधित अनेक विवाद हैं। ऐसा ही एक विवाद कावेरी नदी से संबंधित है। इस मुद्दे के दो पहलू हैं और प्रत्येक संसद सदस्य चाहेगा कि वह अपने राज्य के बारे में बोले। इस विवाद को निपटाने के लिए एक अधिकरण बनाया गया है जिसने एक निर्णय दिया है और उसे अधिसूचित किया जाना है। कारण चाहे जो भी हो परन्तु मैं कांग्रेस सरकार की बात करना चाहूंगा, मैं संयुक्त मोर्चा को भी इसमें शामिल करूंगा, इसलिए मैं यहां कोई मुददा नहीं उठा रहा हूं और न ही मैं इसे राजनीतिक रंग देने का प्रयास कर रहा हूं बल्कि मात्र यह कह रहा हूं कि उस निर्णय को अधिसूचित नहीं किया गया है। यही मामले का निचोड़ है। स्थितियां परस्पर विरोधी हैं। आपका कार्यक्रम क्या है?
.....*(व्यवधान)*

श्री बैको : श्री चिदम्बरम क्या आप एक मिनट के लिए अपनी बात बीच में रोकेंगे?

श्री पी. चिदम्बरम : मैं एक मिनट में अपनी बात समाप्त करता हूं। मुझे अपनी यह बात पूरी कर लेने दीजिए। मैं इसमें कांग्रेस सरकार को और साथ ही संयुक्त मोर्चा सरकार को भी इसमें शामिल करता हूं क्योंकि कारण चाहे जो भी रहा हो परन्तु वे भी इसे अधिसूचित करने में असमर्थ रहे थे।

आपका कार्यक्रम क्या है? इस उदाहरण से एजेन्डा और कार्यक्रम के बीच अन्तर स्पष्ट हो जाता है। आप यह नहीं कह रहे हैं कि इस निर्णय को आज के कानून के अन्तर्गत अधिसूचित कर दिया जाएगा और न ही आप यह कह रहे हैं कि आकस्मिक घटनाओं के परिणामस्वरूप दिए गए इस निर्णय को अधिसूचित नहीं किया जा सकता है। आप केवल यह कह रहे हैं कि विवादों के निपटाने के लिए कोई पद्धति खोजने हेतु राष्ट्रीय जल नीति बनाई जाएगी। परन्तु यह कोई कार्यक्रम नहीं है। इससे कोई भी संतुष्ट नहीं हो पायेगा और नहीं इस संबंध में कोई प्रगति हो सकेगी तथा यह मुद्दा लंबित हो जायेगा। आप इस संबंध में कोई कार्यक्रम बना सकते थे लेकिन आप कोई कार्यक्रम नहीं बना रहे हैं। मैं अनेकों उदाहरण दे सकता हूं पर मैं ऐसा नहीं करूंगा क्योंकि समय का अभाव है। बिना कोई कार्यक्रम सामने लाए आप हमसे समर्थन मांग रहे हैं।

यह सच है कि पिछले कुछ दिनों के दौरान अनेकों सम्पादकीय प्रकाशित हुए हैं। परन्तु मैं यह पूछना चाहता हूं कि इस दल का कार्यक्रम क्या है? प्रधान मंत्री का क्या कार्यक्रम है? इस गठबंधन का क्या कार्यक्रम है? जब आप हमसे बिना किसी कार्यक्रम के समर्थन मांग रहे हैं तो इसका यह अर्थ हुआ कि कोई एजेन्डा तो है परन्तु वह छिपा हुआ है, प्रत्यक्ष नहीं है और समय आने पर आज के अपने मित्रों में से कुछ को आप बाहर कर दोगे और जो कुछ नए मित्र जो अभी सामने नहीं आ रहे हैं उन्हें अपना मित्र बना लेंगे और तब अपना असली एजेन्डा सामने लाएंगे परन्तु हम लोग उस समय आपका समर्थन नहीं कर सकते जब तक के आप एजेन्डा हमें नहीं दिखाओगे। हम आपकी सरकार का विरोध करेंगे क्योंकि इसका कोई एजेन्डा अथवा कार्यक्रम नहीं है।

श्री बैको : क्या मैं अपने माननीय मित्र श्री चिदम्बरम से यह पूछ सकता हूं कि उन्होंने निर्णय के कार्यान्वयन के लिए क्या कदम उठाए थे? वह भी संयुक्त मोर्चा सरकार के घटक थे, मात्र बातायें आयोजित कर निर्णय को लागू करने के लिए क्या कदम उठाए जा रहे थे और जब तमिलों के साथ विश्वासघात किया जा रहा था तब उस समय उन्होंने क्या भूमिका निभाई थी?

श्री पी. चिदम्बरम : मेरे विद्वान मित्र को इस बात का पता होना चाहिए कि मैंने केवल एक बार नहीं बल्कि दो बार यह कहा था कि दोनों ही सरकारें इस निर्णय को अधिसूचित नहीं कर सकी थीं। मैं समझता था कि प्रधानमंत्री महोदय और गृहमंत्री जी इस मुद्दे को समझेंगे और मुझे पक्का विश्वास है कि समय आने पर वे इसे समझ जाएंगे.....*(व्यवधान)*

अन्त में मैं आपकी बात का विरोध करता हूं क्योंकि आपने अपनी बात की शुरूआत ही गलत ढंग से की थी। पिछले कुछ दिनों के दौरान अनेक वक्तव्य दिए गए हैं जिनसे भारत की जनता के विश्वास को ठेस पहुंची है.....*(व्यवधान)* मैं उतना ही समय लूंगा जितना कि माननीय अध्यक्ष महोदय मुझे अनुमति देंगे और मैं अपने पूर्व वक्ता से अधिक समय नहीं लूंगा।

पिछले पन्द्रह दिनों से हमने टेलीविजन पर अनेक बातें सुनी हैं। अनेक लोगों ने अनेक प्रकार की बातें कहीं हैं सबसे अधिक सोचने की बात यह थी कि सरकार बनाने में बहुत लम्बा समय लग रहा है और टेलीविजन चैनलों की संख्या अधिक थी।

हमने कई असाधारण वक्तव्य सुने। उनकी सरकार के एक मंत्री का कहना था कि थाइलैण्ड में देह व्यापार के अलावा कोई व्यापार ही नहीं रह गया है। विदेश मंत्री के रूप में जब श्री वाजपेयी दक्षिण पूर्व के एशियाई देशों की यात्रा पर जाएंगे तब उन्हें इस प्रश्न का उत्तर देना होगा। मंत्रियों का कहना है कि प्रत्यक्ष विदेशी पूंजी निवेश के लिए भारत के द्वार बंद हैं और वर्ष 1990-91 की तरह आज भी एक डालर की कीमत 17 रुपए होनी चाहिए और आज उनका यह भी कहना है कि विदेशी संस्थागत पूंजी निवेश को बंद करने के लिए एक समय सीमा निर्धारित की जानी चाहिए। मैं यह भी मानता हूं कि अन्य लोगों ने इससे अलग बात कही है। उनके सहयोगी दलों में अनिश्चितता की स्थिति है। यदि किसी ने भी कोई अलग बात नहीं कही होती तो कम से कम कोई एक नीति तो सामने आती। यदि आज की तारीख में कोई वर्तमान मंत्री यह कहता है कि एक डालर सत्रह रुपए के बराबर होना चाहिए और कोई भी सदस्य उनकी बात में सुधार नहीं करता है तो वह नीति बन जाती है परन्तु जैसे ही आप उसमें सुधार की बात करते हैं तो अनिश्चितता की स्थिति बन जाती है।

आप विश्वास को ठेस पहुंचा रहे हैं। कृपया यह बात याद रखें कि देश की आर्थिक व्यवस्था कभी मजबूत होती है और कभी कमजोर भी होती है। मैं इस सभा में मंत्री पद पर भी रहा हूं और विपक्ष में भी रहा हूं। परन्तु मैंने भारत की शक्ति को कभी बढ़ा चढ़ा कर नहीं बताया और न ही भारत की कमजोरियों को कम करके आंका। वास्तव में सन् 1996-97 का साल एक अच्छा साल था और उसके बाद के दो वर्ष बाद भी अच्छे रहे। वृद्धि दर 7.5 प्रतिशत दर्ज की गई थी। परन्तु वर्ष 1997-98 अच्छा साबित नहीं हुआ और उस वर्ष वृद्धि दर में गिरावट आई। शायद वृद्धि दर लक्ष्य लगभग 5 से 6 प्रतिशत रहेगा। परन्तु प्रधान मंत्री महोदय आप जानते होंगे कि विश्व के सौ देशों के सौ प्रधान मंत्रियों ने एक स्वर से 5 से 6 प्रतिशत की वृद्धि दर प्राप्त करने का लक्ष्य रखा है। परन्तु भारत के लिए यह काफी नहीं है। भारत को सतप्रतिशत की वृद्धि दर की आवश्यकता है। मैं आपके उस वक्तव्य के लिए बधाई देता हूं जिसमें आपने यह कहा है कि भारत को सात से आठ प्रतिशत की वृद्धि दर की आवश्यकता है और उसे हम प्राप्त कर लेंगे। उच्च वृद्धि दर के आदर्श को स्वीकार करने के लिए मैं तहे दिल से आपको बधाई देता हूं लेकिन विश्वास को ठेस पहुंचा कर आप उस वृद्धि दर के लक्ष्य को नहीं पा सकते हैं। इस लोक सभा में आने वाली कोई भी सरकार और आज से शुरूआत करने वाली आपकी सरकार के लिए कुछ बातें लाभकारी हैं। उन लाभकारी बातों से कोई भी असहमत नहीं है। विकास की गति कम हो गई है। कोई मंदी नहीं है। यह कम होकर पांच से छः प्रतिशत तक रह गई है। औद्योगिक विकास की गति कम हो गई है।

विगत वर्ष के रिकार्ड कृषि उत्पादन को श्रेय जाता है। सांख्यिकीय दृष्टि से पिछले वर्ष कृषि की उपज में गिरावट का रुख नजर आता है। सेवाओं के क्षेत्र में तेजी जारी है। समस्याएं हैं। कृपया स्मरण करें वर्ष 1991 में डा. मनमोहन सिंह को विरासत में एक बिलियन डालर विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई था। एक जून 1996 को संयुक्त मोर्चा सरकार को विरासत में 17 बिलियन डालर विदेशी मुद्रा मिली थी और 1998 में वर्तमान सरकार के लिए हमने 24 बिलियन डालर विदेशी मुद्रा छोड़ी है। क्या यह फायदेमंद नहीं है? मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करता हूं कि वे विदेशी मुद्रा के बारे में जाने बिना विदेशी मुद्रा पर भारी वक्तव्य देने की कोशिश ना करें। वे इसे समय के साथ समझेंगे।

दूसरा मुद्दा मुद्रास्फीति का है। वर्ष 1991 में डा. मनमोहन सिंह को औसत 10 प्रतिशत मुद्रास्फीति विरासत में मिली थी, वर्ष 1996 में संयुक्त मोर्चा सरकार को विरासत में औसत 7.5 प्रतिशत मुद्रा स्फीति मिली था और वर्तमान सरकार के लिये मुद्रा स्फीति औसतन 5 प्रतिशत से ज्यादा नहीं है। क्या यह फायदेमंद नहीं है? भारत

[श्री पी. चिदम्बरम]

का ऋण शोधन अनुपात 35 प्रतिशत से घटकर 24 प्रतिशत रह गया है और सकल घरेलू उत्पाद की तुलना में भारत का ऋण अनुपात घटकर 20 प्रतिशत हो गया है जो कि विगत कई वर्षों में हासिल न्यूनतम अनुपात है। शीघ्र ही हम लोगों को मूल्यांकन सामान्य ऋणी देश के रूप में नहीं अपितु न्यून ऋणी देश के रूप में होगा। भारत का अल्पकालीन ऋण सात प्रतिशत कम है। क्या यह फायदेमंद नहीं है। विश्वास जमाने की बजाए विश्वास बढ़ाने की बजाए पिछले पन्द्रह दिनों में आपकी सरकार के मंत्रियों ने आपकी सरकार के प्रवक्ता ने भारत के प्रति विश्वास को निर्बल बनाया है। संस्थागत निवेश बजार का क्या होता है, उसे देखिए।

चुनावों के कारण, अत्यधिक राजनीतिक अस्थिरता के कारण नवम्बर, दिसम्बर तथा जनवरी में संस्थागत निवेश नकारात्मक था। फरवरी में 200 मिलियन डालर मूल्य के बराबर कुल संस्थागत निवेश हुआ था। मार्च में पहला सप्ताह सकारात्मक था दूसरा सप्ताह सामान्य था और तीसरे सप्ताह में यह नकारात्मक हो गया। .....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया समाप्त कीजिए।

.....*(व्यवधान)*

श्री पी. चिदम्बरम : कृपया उनके विश्वास को निर्बल मत कीजिए.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया समाप्त कीजिए।

श्री पी. चिदम्बरम : कृपया उनके विश्वास को कम मत कीजिए। राजनीतिक मामलों, आर्थिक मुद्दों और अन्तरराष्ट्रीय मुद्दों पर पिछले 15 दिनों में दिए गए वक्तव्यों ने इस देश में उनके विश्वास को झकझोर दिया है। उस कारण से हमें उनके विश्वास प्रस्ताव का विरोध करना है।

महोदय, मैं मानता हूं कि हम इतिहास के उस दौर में हैं जहां भारतीय लोग कई राजनैतिक प्रयोग कर रहे हैं। सारा राष्ट्र प्रयोगशाला की भांति प्रतीत होता है। हर बार एक प्रयोग किया जाता है फिर उसे छोड़ दिया जाता है। कुछ भी निश्चित नहीं है। विगत दो वर्षों से भारत वर्तमान राजनीतिक अस्थिरता के दौर से गुजर रहा है। अतएव, जो भी सरकार में है, जो भी सत्तासीन है जो भी विपक्ष में है, को अत्यधिक उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार करना होगा। मैं नहीं समझता कि आपके प्रति हमारा विरोध गैर जिम्मेवाराना है और न ही मैं यह समझता हूं कि इन परिस्थितियों में आपके द्वारा मांगा गया हमारा समर्थन अनुपयुक्त है। लेकिन हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि हम एक प्रयोग के दौर से गुजर रहे हैं। इस देश में भारी राजनीतिक उथल पुथल जारी है। मैं नहीं जानता कि इस मंथन का क्या परिणाम निकलेगा।

मैं आपका ध्यान हाल ही में समाचारपत्रों में छपे कुछ अत्यधिक विद्वत्पूर्ण लेखों की ओर दिलाना चाहता हूं- इसमें से एक उस्मानिया विश्व विद्यालय के प्रोफेसर कन्चा येल्लैया और दूसरा श्री पांड्यन का है। इस मंथन के परिणामस्वरूप खिलाड़ियों का एक समूह और पार्टियों का एक समूह उभर कर सामने आ रहा है जो इस देश में लोकतंत्रीकरण के विरुद्ध जा सकता है। मैं नहीं जानता कि इसमें भा.ज.पा. कहां खड़ी है किंतु मुझे संदेह है कि यह सकारात्मक प्रणाली की पक्षधर है जिसमें बहुमत का दमन होता है और उपेक्षा होती है। यह एक भारी खतरा होगा। मुझे अभी तक भरोसा नहीं है कि आप भारत के बहुमत को समझते हैं।

[हिन्दी]

श्री राम नगीना मिश्र (पडरौना) : आपने तो देश को विदेशियों के हाथ में बेच दिया.....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री पी. चिदम्बरम : मुझे भरोसा नहीं है कि आप उस भारत को समझते है जो आज है, भारत की जनता आज अनेक पार्टियों को सामने ला रही है क्योंकि वे किसी से भी सन्तुष्ट नहीं हैं। पिछली लोक सभा में 29 राजनैतिक पार्टियां थीं। अभी, 41 राजनैतिक पार्टियां हैं .....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री पी. चिदम्बरम, कृपया समाप्त कीजिए।

श्री पी. चिदम्बरम : मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है कि आपकी सरकार भारत में बहुमत को समझती है। अतएव, मुझे आपकी सरकार का विरोध करना है।

इन शब्दों के साथ मैं कहता हूं कि इस विश्वास प्रस्ताव को हराना चाहिए और मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

[हिन्दी]

सूचना और प्रसारण मंत्री (श्रीमती सुषमा स्वराज) : अध्यक्ष जी, आज सुबह से इस सदन में हमारी सरकार के विश्वास मत पर चर्चा चल रही है। विश्वास मत की चर्चा में विपक्ष के तेवर आक्रामक होना बहुत स्वाभाविक है किंतु इस बार की चर्चा में आक्रमण की बजाए सतर्क होने की बेचैनी ज्यादा दिखाई दे रही है। विपक्षी बैंचों से जो भाषण हुए हैं, उनमें से कुछ के स्वरों में सरकार न बना पाने की छटपटाहट थी तो कुछ की वाणी में सरकार चले जाने की हड़बड़ाहट थी। लेकिन मुझे खुशी है कि हमारी ओर से विश्वास मत रखते हुए प्रधान मंत्री जी ने आत्मविश्वास के साथ-साथ पूरे संयम और धीरज के साथ अपनी बात रखी। मुझे दुःख हुआ, चिदम्बरम जी, आपने जॉर्ज साहब के भाषण का उल्लेख तो किया, किन्तु जिन्होंने विश्वास मत रखा था, उनके भाषण की ओर आपका ध्यान नहीं गया। प्रधान मंत्री जी के भाषण में, चिदम्बरम जी, आज के वर्तमान राजनीतिक हालत की चिन्ता भी थी, भारत की वर्तमान दुर्दशा की वेदना भी थी और सर्वानुमति से इन चीजों का निदान करने के लिए साथ-साथ चलने की अपील भी थी। अटल जी ने नेतृत्व में जो सरकार देश में बनी है, वह केवल मतदाताओं के जनादेश को लेकर नहीं बनी है, वह देश और विदेश में रहने वाले आम भारतीयों की शुभेच्छा को लेकर भी बनी

है, तथा उनकी शुभ-कामनायें और दुआयें लेकर भी बनी है इसलिए मैं कहना चाहूंगी कि, यहां बैठे हुए कुछ लोगों को व्यक्तिगत रूप से यह सरकार पसन्द हो, या न पसंद हो, लेकिन लोकतन्त्र का तकाजा है कि हम इस जनादेश का आदर करें, इस जन-भावना का आदर करें।

मडोदय, अटल जी को पूरे देश में प्रसिद्धी प्राप्त है। उससे सदन में बैठा हुआ कोई भी नेता अपरिचित नहीं है। आज केवल लोग विश्वास मत के परिणाम की प्रतीक्षा नहीं कर रहे हैं, बल्कि यह विश्वास मत उन्हें मिले, इसकी दुआयें भी कर रहे हैं। आज शरद पवार जी ने अपने भाषण में कहा कि बी जे पी को केवल 36 फीसदी वोट मिला है और यह जनादेश सरकार बनाने का नहीं है। मैं शरद जी को याद दिलाना चाहती हूं, वे सदन में उपस्थित नहीं हैं, मैं आपके माध्यम से अपनी बात उन तक पहुंचाना चाहती हूं कि, यदि जनादेश का मतलब 51 फीसदी मत प्राप्त करके सरकार चलाना है, तो हिन्दुस्तान के लोगों ने कभी भी कांग्रेस को सरकार बनाने का अधिकार नहीं दिया था। 40 वर्षों तक 32 फीसदी मत प्राप्त करके आपने सरकार चलाई है और इस देश का 68 प्रतिशत मतदाता आपके खिलाफ रहा है लेकिन...

[अनुवाद]

प्रो. पी.जे. कुरियन (मवेलीकारा) : 1984 के चुनावों में काग्रेस पार्टी को 54 प्रतिशत वोट मिले थे। आप कृपया अपने रिकार्ड की जांच करें। कृपया सदन को गुमराह न करें।

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैंने इसलिए 45 में से 40 साल कहा है। कितने वर्ष 32 फीसदी मत प्राप्त करके सरकार चलाई है- यह बताइए ? क्या आपने 32 फीसदी मत प्राप्त करके इस देश में वर्षों तक सरकार नहीं चलाई ? इसीलिए मैं कहना चाहती हूं .....*(व्यवधान)* मैंने इसीलिए 45 में से 40 वर्ष कहा है। 1984 का चुनाव साधारण चुनाव नहीं था। मैंने यह पांच वर्ष निकालकर बात कही है। 32 फीसदी मतों पर आपने इस देश में सरकार चलाई है। इसलिए ऐसा भ्रामक प्रचार करके आप जनभावना के साथ खिलवाड़ न करें और जनादेश का निरादर न करें।

अध्यक्ष जी, आज सुबह से आरोपों की झड़ी लग रही है और तीन बातें कही जा रही हैं- उ.प्र. का उदाहरण दिया जा रहा है, सुखराम जी का नाम लिया जा रहा है और जयललिता जी का उल्लेख किया जा रहा है। जहां तक उ.प्र. का सवाल है, मैं पूछना चाहती हूं कि, सारी उम्र जिन चालों को चल कर आप सत्ता से चिपके रहे और हमारी एक बार की चाल से बौखला गए। जिन महानुभाव ने उ.प्र. के राजभवन से काम किया, कोई भी आदमी उसका जवाब शराफत से नहीं दे सकता था। जिस तरह की चालें, कुचालें वे यहां बैठ कर कर चल रहे थे। वे धांधली पर धांधली करते जायें और सामने खड़ा हुआ मार खाता रहे - यही नैतिकता है, यही आदर्श है, यही सिद्धान्त है ? .....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री अजीत जोगी (रायगढ़) : अध्यक्ष मडोदय, राज्यपाल के आचरण पर यहां चर्चा नहीं की जा सकती। वे एक जिम्मेदार मंत्री रही हैं। उन्हें जिम्मेदाराना व्यवहार करना चाहिए।

अध्यक्ष मडोदय : कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए।

.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष मडोदय : यह ठीक नहीं है। कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए।

[हिन्दी]

श्री मदन लाल खुराना : उन्होंने गवर्नर मडोदय का नाम नहीं लिया है।.....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री अजीत जोगी : अध्यक्ष मडोदय, मेरा व्यवस्था का एक प्रश्न है। राज्यपाल के आचरण पर इस सदन में चर्चा नहीं की जा सकती।

अध्यक्ष मडोदय : जब आपकी बारी आए तो आप इसका खण्डन कर सकते हैं।

[हिन्दी]

श्री विजय गोयल (चांदनी चौक) : अध्यक्ष जी, इसी सदन में रमेश भंडारी जी के .....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष मडोदय : कार्यवाही वृतान्त में कुछ भी शामिल नहीं किया जाएगा।

.....*(व्यवधान)**

अध्यक्ष मडोदय : कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए।

.....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्ष जी, जब यहां से मायावती जी स्पीकर के पूरे कंडक्ट की चर्चा करती हैं तब तो आप चुप रहते हैं। मैंने तो किसी का नाम नहीं लिया।

---

* कार्यवाही वृतांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह ठीक नहीं है।

श्री भुवनेश्वर कालिता (गुवाहाटी) : उसे कार्यवाही-वृतान्त से निकाल दिया गया है।.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यदि कोई बात आपत्तिजनक होगी तो मैं उसे कार्यवाही-वृतान्त से निकलवा दूंगा।

.....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्ष जी, जिस तरह से संस्कृति ने हमें आदर्शों के लिए मरना सिखाया है उसी संस्कृति के नीतिकारों ने हमें यह भी बताया है कि हर बार मर कर आदर्शों की रक्षा नहीं होती, बहुत बार दुष्टों को मार कर आदर्शों की रक्षा की जाती है। इसीलिए पहली बार "शठे शाठ्यम समाचरेत," हमने यू.पी. में इन लोगों को मात दी है। इसीलिए ये बौखला रहे हैं, बार-बार खिसिया रहे हैं और हर बार यू.पी. की बात करके हमारे ऊपर आरोपों की झड़ी लगा रहे हैं।.....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया कमेन्ट्री न करें। आपको भी अपनी बात कहने का अवसर मिलेगा।

.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह ठीक नहीं है।

.....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्ष जी, सुबह से बहुत बार ये सुखराम जी का नाम ले चुके हैं। शरद पवार जी यहां बैठे होते तो मैं उन्हें बताती कि सुख राज जी सुख तो आप ही को देकर गए हैं, यहां तो सूखा हुआ राम आया है जिससे देश को किसी तरह का कोई खतरा, कोई नुकसान होने वाला नहीं है। उनका सुख आपने बहुत वर्षों भोग लिया.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष जी, सुबह से बहुत बार इन्होंने जयललिता जी के संबंध में बात की और सोमनाथ जी ने तो अपने भाषण का एक-तिहाई जयललिता जी पर डिवोट कर दिया। सोमनाथ दा यहां बैठे होते तो मैं उनसे पूछती कि सेक्यूलरिज्म के नाम पर, जिस पार्टी के साथ वह सरकार बनाने की बात कर रहे थे, क्या उसी कांग्रेस के शरद पवार जी ने जयललिता जी से सहयोग करके सरकार बनाने की बात नहीं की थी? मैं चुनाव पूर्व गठबंधन की बात नहीं कर रही हूं। एक जरा सी नाराजगी की भनक मिलते ही झपट कर दांव मार लो, क्या इसके लिए शरद पवार जी ने जयललिता जी से गुपचुप संपर्क नहीं साधा था? बाकायदा टी.वी. पर ऐलान किया था कि हम जिन लोगों से संपर्क कर रहे हैं उसमें जयललिता जी भी शामिल हैं। आज वे यहां व्यंग कस कर कह रहे थे कि चिट्ठी आ रही है। मैं पूछना चाहती हूं कि क्या उसी चिट्ठी के लिए पलक पावड़े शरद पवार जी इंतजार नहीं कर रहे थे?... .....*(व्यवधान)* इसलिए मीडिया ने लिखा था।

एक चिट्ठी का दो जगह पर इंतजार हो रहा है, दो लोगों को इंतजार हो रहा है। लेकिन हमें मालूम था कि चिट्ठी हमको ही आएगी और आई भी। लेकिन बाद में, अंगूर खट्टे हैं यह सोचकर यदि शरद पवार आज खिसियाएं और यहां खड़े होकर व्यंग से यह बात कहें, तो यह बात उन्हें शोभा नहीं देती है।

अध्यक्ष महोदय, सोमनाथ जी ने आधा भाषण जयललिता जी पर और आधा भाषण हिंदुत्व पर दिया। मैं चाहती थी कि मेरे भाषण के समय सोमनाथ जी और शरद पवार जी यहां बैठे होते तो मुझे बोलने में जरा ज्यादा आनंद आता। सोमनाथ जी एडवोकेट हैं। वे उस सुप्रीम कोर्ट की जजमेंट का हवाला तो देते हैं जिसमें सेक्युलरिज्म को

[अनुवाद]

संविधान की मूलभूत विशेषता

[हिन्दी]

बताया गया है। लेकिन उसी सुप्रीम-कोर्ट ने जिस जजमेंट में हिंदुत्व की परिभाषा दी है शायद वह जजमेंट सोमनाथ जी की नजर से नहीं गुजरा.....*(व्यवधान)* शायद उन्होंने पढ़ने की जहमत नहीं उठाई।

अध्यक्ष जी, अगर सोमनाथ जी यहां होते तो मैं उनको पढ़कर सुनाती। लेकिन अब आपके माध्यम से इस सदन को सुनाना चाहती हूं। यह 1994 का जजमेंट है और यह जजमेंट रिव्यू नहीं हुआ है.....*(व्यवधान)* कौन पैटिशनर है, कौन जज है, इस बात का खुलासा देकर मैं बताना चाहती हूं। अध्यक्ष जी, एम. इस्माइल फारूखी एंड आदर्श बनाम यूनियन ऑफ इंडिया एंड अदर्स। साइटेशन लिख लें, सोमनाथ जी को बताने के लिए। यह 1994 (6) एस.पी.सी. पेज 36 पर है। यह भी बता दूं कि जजमेंट किनका है। जस्टिस भरूचा और जस्टिस अहमदी। जो बाद में हिन्दुस्तान के न्यायाधीश हुए। सुप्रीम कोर्ट और हिंदुस्तान के न्यायाधीश के सर्वोच्च पद पर बैठे। केवल दो पैराग्राफ पढ़कर बताती हूं।.... .....*(व्यवधान)*

एक माननीय सदस्य : आप वकील हैं।.....*(व्यवधान)*

श्रीमती सुषमा स्वराज : सोमनाथ जी भी वकील हैं, इसलिए वकील का जवाब तो वकील ही देगा। इसलिए मैं कहती हूं कि अदालत में यह ट्रेनिंग है कि अपने पक्ष का जजमेंट तो पढ़ो लेकिन विरोधी पक्ष का जजमेंट भी पढ़ो। पता नहीं इतने सीनियर एडवोकेट होकर भी वह इस जजमेंट को पढ़ना कैसे भूल गये?

अध्यक्ष जी, जस्टिस अहमदी और जस्टिस भरूचा ने जो अलग से जजमेंट लिखी है उसमें कहा है कि:

[अनुवाद]

"हिन्दुत्व एक सहिष्णुतापूर्ण धर्म है। इसी सहिष्णुता ने इस्लाम, ईसाई, पारसी, यहूदी, बौद्ध, जैन और सिख धर्मों को इस धरती पर आश्रय और सहारा दिया है"

[हिन्दी]

मैं जो कहना चाहती हूं उस पर आप गौर करें।

[अनुवाद]

"सामान्यतया हिन्दुत्व जीवन की एक प्रणाली अथवा एक मानसिक अवस्था है और मैं यह जोर देकर कहना चाहता हूं कि इसे हिन्दू धार्मिक कट्टरवाद या उसके समकक्ष कदापि न समझा जाए।"

[हिन्दी]

हिंदुत्व को रिलीजियस फंडामेंटलिज्म से इक्वेट मत कीजिए। हिंदुत्व एक जीवन जीने की पद्धति है और यह बात सुप्रीम कोर्ट ने कही है। अगर सुप्रीम कोर्ट की जजमेंट जिसमें सेक्युलरिज्म को बेसिक फीचर ऑफ द कांस्टीट्यूशन माना है, तो भारतीय जनता पार्टी ने अपने नेशनल एजेंडा पर गवर्नेंस में, और राष्ट्रपति के अभिभाषण में उस सेक्युलरिज्म के प्रति अपने कमिटमेंट में अन-इक्विवोकल टर्म्स में बताया है। लेकिन हिंदुत्व की जो परिभाषा सुप्रीम कोर्ट ने दी है, अच्छा हो अगर आप उसे भी अपने जहन में उतार लें, ताकि हमारे नेशनल एजेंडा पर, हमारे घोषणा पत्र का हिंदुत्व आपको कम्युनल न लगे। उसमें आपको साम्प्रदायिकता और फिरकापरस्ती की बू न आए। जहां तक आपके सेक्युलरिज्म की परिभाषा का सवाल है तो आपकी परिभाषा तो मौके के अनुसार बदलती रहती है। कभी आप जम्मू में हिंदू कार्ड बताकर वोट मांगते हैं, कभी आप दिल्ली में सिख विरोधी कार्ड चलाकर वोट मांगते हैं तो कभी आप केरल में मुस्लिम लीग के साथ सरकार चलाते हैं, कभी आप मिजोरम में रूल अकोर्डिंग बाईबल का वायदा करके वोट मांगते हैं। केवल आप ही नहीं संयुक्त मोर्चा के लोग भी सुबह और शाम अकाली-भाजपा गठबंधन को देश का सबसे बड़ा फिरकापरस्त गठबंधन कह करके गाली देते हैं। लेकिन जब उनका सेक्युलरिज्म उनके पूर्व प्रधान मंत्री को देश में एक भी सीट जीतने की क्षमता नहीं देता, तो उसी अकाली दल की बैशाखी पर चढ़कर उनके पूर्व प्रधान मंत्री लोक सभा में पहुंचते हैं। यह है आपका सैक्युलरिज्म। यहां बैठकर मुलायम सिंह यादव बहुत बातें कर रहे थे। मेरी दिक्कत यह है कि सब अपनी-अपनी बात बोलकर चले गये लेकिन जब जवाब सुनने की बारी आई तो कोई उपस्थित नहीं है। आप परोक्सी के जरिये उनको जवाब पहुंचा दीजिएगा। मुलायम सिंह यादव यहां बैठकर आरोप लगा रहे थे.....*(व्यवधान)*

श्री राम नाईक : वह घर पर बैठ कर सुन रहे हैं.....*(व्यवधान)*

श्री श्याम बिहारी मिश्र (बिल्हौर) : उन्होंने यहां बैठने का साहस नहीं किया, इसलिए चले गए.....*(व्यवधान)*

श्रीमती सुषमा स्वराज : मुलायम सिंह जी यहां बैठकर आरोप लगा रहे थे कि अटल जी को तो मंत्रिमंडल भी बनाने की स्वतंत्रता नहीं है। संघ की सलाह पर मंत्रिमंडल बनाया जा रहा है। अगर मैं मुलायम सिंह जी की बात को तर्क के लिए सच मान लूं तो संघ की सलाह पर देश की रक्षा का भार जार्ज फर्नान्डीज के कंधों पर डालने की सलाह दी जाती है तो हिन्दुस्तान को इस सरकार से किसी तरह का खतरा और भय नहीं होना चाहिए, लेकिन यहां तो आरोप लगाने के लिए आरोप लगाए जाते हैं। यहां आरोप लगाया जा रहा था कि बी.जे.पी. मेरे खिलाफ हमेशा अपराधियों को खड़ा करती है। क्या मैं उन लोगों का रिकॉर्ड रख लूं जिन को बी.जे.पी. ने मुलायम सिंह जी के खिलाफ खड़ा किया? एक बार श्री उपदेश चौहान खड़ा किया, जो उनकी पार्टी के एम.एल.ए. थे। दूसरी बार श्री डी.पी. यादव को खड़ा किया जो उनकी कैबिनेट के मिनिस्टर रह चुके हैं। तीसरी बार श्री अशोक यादव को खड़ा किया जो उन्हीं की पार्टी के सदस्य रह चुके थे। जब वे लोग उनकी पार्टी में होते हैं तो दूध के धुले होते हैं, तब वे सम्मानित विधायक, माननीय मंत्री होते हैं लेकिन जिस समय वे भारतीय जनता पार्टी में आ जाते हैं तो उनका घोर अपराधियों का चेहरा बन जाता है और क्रिमिनल हो जाते हैं।

रात्रि 1.36 बजे

[डा. लक्ष्मी नारायण पांडेय *पीठासीन हुए*]

श्री तारिक अनवर : इस तरह उधार लेकर कैसे काम चलेगा?

श्रीमती सुषमा स्वराज : तारीक अनवर जी, हम उधार लेकर काम नहीं चला रहे हैं। उधारी में तो कभी आप यहां आने वाले हैं। मैं उनसे कहना चाहती हूं कि वह तो बैंडिट क्वीन को चुनाव के मैदान में उतारते हैं। इधर तो प्रिंस और प्रिंसिज भी नहीं हैं, उनके यहां तो बैंडिट क्वीन चुनाव के मैदान में उतरती हैं। जिनके घर शीशे के होते हैं, उनको दूसरों पर पत्थर नहीं फैंकने चाहिए। इसलिए वह आरोप लगाने से पहले अपने गिरेबान में झांक कर देख लें। यह कह रहे थे कि हमने लक्ष्मी पार्वती से नाता तोड़ दिया और टी.डी.पी. से एलाइंस कर लिया। मायावती जी भारतीय जनता पार्टी को अविश्वसनीय बता रही थीं। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी को अविश्वसनीयता तो बता दिया लेकिन उ. प्र. के गैस्ट हाउस की घटना भूल गई। वे भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता थे, जिन्होंने मुलायम सिंह यादव के चंगुल से उनकी जान बचायी थी। वह मुलायम सिंह के वे अनर्गल प्रलाप भूल गईं जो उन्होंने उनके खिलाफ लगाए थे। मैं उनसे पूछना चाहती हूं कि 21 तारीख की रात को कल्याण सिंह का पलड़ा गिराने के लिए, और तख्ता पलटने के लिए जो गठबंधन हुआ था, वह कौन सी नैतिकता पर आधारित गठबंधन था, वह कौन से सिद्धान्त पर आधारित गठबंधन था, वह कौन से आदर्शों का परिचायक गठबंधन था? क्या वह घोर अवसरवादिता नहीं थी? क्या वह सत्ता प्राप्ति के लिए किया गया गठबंधन नहीं था? इसलिए मैं कहती हूं कि दूसरों पर आरोप लगाने

[श्रीमती सुषमा स्वराज]

से पहले जो कुकर्म स्वयं किए हैं, उनको देखना न भूलें। यहां के लोगों को सब कुछ याद रहता है और जिन्हें याद नहीं रहता है उन्हें याद दिलाया जाता है। कोई खड़ा होकर याद दिला देता है।

श्री जार्ज फर्नान्डीज ने कांग्रेस और यूनाईटिड फ्रंट के अन्तर्विरोधों का यहां काफी जिक्र किया। मैं उसे दोहराना नहीं चाहूंगी लेकिन उनका जरूर जिक्र करूंगी जो सोमनाथ दा यहां हमारी और हमारे एल्लाइऐंस के ऐटिट्यूट की बात कर रहे थे। वह बार-बार कर रहे थे कि हम एल्लाइऐंस पार्टनर्स से पूछना चाहते हैं।

[अनुवाद]

भाजपा की आर्थिक नीति और भाजपा के हिन्दुत्व के प्रति आपका क्या रवैया है?

[हिन्दी]

मैं उन्हीं की भाषा में उनसे पूछना चाहती हूं।

[अनुवाद]

गैट, विश्व व्यापार संगठन तथा पेटेंट कानून के प्रति आपका क्या दृष्टिकोण है?

[हिन्दी]

आपके मार्गदर्शक, स्वयं को कहने वाले राजनैतिक चाणक्य कामरेड सुरजीत जिस कांग्रेस के साथ मिलकर सरकार बनाने की बात कर रहे थे, उनका एटिट्यूड क्या आपके एटिट्यूड से मेल खाता है? इसलिए वे तमाम बातें जो अपने यहां घट रही हैं, उनको अनदेखी करते हुए वे जब दूसरों पर आरोप लगाते हैं तो उनका बाद में असर नहीं रहता। वह बात बेअसर हो जाती है। मैं कहना चाहती हूं कि यह तर्क-कुतर्क, कटाक्ष, प्रहार तो बहुत हो गये। इस वाक युद्ध से देश का कोई भला नहीं होने वाला। हम अच्छी बहस करके अच्छे डिबेटर तो कहला सकते हैं लेकिन देश को अच्छे एडमिनिस्ट्रेटर और अच्छे रूलर की जरूरत है, अच्छे डिबेटर की जरूरत नहीं है। इस देश के सामने बहुत समस्याएं मुंह बाये खड़ी हैं। अभी चिदम्बरम जी यहां नहीं हैं। वे कह रहे थे और मैं चाहती तो तुरन्त उनकी बात का जवाब देती। वे कह रहे थे कि हम क्यों आपका समर्थन करें? आपके नेशनल एजेण्डा में कोई प्रोग्राम नहीं है, आपके राष्ट्रपति अभिभाषण में कोई प्रोग्राम नहीं है। आरोप की ध्वनि में उन्होंने कहा कि आपके नेशनल एजेण्डा से ही राष्ट्रपति अभिभाषण बना है, बिल्कुल वर्ड फौर वर्ड लिया है। उपेन्द्र जी से मैं कहना चाहूंगी कि अगर नेशनल एजेण्डा फौर गवर्नेन्स से राष्ट्रपति अभिभाषण न बनाते तो हम पर अनकनसिस्टेन्सी का आरोप आप लगाते और अगर हमने नेशनल ऐजेण्डा से वर्ड फौर वर्ड राष्ट्रपति अभिभाषण बनाया है तो आप आरोप लगा रहे हैं कि सब कुछ नेशनल ऐजेण्डा से उठा लिया है।

सभापति महोदय, राष्ट्रपति का अभिभाषण किसी सरकार का नीतिगत दस्तावेज होता है और वह नीति हमने अपने नेशनल ऐजेण्डा फौर गवर्नेन्स से ली तो क्या हुआ? वह आरोप लगाते हैं कि हमारे पास कोई प्रोग्राम नहीं है। वह पूछते हैं कि हम किसलिए आपका समर्थन करें? मैं कहती हूं कि पैरा दर पैरा पढ़ते जाओ नेशनल ऐजेण्डा फौर गवर्नेन्स को, पैरा दर पैरा पढ़ते जाओ राष्ट्रपति अभिभाषण को, आपको प्रोग्राम के सिवाय उसमें कुछ नहीं दिखाई देगा। मैं पूछना चाहती हूं उधर बैठे हुए साथियों से कि किसी भी बालक को भूखा न सोने देने का संकल्प क्या प्रोग्राम नहीं है? बेघरों को 20 लाख घर वार्षिक बनाकर देने का संकल्प क्या प्रोग्राम नहीं है? 33 फीसदी आरक्षण देकर महिलाओं को राजनैतिक अधिकार की भागीदारी में बढ़ोत्तरी करना क्या प्रोग्राम नहीं है? पूरे देश की कन्याओं को प्रेजुएशन तक निःशुल्क शिक्षा देकर शिक्षित करना क्या प्रोग्राम नहीं है? मेरे यहां से और लोगों को बोलना है, समय कम है वरना मैं सारे पैरा आपको पढ़कर सुनाती और चिदम्बरम जी की बात का यहां जवाब देती कि किसी पैरा में आपको कार्यक्रम दिखाई नहीं दिया? और आप हमसे पूछ रहे हैं कि हम किस प्रोग्राम पर आपका समर्थन करें, हम किस कार्यक्रम पर आपका समर्थन करें? मैं पूरे अदब से कहना चाहती हूं कि अगर सर्वानुमति और आम सहमति से सरकार बनाने का समय कभी आएगा तो आज आया है। क्यों? न तो हमारे पास इतना बड़ा बहुमत है कि हम विपक्षियों को धता बताकर हेकड़ी से राज चला सकें और न हमारे पास इतना कम बहुमत है कि हम बाहर बैठे हुए कुछ लोगों के दबाव में सरकार चला सकें। आज हम इस दबाव में नहीं कि दूर से कोई बटन दबाकर हमारी सरकार की गर्दन दबोच दे लेकिन इतना बड़ा बहुमत लेकर भी नहीं आए हैं कि आप लोगों के सहयोग के बिना समस्याओं का निदान कर सकें। इसलिए मैं कहना चाहती हूं कि आज वक्त है आम सहमति से सरकार चलाने का। देश में सर्वानुमति का वातावरण पैदा करने का आज वक्त है। ये समस्याएं वर्षों से निदान खोज रही हैं लेकिन निदान नहीं मिला क्योंकि या तो राज हेकड़ी से चला या राज दबाव में चला।

एक माननीय सदस्य : आप हेकड़ी मत बताइए।

श्रीमती सुषमा स्वराज : मैं हेकड़ी में नहीं बोल रही। आप जब थोड़ा भी शोर करते तो मैं चुप कर जाती थी। मुझे मालूम है, अपनी जिम्मेवारियों का अहसास है इसलिए मैंने उनको जवाब दिया। लेकिन मैं आपके माध्यम से एक अपील करना चाहती हूं इस सदन के तमाम विपक्षी बैंचों पर बैठे हुए लोगों से कि आइए, इस मुल्क का मुस्तकबिल साथ-साथ चलकर लिखें। आइए, इस देश का नवनिर्माण मिलकर करें, लेकिन निर्माण नफरत से नहीं होगा। पूर्वाग्रहों के चश्मे लगाकर अगर आप हमें देखेंगे तो निर्माण नहीं होगा। मेरी केवल एक अपील है। एक बार पूर्वाग्रहों को त्यागकर हमें परखिये।.....*(व्यवधान)* मैं अपील दोहराना चाहती हूं क्योंकि बीच में शोर हो गया। एक बार पूर्वाग्रहों को त्यागकर हमें परखिये और मुझे उम्मीद ही नहीं, बल्कि विश्वास है कि साथ-साथ हमसफर बनकर चलते हुए आपकी सारी मिथ्या धारणाएं समाप्त हो जाएंगी, सारे भ्रम का वातावरण समाप्त हो

जाएगा। हिन्दुस्तान में राजनीति तो बहुत हो चुकी लेकिन राज नहीं हुआ। वर्षों से अधाया हुआ देश स्वराज का इंतजार कर रहा है। वर्षों से अधाया हुआ देश एक अच्छी सरकार का इंतजार कर रहा है। अगर नफरत को थोड़ी देर ठककर, पूर्वाग्रहों के चश्में उतारकर .....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री ए.सी. जोस : यदि आप अपनी बात बीच में रोकें तो मैं आपसे एक बात जानना चाहता हूं श्री चिदम्बरम ने अपने भाषण में बंगलौर में हुई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की बैठक में लिए गए निर्णयों या दिए गए वक्तव्यों का उल्लेख किया है। उन्होंने कहा कि समय आने पर वे मथुरा, वाराणसी इत्यादि स्थानों पर मंदिर बनाने का मुद्दा उठाएंगे। क्या यह भी समाधान का रास्ता है? .....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : भारतीय जनता पार्टी का कोई ऐजेण्डा सीक्रेट ऐजेण्डा नहीं है मैं आपको बता दूं।

मैं यहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार के मंत्री के नाते बोल रही हूं, आर.एस.एस. के स्पोक्सपर्सन के नाते बोल रही हूं। .....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री ए.सी.जोस : मैं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की बात कर रहा हूं जिसका भारतीय जनता पार्टी पर नियंत्रण है।

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : यह आपकी धारणा है। इसलिए मैं कह रही हूं कि यह जो आपकी धारणा है, मैं आपको यह बात कहती हूं कि साथ चलकर देखिये आपकी मिथ्या धारणाएं समाप्त हो जायेंगी। ऐसे भ्रमों के जाल में फंसे हुए हैं। एक समय आप हमें एंटी-दलित कहते थे, कभी आप हमें महिला विरोधी कहते थे, कभी आप हमें अल्पसंख्यक विरोधी कहते थे। अब धीरे-धीरे चीजें हटीं हैं। जिस हिन्दू और सिख में आपने दरार डालकर रखी थी, आज पंजाब में वही हिंदू और सिख की इकट्ठी सरकार बन रही है। वे धारणाएं समाप्त हो गईं। आज लोग हमारे साथ मिलकर सरकार चला रहे हैं। उनसे उनका अनुभव पूछिये। कितने अच्छे तरीके से वे शासन चला रहे हैं। इसीलिए कह रही हूं एक बार कुछ देर के लिए मौका देकर देखिए, हमसफर बनकर देखिये, अपने पूर्वाग्रहों को छोड़कर देखिये, जिन भ्रमजालों में आप फंसे हुए हैं, ये मिथ्या धारणाएं केवल कम नहीं होंगी, समाप्त हो जायेंगी। यह मैं आपको पूरे विश्वास के साथ कहना चाहती हूं और जैसा मैंने कहा कि एक राष्ट्र के नवनिर्माण का संकल्प हमारे सामने है।.. .....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री ए.सी. जोस : क्या आप यह कहना चाहते हैं कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हस्तक्षेप नहीं करेगा?

[हिन्दी]

श्रीमती सुषमा स्वराज : सभापति महोदय, मुझे नीरज की चार पंक्तियां बहुत पसंद हैं जो इस मौके पर बहुत प्रासंगिक हैं, वे मैं यहां कहना चाहूंगी।.....*(व्यवधान)*

श्री कांति लाल भूरिया : चार पंक्तियों के पहले धारा 370 पर बोलिये, आपके उस पर क्या विचार हैं.....*(व्यवधान)*

श्रीमती सुषमा स्वराज : कभी आप नेशनल ऐजेण्डा को देखिये, वे तमाम मुद्दे जो हिन्दुस्तान के सामने मुंह बाये खड़े हैं, वे उसमें है। चार पंक्तियां कहकर मैं अपनी बात समाप्त करना चाहूंगी।

नीरज ने कहा था-

"निर्माण घृणा से नहीं प्यार से होता है,

सुख-शांति खड्ग पर नहीं प्रेम पर चलते हैं,

आदमी देह से नहीं नेह से जीता है,

बम्बों से नहीं बोल से वज्र पिघलते हैं।"

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपील करना चाहूंगी कि इस विश्वास मत के पक्ष में मतदान कर इस सरकार को मजबूती बख्शें।

डा. शकील अहमद : हिन्दू महासभा, उसके बाद जनसंघ, जनसंघ से जनता पार्टी, जनता पार्टी से भारतीय जनता पार्टी, पिछले 70 सालों से यह भाषा क्यों नहीं बोली। आज 70 साल के बाद इनकी भाषा बदली है।.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : आप बैठिये।

डा. शकील अहमद : यह धोखे की भाषा लग रही है।... .....*(व्यवधान)*

श्री अजीत जोगी : सभापति महोदय, असत्य वादों की खोखली बुनियाद पर खड़ी यह सरकार 1998 के लोक सभा चुनाव के जनादेश के प्रतिकूल बनी यह सरकार, माननीय अटल जी के नेतृत्व में बनी यह सरकार, जिसकी इब्तदा, जिसकी शुरूआत एक सक्षम आदिवासी के साथ धोखाधड़ी से हुई, उस सरकार के द्वारा प्रस्तुत विश्वास मत के प्रस्ताव का पुरजोर विरोध करने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं।.....*(व्यवधान)* 1984 से 1998 तक की 15 वर्षों की सियासी यात्रा भारतीय जनता पार्टी ने तय की है। इस संसद में दो सदस्यों से बढ़कर आज ये 160 से ऊपर सदस्य हो गये थे।

[श्री अजीत जोगी]

सभापति महोदय, भारतीय जनता पार्टी की आठ हजार प्रतिशत से ज्यादा ताकित इस सदन में बढ़ी है। यह इसीलिए बढ़ी है कि जनता के जजबातों को आपने उभारा है। यह इसलिए हुआ क्योंकि आपने यह कहा था कि हम सौगंध राम की खाते हैं, हम मंदिर वहीं बनाएंगे। आपने यह कहा था कि हम पावन नदी सरयू, गंगा और जमना की सौगंध उठाते हैं हम मंदिर वहीं बनाएंगे। आपने भारत के आराध्य देव भगवान राम की सौगंध खाई..... *(व्यवधान)*

श्री कांति लाल भूरिया : सुनने का साहस रखिए। अब जब भगवान राम की बात आई है, तो आप शोर क्यों मचाने लगे, ...*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : भूरिया जी, आप कृपया बैठिए।

श्री अजीत जोगी : एक जमाना था जब जय श्रीराम का उदघोष पूरे उत्तर भारत में गूंजता था। आज वह उद्घोष कहां गया? मैं भारतीय जनता पार्टी का नैशनल एजेंडा पढ़ रहा था, लेकिन अब जय श्रीराम का उदघोष, "जय सुखराम" में बदल गया है। हमने कई बार अटल जी को सुना, हम बार-बार उनको सुनते थे और आज तो मैं उनके पुराने भाषणें को भी लाइब्रेरी से निकालकर लाया हूं। उन सभी भाषणों में वाजपेयी जी ने हमेशा कहा था कि कश्मीर हमारा मुकुट है। कश्मीर हमारी आन, बान, शान है, कश्मीर में दो विधान नहीं हो सकते और आर्टीकल 370 संविधान में नहीं रहना चाहिए। माननीय अटल जी, हमने आपके नैशनल एजेंडे को बड़े ध्यान से पढ़ा, लेकिन उनमें अब कश्मीर आपके के लिए मुकुट नहीं रहा, देश की आन, बान और शान नहीं रहा,..... *(व्यवधान)* अब कश्मीर की अहमियत नहीं रही। अब तो आपके लिए नैशनल कान्फ्रेन्स के वहां से जीते दो सांसदों की अहमियत हो गई। आपने दिल्ली की गद्दी पाने के लिए, प्रधान मंत्री बनने के लिए, दिल्ली में सरकार बनाने के लिए इतना बड़ा समझौता किया कि आपने अपने पुराने सब सिद्धातों को भुला दिया। आपने भारत के मुकुट कश्मीर को भुला दिया, आपने भारत की पवित्र नदियों सरयू, गंगा, यमुना की कसम को भुला दिया, आपने भगवान राम की सौगंध को भुला दिया। आपने अपने सिद्धातों के साथ इतना बड़ा समझौता किया कि आपने सबको खत्म कर दिया और यह केवल दिल्ली की गद्दी पाने के लिए किया।

सभापति महोदय, माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी, हमेशा कहते थे कि भारत समाज एक है, फिर इस समाज में सिविल कोड अलग-अलग कैसे हो सकते हैं? सबके लिए एक सी आचार संहिता होनी चाहिए, यूनीफार्म सिविल कोड होना चाहिए। आज आपने जो सरकार बनाई है उसमें आप न तो यूनीफार्म सिविल कोड की बात करते हैं, न सिविल की बात करत हैं और न कोड की बात करते हैं, कहां गया आपका वह भाषण जिसमें हमेशा आप इनकी चिन्ता किया करते थे? मैंने आपका 1996 का घोषणा पत्र भी पढ़ा और 1998 का घोषणा पत्र भी पढ़ा। उनमें आपने लिखा है कि आप भय, भूख और भ्रष्टाचार से इस देश को मुक्ति दिलाएंगे। भ्रष्टाचार के बारे में आपने क्या कहा, उस बारे में सब वक्ता यहां बोल चुके हैं। मैं उन बातों की पुनरावृत्ति नहीं करूंगा..... *(व्यवधान)*

श्री लरंग साय (सरगुजा) : सभापति जी, मुझे शंका है, इसलिए मैं एक बात का स्पष्टीकरण करना चाहूंगा। मैं जानना चाहूंगा कि म.प्र. के मुख्य मंत्री श्री दिग्विजय सिंह ने इनके बारे में कहा था कि ये सतनामी हैं और ये आदिवासी हैं, क्या ये वही अजित जोगी हैं?

श्री अजीत जोगी : लरंग साय साहब मैं आपको सब बातें बता दूंगा।

मेरी बात सुनिये। जिस भ्रष्टाचार के नाम से आपने इतना ढिंढोरा पीटा, इतना हाई मॉडल ग्राउन्ड लेकर आप बैठे थे, उस भ्रष्टाचार के साथ आपने कैसा समझौता किया। किस तरह से आपने पंडित सुखराम जी के लिए यहां 13 दिन तक संसद नहीं चलने दी। मैं वह रिकार्ड लेकर आया हूं। माननीय अटल जी, माननीय जसवंत सिंह जी, माननीय प्रमोद महाजन जी तथा आपके अन्य नेताओं ने पंडित सुखराम जी के बारे में क्या कहा, वह सब मेरे पास है। लेकिन समय न होने की वजह से मैं उसे पढ़ना नहीं चाहता। परन्तु यह रिकार्ड की बात है कि आपने क्या-क्या बातें कही थीं। आज वही पंडित सुखराम जी आपके आगोश में बैठे हैं। आप अपने मंत्रिमंडल में उनसे आलिंगन कर रहे हैं। यह तो दिल्ली की कुर्सी के लिए आपने समझौता किया लेकिन मुझे तो दुख इस बात का है कि शिमला की छोटी सी कुर्सी के लिए आपने इतना बड़ा समझौता किया। इतना बड़ा हाई मॉडल ग्राउन्ड, इतने बड़े उच्च नैतिक धरातल पर आप बैठकर देश के सामने निकले थे और अब कहां पहुंच गये हैं।

आप अपराधीकरण की बात करते रहे कि हम राजनीति से अपराधीकरण को दूर करेंगे। आपने जो राष्ट्रपति जी का अभिभाषण पढ़ा, उसके क्रम नं. 38 में लिखा है कि हम इस देश में ऐसी व्यवस्था लाना चाहते हैं जिसमें राजनीति से अपराधी दूर हो जायेंगे। मैं अपने मध्य प्रदेश की बात कहता हूं। पूरे हिन्दुस्तान में केवल एक स्थान पर ऐसा हुआ कि अपराधी होने के नाते किसी उम्मीदवार का कैंडीडेचर रिटर्निंग आफिसर ने निरस्त किया है। पूरे हिन्दुस्तान में इस चुनाव में केवल एक स्थान पर ऐसा हुआ। मध्य प्रदेश की धार लोक सभा सीट पर श्री दरबार छत्रसिंह जी का .....*(व्यवधान)* जो आपके उम्मीदवार थे, उनका नामांकन रिटर्निंग आफिसर को निरस्त करना पड़ा क्योंकि हत्या के अपराध में उन्हें सजा हुई है.....*(व्यवधान)*

श्री धावरचन्द गेहलोत (शाजापुर) : मुख्य मंत्री जी के दबाव में कलैक्टर ने कर दिया। परन्तु आपका जो निर्वाचन हुआ है, वह कोर्ट से निरस्त हो जायेगा। आप आदिवासियों के नाम पर बात करते हो लेकिन आप आदिवासी नहीं हैं।.....*(व्यवधान)* कोर्ट से आपके खिलाफ फैसला हो जायेगा।.....*(व्यवधान)*

श्री अजीत जोगी : आपको सच्चाई अच्छी नहीं लगती। मैं केवल यह कह रहा हूं कि भगवान राम के मंदिर की बात, यूनीफार्म

सिविल कोड की बात, अपराधीकरण की बात, भ्रष्टाचार की बात, आर्टिकल 370 की बात आदि इन सब बातों को छोड़कर आपने नैशनल एजेंडा बनाया है। आप शास्त्रों की बात करते हैं। आदरणीय उमा भारती जी यहां बैठी हैं, वे शास्त्रों की बात यहां करती हैं। इसलिए मैं शास्त्रों की दुहाई देकर कहना चाहता हूं कि दुनिया में केवल दो पाप ऐसे बताये गये हैं जिनकी क्षमा नहीं होती। शास्त्रों में लिखा है:

सेतुबंध रामेश्वरम गंगासागर संगमम,

मुच्यते सर्वपापक्रमं,

न मुच्यते तु,

मित्रद्रोहम यति च राजस्य कृतघ्नता।

इन चार तीर्थों को सबसे अधिक प्रताप वाले, सबसे अधिक महिमा वाले, सबसे अधिक शक्ति वाले, सबसे अधिक आध्यात्मिक वाले बताये गये हैं। सेतुबंध, रामेश्वरम, गंगासागर और प्रयाग का संगम, बड़े से बड़ा पाप करने पर, इन तीर्थों में स्नान-ध्यान करने, पूजा पाठ करने से उन पापों की क्षमा हो जायेगी लेकिन दो पाप ऐसे हैं जिनकी क्षमा इनमें से कोई भी नहीं कर सकता। न सेतुबंध, न रामेश्वरम, न गंगासागर और न प्रयाग संगम, ये चारों तीर्थ मिलकर भी उन दो पापों को क्षमा नहीं कर सकते, ऐसा हमारे शास्त्रों में लिखा है।

आदरणीय अटल जी, मैं आपकी सरकार और आपकी पार्टी को शास्त्रों की दुहाई देकर कह रहा हूं।.....*(व्यवधान)*

श्री विजय गोयल : क्या आप इस सदन का समय बढ़ाने जा रहे हैं? अगर बढ़ाने जा रहे हैं तो फैसला ले लीजिए क्योंकि 8 बज गये हैं.....*(व्यवधान)* आप सदन का समय दुबारा निश्चित कीजिए।

श्री मदन लाल खुराना : मेरा प्रस्ताव है कि दोनों तरफ से बोलने वाले वक्ता काफी हैं इसलिए दो घंटे सदन का समय और बढ़ाया जाये.....*(व्यवधान)*

अपराह्न 8.00 बजे

इसके साथ-साथ मैं दूसरी घोषणा कर रहा हूं कि एम.पीज. और प्रैस के लिए फर्स्ट फ्लोर के कमरा नम्बर 70 में और स्टाफ के लिए कमरा नम्बर 73 में डिनर की व्यवस्था है। आप बीच-बीच में जाकर डिनर कर सकते हैं।.....*(व्यवधान)* एक घंटे का समय और बढ़ा दिया जाए।

अध्यक्ष महोदय : अभी इस पर काफी सदस्य बोलने वाले हैं।

... (व्यवधान)

सभापति महोदय : सभी माननीय सदस्य बोलना चाहते हैं। ऐसी दशा में दो घंटे का प्रस्ताव रखा था लेकिन माननीय खुराना जी ने स्वयं ही एक घंटे के लिए कहा है इसलिए मैं सदन का मत जानना चाहूंगा कि क्या एक घंटे का समय बढ़ा दिया जाए।

.....(व्यवधान)

[अनुवाद]

विधि, न्याय और कंपनी कार्य मंत्री (डा. एम. तम्बी दुरई): सभापति महोदय मैं आपसे छोटे दलों को कुछ प्राथमिकता देने का अनुरोध करूंगा क्योंकि शायद उन्हें कल अवसर नहीं मिल पायेगा। प्रमुख दलों को किसी प्रकार समय दिया जा सकता है लेकिन छोटे दलों को विशेष रूप से आज समय देना पड़ेगा।

[हिन्दी]

सभापति महोदय : अभी एक घंटा बढ़ा है।

.....(व्यवधान)

सभापति महोदय : आपका समय पूरा हो रहा है।

.....(व्यवधान)

सानछुमा खुंगुर बैसीमुथियारी (कोकराझार) : सभापति महोदय, बात करते-करते इतना वैल्युएबल टाइम खत्म करने जा रहे हैं। लेकिन बोडोलैंड से आए हुए हम जो दुखी हो रहे हैं, उसे बोलने देंगे या नहीं .....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : आप बैठिए। आपको जब बुलाया जाएगा तब बोलिए।

.....(व्यवधान)

श्री विजय गोयल : मेरा निवेदन है कि अगले स्पीकर्स के नाम बता दिए जाएं।

सभापति महोदय : ठीक है।

.....(व्यवधान)

श्री अजीत जोगी : मैं अपनी बात पर फिर से आता हूं। मैं शास्त्रों की दुहाई देकर कह रहा था कि भारतीय जनता पार्टी के दोस्त बात करते हैं। इसलिए मैंने कहा कि शास्त्रों में यह लिखा है-

सेतुबन्ध रामेश्वरम गंगासागर संगमम मुच्यते सर्वपापाक्रम
न मुच्यते तु मित्रद्रोहम यति च राजस्य कृतघ्नता।

.....(व्यवधान)

[श्री अजीत जोगी]

आपने पूरे देश में शास्त्रों की बात बताई है। आपने पूरे देश को शास्त्रों के आधार पर गुमराह किया है। इसलिए हम आपको बताना चाहते हैं कि वास्तव में हिन्दुत्व क्या है, वास्तव में शास्त्र क्या कहते हैं। दो पाप ऐसे हैं – मित्र के साथ दगा करना और राजा का प्रजा को वादा करके पूरा न करना। इन दो पापों को चारों तीर्थ मिलकर भी क्षमा नहीं कर सकते। आपने राजा बनकर प्रजा के साथ जो वादा किया, आपने कहा, हम राम का मंदिर बनाएंगे और उससे मुकर गए, आपने कहा, हम आर्टिकल 370 को हटाएंगे और उससे मुकर गए, आपने कहा, हम यूनीफार्म सिविल कोड लागू करेंगे और उससे मुकर गए, आपने कहा कि हम भ्रष्टाचार हटाएंगे और उससे मुकर गए।.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : अब आप समाप्त करिए।

श्री अजीत जोगी : मेरा समय तो सब इन्होंने ले लिया है।

श्री सत्यपाल जैन : आपकी पार्टी का स्टैंड क्या है, आप अपनी बात बताइए। .....*(व्यवधान)*

श्री अजीत जोगी : हमने कई बार कहा है कि राम मंदिर के बारे में न्यायालय जो कह दे, उसे मानिए।.....*(व्यवधान)*

मैं कह रहा था कि चारों तीर्थ मिलकर भी इस पाप को नहीं धो सकते.....*(व्यवधान)* यह इतना जघन्य अपराध है ... *(व्यवधान)*

सभापति महोदय : आप अब समाप्त कीजिए।

श्री अजीत जोगी : मुझे बोलने का अवसर ही नहीं मिला। .....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : आपका समय पूरा हो गया है।

.....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

सभापति महोदय : कृपया अब अपनी बात समाप्त कीजिए। मैं अब तो सत्यमूर्ति जी को बोलने के लिए बुला रहा हूं।

.....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

सभापति महोदय : आप बैठिए। भूरिया जी, आप बैठिये। आप क्यों समय ले रहे हैं? अब आप व्यवधान कर रहे हैं जोगी जी खुद कैपेबल हैं, वे बात कर लेंगे। आप बैठिये।

.....*(व्यवधान)*

श्री अजीत जोगी : मैं अब आपके आदेश का पालन करके अपनी बात समाप्त करना चाहता हूं। मैं बहुत सी बातें कहना चाहता था, लेकिन मैं केवल इतना कहना चाहूंगा कि आदरणीय अटल जी, यह जो वोट मिला था, इसमें आपकी छवि का बहुत बड़ा हिस्सा था। लोगों ने यह सोचकर वोट दिया कि माननीय अटलजी प्रधान मंत्री बनेंगे तो इस देश का वातावरण बदलेगा। बहुत से लोगों की इस भावना से मैं सहमत हूं। लोगों ने ऐसा सोचकर वोट दिया था पर जिस तरह की सरकार आपने बनाई है, जिस तरह की वादाखिलाफी आपने की है, उसको देखकर जो लोगों की यह आशा थी, जिस तरह से शुरू में ही आपने मंत्रिमंडल बनाया, उसमें पहली बार ऐसा हुआ कि इतना बड़ा मंत्रिमंडल आपने बनाया। देश के दस करोड़ लोग आदिवासी हैं, लेकिन एक आदिवासी को भी कैबिनेट मिनिस्टर का दर्जा आप नहीं दे पाये। आपने शुरूआत ही ऐसी की कि एक आदिवासी के साथ वायदा करके उसको हम स्पीकर बनाएंगे, उसको स्पीकर नहीं बनाया। आदिवासियों के साथ जो इतना बड़ा अत्याचार आपने किया है।

सभापति महोदय : कृपया समाप्त करें।

.....*(व्यवधान)*

श्री मदन लाल खुराना : तुम्हारे मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री का क्या हुआ? आप इतने सालों से चिल्ला रहे हो, इतने सालों से कांग्रेसी चिल्ला रहे हैं।.....*(व्यवधान)*

श्री अजीत जोगी : माननीय अटल जी, आपसे जो आशाएं थीं, उन पर कुठाराघात हुआ है। मैं यही कहना चाहूंगा कि आपसे आशाएं थी, उसके बारे में कहना चाहता हूं :

"पंछी समझते थे कि चमन बदला है,

तारे समझते थे कि गगन बदला है,

पर माननीय अटल जी हालात यह बताते हैं,

कि लाश वही है, केवल कफन बदला है।"

कुछ भी बदला नहीं है।.....*(व्यवधान)*

श्री मदन लाल खुराना : लाश किसने बनाई? सरकार तो पचास साल तक आपने चलाई। 50 साल तक किसने राज किया, हमने या तुमने? .....*(व्यवधान)*

श्री अजीत जोगी : मिनिस्टर हमें बोलने नहीं दे रहे हैं।

सभापति महोदय : जोगी जी, कृपया बैठिए।

श्री अजीत जोगी : मैं अपनी बात खत्म कर रहा हूं।.... ....*(व्यवधान)* आपको बात अच्छी नहीं लगेगी। आप क्यों वादाखिलाफी करते हैं?.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : बैठिये।

.....*(व्यवधान)*

श्री अजीत जोगी : मैं आपसे अन्त में यही निवेदन करना चाहूंगा कि इस देश के लोगों की आशाएं केवल कांग्रेस पर हैं। कांग्रेस का ही चिन्तन ऐसा है, जो सब को एक साथ लेकर चल सकता है। कांग्रेस का ही दर्शन ऐसा है जो एक छत के नीचे चाहे बड़ा हो, चाहे छोटा हो, चाहे अगड़ा हो, चाहे पिछड़ा हो, चाहे हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे सिख हो, चाहे ईसाई हो, चाहे गरीब हो, चाहे अमीर हो, सबको एक साथ ले चलने का दर्शन, जिस दर्शन को सैण्ट्रल हाल के मुख्य द्वार पर ऋग्वेद के श्लोक में लिखा हुआ है:

"अयम् निज परोवेति, गणना लघुचेतषाम्,
उदार चरितानाम् तु, वसुधैव कुटुम्बकम्।"

अयम् निज! और परोवेति की बात करने वाले जो यह कहें कि मैं मैं और तू तू, जो यह कहें कि मैं बड़ा , तू छोटा, मैं अमीर, तू गरीब, मैं हिन्दू, तू मुसलमान, मैं सिख, तू ईसाई, ऐसा कहने वाले इस देश को नहीं चला सकते। जो इतने उदार चरित का होता है, जो यह कहे "उदार चरितानाम् तु, वसुधैव कुटुम्बकम्" जो यह कहे कि पूरी वसुधा मेरा कुटुम्ब है । ऐसा कहने वाली केवल कांग्रेस पार्टी है। ऐसा कहने वाले केवल हम लोग हैं।

सभापति महोदय : समाप्त करिये।

श्री अजीत जोगी : केवल कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : जोगी जी, कृपया समाप्त करिये।

श्री अजीत जोगी : आपने मुझे बोलने नहीं दिया।.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : जोगी जी, बिल्कुल नहीं। अब आप समाप्त करिये।

श्री मदन लाल खुराना : जब आपका राज आयेगा, तब बनेगा तो बनाओ न। .....*(व्यवधान)*

श्री अजीत जोगी : आदरणीय सभापति जी, मंत्री जी मुझे बोलने नहीं दे रहे हैं, व्यवधान डाल रहे हैं। खुद तो मुख्य मंत्री बने नहीं, मुझे टोक रहे हैं। आपको मुख्य मंत्री बनना था, अटल जी ने नहीं बनाया, लेकिन हमारे यहां अवश्य आदिवासी मुख्य मंत्री बनेगा।

मैं केवल चार पंक्तियां कहकर अपनी बात समाप्त करूंगा।

शर्मिंदा कभी न रूठे मेहनत होगी

हिम्मत है तो हर गांव में नुसरत होगी

वक्त चाहे कांग्रेस से गुरेजां हो तो हो

कल वक्त को खुद कांग्रेस की जरूरत होगी।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस विश्वास मत का विरोध करता हूं और निवेदन करता हूं कि इसे निरस्त किया जाए।

[अनुवाद]

श्री वी. सत्यमूर्ति (रामनाथपुरम) : इस महान सदन को संबोधित करने से पूर्व मैं अपने प्रतिष्ठित नेता, ए.आई.ए.डी.एम.के. की महासचिव डा. पुरातची थालाइवि और अपने निर्वाचन क्षेत्र रामनाथपुरम के लोगों का आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने मुझे निर्वाचित करके यहां भेजा।

हमारे माननीय प्रधान मंत्री ने विश्वास मत का प्रस्ताव पेश किया है, मेरी राय है कि हाल ही में संपन्न चुनाव में जनता के समक्ष पहले ही विश्वास मत पेश कर दिया गया था, जनता ने प्रस्ताव पर अपना मत दे दिया है। उन्होंने एक स्थाई और सक्षम सरकार के पक्ष में मत दिया है। वे हर वर्ष आम चुनाव के पक्ष में नहीं हैं। चुनाव में त्रिकोणीय मुकाबले में जनमत स्पष्ट था। इसमें कोई शक नहीं कि जनादेश भारतीय जनता पार्टी के श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व तथा सहयोगी दलों के समर्थन में था, दो अन्य मोर्चे कांग्रेस तथाकथित मोर्चा के बारे में मेरी राय यह है कि यह संयुक्त मोर्चा ना होकर सार्वभौमिक रूप से एक विफल मोर्चा है। जनता ने इसे पूरी तरह नकार दिया है। क्या किसी में इतना साहस है कि वो कह सके कि जनता ने कांग्रेस के हक में जनादेश दिया है? इस तरह का दावा कांग्रेस की तरफ से कोई नहीं कर सकता। इसी तरह से क्या कोई संयुक्त मोर्चा की तरफ से यह कह सकता है कि इससे पूर्व हुए चुनावों में जनता ने उसके नेतृत्व में सरकार गठन करने हेतु जनादेश दिया था। ऐसा कहने का साहस किसी में नहीं है। इसके बावजूद आप विश्वास प्रस्ताव का विरोध कर रहे हैं। आप विरोध क्यों कर रहे हैं। क्या आप में एकता है। क्या आपके पास संयुक्त मोर्चे का नेता है? आपका ना कोई नेता है और ना ही आप में कोई एकता है। फिर आप विरोध क्यों कर रहे हैं। अगले पांच वर्ष से पहले जनता चुनाव नहीं चाहती। जिम्मेवार नेता चुनाव जीत कर भी सदन में जनादेश का विरोध कर रहे हैं। यह जनता का सदन है। जनता ने भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार के गठन हेतु जनादेश देने का निश्चय किया है। जनादेश का विरोध कोई नहीं कर सकता। जनादेश के विरुद्ध इस सदन में कोई निर्णय नहीं लिया जा सकता। अगर जनादेश की अवहेलना की गई तो भारत की जनता सम्बन्धित दलों को कभी माफ नहीं करेगी।

चुनाव के दौरान हमारी प्रतिष्ठित नेता डा. पुरातची थालाइवी ने जनता से अनुरोध किया था कि वो केन्द्र में एक सक्षम और स्थाई सरकार के हक में मतदान करे। इसके साथ ही उन्होंने कुछ मांगें रखी।

सुबह श्री सोमनाथ चटर्जी ने हमारी प्रतिष्ठित नेता के खिलाफ कुछ आरोप लगाए। उन्होंने कुछ अखबार दिखाए, उन्होंने कहा कि अखबार के अनुसार प्ररातची थालाइवी डा. जयललिता एवं उनकी सहयोगियों के विरुद्ध कई मामले हैं। मैं कहना चाहता हूं कि वे सभी मामले उनपर थोपे गए हैं। मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि

[श्री वी. सत्यमूर्ति]

इन सभी मामलों की शिकायतें मुख्य मंत्री श्री करुणा निधि द्वारा की गई थी। इसकी जांच भी उनकी सरकार द्वारा की जा रही है। आरोप-पत्र मुख्यमंत्री श्री करुणानिधि द्वारा फाइल की गई है। विशेष अदालत का गठन श्री करुणानिधि द्वारा किया गया। इसके न्यायाधीशों का चयन भी मुख्य मंत्री श्री करुणानिधि द्वारा किया गया।

इस समय मैं सदन को यह स्पष्ट कर देना चाहूंगा कि श्री करुणानिधि गवाही नहीं दे सकते। हमारी प्रतिष्ठित नेता के खिलाफ गवाही देने के लिए उन्हें सम्मन जारी नहीं किया जा सकता। इसके लिए वास्तविक गवाहों को ही बुलाया जा सकता है। उस समय सच्चाई सामने आ जाएगी। सदन को इस बात का एहसास हो जाएगा। सच्चाई जानने के बाद श्री सोमनाथ चटर्जी को यह एहसास हो जाएगा।

हमारी प्रतिष्ठित नेता ने जनता से अनुरोध किया था कि वो राज्य सरकार के विरोध में मत दें।...*

कोयम्बटूर में सैकड़ों लोग मारे गये। पिछले दो वर्षों में तमिलनाडु अनेक बम विस्फोट हुए जिसमें सैकड़ों लोग मारे गए। मैं आपको बताना चाहता हूं कि कोयम्बटूर में श्री लाल कृष्ण आडवाणी की चुनाव सभा का आयोजन था। उग्रवादियों ने उन्हें जान से मारने की योजना बनाई थी। किस्मत से उनका हवाई जहाज एक घंटा देरी से पहुंचा। मगर तमिलनाडु के लोग इस भयावह दिन को नहीं भूल सकते। उन भयानक बम विस्फोटों में सैकड़ों लोग हताहत हुए थे और दो सौ से ज्यादा व्यक्ति घायल हुए। उस दिन 27 बम विस्फोट हुए थे। मैं माननीय अध्यक्ष के ध्यान में यह बात लाना चाहता हूं, कि यह भयानक घटना इस बात का सबूत है कि* हाल ही में संपन्न चुनावों में मतदाताओं को इन सब तथ्यों से अवगत करा दिया गया था।

तमिलनाडु की सरकार ने विभिन्न जातियों एवं धार्मिक लोगों के बीच मन मुटाव पैदा कर दिया था। राज्य में कानून व्यवस्था ठप्प हो गई है। इन सब बातों को जानने के बाद तमिलनाडु की जनता इस निष्कर्ष पर पहुंची कि श्री करुणानिधि की सरकार कानून व्यवस्था बनाए रखने, उग्रवादी ताकतों एवं बम विस्फोटों को रोकने में असफल रही। अतः लोगों ने ए.आई.ए.डी.एम.के. और इसके सहयोगी दलों के 30 सांसद चुनकर इस सदन में भेजे। इस समय मैं यह कहना चाहूंगा कि भारत की जनता एवं हमारे सहयोग से भारतीय जनता पार्टी पांच साल तक चलेगी। इसमें कोई शक नहीं।

इस बीच मैं माननीय प्रधान मंत्री से आग्रह करूंगा कि तमिलनाडु सरकार के खिलाफ कार्रवाई करने और राज्य सरकार को अत्याचार करने से रोकने हेतु एक केन्द्रीय दल तमिलनाडु भेजे। मैं चाहूंगा कि तमिल नाडु सरकार द्वारा अब तक किए गए अपराधों के लिए केन्द्र सरकार उसे सजा दें।

मैं एक और चीज स्पष्ट करना चाहूंगा। श्री सोमनाथ चटर्जी द्वारा ए.आई.ए.डी.एम.के. और भारतीय जनता पार्टी के बारे में कही गई बातों से कुछ शंकाएं उत्पन्न हो गई हैं। उन्होंने कुछ शंका जताई है, हमारी पार्टी के नेता की उन्होंने बुराई की है। उन्होंने राष्ट्रपति को समर्थन पत्र भेजे जाने में हुए विलम्ब के कुछ कारण बताए हैं। मैं कहना चाहूंगा कि हमारी पार्टी की नेता एक जुझारू राजनीतिज्ञ है। वो किसी भी सरकार या नेता से व्यक्तिगत मदद के लिए कोई अनुरोध नहीं करेगी। वो अपने और तमिल नाडु के लोगों के हितों के लिए लड़ेगी। मैं इस बिन्दु को स्पष्ट करना चाहूंगा।

सभापति महोदय : कृपया समाप्त करें।

श्री वी. सत्यमूर्ति : 1996 के आम चुनावों का जनादेश भाजपा सरकार के पक्ष में था मगर कुछ स्वार्थी अवसरवादी नेताओं ने ऐसा नहीं होने दिया। विश्वास मत का विरोध किया है। ऐसा नहीं किया जाना चाहिए था। 1996 के आम चुनावों के जनादेशानुसार भाजपा को शासन चलाने का एक मौका दिया जाना था।

गुजराल सरकार के गिरने के बाद अगर संविधान इजाजत देता तो हमारे माननीय राष्ट्रपति महोदय श्री वाजपेयी को प्रधान मंत्री बनाकर अवश्य ही 2001 तक शासन करने देते। अगर संविधान आड़े नहीं आता तो राष्ट्रपति महोदय भाजपा सरकार को सरकार बनाये रखने के लिए कहते और मध्यावधि चुनाव टल जाते। अगर माननीय राष्ट्रपति महोदय ऐसा करते तो जनता अवश्य ही उनके इस निर्णय का स्वागत करती और इसे खुशी से स्वीकार करती। अतः मैं सदन से अनुरोध करूंगा कि जनादेश के विरुद्ध कोई भी निर्णय न लें।

पिछले दो वर्षों के दौरान संयुक्त मोर्चा सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की गरिमा और छवि को धूमिल किया है। हमारी कार्यव्यवस्था संकट में थी। विश्व भर में लोगों को यह आशा है कि केवल श्री वाजपेयी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार ही देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ कर सकती है और खोई प्रतिष्ठा को वापस ला सकती है। इसीलिए हमारी प्रतिष्ठित नेता ने इस सरकार को बिना शर्त समर्थन देने का वादा किया है। तदनुसार अपनी पार्टी और तमिल नाडु की जनता की ओर से मैं भाजपा को समर्थन की पुष्टि करता हूं और माननीय प्रधान मंत्री श्री वाजपेयी द्वारा प्रस्तुत विश्वास प्रस्ताव का स्वागत करता हूं।

श्री टी.आर. बालू : मैं अधिक समय तक नहीं बोलूंगा। माननीय सदस्य, तो अभी-अभी बोले हैं ने कुछ हवाले दिए हैं। .....*(व्यवधान)*

श्री सी.पी. राधाकृष्णन (कोयम्बटूर) : चूंकि माननीय सदस्य ने मेरे निर्वाचन क्षेत्र का उल्लेख किया है इसलिए मैं अनुरोध करना चाहता हूं कि मुझे कम से कम पांच मिनट बोलने का समय दिया जाए।

श्री सानाबुमा खुंगुर बैसीमुथियारी: मुझे बोलने के लिए कम से कम पांच मिनट दिये जाने चाहिए।.....*(व्यवधान)*

* अध्यक्षपीठ के आदेशानुसार कार्यवाही वृत्तांत से निकाल दिया गया।

सभापति महोदय : मैं आपका नाम पुकार रहा हूं।

श्री टी.आर. बालू : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। मैं उस माननीय सदस्य की जो अभी-अभी बोले हैं बात बीच में काटना नहीं चाहता हूं। उन्होंने एक ऐसे मामले का उल्लेख किया है जो न्यायालय में विचाराधीन है।

श्री भास्कर राव पाटिल (नांदेड) : किस नियम के अंतर्गत व्यवस्था का प्रश्न उठा रहे हैं?

श्री टी.आर. बालू : सत्ता पक्ष में बैठे माननीय सदस्य को यह ज्ञात होना चाहिए कि किस प्रकार बर्ताव करना चाहिए।..... *.....(व्यवधान)*

सभापति महोदय : आपका व्यवस्था का प्रश्न क्या है?

श्री सानसुमा खुंगुर बैसीमुथियारी : माननीय सभापति महोदय और इस सभा के विद्वान सदस्यों, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे बोडोलैंण्ड की ज्वलन्त समस्या पर बोलने का यह अवसर दिया। *.....(व्यवधान)*

सभापति महोदय : मैंने आपको बोलने की अनुमति नहीं दी है।

.....(व्यवधान)

सभापति महोदय : व्यवस्था का प्रश्न क्या है? कृपया बताएं कि किस नियम का उल्लंघन किया गया है।

.....(व्यवधान)

श्री टी.आर. बालू : यह मामला न्यायालय में विचाराधीन है। इसकी पहले जांच की जानी चाहिए।

सभापति महोदय : व्यवस्था का कोई प्रश्न नहीं है। कृपया अपने स्थान पर बैठ जाएं।

.....(व्यवधान)

सभापति महोदय : कार्यवाही वृतान्त में कुछ भी शामिल नहीं किया जाएगा।

*.....(व्यवधान)**

श्री वैको : यह मामला न्यायालय में विचाराधीन नहीं है। उन्होंने अपना प्रश्न उठाया है। इसमें कुछ भी गलत नहीं है।

सभापति महोदय : कार्यवाही वृतान्त में कुछ भी शामिल न किया जाए।

*.....(व्यवधान)**

श्री वैको : कोयम्बटूर में बम फटा था। *.....(व्यवधान)*

सभापति महोदय : कृपया अपने स्थान पर बैठ जाएं।.... *....(व्यवधान)*

सभापति महोदय : कृपया अपने स्थान पर बैठ जाएं, मैं अब खड़ा हो गया हूं।

.....(व्यवधान)

श्री टी.आर. बालू : महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है।

सभापति महोदय: आपका व्यवस्था का प्रश्न क्या है। कृपया नियम बताएं।

श्री सानसुमा खुंगुर बैसीमुथियारी : मैं बोडो लैण्ड का प्रतिनिधित्व करता हूं जो दिल्ली से बहुत दूर है।*.....(व्यवधान)* कम से कम आपको पूर्वोत्तर भारत में रहने वाले बोडो लोगों की वास्तविक और अपहृत भावनाओं को समझने का प्रयास करना चाहिए।*.....(व्यवधान)*

श्री टी.आर. बालू : महोदय, कृपया मेरी बात सुनिये।

सभापति महोदय : जब आप का नाम पुकारा जाए, तभी आप बोल सकते हैं।

.....(व्यवधान)

सभापति महोदय : आपका नाम सूची में शामिल है।

श्री टी.आर. बालू : मैं केवल व्यस्था का प्रश्न उठाना चाहता हूं। माननीय सदस्य जिन्होंने अपनी बात अभी समाप्त की है, ऐसा मामला उठाया है जो न्यायालय में विचाराधीन है। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप कार्यवाही वृतांत पर एक नजर डालें और संगत अंश को कार्यवाही वृतांत से निकाल दें।

सभापति महोदय : मैं कार्यवाही वृतांत की जांच करूंगा।

श्री टी.आर. बालू : महोदय, धन्यवाद।

श्री सानसुमा खुंगुर बैसीमुथियारी : माननीय सभापति महोदय और इस सम्माननीय सभा के विद्वान सदस्यों, मैं आज सभा के सभापटल पर अपनी इन उचित मांगों के लिए खड़ा हुआ हूं (1) ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तरी छोर पर बोडोलैण्ड की स्थापना करने के लिए एक पृथक राज्य का सृजन (2) भारतीय संविधान की छठी अनुसूची के अंतर्गत ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिणी छोर पर नीलांचल और लालंगा नामक दो स्वायत्त जिलों का सृजन (3) असम के करबी अगलांग स्वायत्त जिले में रहने वाले बोडो कचनारी लोगों को शामिल करना अनुसूचित जनजाति (पहाड़ी) सूची को आपके सम्मुख रखने के लिये खड़ा हुआ हूं ये स्वदेशी बोडो की तत्कालिक और उचित राजनीतिक मांगें हैं।

---

* कार्यवाही वृतांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[श्री सानथुमा खुंगुर बैसी मुथियारी]

मैं वर्तमान भारत सरकार से अनुरोध करता हूं कि वह बोडो लोगों के जीवन और शांतिमय अस्तित्व के लिए, उनकी सुरक्षा के लिए, उनके चहुंमुखी विकास के लिए और बोडो की एक भिन्न पहचान बनाए रखने के लिए ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तरी छोर पर बोडो लैण्ड नामक एक पृथक राज्य का सृजन करने क लिए, जिसकी लम्बे अर्से से मांग की जा रही है, इस सम्माननीय सभा में एक संवैधानिक संशोधन विधेयक पेश करे। असम की धरती का सपूत होने, असम के आदिवासी लोग होने के बावजूद, आजादी से लेकर आज तक हम लोगों की उपेक्षा की गई है। हमारे साथ भेदभाव किया गया है तथा हमारा विरोध किया गया है और शोषण किया गया तथा हम पर कुशासन किया गया है। जब तक सरकार चाहे वह भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली सरकार हो अथवा किसी दल की सरकार हो, द्वारा बोडोलैण्ड नामक एक पृथक राज्य का सृजन करने संबंधी मांग पर विचार नहीं किया जाता है, तब तक असम के बोडो लैण्ड क्षेत्र में अथवा समूचे पूर्वोत्तर क्षेत्र में शांति बहाल करने और उसका चहुंमुखी विकास करने का प्रयास करने के बारे में कोई भी विचार करना निरर्थक होगा। इसलिए मैं भारत सरकार से विशेष रूप से माननीय प्रधान मंत्री से अनुरोध करता हूं कि वह माननीय राष्ट्रपति द्वारा 25 मार्च, 1998 को संसद के दोनों सदनों के संयुक्त अधिवेशन में दिए गये अभिभाषण के पैरा 28 में संशोधन करें जिसमें बिहार में झारखंड क्षेत्र में वनांचल, उ.प्र. में उत्तरांचल और मध्य प्रदेश में छत्तीश गढ़ का सृजन करने से संबंधित केवल तीन मांगों को मानने की बात कही गई है और बोडो की उचित मांग को छोड़ दिया गया है। मैं माननीय प्रधान मंत्री से अनुरोध करता हूं कि उक्त पैरा में संशोधन करके बोडो लैण्ड के लिए एक पृथक राज्य का सृजन करने के वास्ते हमारी उचित और सबसे न्यायसंगत मांग को शामिल करें।

मैं भारत सरकार से अनुरोध करता हूं कि वह भारत सरकार की आठवीं अनुसूची में बोडो भाषा को शामिल करें। मुझे इस बात का बहुत दुख हुआ जब मुझे 23 मार्च, 1998 को इस सम्माननीय सभा में अपनी मातृ भाषा में संसद सदस्य के रूप में शपथ लेने की अनुमति नहीं दी गई। मैंने माननीय अध्यक्ष महोदय से अनुरोध किया था कि मुझे मेरी मातृभाषा बोड़ो में शपथ लेने की अनुमति दी जाए। लेकिन कुछ संवैधानिक कठिनाइयों की वजह से मुझे बोडो भाषा में शपथ लेने की अनुमति नहीं दी गई। अतः मैं वर्तमान भारत सरकार से विनम्रतापूर्वक अपील करता हूं संविधान की आठवीं अनुसूची में बोडो भाषा को शामिल करें ताकि भारत में रहने वाले देश के बोडो लोगों को उचित प्रोत्साहन, महत्व, सम्मान, समान स्तर और प्रतिष्ठा मिल सके।

आजादी से लेकर आज तक बोडो लोगों को जिन असंख्य कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, उनका व्याख्यान करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। भारत में बोडो की कुल आबादी लगभग एक करोड़ होगी। हमारे यहां 45 आदिवासी इलाके और खण्ड है। लेकिन यह न केवल दिलचस्प बात है अपितु दुर्भाग्य पूर्ण भी है। असम में जो कुछ हुआ है जिसके परिणामस्वरूप अब प्रत्येक आदिवासी इलाके और खण्ड में विद्रोह की आग भड़कने के आसार दिखाई दे रहे हैं। अतः ऐसी नाजुक हालत में बोडो लैण्ड के लिए एक पृथक राज्य का सृजन बहुत ही आवश्यक हो गया है और यही एकमात्र राजनीतिक हल है।

इन सभी आदिवासी इलाकों और खण्डों को विशेष उपबन्धों के अंतर्गत सृजित किया गया था और आदिवासी भूमि व क्षेत्र का संरक्षण करने के लिए सुरक्षोपाय किए गए थे लेकिन वे सभी प्रयास अब बेकार हो गए हैं।

कुछ वर्ष पूर्व एक आश्वासन दिया गया था कि हमारी भाषा को राज्य की सह राजभाषा का दर्जा दिया जाएगा लेकिन उस आश्वासन को पूरा नहीं किया गया है। केवल दो क्षेत्रों अर्थात कोकराझाड़ और उदलागड़ी उपमंडलों को ही यह दर्जा दिया गया था। इस आश्वासन को भी अभी तक पूरा नहीं किया गया है।

20 फरवरी, 1993 को हमने बोडो समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। उस समझौते को भी कार्यरूप नहीं दिया गया है। केन्द्र में श्री पी.वी. नरसिंह राव के नेतृत्व वाली तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने जो भी आश्वासन दिये थे और वायदे किये थे, उन्हें क्रियान्वित नहीं किया गया वे अपने वायदे से मुकर गए।

मैंने भारत सरकार से, विशेषरूप से भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री से और इस सम्माननीय सदन के विद्वान सदस्यों से अनुरोध करना चाहता हूं कि वे शांतिमय और राजनीतिक बातचीत के माध्यम से बोडो लैण्ड समस्या का अविलम्ब राजनीतिक हल ढूंढने के लिए अपना भरपूर सहयोग दें।

मैं इस संबंध में मैं, प्रधानमंत्री और भारत सरकार से भी आग्रह करना चाहूंगा कि वे चालू सत्र में ही संविधान संशोधन विधेयक सभा में पुरःस्थापित करें।

[हिन्दी]

जब तक हम लोगों की प्रौबलम्स की तरफ ध्यान नहीं दिया जाएगा हम सोच नहीं पाएंगे कि आप हमारे साथ दिल से मोहब्बत और क्या करते हैं। जब हमें अलग राज्य मिल जाएगा तो लाखों के दिलों में एक नई भावना पैदा होगी कि भारत के अन्य प्रान्तों के लोग भी बोडो लोगों से मोहब्बत करते हैं और उनका सम्मान करते हैं। केवल मुंह से मीठी-मीठी बातों के जरिए मोहब्बत करने से कुछ नहीं होगा। आप भी इंडियन हैं और हम भी इंडियन हैं। केवल मुंह से बोलने पर काम नहीं चलेगा।

[अनुवाद]

हम भारत में समान दर्जे और न्याय के साथ प्रतिष्ठित भारतीय नागरिक के रूप में रहना चाहते हैं।

मैंने भारत के प्रधान मंत्री और भारत सरकार से बोडोलैण्ड के पृथक राज्य के सृजन के लिए हमारी वैध मांग पर विचार करने का अनुरोध किया है। आर्थिक सहायता के रूप में केवल करोड़ों रुपये उपलब्ध कराकर आप विशेषकर बोडोलैण्ड क्षेत्र में और आमतौर पर पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थायी रूप से शांति और स्थिरता कायम नहीं कर सकते हैं। अतएव भारत सरकार से मैं पुरजोर

आग्रह करता हूं कि वे बोडोलैण्ड के लिए पृथक राज्य का तत्काल सृजन करें जो कि अनिवार्य बन गया है। केन्द्र सरकार और इस सम्मानित सभा के सभी सदस्यों से यह मेरा विनम्र निवेदन है।

[हिन्दी]

हमारी कोई परवाह नहीं करता। चाहे जिस पार्टी की गवर्नमेंट बने- चाहे वह बी.जे.पी. की गवर्नमेंट हो या दूसरी पार्टी की गवर्नमेंट हो, उसे हमारी मांग को पूरा करना पड़ेगा।

श्री रामदास आठवले : सभापति महोदय जी,

"अंगुली कटवाने से शहीद नहीं हुआ करते।
उसके लिए सिर कटवाने पड़ते हैं।
राज को बताने वाले अटल बिहारी वाजपेयी जी।
राज को चलाना है तो चलाओं मगर सेक्यूलरिज्म को अपनाओ।
भाषण कैसा करना है यह अटल जी से पूछो।
राज कैसा चलाना है यह शरद पवार जी से पूछो।
होली कैसी खेलनी है यह लालू से पूछो।
बाबरी मस्जिद को कैसे बचाना है यह मुलायम से पूछो।
भाजपा से नाता कैसे तोड़ना है यह मायावती से पूछो।
भाजपा से नाता कैसे जोड़ना है यह चंद्रबाबू से पूछो।
भाजपा का पार्टी सपोर्ट कब निकालना है यह जयललिता से पूछो।
सीपीएम का सामना कैसे करना है यह ममता जी से पूछो।"

सभापति जी, इस सभागृह में अटल बिहारी वाजपेयी ने विश्वास का प्रस्ताव रखा है। लोकतंत्र में सबको सरकार स्थापित करने का अधिकार बाबासाहेब अंबेडकर ने किया है। हमारे दिल में कोई जलजलाहट नहीं है, हमारे दिल में इसके बारे में कोई गड़गड़ाहट नहीं है। सवाल इतना ही है कि सरकार जो भी स्थापित हो रही है, इस सरकार ने कौन सी विचारधारा अपनाई है? भारत के संविधान ने जो सैक्यूलरिज्म का तत्व स्वीकारा है, सर्वधर्म समभाव का तत्व स्वीकारा है ये तत्व भारतीय जनता पार्टी को क्या मंजूर हैं? अगर भारतीय जनता पार्टी को ये तत्व मंजूर हैं तो हमारा कहना इतना ही है कि हिन्दुत्व का नारा देने का प्रयत्न नहीं होना चाहिए।

सभापति जी, हिन्दू धर्म से हमारा विरोध नहीं है। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर भी हिन्दू थे और दलित समाज भी हिन्दू था मगर यहां के सभी दलितों को गांव के बाहर कुचलने का प्रयत्न हुआ और उनके ऊपर अन्याय करने का प्रयत्न हुआ और इसीलिए बाबासाहब अंबेडकर जी ने हिन्दू समाज को बहुत बार बताया था कि हम भी हिन्दू हैं, हम भी मानव हैं, हमें भी मानव का अधिकार दीजिए। मगर इस हिन्दू समाज ने बाबासाहब और उनके समाज को उनका अधिकार देने का प्रयत्न नहीं किया इसलिए बाबासाहब अंबेडकर जी को बौद्ध धर्म की दीक्षा लेनी पड़ी।

हमारा कहना इतना ही है कि हमारा किसी धर्म से विरोध नहीं है। राजकाज की बात मैं नहीं कर रहा हूं, यह बात मान्यता की है। यहां के दलितों को मानवाधिकार देने का प्रयत्न नहीं हुआ इसलिए यहां के दलितों को हिन्दू धर्म छोड़कर दूसरे धर्मों में जाना पड़ा। हमारा कहना इतना ही है कि आप हिन्दू धर्म की रक्षा करें। बाबासाहब अंबेडकर ने जब संविधान लिखा तो वह उन्होंने हिन्दू समाज पर अन्याय करने के लिए नहीं लिखा। बाबासाहब अंबेडकर जी ने संविधान लिखा और उन्होंने हिन्दू समाज को, मुस्लिम समाज को, बौद्ध समाज को, सिख समाज को, ईसाई समाज को समान अधिकार देने का प्रयत्न किया।

सवाल इतना ही है कि भारत के संविधान में जो इक्वेलिटी की बात कही गई है क्या वह इक्वेलिटी आज देश में आई है। इसके लिए कौन जिम्मेदार है। इसके लिए केवल सत्ता में आये हुए लोग जिम्मेदार हैं या हम सभी लोग जिम्मेदार हैं। समाज में एकता लाने के लिए भाजपा की सरकार क्या करने वाली है? यह सरकार कितने दिन चलेगी, हमें मालूम नहीं हमने भी शुरू में अपनी सरकार बनाने का प्रयत्न किया था, लेकिन कुछ लोग उधर चले गये। अभी सरकार बन गई है। आप इधर आते हैं या हम उधर जाते हैं, यह बाद में देखेंगे। लोकतंत्र में इसका हमें अधिकार भी है। यहां मैं पोलिटीकल बात नहीं कर रहा हूं। मैं कह रहा हूं कि अगर अटल जी की सरकार मैजोरिटी में है तो उनकी सरकार जब तक मैजोरिटी में है तब तक चलेगी। उसे हम नहीं रोक सकते हैं। लेकिन जब मैजोरिटी कम हो जायेगी तो वह कैसे बचेगी और आप भी नहीं चलेंगे। तब हम चलेंगे। मेरा कहने का मतलब इतना ही है कि यह बारी-बारी से होता है।

सभापति महोदय, चुनाव में नारा था - "अटल बिहारी, अटल बिहारी", मेरा कहना है कि साहब, आपकी कितने दिन की है पारी। यहां आपके मैनडेट का क्या परसेंटेज है। कांग्रेस ने कितने परसेंट मैनडेट पर राज किया है और संयुक्त मोर्चा ने कितने परसेंट में राज किया है। मेरा सुझाव है कि बाबासाहेब अम्बेडकर भी टू-पार्टी सिस्टम चाहते थे, जिस तरह अमरीका में टू पार्टी सिस्टम है, इंग्लैंड में टू-पार्टी सिस्टम है तथा कुछ देशों में दो-दो पार्टियां हैं। उसी तरह से आप लोगों ने जो सपोर्ट किया है। मेरा कहना यह है कि ममता जी को बी.जे.पी. में नहीं जाना चाहिए और जॉर्ज फर्नांडीज को भी बी.जे.पी. में नहीं जाना चाहिए। बाकी जो बचते हैं हम उनको अपने साथ ले लेते हैं। मेरा कहने का मतलब है कि टू-पार्टी सिस्टम के संबंध में हमारे देश को सोचने की बहुत जरूरत है, वरना हर बार ऐसा ही होने वाला है।

सभापति महोदय : अठावले जी, आप समाप्त कीजिए।

श्री रामदास आठवले : सभापति महोदय, मैं पहली बार चुनकर आया हूं और यहां मेरा पहला भाषण हो रहा है।

सभापति महोदय : आपका पहला भाषण है इसलिए इतना समय आपको दिया है।

श्री रामदास आठवले : सभापति महोदय, मुझे थोड़ा समय और दीजिए। मैं कह रहा था कि अभी आपके पास मैजोरिटी है इसलिए अटल जी हम आपको अभी कुछ तकलीफ देने वाले नहीं हैं। अभी आपके पास मैजोरिटी है। लेकिन इस देश में टू-पार्टी सिस्टम के संबंध में हम सभी लोकतंत्र को मानने वाले लोगों को सोचने की बहुत जरूरत है। अगर सरकार चलानी है तो सेक्यूलरिज्म को अलग रखकर आप सरकार नहीं चला सकते हैं। आपने जो भी वादे किये थे उसमें राम मंदिर बनाने संबंधी किए वादे के बारे में मेरा कहना यह है कि जिस जगह पहले बाबरी मस्जिद थी, उसी जगह पर बाबरी मस्जिद बननी चाहिए। अगर राम मंदिर बनाना है तो राम मंदिर उसके बाजू में बनायें। उसके बाजू में बौद्ध विहार भी बना सकें तो नेशनल इंटग्रेशन का अच्छा नमूना इस देश में रहेगा। आपके मंदिर से हमारा कोई विरोध नहीं है। लेकिन भारत के संविधान ने किसी को मंदिर तोड़ने का अधिकार नहीं किया है, किसी को मस्जिद तोड़ने का अधिकार नहीं है।

इसलिए वाजपेयी साहब हमें आपसे इस हाउस में आश्वासन चाहिए कि जिस जगह पर बाबरी मस्जिद थी, वह वहीं बनेगी। हम आपका बहुत आदर करते हैं। आप अच्छे कवि हैं, आप एक अच्छे विद्वान हैं। लेकिन आप वहां क्यों चले गये, हमारा इससे मतलब नहीं है। हम आपको एक अच्छे इंसान के रूप में देखते हैं। आर.एस.एस. वालों पर मैं टीका-टिप्पणी नहीं करना चाहता हूं। आर.एस.एस. वाले राष्ट्र के लिए अच्छा काम कर रहे हैं, आर. एस.एस. वाले हिंदू धर्म के लिए काम कर रहे हैं और इसीलिए ये लोग आपको कब धोखा दें इसका कोई पता नहीं है। यदि अटल जी जैसे आदमी हमारे साथ होते तो हम आपको प्रधान मंत्री बना देते और वह प्रधान मंत्री का पद पांच साल के लिए होता।

सभापति जी, वह अटल जी पांच साल के थे, ये कितने दिन के हैं, हमें मालूम नहीं। इसलिए हम आपको इतना ही बताना चाहते हैं कि दलितों की रक्षा कीजिए। जब तक आपके हाथ में सत्ता है तब तक आपको दलितों के ऊपर होने वाली एट्रोसिटीज को सख्ती से रोकना चाहिए। इसलिए हमारी आपसे डिमांड है कि बाबा साहेब अम्बेडकर का राष्ट्रीय स्मारक 26 अलीपुर रोड पर बनाने के लिए अधिक से अधिक धन दिया जाना चाहिए। दलितों के हितों की रक्षा किए जाने की बहुत जरूरत है।.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : आठवले जी, समाप्त कीजिए।

श्री राम दास आठवले : सभापति महोदय, मुझे थोड़ा समय और दिया जाए। मैं कहना चाहता हूं कि मुम्बई में रमाबाई घाटकोपर में जिन 11 लोगों की हत्या करने का प्रयत्न किया गया था, उन लोगों को न्याय नहीं मिला। मैं चाहता हूं कि श्री कृष्ण आयोग की रिपोर्ट पर हाउस में चर्चा होनी चाहिए। श्री कृष्ण आयोग ने दंगे के लिए जिनको जिम्मेदार ठहराया है, उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की जरूरत है। हमारे अधिकारों की रक्षा होनी चाहिए। इस बात का हमें आश्वासन मिलना चाहिए।

[अनुवाद]

सभापति महोदय : श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन।

श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन (किंवलोन) : महोदय, कृपया समय बढ़ा दिया जाए। अन्यथा मुझे कल बोलने का अवसर दिया जाये।

सभापति महोदय : कृपया अपनी बात समाप्त करें।

.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : तो कार्यवाही वृतान्त में कुछ भी शामिल नहीं किया जायेगा।

.....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री राम दास आठवले : सभापति महोदय, हम रिकार्ड के लिए ही तो बोल रहे हैं और आप कह रहे हैं कि रिकार्ड में नहीं जा रहा है। हमें थोड़ा टाइम और दीजिए। हम देश का बंटवारा नहीं होने देंगे। हम आपको इस देश के संविधान को बदलने नहीं देंगे।

सभापति महोदय : अब आप समाप्त कीजिए।

जब रिकार्ड में कुछ नहीं जा रहा है, फिर भी आप क्यों बोले जा रहे हैं।

श्री राम दास आठवले : आप संविधान को बदलने की कोशिश न करें।.....*(व्यवधान)**

सभापति महोदय : रिकार्ड में कुछ भी नहीं जा रहा है।

श्री रामदास आठवले : जय भीम जय भारत।

[अनुवाद]

श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन : महोदय, सिर्फ पांच मिनट ही शेष हैं। मुझे कुछ देर और बोलने की अनुमति प्रदान करें।

सभापति महोदय, मैं अपनी पार्टी की ओर से बोल रहा हूं, माननीय प्रधानमंत्री, श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रस्तुत विश्वास प्रस्ताव का रिवोल्युशनरी सोशलिस्ट पार्टी विरोध करती है। विश्वास प्रस्ताव के बारे में मोर्चे के अधिकतर नेताओं ने अपनी राय बता दी है।

महोदय, हाल ही में सम्पन्न बारहवीं लोक सभा के चुनावों में, हमें पूर्ण जनादेश प्राप्त नहीं हुआ है और न ही किसी एक दल को अथवा किसी राजनीतिक मोर्चे को पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ है। इसलिए पहला प्रश्न यह उठता है कि क्या भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगी दलों को केन्द्र में सरकार बनाने का बहुमत प्राप्त हुआ है अथवा लोगों का जनादेश प्राप्त हुआ है? महोदय,

* कार्यवाही वृतांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

मेरे मतानुसार जनादेश का अभिप्राय है कि सरकार बनाने के लिए लोक सभा में साधारण बहुमत होना आवश्यक है। यह प्रश्न विचारणीय है कि क्या भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगी दलों को सरकार बनाने के लिए साधारण बहुमत प्राप्त हुआ है।

जैसा कि भारतीय जनता पार्टी को जनादेश प्राप्त नहीं है तो मैं इस संबंध में सांविधिक प्रावधान जोकि संविधान के अनुच्छेद 75 (3) में निहित है, बताना चाहूंगा कि भारत के राष्ट्रपति द्वारा जो मंत्रिपरिषद् नियुक्त की जाती है वह लोक सभा में पूर्णरूपेण सामूहिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करेंगी। इससे इस बात का संकेत मिलता है कि मंत्रिपरिषद को लोक सभा में साधारण बहुमत मिलना ही चाहिए ?

महोदय, चुनावों के एकदम पश्चात माननीय प्रधानमंत्री और भारतीय जनता पार्टी को महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया गया। भारतीय जनता पार्टी के सहयोगी सदस्यों की संख्या के बारे में उनसे पूछा गया। उन्हें तभी सरकार बनाने की अनुमति प्रदान की गई जबकि तेलगू देशम पार्टी द्वारा यह पत्र दिया गया कि विश्वास प्रस्ताव के दौरान उनकी पार्टी तटस्थ रहेगी। महामहिम राष्ट्रपति ने भारतीय जनता पार्टी को इसी आधार पर सरकार बनाने की अनुमति प्रदान की कि तेलगू देशम पार्टी तटस्थ रहेगी जबकि इस सदन में बहुमत उनके साथ नहीं था।

मैं यह कहना चाहूंगा कि जनादेश भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगी दलों के पक्ष में नहीं है। इसलिए यह अल्पमत सरकार है। इसलिए मैं विश्वास प्रस्ताव का विरोध करता हूं।

मेरा दूसरा मुद्दा भी विचारणीय है। पिछले चुनावों में भारतीय जनता पार्टी का मुख्य नारा क्या था ? ''कृपया आप स्थायी सरकार के लिए और काबिल प्रधान मंत्री के लिए मतदान करें।'' अतः मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि क्या भारतीय जनता पार्टी और इसके सहयोगी दल केन्द्र में एक स्थायी सरकार दे सकते हैं। मैं यह कहना चाहूंगा कि इस संबंध में मेरा उत्तर नकारात्मक ही होगा। अतः यह विभिन्न राजनीतिक दलों का अप्राकृतिक, अवास्तविक और बेमेल गठबंधन है।

आल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम का राजनीतिक दर्शन और सामाजिक विचारधारा क्या है? क्या उनकी विचारधारा भारतीय जनता पार्टी के समकक्ष है? उनका कोई राजनीतिक कार्यक्रम अथवा नीति नहीं है। इनमें कोई भी समकक्षता नहीं है। सबसे पहले मैं यह कहना चाहूंगा कि आल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम ने भारतीय जनता पार्टी से इसलिए हाथ मिलाया है क्योंकि कांग्रेस इसमें असफल रही है। इनके कार्यक्रम और नीति का कोई आधार नहीं है। इसलिए वे भारतीय जनता पार्टी के साथ हाथ मिलाने के लिए मजबूर हैं।

अब मैं दूसरे घटक दल, नामतः तृणमूल कांग्रेस जिसका नेतृत्व कुमारी ममता बनर्जी कर रही हैं, के विषय में बताना चाहता हूं। हालांकि कुमारी ममता बनर्जी ने एक प्रेस सम्मेलन में कहा था कि वे श्रीमती सोनिया गांधी के उत्तर की एक सप्ताह तक प्रतीक्षा करेंगी और फिर वे भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गईं। क्या यह राजनीतिक कार्यक्रम के आधार पर हुआ है ?.....*(व्यवधान)* यह सभी कुछ प्रेस में भी आया है। यह कार्यवाही वृतान्त में है। .. ..*(व्यवधान)* मैंने अपनी बात अभी समाप्त नहीं की है। ... .*(व्यवधान)*

तृणमूल कांग्रेस ने कांग्रेस पार्टी से और पश्चिम बंगाल में वाम मोर्चे से प्रतिक्रिया स्वरूप बदले की भावना से भारतीय जनता पार्टी के गठबंधन को स्वीकार किया है। यह भी किसी कार्यक्रम अथवा नीति के आधार पर नहीं हुआ है।

हरियाणा में हरियाणा विकास पार्टी और हरियाणा लोक दल एक दूसरे के साथ लड़ते रहते हैं। तथापि दिल्ली में वे भारतीय जनता पार्टी को समर्थन दे रहे हैं। इस सरकार के स्थायित्व को एक उदाहरण से समझा जा सकता है कि आल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम के वरिष्ठ नेता जब दिल्ली आये थे तथा भारतीय जनता पार्टी के नेताओं के साथ उन्होंने चर्चा की थी तथा उन्होंने श्री राम कृष्ण हेगड़े पर आरोप लगाया था कि केन्द्रीय मंत्रिमंडल में मंत्री हैं तथा जो भारतीय जनता पार्टी के सहयोगी दल से संबंध रखते हैं ..... *(व्यवधान)* इसका आगे क्या है? भारतीय जनता पार्टी सभी राजनीतिक मूल्यों का त्याग करने के लिए तैयार है तथा जब भी आल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम की कोई मांग होती है तो वे हर पीड़ समर्पित करने के लिए तैयार हैं। .....*(व्यवधान)* प्रेस से यह जानकारी मिली है कि उन्होंने विधि मंत्रालय के मंत्री पद की मांग की है। उन्हें यह मंत्रालय दे दिया गया है? उन्होंने वित्त मंत्रालय की भी मांग की है। उन्हें पुनः आंशिक रूप से वित्त मंत्रालय भी दे दिया गया है। उनकी कुछ अन्य मांगे भी हैं। उन्होंने आरक्षण इत्यादि की मांग की है। .....*(व्यवधान)*

जल-भूतल परिवहन मंत्री (श्री आर. मुथैया) : इसका क्या प्रमाण है ? .....*(व्यवधान)*

श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन : यह समाचार माध्यमों में प्रकाशित हुआ है। .....*(व्यवधान)*

डा. एम. तम्बीदुरई : समाचार पत्रों में अनेक बातें प्रकाशित होती हैं। क्या यहां यह बताना आवश्यक है कि हम सौदेबाजी कर रहे थे। .....*(व्यवधान)*

श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन : केरल से संबंधित दो महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। सरकार को इन दो विवादों अर्थात मुल्लायेरियार बांध तथा कावेरी जल विवाद के संबंध में आल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कषगम को दिए गए आश्वासनों तथा वचनबद्धताओं के संबंध में बताना चाहिए। .....*(व्यवधान)*

अपराह्न 9.00 बजे

मुल्लायेरियार बांध के संबंध में समाचार पत्रों में यह प्रकाशित हुआ है कि इसकी ऊंचाई में वृद्धि की जानी है। इसी प्रकार कावेरी जल विवाद के संबंध में भी समाचार प्रकाशित हुआ है।

[श्री एन. के. प्रेमचन्द्रन]

मैं माननीय प्रधान मंत्री से अपील करूंगा कि.....*(व्यवधान)* आप एक मंत्री हैं कृपया अपने स्थान पर बैठ जाइये..... *(व्यवधान)*

सभापति महोदय : कृपया श्री जनार्दनन जी।

श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन : महोदय मैं आपके माध्यम से माननीय प्रधान मंत्री से अपील करता हूं .....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : श्री प्रेमचन्द्रन आपका समय समाप्त हो गया है। आपकी पार्टी को केवल चार मिनट दिए गए थे। कृपया अब आप समाप्त करें।

श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन : जी नहीं, व्यवधान के कारण आधा समय बर्बाद हो गया है।.....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री मदन लाल खुराना : सभापति महोदय, मेरा प्रस्ताव है कि सदन का समय एक घंटा और बढ़ा दिया जाए।

सभापति महोदय : सदन का समय 9.00 बजे तक था। माननीय संसदीय कार्य मंत्री प्रस्ताव कर रहे हैं कि सदन का समय एक घंटा बढ़ा दिया जाए। क्या एक घंटा और बढ़ाने के लिए सदन की राय है?

कुछ माननीय सदस्य : नहीं, नहीं।

कई माननीय सदस्य : ठीक है।

[अनुवाद]

एक माननीय सदस्य : महोदय अपना भाषण कल जारी रख सकते हैं।

श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन : महोदय, मैं अपना भाषण कल जारी रखूंगा।

[हिन्दी]

सभापति महोदय : सदन का समय एक घंटा बढ़ा दिया जाता है।

[अनुवाद]

श्री प्रेमचन्द्रन कृपया अब अपना भाषण शुरू करें और दो तीन मिनट में समाप्त करें।

श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन : महोदय, आपके माध्यम से मैं माननीय प्रधान मंत्री से पूछना चाहता हूं कि इस कावेरी विवाद और इस मल्लायेरियार बांध के संबंध में क्या प्रतिबद्धता और आश्वासन दिए गए हैं। इस हद तक मैं यह कहने को बाध्य हूं कि ए.आई.ए.डी.एम.के. ने बी.जे.पी. से घुटने टेकने को कहा और बी.जे.पी. ने ऐसा किया।

भारतीय जनता पार्टी के अन्य सहयोगी श्री सुब्रमण्यम स्वामी हैं। उन्होंने श्री रामकृष्ण हेगड़े पर एच.डी.डब्ल्यू. पनडुब्बी मामले में भी कुछ कमीशन लेने का दोषी ठहराया है। इस तरह भा.जा.पा. फ्रंट के सहयोगी दलों द्वारा ऐसा किया जा रहा है।

[हिन्दी]

श्रीमती मालती देवी (नवादा) : आप बार-बार एक-एक घंटे का समय बढ़ा रहे हैं, एक बार ही बोल दें कि सदन का समय चार घंटे के लिए बढ़ाया जाता है।

सभापति महोदय : यह माननीय सदस्यों की राय पर हो रहा है। आप बैठिए।

[अनुवाद]

श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन : महोदय, भारतीय जनता पार्टी हमेशा संयुक्त मोर्चा सरकार के अस्वाभाविक गठबंधन और आंतरिक विरोधाभास की हमेशा आलोचना करती रही है। अब किस तरह का गठबंधन बन रहा है?

[हिन्दी]

श्री राजो सिंह (बेगूसराय) : हाउस को चलाना है तो लोगों की राय से चलाएंगे या जैसा मन होगा, डिक्टेटरशिप करेंगे..... ...*(व्यवधान)* आपने ही पूछा था कि क्या 9.00 बजे तक टाइम बढ़ा दें।.....*(व्यवधान)* ऐसा मत कीजिए। कल भी तो डिबेट होगी।

सभापति महोदय : इस तरफ से भी समय बढ़ाने के लिए बोला गया था।

.....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री एन. के. प्रेमचन्द्रन : महोदय, चौदह दलीय संयुक्त मोर्चा का एक आम मुद्दा है। संयुक्त मोर्चा का आम मुद्दा साम्प्रदायिक शक्तियों को सत्ता से बाहर रखना था। मैं जानना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी और इसके सभी सहयोगी दलों जिनके बारे में मैंने पहले ही स्पष्ट कर दिया है, को एकजुट करने का क्या आम मुद्दा है।

सरकार के घोषणापत्र और राष्ट्रीय एजेंण्डा के संबंध में मैं समझता हूं कि घोषणापत्र में यहां पहले ही उल्लेख कर दिया गया है कि चुनाव प्रचार में तीन मुख्य घोषणाएं की गई थीं। एक, अनुच्छेद 370 को समाप्त करना; दो, अयोध्या में रामजन्मभूमि पर मंदिर का निर्माण करना और तीन, समान नागरिक संहिता। राष्ट्रीय एजेंडा स्वीकार करने के तुरन्त बाद चुनाव की इन तीनों घोषणाओं का क्या हुआ? इस प्रकार क्या कोई छिपा हुआ एजेण्डा बनाया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ये तीनों एजेण्डे सामने आएंगे। अभी इसे बक्शे में बंद करके रखा जा रहा है और विश्वास मत हासिल

करने के बाद इसे बाहर निकाला जाएगा। अतः मैं भारतीय जनता पार्टी के सहयोगी दलों को जानकारी देना चाहता हूं कि सरकार का राष्ट्रीय एजेंण्डा इन सभी तीनों मुद्दों के संबंध में मौन है, आने वाले दिनों में ये तीन महत्वपूर्ण मुद्दों के रूप में उभर कर सामने आएंगे।

इसलिए उस समय वे इन्हें रोकने के लिए बाध्य होंगे। मैं हिन्दुत्व के सम्बंध में कुछ कहना चाहता हूं। भारतीय जनता पार्टी हमेशा हिन्दुत्व का सहारा लेती है। हिन्दुत्व का क्या मतलब है? महोदय, हिन्दुत्व यशस्वी परम्परा है जो हमारे देश की शक्ति और विश्वव्यापी परम्परा है। महोदय, मैं ऐसा महसूस करता हूं चूंकि भारतीय जनता पार्टी उस हिन्दुत्व परम्परा का अनुसरण कर रही है, अतः मैं कहना चाहता हूं कि ''सर्वधर्म समभाव'' हिन्दुत्व परम्परा का प्रमाण है। ''वसुधैव कुटुम्बकम'' जिसका पहले ही उल्लेख किया है का मतलब यह है कि सारा संसार एक परिवार है। हिन्दुत्व की हमेशा उदारवाद और सहनशीलता के रूप में पहचान की जाती है। हम 6 दिसम्बर, 1992 की घटना के साक्षी हैं।

सभापति महोदय : श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन कृपया अपनी बात समाप्त करें।

श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन : महोदय, मैं अपनी बात समाप्त कर रहा हूं। क्या भारतीय जनता पार्टी हिन्दुत्व के सिद्धांतों का अनुसरण कर रही है? महोदय मैं कहना चाहता हूं 'नहीं'। वे हमेशा राजनैतिक लाभ के लिए हिंदुत्व के सिद्धांतों की गलत व्याख्या करती रही है। देश में यही हो रहा है। वोट प्राप्त करने के लिए अपने चुनाव प्रचार में उन्होंने इन सभी उपायों का सहारा लिया है। वोट प्राप्त करने और बहुमत प्राप्त करने के तुरंत पश्चात् अर्थात संसद में सबसे अधिक सीटें प्राप्त करके उन्होंने अपना संयुक्त मोर्चा बनाया है। एक राष्ट्रीय एजेण्डा बनाया गया है। यह एक छिपा हुआ एजेण्डा है और यह एक बार फिर सामने आएगा जोकि संघ परिवार के नेताओं के वक्तव्य से स्पष्ट है जिसके बारे में पहले ही उन्होंने वक्तव्य दे दिया है।

महोदय, मैं माननीय प्रधान मंत्री के शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त करता हूं। हम सभी उनका आदर करते हैं। इसके बारे में कोई शक नहीं है। अनादर तो भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ महासचिव ने यह कहकर किया है कि वे तो एक मुखौटा हैं, हमने उन्हें इस तरह कभी नहीं बोला। इसलिए, मैं प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के शब्दों के साथ आपनी बात समाप्त करता हूं। श्री वाजपेयी ने ग्यारहवीं लोकसभा में पहले विश्वास मत प्रस्ताव पर अपने भाषण में कहा था। मैं उसको उद्धृत करता हूं। ''प्रजातंत्र का आधार नैतिक आधार है। मूलरूप से वहीं नैतिकता आधारित पद्धति है''।

मैं इस प्रस्ताव का केवल इसलिए विरोध करता हूं क्योंकि भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले इस मोर्चे में नैतिक आधार संहिता और नैतिक सिद्धांतों का अभाव है। इसके पास बहुमत का भी अभाव है, इसलिए, मैं इस विश्वास प्रस्ताव का एक बार फिर सख्त विरोध करता हूं। इसे श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा इस सदन के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

[हिन्दी]

श्री किशन सिंह सांगवान (सोनीपत) : सभापति जी, माननीय प्रधान मंत्री जी ने विश्वास मत हासिल करने के लिए जो प्रस्ताव पेश किया है, उसके समर्थन के लिए मैं खड़ा हुआ हूं।

मैं न सिर्फ अपनी तरफ से, बल्कि अपनी पार्टी की तरफ से .....*(व्यवधान)*

कर्नल सोनाराम चौधरी (बाड़मेर) : कौन सी पार्टी? आपकी शर्तें क्या हैं?

श्री किशन सिंह सांगवान : हरियाणा लोकदल राष्ट्रीय पार्टी, चौधरी देवी लाल की पार्टी माननीय वाजपेयी जी को बाहर से समर्थन दे रही है। हमारे माननीय नेता स्वतंत्रता सेनानी पूर्व उप प्रधान मंत्री चौधरी देवी लाल जी की तरफ से मैं उनका अभिनन्दन करता हूं, उनको हार्दिक बधाई भी देता हूं।

आज जो राजनैतिक स्थिति है, जिस प्रकार का गठन लोक सभा का हुआ है, उससे जाहिर है कि आज देश की जनता ने क्षेत्रीय पार्टियों को, रीजनल पार्टियों को काफी महत्व दिया है। हमारी पार्टी हरियाणा लोकदल राष्ट्रीय पार्टी भी रीजनल पार्टी है। हमने हरियाणा के दोनों फ्रंट जो आज लोक सभा में हैं, दोनों के खिलाफ चुनाव लड़ा है। जिस भारतीय जनता पार्टी की सरकार को हम समर्थन दे रहे हैं, हरियाणा में भारतीय जनता पार्टी का हरियाणा विकास पार्टी के साथ गठबंधन है। उनकी मिली जुली सरकार वहां चल रही है, वहां हमारा राजनैतिक तौर पर उनसे टकराव है, अनेक मतभेद हैं और हरियाणा की जनता ने उस सरकार के खिलाफ फतवा देकर चौधरी देवी लाल जी की पार्टी, चौटाला साहब की पार्टी के हक में मत दिया है। जिसकी वजह से आज हमारे चार साथी आपके बीच में विराजमान हैं। अनेक मतभेदों के बावजूद, अनेक टकरावों के बावजूद राष्ट्रीय हित में हमने भारतीय जनता पार्टी को बिना शर्त समर्थन दिया है।

कर्नल सोना राम चौधरी : यह तो ऊपर की बात, अन्दर की बात क्या है?

श्री किशन सिंह सांगवान : अंदर की बात आप जानते होंगे। मेरे साथी मुलायम सिंह जी ने और कांग्रेस के दूसरे नेताओं ने शक की नजर से देखा है, मैं कहना चाहता हूं कि यह समझौता बिना शर्त का है। यह पार्टी चौधरी देवीलाल जी की पार्टी है। देवी लाल जी ने जिन्दगी में जो जुबान की, उसको निभाया है। उनकी हार्दिक इच्छा थी कि अटल बिहारी वाजपेयी जैसा नेता आज की स्थिति में कोई दूसरा नहीं है। वह प्रधान मंत्री बने।

सभापति महोदय, इनकी कथनी और सोच कांग्रेस के भाइयों की तरह नहीं है। हमारी पार्टी का कई बार भाजपा के साथ समझौता हुआ है। और टूटा है लेकिन हमने कभी कांग्रेस के साथ समझौता नहीं किया है और न ही करेंगे। हम हृदय से राष्ट्रीय हित में भारतीय जनता पार्टी का समर्थन कर रहे हैं और बिना किसी लोभ या लालच के कर रहे हैं।

[श्री किशन सिंह सांगवान]

आज जिस स्थिति में देश गुजर रहा है, यह वाजपेयी जी के लिए बड़ी भारी चिंता है। हर क्षेत्र में गरीबी की वजह से, बेरोजगारी की वजह से और भ्रष्टाचार की वजह से तथा राजनैतिक अस्थिरता की वजह से देश अनेक चिंताओं से गुजर रहा है। मैं आपके माध्यम से प्रधान मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि कुछ ऐसी समस्याएं हैं, जिनको भाईचारे से बैठकर, बातचीत के जरिए सुलझाया जा सकता है। हमारे हरियाणा प्रदेश की भी कुछ समस्याएं हैं। आज से 32 साल पहले 1966 में हरियाणा अलग प्रदेश बना था। चौधरी देवीलाल जी के संघर्ष की वजह से हरियाणा बना था। 32 साल के बाद लगातार हरियाणा प्रदेश का टैरिटरी का मामला, पानी का मामला, राजधानी का मामला तथा सीमा का विवाद लम्बित पड़ा है। मैं आपके माध्यम से कांग्रेस के भाइयों को और देश की जनता को बताना चाहता हूं कि यूं तो क्षेत्रीय समस्याएं पानी की ओर सीमा की अन्य राज्यों की भी हैं, लेकिन कांग्रेस का आज तक का इतिहास रहा है कि वह पहले समस्याओं को पैदा करती है, फिर उनको उलझाती है और फिर लटकाती है। आज जितनी भी ऐसी समस्याएं लटकी पड़ी हैं, वे कांग्रेस की देन हैं। जैसे जार्ज फर्नांडीज जी ने बताया कि आजादी के 50 सालों में से कम से कम 45 साल तक देश में कांग्रेस का राज रहा है। इसलिए सारी समस्याएं कांग्रेस की देन हैं।

हरियाणा की राजधानी का मामला, क्षेत्रीय विवाद और पानी का मामला उलझा पड़ा है। मुझे पूरा विश्वास है कि अटल बिहारी वाजपेयी जी, जिनमें पूरी काबिलियत है, इनकी सूझबूझ से हरियाणा प्रदेश की 32 साल से लटकी इन समस्याओं को सुलझा लिया जाएगा। हमारे प्रदेश की मुख्य समस्या पानी की है। आज यहां के लोग पानी की एक-एक बूंद के लिए तरस रहे हैं। सबसे दुख की बात तो यह है कि और प्रदेशों का तो आपस में झगड़ा हो सकता है, लेकिन हमारा जिस पानी का झगड़ा है, वह हमारे हिस्से का पानी पाकिस्तान जा रहा है, लेकिन हरियाणा को उसका हिस्सा नहीं दिया जा रहा है। हमारे हिस्से का पानी पाकिस्तान में जा रहा है। पंजाब सूबा हमारा बड़ा भाई है। हम उसको बड़ा भाई मानते हैं लेकिन अपने अधिकार के लिए हर आदमी लड़ता है। यदि वह पानी पाकिस्तान जाने की बजाए हरियाणा को दे दिया जाए तो हरियाणा की प्यासी धरती को पानी मिल सकता है, वहां का किसान खुशहाल हो सकता है। ये कुछ ज्वलंत प्रश्न है। हमारे प्रदेश की ये बहुत पुरानी समस्याएं पेंडिंग हुई हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि यह अटल बिहारी जी की सरकार इन समस्याओं पर गौर करेगी और हरियाणा के किसानों को, वहां के गरीब आदमियों को पानी और बिजली अवश्य दिलाएगी। इसके अलावा आज देश की अस्सी प्रतिशत जनता.....*(व्यवधान)*

कर्नल सोनाराम चौधरी : अभी आप कह रहे हैं बिना शर्त का समर्थन है।.....*(व्यवधान)*

श्री किशन सिंह सांगवान : यह शर्त नहीं है। ..... *(व्यवधान)* अपनी समस्याएं बताना कोई शर्त नहीं है।..... *(व्यवधान)* हरियाणा के लोगों की समस्याएं हमने बताई हैं।..... ...*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : कृपया समाप्त करिये।

श्री किशन सिंह सांगवान : आपने मुझे दो मिनट का समय दिया। समस्याएं तो बहुत हैं।.....*(व्यवधान)*

कर्नल सोनाराम चौधरी : बंसीलाल जी तो अपने बोझ से गिर जाएंगे।.....*(व्यवधान)* हमारी कोई शर्त नहीं है। बंसीलाल जी अपने कुकर्मों की वजह से, अपनी गलतियों की वजह से और गलत नीतियों की वजह से खुद गिर जाएगें। हमें किसी से कहने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।.....*(व्यवधान)* मैं आपके सामने अर्ज कर रहा था कि अस्सी फीसदी जनता खेती पर निर्भर करती है। आज किसान की हालत बहुत बुरी है। पंजाब की सरकार ने अच्छा उदाहरण पेश किया है। वहां के किसानों को बिजली और पानी मुफ्त मिलता है और हमने भी अपने घोषणा-पत्र में यह वादा किया था कि यदि हरियाणा में हमारी सरकार बनेगी तो किसानों को मुफ्त बिजली तथा पानी देंगे। मुझे वाजपेयी जी पर पूरा भरोसा है। उन्होंने जो राष्ट्रीय एजेंडा तैयार किया है, उसमें कृषि नीति के बारे में भी उल्लेख किया गया है। हालांकि उसमें कुछ विस्तार से नहीं है। लेकिन मुझे पूरा भरोसा है कि कृषि के लिए, किसानों के लिए, योजनाएं अवश्य बनाई जाएंगी।

आज अखबार में इस बात का जिक्र हुआ था कि गेहूं का भाव 455 रुपए क्विंटल तय करने की चर्चा है। बड़े अफसोस की बात है कि हरियाणा एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी के सर्वे के मुताबिक 675 रुपए क्विंटल का भाव इस यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने आंका है। अतः मैं वाजपेयी जी से अनुरोध करूंगा कि हरियाणा के किसानों की खुशहाली के लिए, देश के किसानों की खुशहाली के लिए आप कम से कम 700 रुपये क्विंटल के हिसाब से किसान को भाव दें क्योंकि खाद, डीजल और पेस्टीसाइड्स के दाम काफी बढ़ गये हैं तथा पानी और बिजली की अत्यंत कमी है, इसलिए किसान को भी उचित मूल्य मिलना चाहिए। तथा गरीब लोगों को सस्ता दिया जाये।

जब तक किसान खुशहाल नहीं होगा, कोई भी वर्ग खुशहाल नहीं हो सकता, अतः किसान को बिजली, पानी और उसका उचित दाम दिया जाए। यह मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूं।

समस्याएं तो बहुत सारी हैं। बाढ़ का मामला है, सेम का मामला है और भी बहुत सी समस्याएं हैं। कल रेलवे का बजट आया था, समय कम होने की वजह से हमें बोलने का समय नहीं मिला। सारे हरियाणा प्रदेश की एक समस्या मैं आपके सामने जरूर रखना चाहता हूं कि मुझे ऐसा महसूस हुआ कि रेलवे विभाग के पास हरियाणा का कोई मानचित्र नहीं है। रेलवे के पास जो मानचित्र है, उसमें हरियाणा का कहीं नाम नहीं है। आजादी के बाद रेलवे विभाग द्वारा हरियाणा में कोई काम नहीं किया गया, कोई नई रेलवे लाइनें नहीं बिछाई गई। दिल्ली हमारी राजधानी है। दिल्ली के तीनों तरफ हरियाणा है। कम से कम दस लाख आदमी रोजाना हरियाणा से दिल्ली में आते हैं। नौकरी के लिए आते हैं, व्यापार के लिए आते हैं और कोई दूध व सब्जी लेकर आते हैं। मेरे कहने का मतलब है कि दस लाख आदमी रोजाना दिल्ली में आते हैं और जाते हैं।

उनकी कितनी बुरी हालत है, यह आप स्वयं देख सकते हैं। भेड़-बकरियों की तरह से, जैसे मुर्गियों को लाद कर ले जाया जाता है, इस प्रकार से लोग आते हैं। सारे पढ़े-लिखे सभ्य आदमी हैं इसलिए मैं आपसे मांग करता हूं कि उनकी समस्याओं का निदान कीजिए। यह कोई बहुत लम्बी-चौड़ी बात नहीं है, सिर्फ एक एडिशनल बोगियां लगा दीजिए या एडिशनल ट्रेन चला दीजिए, इतने से ही समस्या हल हो जाएगी और दस लाख आदमियों का भला हो जाएगा।

अंत में, मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं कि आपने बोलने के लिए समय दिया। मैं सदन में यह वायदा करता हूं और आपको आश्वासन दिलाता हूं, जिन भाइयों के विभाग में इस बात का भ्रम है कि हमारा बाहर से समर्थन है, वे इसको विभाग से निकाल दें। हमें विपक्ष में बैठना मंजूर है, लेकिन वाजपेयी जी का साथ छोड़ना मंजूर नहीं है।

[अनुवाद]

सभापति महोदय : अब मैं श्री रामकृष्ण हेगड़े जी को बोलने के लिए आमंत्रित करता हूं। वे अनुपस्थित हैं, श्री बनातवाला- अनुपस्थित, डा. जयन्त रंगजी-अनुपस्थित, श्री इन्नान मोल्लाह- अनुपस्थित, श्री सुल्तान सलाउद्दीन ओवेसी- अनुपस्थित, श्री आनन्द मोहन - अनुपस्थित, श्री एम.के. नकवी जी

.....(व्यवधान)

श्री सुरेश कुरूप (कोट्टायम) : महोदय, यह सोचकर कि सदन की कार्यवाही केवल नौ बजे तक चलेगी और उनकी बारी कल आयेगी, सब लोग चले गए हैं।

[हिन्दी]

सूचना और प्रसारण मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री मुख्तार नकवी): सभापति महोदय, मैं विश्वास मत के पक्ष में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। इस बार के चुनाव ने हर मजहब, हर जाति और हर समुदाय के लोगों ने भारतीय जनता पार्टी को और उनके सहयोगी दलों को केन्द्र में सरकार बनाने के लिए जनादेश दिया है। पिछली बार जब अटल जी की सरकार के विश्वास मत पर बहस हो रही थी, मुझे याद है, उस समय धर्म-निरपेक्ष कहे जाने वाले लोगों ने एक चिन्ता व्यक्त की थी कि इस सरकार के साथ नार्थ-ईस्ट के कितने लोग हैं, दक्षिण से कितने लोग हैं, मुसलमान कितने हैं और अल्पसंख्यक कितने हैं। मैं यह बहस सुबह से सुन रहा हूं। धर्म-निरपेक्ष कहने जाने वाले वरिष्ठ नेताओं ने इस संबंध में बहस की है। आज भारतीय जनता पार्टी और सहयोगी दलों को नार्थ-ईस्ट में भी अच्छी सफलता मिली है और दक्षिण में भी भारतीय जनता पार्टी व सहयोगी दलों को अच्छी सफलता मिली है। मैं खुद एक मुसलमान हूं और भारतीय जनता पार्टी के टिकट से मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र रामपुर से चुनाव जीतकर आया हूं।

कर्नल सोनाराम चौधरी : और कितने आये हैं..... *(व्यवधान)*

एक माननीय सदस्य : कांग्रेस में कितने हैं?..... *(व्यवधान)*

सभापति महोदय : हर बार आप डिस्टर्ब कर रहे हैं। कोई सीमा होती है।

.....(व्यवधान)

श्रीमती सुखदा मिश्र (इटावा) : उ.प्र. से तो कांग्रेस का एक भी जीत कर नहीं आया है।.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : माननीय सदस्य बैठे-बैठे इस तरह से बात न करें। यह ठीक नहीं है।

श्री मुख्तार नकवी : एक धर्म-निरपेक्ष कही जाने वाली पार्टी के नेता ने एक अखबार में बयान दिया है कि अगर भारतीय जनता पार्टी ने एक भी मुसलमान को संसद में चुनाव जीतकर बैठा दिया, तो उसका समर्थन केन्द्र में स्वीकार कर लेंगे। मुझे यह उम्मीद थी, मुझे यह आशा थी कि जिस तरह से दक्षिण में भारतीय जनता पार्टी को सफलता मिली है, जिस तरह से नार्थ-ईस्ट में भारतीय जनता पार्टी और उनके सहयोगी दलों को सफलता मिली है, जिस तरह से पूरे देश में हर जाति, हर धर्म, सम्प्रदाय और हर क्षेत्र में भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगी दलों को एक मजबूत सफलता मिली है, जिस तरह से अल्पसंख्यकों में भारतीय जनता पार्टी के लिए विश्वास बढ़ा है तो हमें लग रहा था कि विपक्ष के लोग, धर्मनिरपेक्ष कहे जाने वाले इसका स्वागत करेंगे। पिछली बार इन्होंने चिन्ता व्यक्त की थी और इस बार इतनी अच्छी सफलता के बाद पूरे देश में भारतीय जनता पार्टी हर जात, सम्प्रदाय के लोगों द्वारा स्वीकार कर लेने के बाद मुझे लगता था कि विपक्ष के लोग स्वागत करेंगे लेकिन अफसोस है कि वह स्वागत इन्होंने नहीं किया। वास्तविकता यह है कि विपक्ष के जो धर्मनिरपेक्ष कहे जाने वाले लोग हैं, जो आज विपक्ष में बैठे हैं, जो 50 सालों तक सत्ता में बैठे रहे हैं उन्होंने भारतीय जनता पार्टी का हौवा दिखाकर, साम्प्रदायिकता का हौवा दिखाकर, क्योंकि मेरी समझ से अगर किसी भी कौम, किसी भी व्यक्ति को डराना हो, उसका शोषण करना हो तो उसक अंदर डर पैदा करना होता है, भय पैदा करना होता है और इन लोगों ने आज तक मुसलमानों में अल्पसंख्यकों में भारतीय जनता पार्टी का भय एवं डर पैदा किया। क्योंकि जब आदमी डरता है तो कमजोर होता है और जब कमजोर होता है तो उसका आसानी से शोषण किया जा सकता है। उन्होंने देश के मुसलमानों के अंदर भय पैदा किया और उसके बाद उन्हें कमजोर किया और कमजोर करके उनका राजनैतिक शोषण आज तक किया। उनकी चिन्ता केवल यह है कि अब उस राजनैतिक शोषण की उनकी दुकानें बंद होने के कगार पर आ गई हैं। आज भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र में सरकार बन गई है। आज भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र में टिकाऊ सरकार बन गई है और अब इनके सामने कोई चारा ऐसा नहीं है कि ये कह सकें कि भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र में सरकार बन जाएगी तो मुलसमानों का अहित होगा, नुकसान होगा।

[श्री मुख्तार नकवी]

महोदय, मैं मुस्लिम समुदाय से आता हूं। मैं अपने मजहब पर विश्वास करता हूं लेकिन मैं उसके साथ ही अपने को गौरवान्वित होकर कहता हूं कि मैं भारत मां की संतान हूं, मैं राष्ट्रवादी हूं। मैं आज इस बात को कहता हूं कि इस देश का हर मुसलमान, हर सिख, ईसाई फख्र के साथ अपने आपको भारत मां की संतान कहेगा तो वह सच्चा मुसलमान, हिन्दू, सिख, ईसाई होगा। मगर हमारे धर्मनिरपेक्ष कहे जाने वाले लोगों का यह दुर्भाग्य है कि जो लोग धर्मनिरपेक्षता के नाम पर आज तक देश में सरकार चलाते रहे हैं, जो राजनैतिक पार्टियां आज तक धर्मनिरपेक्षता के नाम पर अपनी राजनैतिक दुकानें चलाती रही हैं उन्होंने लोगों को अपने आपको राष्ट्रवादी कहने में शर्म महसूस की। उन्होंने लोगों के अन्दर ऐसी भावना पैदा की कि वे अपने आपको भारत मां की संतान न कह सके। आज जो मुसलमानों की समस्याएं रही हैं वे समस्याएं नहीं हैं, उनकी समस्या रोजगार की समस्या है, शिक्षा की, सम्मान की समस्या है, बराबरी की समस्या है। अटल बिहारी वाजपेयी जी और उनके सहयोगी दलों की सरकार मुसलमानों की इन समस्याओं का हल तत्परता और प्राथमिकता से करेगी, जिसे कि आपने 50 सालों में नहीं किया है। आपने उनका शोषण किया है। आपने वोटों की दुकानें चला करके, राजनैतिक दुकानें चला कर मुसलमान वोटों की नीलामी और खरीद-फरोख्त की है लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने उस पर विश्वास नहीं किया है। हमारा मानना है कि आज पूरे देश में जो संकट का समय है, आज इस संकट की घड़ी में, जब कि यह बात आज सारे लोगों को स्पष्ट हो गई है कि जनादेश भारतीय जनता पार्टी और उनके सहयोगी दलों के लिए है। मेरी तो अपील है-

"दे रहा है आदमी का दर्द जब आवाज दर-दर,
चुप रहे तुम तो, कहो सारा जमाना क्या कहेगा,
जब बहारों को खड़ा नीलाम पतझड़ कर रहा,
तुम रहे खामोश तो यह आशियाना क्या कहेगा।"

महोदय, मेरा तो यह कहना है कि आज इस संकट की घड़ी में, जब कि इस देश को, इस देश की बहारों को धर्मनिरपेक्ष कही जाने वाली आपकी विचारधाराएं नीलाम कर रही हैं, ऐसे में आप खामोश मत रहिए, इस बहार को और मजबूत करिए। इस देश के राष्ट्रवाद को मजबूत कीजिए।

इसी में मुसलमानों का भी भला है, इसी में हिंदुओं का भी और देश का भला है।

मैं रामपुर संसदीय क्षेत्र से चुनकर आया हूं। वहां 50 प्रतिशत मुसलमान रहते हैं। वह भारतीय जनता पार्टी का पारंपरिक क्षेत्र नहीं है। भारतीय जनता पार्टी बहुत कठिन परिस्थितियों में चुनाव लड़ती रही है। जब मैं चुनाव लड़ रहा था तो ये धर्म-निरपेक्ष कहे जाने वाले लोग, जो मुसलमानों का दोस्त बनने का ढोंग करते हैं, इन्हीं समाजवादी पार्टी के और बहुजन समाज पार्टी के लोगों ने अपने सदस्य को चुपचाप बैठा दिया और कांग्रेस के सदस्य को सपोर्ट किया। मुझे याद नहीं आ रहा है कि रामपुर के अलावा भी कोई ऐसा संसदीय क्षेत्र है जहां बसपा और सपा दोनों की जमानतें जब्त हुई हैं इनकी कोशिश रही कि भारतीय जनता पार्टी का मुस्लिम कैंडिडेट न जीत पाए। क्योंकि अगर भारतीय जनता पार्टी की तरफ से मुसलमान कैंडिडेट जीत गया तो उन्होंने जो पिछली बार शोर मचाया था कि तुम्हारे पास मुसलमान कहां हैं, तुम्हारे पास दक्षिण का कहां हैं, तुम्हारे पास पश्चिम का कहां हैं, तुम्हारे पास नोर्थ-ईस्ट का कहां है, वह शोर नहीं मचा पाएंगे, वह बोल नहीं पाएंगे। लेकिन उनकी योजना बुरी तरह असफल हुई और भारतीय जनता पार्टी ने मुस्लिम बहुल क्षेत्र से शुरूआत की है। आज एक सीट जीती है और मैं देश को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी और मित्र दलों के छः महीने का काम देखने के बाद इस देश का मुसलमान भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ पैदा की गयी गलतफहमियों को दूर करेगा और मुसलमानों का प्रतिनिधित्व भारतीय जनता पार्टी की ओर से इस सदन में बहुत बड़ी संख्या में होगा.....*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

कुमारी ममता बनर्जी : महोदय, जब विश्वास प्रस्ताव पर चर्चा हो रही है तो ये लोग सरकार की विश्वसनीयता पर प्रश्न कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि सरकार अपना बहुमत सिद्ध करे। पर कोई विपक्षी नेता यहां पर उपस्थित नहीं है। इस ओर देखिए। हम सब लोग बैठे हैं। उधर विपक्ष की ओर देखिए जो पूरी तरह से खाली है.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : प्रो कुरियन, उन्होंने अभी अपनी बात समाप्त नहीं की है कृपया आप अपना स्थान ग्रहण कीजिए।

.....*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री मुख्तार नकवी : साम्प्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता के नाम पर इस सदन में काफी चर्चा हुई। साम्प्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता को इस देश में जिस तरह से पेश किया गया है वह पूरे देश के लोगों के लिए चिंता का विषय है। भारतीय जनता पार्टी को साम्प्रदायिकता के कठघरे में खड़ा कर दिया गया है और अपने आपको इन्होंने धर्मनिरपेक्षता की लाइन में खड़ा करने की कोशिश की है। यह मात्र लोगों को गुमराह करने और लोगों का वोट लेने के लिए किया गया है। मैं बताना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ इनकी धर्मनिरपेक्षता वोट की राजनीति के अलावा कुछ नहीं है।

1977 में वाजपेयी जी जब विदेश मंत्री बन रहे थे तो उस समय भी खुद को धर्मनिरपेक्ष कहने वाले लोगों ने चिंता व्यक्त की थी कि ये जनसंघ से संबंध रखते हैं और इस देश के मुसलमानों में परेशानी होगी और इस्लामिक देशों से हमारे संबंध खराब होंगे। लेकिन आपको याद होगा कि इस्लामिक देशों के लोग और यहां तक कि पाकिस्तान आज भी कहता है कि अटल जी जब विदेश

मंत्री थे तो भारत के सबसे अच्छे रिश्ते इस्लामिक देशों से थे। यह बात आज भी इस्लामिक देशों के लोग महसूस करते हैं। अब मैं इस विश्वास प्रस्ताव का समर्थन करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री रामानंद सिंह (सतना): जनता ने अपना जनादेश भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में दिया है। चालीस में से तीस लोग मध्य प्रदेश से जीतकर आए हैं। मध्य प्रदेश की ओर से श्री अजीत जोगी ने अपने विचार रखे हैं। हम चाहते हैं कि जिस पार्टी को मध्य प्रदेश ने बहुमत दिया है उसके विचार भी सदन में आ जाएं। मैं रामानंद सिंह मध्य प्रदेश की ओर से अपने विचार रखना चाहता हूं। कृपया मुझे पांच मिनट समय दिया जाए।.....*(व्यवधान)* सभापति महोदय, लोक सभा चुनाव में देश में देश के मतदाताओं ने अपना जनादेश दे दिया। आज जनादेश मोटे तौर पर स्पष्टतः पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में सरकार बनाने का रहा। यही कारण है कि भारतीय जनता पार्टी के सभी सहयोगी दलों ने भारतीय जनता पार्टी के नेता अटल बिहारी वाजपेयी को लिखित समर्थन महामहिम राष्ट्रपति महोदय को दिया। यह बहुत खेद की बात है कि जब विश्वास प्रस्ताव पर चर्चा हो रही है तो सारा विपक्ष गायब है। वे कुछ सुनना ही नहीं चाहते। अभी कुछ सदस्यों का बोलना बाकी है। बड़े लोग बोल-बोल कर भागते जा रहे हैं।.....*(व्यवधान)* मेरा पहला भाषण है। आप उसे सुनें। देश की जनता का कुल मिलाकर जनादेश यह है कि राष्ट्रीय राजनैतिक दल, क्षेत्रीय दल और राष्ट्रीय नेता, क्षेत्रीय नेता इस देश को चलाएं और पंडित अटल बिहारी वाजपेयी जी के नेतृत्व में जो एक योग्य सरकार का गठन हुआ है, उसे काम करने का मौका दें।

महोदय, आज समूचे देश की निगाहें इस संसद की ओर लगी हैं। पिछले 50 वर्षों में जो सरकारें चलीं, उनके क्रियाकलाप से पूरा देश अवगत है। इसलिए भरत के मतदाताओं ने पिछले दो चुनावों में कांग्रेस को कोई बहुमत नहीं दिया। तिकड़म जोड़-तोड़ करके भले ही वे कुछ संख्या में आए लेकिन इस दल की सत्ता में जो दुर्गति हुई है, समूचा देश उसका साथी रहा है। मैं कहना नहीं चाहता लेकिन आज जो लोग वोट आफ कॉनफिडेंस का विरोध कर रहे हैं मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि जनता पार्टी के शासनकाल में सवा दो रुपए किलो शक्कर थी और उनके राज में आज साढ़े पांच रुपए किलों नमक मिल रहा है, वे लोग इस विश्वास प्रस्ताव का किस मुंह से विरोध करना चाहते हैं?

महोदय, प्रधान मंत्री महोदय ने राष्ट्रीय एजेंडे और राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण के माध्यम से अपना इरादा राष्ट्र के सामने स्पष्ट कर दिया है कि वे आम सहमति से सब को लेकर इस देश और सरकार को चलाना चाहते हैं लेकिन प्रतिपक्ष पिछले दो-तीन दिन से जो भूमिका निभा रहा है, सारा राष्ट्र उनकी भूमिका को देख रहा है। आप किन बिन्दुओं पर आलोचना कर रहे हैं? कितनी विसंगति से भरे लोग वहां बैठे हैं? आज मैं मुलायम सिंह यादव जी का भाषण सुन कर चकित हो गया। लालू जी यहां से उठ कर चले गए। आज ये लोग सरकार का विरोध कर रहे हैं? भाजपा और सहयोगी दलों को जनादेश प्राप्त हुआ है। क्या आपको सरकार बनाने का जनादेश है? क्या आप आज फिर से मध्यावधि चुनाव चाहते हैं? क्या आप इसके लिए तैयार हैं? आप कोई सरकार इस देश में चलने देना चाहते हैं या नहीं?

महोदय, जो राष्ट्रीय एजेंडा राष्ट्र के सामने है, उन्हीं पर हमारी सरकार चलेगी। यह अलग बात है कि भारतीय जनता पार्टी ने घोषणा पत्र में क्या कहा। जो राष्ट्रीय एजेंडा है, वही राष्ट्र के सामने एक दस्तावेज है। इस एजेंडे के किस बिन्दु का आप विरोध कर रहे हैं? मैं जानना चाहूंगा जब कोई प्रतिपक्ष कोई नेता खड़ा होकर कहे, इस राष्ट्रीय एजेंडे में जो बातें कही गई हैं धर्मनिरपेक्षता के बारे में, उस पर आपको भाजपा पर कई शंकाएं हैं लेकिन धर्मनिरपेक्षता की घोषणा की प्रधान मंत्री ने इस दस्तावेज में तो आपको क्यों इससे शिकायत है? धर्मनिरपेक्षता के बारे में प्रधान मंत्री ने कहा कि यह हमारी संस्कृति और सभ्यता का अटूट अंग रहा है। यह देश धर्मनिरपेक्ष रहा है और आगे भी रहेगा।

इसमें अशक्तों की सहायता की बात कही गई है। पिछली सरकारों में बड़े-बड़े लोग मौज मारते रहे और देश में अंतिम आदमी वहीं का वहीं हैं। उसके लिए क्या किया गया? अशक्तों की सहायता की बात जो राष्ट्रीय एजेण्डे में कही गई, राष्ट्रपति के अभिभाषण में कही गई, उससे आपको क्या आपत्ति है? सार्वजनिक वितरण प्रणाली में बहुत भ्रष्टाचार व्याप्त है। अगर उसमें सुधार करने की बात कही गई तो क्या आपत्ति है? रोजगार के अवसरों में वृद्धि के मामले पर आपको क्या आपत्ति है? समाज के बुनियादी ढांचे में अधिक धन लगाने के मामले पर बात कही गई है। अधिक से अधिक लोगों को आवास की बात कही गई है। शिक्षा पर अधिक व्यय और महिलाओं की ग्रेजुएशन तक निःशुल्क शिक्षा पर आपको क्या आपत्ति है, जरा खड़े होकर बोलिए। पीने का पानी पहुंचाने की घोषणा की गई है। कांग्रेस ने तीसरी पंचवर्षीय योजना के दस्तावेज में कहा था कि भारत के हर गांव को पीने का पानी मुहैया कराया जाएगा। आठ योजनाओं में आपने वायदों को पूरा नहीं किया। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार पांच साल रही तो पीने का पानी भारत के हर गांव को मिल जाएगा, राष्ट्र को इस बात का पूरा विश्वास है। अब वह व्यक्ति प्रधान मंत्री पद पर बैठा है जिस पर देश को विश्वास है।

सभापति महोदय, राष्ट्रीय जनसंख्या नीति पर केवल आपने इमरजेन्सी में जो नीति अपनाई थी, उसका हश्र क्या हुआ? लेकिन जनसंख्या नीति पर यदि सरकार कोई नीति तैयार करना चाहती है तो इस पर आपको क्या आपत्ति है? आजादी के पचास साल बाद भी बच्चे लाटरी और मूंगफली बेच रहे हैं। इनके लिए पचास सालों में आपने कौन सी योजनाएं बनाई? श्री अटल बिहारी वाजपेयी जैसे दूरदृष्टा ने देश के अनाथ गरीब बच्चों के लिए एक राष्ट्रीय नीति बनाने की बात कही। आपको उससे क्या आपत्ति है? महिलाओं के लिए स्थानीय संस्थाओं से लेकर विधान सभा और लोक सभा में 33 परसेंट आरक्षण की बात आप भी कहते रहे। इसको पारित कराने में आपको क्या दिक्कत है? महिलाओं को 33 परसेंट आरक्षण देने के लिए पहला प्रधान मंत्री हुआ है जिसने छाती ठोककर कहा है कि यह बिल सरकार पारित कराएगी। आप आइए और इसको पारित कराइए और महिलाओं को अधिकार

[श्री रामानन्द सिंह]

दीजिए। बड़ी बातें की जा रही हैं कि भारत की बेटी और भारत की बहू। भारत की बेटी ममता बनर्जी जिसे कांग्रेस ने निकाल दिया, वह भारत की बेटी हमारे साथ है। जो झुग्गी-झोपड़ियों में गरीबों के लिए संघर्ष करती रही, वह भारत की बेटी आज भारतीय जनता पार्टी की अलायंस की सरकार में है।

सभापति महोदय, सकल घरेलू उत्पादन को आठ परसेंट बढ़ाने का और बेरोजगारी हटाओ का नारा इस सरकार ने दिया है। आपको क्या आपत्ति है इस पर? कृषि पर योजना का 60 प्रतिशत खर्च करने की बात कही गई है। आज देश भुखमरी के कगार पर खड़ा है। किसानों को छला गया, बेतूल में हम मांगने पर 29 किसानों की हत्या करने वाले किस मुंह से श्री अटल बिहारी वाजपेयी का विरोध करते हैं? गवर्नर के पद का जिस तरह से दुरुपयोग हुआ है, उसको रोकने के लिए सरकारिया आयोग बैठा था। उसको लागू करने की बात सरकार कह रही है और अभी भी प्रधान मंत्री ने कहा है कि किसी भी राज्य सरकार को दुर्भावनापूर्वक बर्खास्त नहीं किया जाएगा। लेकिन कई सरकारें तो ऐसी हैं कि उनको तत्काल बर्खास्त कर देना चाहिए लेकिन यह पहले प्रधान मंत्री हैं जो सत्ता में आने के बाद आपकी राज्य सरकारों को देश के सभी क्षेत्रीय दलों की सरकारों को बर्खास्त करने की बात नहीं कर रहे हैं। पिछड़ा क्षेत्र आयोग बनाने की बात कही गई है। जितने रीजनल इंबैलेन्सेज हैं जिनके कारण उत्तरांचल की मांग बनांचल की मांग और छत्तीसगढ़ की मांग हो रही है।.....*(व्यवधान)* मैं प्रधान मंत्री जी को सुझाव दूंगा कि दूसरे राज्य पुनर्गठन आयोग का गठन करना चाहिए और राज्यों के पुनर्गठन पर पुनर्विचार होना चाहिए। सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया इसके लिए मैं आपका आभारी हूं।

श्री अनंत गंगाराम गीते (रत्नागिरि) : सभापति महोदय, बहुत-बहुत धन्यवाद। प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जो विश्वास का मत सदन में पेश किया है मैं उसके समर्थन में खड़ा हुआ हूं। मैं अपनी ओर से अपने पक्ष शिवसेना की ओर से इस प्रस्ताव का पूरी तरह से समर्थन करता हूं। ग्यारहवीं लोक सभा में 18 महीने इस सदन में रहने का मुझे मौका मिला । अब दोबारा इस सदन में उपस्थित रहने का मुझे मौका मिला है। पिछली लोक सभा में विश्वास मत के प्रस्ताव पर जो चर्चा इस सदन में हुई थी, वह समय मुझे याद आ रहा है, जिसका जिक्र प्रधान मंत्री जी ने विश्वास मत के समय दिये गये अपने भाषण में किया। जब ग्यारहवीं लोक सभा के प्रधान मंत्री के रूप में उन्होंने अपना प्रस्ताव इस सदन में रखा था तो वर्तमान सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने विश्वास मत पर सदन में होने वाली चर्चा को दूरदर्शन पर सारे देश के लोगों को दिखाने की एक अच्छी परम्परा डाली थी। विश्वास मत पर जब प्रधानमंत्री जी अपना उत्तर देने के लिए खड़े हुए तो मुझे वह क्षण याद है कि पूरे सदन में सन्नाटा छाया हुआ था और देश के करोड़ों लोग दूरदर्शन पर उस चर्चा को देख रहे थे। वे प्रधान मंत्री श्री वाजपेयी जी का भाषण ऐसे सुन रहे थे जैसे क्रिकेट कर वन डे मैच होता है। उस समय हर नागरिक टी.वी. के सामने अटल जी के विचार सुन रहा था। उस समय मैं सदन के सदस्य के रूप में यहां मौजूद था। मुझे ऐसा लगा था कि यह अटल जी अभी कहेंगे कि मैं अपना बहुमत यहां सिद्ध करता हूं। लेकिन जब उन्होंने यह कहा कि इस सदन का विश्वास मैं हासिल नहीं करा हूं, इसलिए मैं राष्ट्रपति जी को अपना इस्तीफा देने जा रहा हूं ये शब्द जब उन्होंने कहे तो देश के करोड़ों लोगों की आंखों में पानी आ गया जो टी.वी. पर अटल जी के विचार सुन रहे थे।.....*(व्यवधान)*

श्री तारिक अनवर : आंसू तो नहीं आये।.....*(व्यवधान)*

श्री राम नाईक : आप इस पर मजाक कर रहे हैं। जब कोई गैरहिंदी भाषी हिन्दी में बोलता है तो आपको उसका उत्साह बढ़ाना चाहिए। आप क्यों मजाक उड़ा रहे हैं। थोड़ी बहुत सभ्यता तो होनी चाहिए। आप लोगों ने सभ्यता बिलकुल छोड़ दी लगती है।

श्री अनंत गंगाराम गीते : सभापति महोदय, उस दिन हिन्दुस्तान के करोड़ों लोगों को दुख हुआ। आप इस बात को हंसी-मजाक में यहां पर ले रहे हैं, लेकिन यह सत्य है कि करोड़ों लोगों को दुख हुआ। गरीब से गरीब आदमी, एक आटो रिक्शा चलाने वाला भी चाहता था कि वाजपेयी जी देश के प्रधान मंत्री हों और आज वह समय आ गया है जब श्री अटल बिहारी वाजपेयी इस देश के प्रधान मंत्री हो गये हैं और वे पांच साल तक इस देश के प्रधान मंत्री रहेंगे। यह आपको पता चलेगा।.....*(व्यवधान)*

सभापति महोदय : आप कृपया बैठिए। इस प्रकार से बीच में टोका-टाकी ठीक नहीं है। अगर आपको कोई बात कहनी है, तो ठीक ढंग से कहिए। इस प्रकार से किसी सदस्य के बीच में न बोलें।

.....*(व्यवधान)*

श्री अनंत गंगाराम गीते : सभापति महोदय जी, कल विश्वास मत पर मतदान होगा, लेकिन आज ही ऐसा लग रहा है कि अटल बिहारी जी को विश्वास मत प्राप्त हो गया है क्योंकि जिन विपक्ष के नेता ने इस विश्वास मत के ऊपर अपने विचार आरंभ में प्रकट किए थे वे यहां मौजूद नहीं हैं। उन्हें मालूम है कि अटल जी विश्वास मत प्राप्त करने वाले हैं, उनकी जीत होने वाली है। हालांकि यह कल सिद्ध होना है, लेकिन उसकी छाया आज ही दिखाई पड़ रही है।

सभापति जी जब विपक्ष के नेता शरद पवार जी बोल रहे थे तो उन्होंने महाराष्ट्र और विशेषकर मुम्बई में हुए दंगों का जिक्र किया, बाबरी मस्जिद का जिक्र किया, श्री कृष्ण कमीशन का जिक्र किया। जब वे बोल रहे थे, तो हमने उनको टोकने की कोशिश की थी और पूछा कि जब मुम्बई में दंगे हुए थे, तो उस समय वहां किसकी सरकार थी, कौन मुख्य मंत्री थे? मैं बताना चाहता हूं उस समय महाराष्ट्र में कांग्रेस की सरकार थीं और शरद पवार स्वयं मुख्यमंत्री थे। इनकी सरकार ने क्या किया? उस वक्त पूरी मुम्बई जल रही थी और मुख्य मंत्री और आपके लोग डरकर घर में छिपकर बैठे हुए थे, सरकार खामोश बैठी रही.....*(व्यवधान)*

श्री तारिक अनवर : श्री कृष्ण आयोग की रिपोर्ट आने दें। दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा.....*(व्यवधान)*

श्री अनंत गंगाराम गीते : श्री कृष्ण कमीशन की रिपोर्ट तो आएगी, लेकिन मुम्बई की जनता इस बात को मानती और जानती है कि यदि मुम्बई को किसी ने बचाया है तो वे हमारे शिव सेना प्रमुख बाला साहब ठाकरे हैं। जब मुम्बई जल रही थी और सरकार खामोश थी, तो मुम्बई को शिव सेना प्रमुख बाला साहेब ठाकरे ने बचाया। शिव सेना के लोग जगह-जगह गए और स्थिति को बिगड़ने से रोका और काबू किया, यह संदेश पूरे मुम्बई वासियों को गया। ऐसी भयंकर स्थिति में जब मुम्बई जल रही थी, किसी में जाने का साहस नहीं था, एक दिन में 12 जगह विस्फोट हो गए, सैकड़ों लोग मर गये, हजारों घायल हो गए, करोड़ों की संपत्ति नष्ट हो गई, लेकिन उसके खिलाफ तब के मुख्य मंत्री और यहां के विपक्ष के नेता ने कुछ नहीं कहा। श्री कृष्ण आयोग की रिपोर्ट आएगी और उस पर विधान सभा में चर्चा होगी और जो सत्यता है वह देश और दुनिया के सामने प्रकट होगी। श्री कृष्ण आयोग की रिपोर्ट की चिन्ता हमें नहीं है।

सभापति महोदय, हमें दुख इस बात का है कि जब 12वीं लोक सभा चुनी गई और वाजपेयी जी को विश्वास मत प्राप्त होने वाला है, तो 11वीं लोकसभा की बजाय 12वीं लोकसभा में महाराष्ट्र से हमारे सांसद कुछ कम आए हैं। इसका हमें ही नहीं पूरे महाराष्ट्र के 10 करोड़ लोगों को दुख है कि हम आज वाजपेयी सरकार को उतनी ज्यादा संख्या में सांसद भेजकर समर्थन नहीं दे पाए जितनी संख्या में दिया जाना चाहिए। यहां पर विपक्ष के नेता बोल रहे थे कि उन्हें बड़ी भारी सफलता महाराष्ट्र में लोक सभा चुनावों में मिली, मैं इस बात को तो स्वीकार करता हूं, लेकिन मैं उन्हें आगाह करना चाहता हूं कि अभी तो लोक सभा के ही चुनाव हुए हैं दो साल बाद वहां विधान सभा के चुनाव भी होने वाले हैं तब आपको परिणाम देखने को मिलेगा। कि महाराष्ट्र में कहीं भी कांग्रेस दिखाई नहीं देगी। और आपकी बुरी तरह हार होगी। लोक सभा चुनाव में कैसे हुआ, क्या हुआ, इस बारे में ज्यादा विस्तार में और कारणों में जाना नहीं चाहता हूं, लेकिन जनता दुखी है कि यह सब कैसे हो गया। हर आदमी परेशान था। हर मतदाता परेशान था। आज दुर्भाग्य से हम संख्या में कम आये हैं महाराष्ट्र ने पूरा साथ नहीं दिया। हमें इस बात का दुख होता है। यदि महाराष्ट्र साथ देता तो आज सदन में विश्वास मत रखने का समय भी न आता। इस बात से सारा महाराष्ट्र दुखी है। इस बात से सारा महाराष्ट्र चिन्तित हुआ है।

सभापति जी, यहां पर आरोप लगाये जाते हैं। हमारे विपक्ष के नेताओं से, विपक्ष के साथियों से, जो यहां पर विश्वास मत के खिलाफ बोल रहे हैं, उसका विरोध कर रहे हैं, मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि यदि भाजपा और मित्र पक्षों की सरकार यहां पर नहीं आयेगी तो यहां कौन सरकार बनाने वाला है। यहां पर कांग्रेस की सरकार आयेगी या यहां पर फ्रंट की सरकार आयेगी ? किसकी सरकार यहां पर आने वाली है? कौन सरकार बना पायेंगे ? राष्ट्रपति जी ने सही निर्णय लिया है जो कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को सरकार बनाने का आमंत्रण दिया। आज सरकार बनी है, कल विश्वास प्राप्त करने वाली है। यह सरकार चलेगी। आज यहां पर विरोध किया जाता है, आरोप लगाये जाते हैं। यूनाइटेड फ्रंट की सरकार 14 पार्टियों की थी लेकिन हमारी 18 पार्टियों की सरकार है। आज करीबन 18 पक्ष एक साथ हुए हैं। चार मित्र पक्ष हमें बाहर से मदद कर रहे हैं। यह 18 पार्टियों की सरकार है। मैं अपने विपक्ष के नेताओं और विपक्ष के साथियों को यह कहना चाहता हूं कि 18 पार्टियों की सरकार 18 जड़ी बूटियों का च्यवनप्राश बना हुआ है, जो कि 5 साल आसानी से हजम कर जायेगा। आप इसकी चिन्ता मत कीजिए। केवल 5 साल ही नहीं बल्कि उसके बाद में आने वाले चुनाव में भी भाजपा और मित्र पक्ष इस देश के अन्दर जीत जाएंगे। यह विश्वास मैं यहां पर देना चाहता हूं।

सभापति जी, कहने के लिए तो बहुत है लेकिन समय की पाबंदी यहां पर मौजूद है। अभी दो-तीन मिनट और बाकी हैं। .....*(व्यवधान)* मैं समर्थन इसलिए करता हूं।

सभापति महोदय : आप कन्क्लूड करिये। आपको समय हो रहा है।

श्री अनंत गंगाराम गीते : सभापति जी, अभी तीन मिनट और बाकी हैं।

सभापति महोदय : आप जल्दी समाप्त कीजिए।

श्री अनंत गंगाराम गीते : यहां पर विपक्ष के नेता भाषण करके चले गये। सुश्री ममता बनर्जी ने उनको सही जवाब दिया जार्ज साहब ने उनको सही जवाब दिया। वे आरोप लगाकर जाते हैं। केवल आरोप लगाने के सिवाय कुछ नहीं कर सकते। पिछले 18 महीने में तीन सरकारें आईं। माननीय श्री देवेगौड़ा जी की सरकार और माननीय श्री गुजराल साहब की सरकार कांग्रेस के समर्थन से यहां आईं। वह दो सरकारें किसलिए गिराई गईं इसका जवाब उनको देना चाहिए। जनता इस बात को जानना चाहती थी कि देवेगौड़ा जी की सरकार से सपोर्ट क्यों वापिस लिया गया। गुजराल साहब की सरकार क्यों गिराई गयी, यह जनता जानना चाहती थी। जिस जैन कमीशन का यहां पर रैफरेंस दिया गया, जिस जैन कमीशन के नाम से लोक सभा भंग हो गयी, उसके बारे में विपक्ष के किसी नेता ने अपने भाषण में कहीं कुछ नहीं कहा।

सभापति महोदय : कृपया कन्क्लूड करिये।

श्री अनंत गंगाराम गीते : सभापति जी, मैं अपने आपको कंट्रौल कर रहा हूं.....*(व्यवधान)* लेकिन मैं इसलिए कहने जा रहा हूं कि कांग्रेस के नेता जब प्रचार के लिए जाते हैं। चुनाव में जब हार गये थे।

सभापति महोदय : आप कन्क्लूड कीजिए, समय हो गया है।

श्री अनंत गंगाराम गीते : मैं आपके आदेश का पालन करने वाला हूं। आपकी आज्ञा का पालन करने वाला हूं लेकिन जिस

[श्री अनंत गंगाराम गीते]

तरह से जनता को गुमराह करने की कोशिश कांग्रेस के नेताओं ने कई सालों से की, वही काम वह आज भी करने जा रहे हैं। इसलिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। श्री वाजपेयी जी की सरकार का समर्थन करने का मौका आपने मुझे दिया। विश्वास मत के प्रस्ताव पर समर्थन देने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूं।

सभापति महोदय : अब सभा कल पूर्वाह्न 11.00 बजे तक के लिए स्थगित होती है।

रात्रि 10.00 बजे

तत्पश्चात लोक सभा शनिवार, 28 मार्च, 1998/7 चैत्र, 1920 (शक) के पूर्वाह्न ग्यारह बजे तक के लिए स्थगित हुई।

© 1998 प्रतिलिप्यधिकार लोक सभा सचिवालय

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों (आठवां संस्करण) के नियम 379 और 382 के अंतर्गत प्रकाशित और नेशनल प्रिंटर्स, 20/3 वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-110008 द्वारा मुद्रित।